



रामाश्वमेध भाषा

जिसमें

अगस्त्योपदेश से श्रीरामचन्द्र जीने रावण बधको ब्रह्मदोषमान गुरु वशिष्ठजीकीआज्ञानुसार यज्ञारम्भ कर चतुरंगिणीसेनायुक्त शत्रुघ्नकीरक्षासे सम्पूर्ण पृथ्वीतल विजय पाकर विधिपूर्वक यज्ञकिया

जिसको

सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर साहबके खर्च से उन्नामप्रदेशान्तर्गत गंगातटस्थ बेथर ग्राम निवासि बाजपेयि शिवदुलारेने पण्डित हर-दयाल जीकी सहायता से भाषानुवाद किया

पहलीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरके छापेखानेमें छपा

मार्च सन् १८८८ ई०

बिज्ञापन ॥

इसमहीने अर्थात् मार्च सन् १८८८ ई० पर्य्यंत जो पुस्तकें बेचनेके लियेतय्यार हैं उनमेंसेकुछ इससूचीपत्रमें लिखीहैं और उनकामोल बहुत किफ़ायत से घटाके नियत हुआहै और व्योपारियों के लिये और भी सस्तीहोंगी जिनकोव्योपारकीइच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोरकेछापेख़ाने मुक़ामलखनऊ हज़रतगंजकेपतेसे ख़तभेजकर क़ीमतका निर्णयकरलें ॥

		...ाब
		...न
		...रू
		...र दोभाग
		...एड
		गर्गसंहिता
इंगलिस्तानकाइतिहास	(क)	गरुड़पुराणप्रेतकल्प
(उ)	कायस्थकुलभास्कर	गणितप्रकाश चारोंभाग
उमापतिदिग्बिजय	कायस्थबिनोद	
(ऐ)	कर्मविपाकसंहिता	(च)
	कृष्णबाललीला	
ऐक्ट १ सन् १८७६ ई०	कालिंजरमाहात्म्य	चित्रचन्द्रिका
ऐक्ट १२ सन् १८८१ ई०	कृष्णसागर	चाणक्यनीति
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	कथा श्रीगंगाजी	चौरासीवार्त्तिक

रामाश्वमेध भाषा की

भूमिका॥

आजतक यह रामाऽश्वमेध पद्मपुराण के अन्तर्गत संस्कृत श्लोकोंमें थी, जिसको सब मनुष्य अल्पविद्या के कारण अच्छी भांति न समझ सक्ते थे, व बिना समझे प्रिय क्योंकर हो, इस कारण सकल कलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोरजी ने अपने व्यय से सर्व्व विद्वज्जनों के अवलोकनार्थ वाजपेयि पण्डितरामरत्न द्वारा गङ्गा तटस्थ वेथर ग्राम निवासि वाजपेयि लालमणि आत्मज पंडित शिवदुलारे से अत्यन्त परिश्रम पूर्वक संस्कृत से उल्थाकराय–प्रकाशित किया, अरु जहां कहीं इस पुस्तक में अशुद्धता होउसको सब विद्वज्जन क्षमाकर शुद्धकरेंगे॥

दोहा।

वाण वेद नव चन्द शुभ वैक्रमेय सिधि पंथ।
अतिप्रियकर पूरणकियो रामअश्वमखग्रंथ॥

मनेजरमुन्शीनवलकिशोर
यन्त्रालयलखनऊ

रामाश्वमेध भाषा का सूचीपत्र ।



रामाश्वमेध ॥

भाषानुवाद ॥

पहिलाअध्याय ॥

श्लोक ॥ नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तमं ॥
देवींसरस्वतींव्यासं ततोजयमुदीरयेत् १
मंगलंभगवान्विष्णुर्मंगलंगरुड़ध्वजः ॥
मंगलंपुण्डरीकाक्ष मंगलायतनोहरिः २

एक समय बेदव्यासजी पृथ्वी पर्यटन करतेहुये नैमिषारण्य तीर्थमें प्राप्तहुये तब अट्ठासी हजार ऋषियोंने व्यासजीको अर्घपाद्यादि देकर आसनस्थ किया, तदनन्तर प्रश्न करतेभये किहे मुनिनाथआपसे समस्तकथा श्रवणकर हम सब कृतार्थहुये, अब आप कृपाकर श्रीरघुनाथजीके अश्वमेधकी कथा सुनाइये, यह सुनकर व्यासजी बोलेहेसूत अब हम शेष बात्स्यायन सम्बादमें रामाश्वमेध वर्णन करतेहैं, मुनियोंमें श्रेष्ठ बात्स्यायनमुनि —यह निर्मल कथा भुजगेश्वर जो शेषनाग तिनसे पूछतेभये १ हेशेषजी आपसे हमने सम्पूर्ण उत्पत्ति,

पालन, संहार, तथा भूगोल खगोल ज्योतिश्चक्रका नि-
र्णय व अनेक राजाओंके मनोहर चरित्र श्रवणकिये ३।४
उनके अन्तर्गत यशस्वीबीरत्व भूषित सूर्य्य बंशियोंकी
कथामेंश्रीरामचन्द्रजीके अश्वमेधकी महापातकनाशिनी
कथासुनी ५ परन्तु श्रीरामचन्द्र जीके अश्वमेधकी कथा
हमने संक्षेपहीसे सुनीहै सो आप कृपाकरके बिस्तार
पूर्बक सुनाइये ६ सो वह कथा कैसीहै कि कहने व
सुनने व स्मरणसे महा पातक नाश करने वालीव भक्त
जनोंके चित्तको आनन्द बढ़ानेवालीहै ७ मुनिश्रेष्ठ वा-
त्स्यायनजीका यह बचन सुनकर शेषजी बोले किहेमु
ने आप धन्यहैं किजो आपकी मति श्रीरामचन्द्र जीके
कमल स्वरूपी चरणारबिन्दकी रजकोइच्छतीहै ८ अरु
इसीसे साधु समागमश्रेष्ठकहा है किसाधुनके समागम
से श्रीरामचन्द्र जीकी कथामें भक्ति पूर्बकसुननेकी इच्छा
रहतीहै ९ हेमुने आपने बड़ी अनुग्रहको कि जो सुरासुर
बन्दनीय श्रीरामचन्द्र जीकी कथा स्मरणकराई १० राव
णारिश्रीरामचन्द्रकी समुद्ररूपी जो कथाहै तिनके बिषे
ब्रह्मादिकदेवतामोहितहोकर कहनेको सामर्थ्यनहींहोत
हैं सोतिसमें हमारी जो मसकरूपबुद्धिहै तिसकी क्या
गिनतीहै ११ जैसेकि अगम आकाशमें पक्षी अपने ब-
लके अनुसारउड़तेहैं तैसेही हेमुने हमश्रीदशरथ नन्दन
रामचन्द्र जीकी पूर्णकृपासे अपनीमतिके अनुसार क-
था कहतेहैं १२ अरु श्रीरघुनाथ जीके चरित्र अगमहैं
केहूके गाने योग्यनहींहैं --परन्तु भक्तजनअपने चित्तके

आनन्दार्थ अपनी मति अनुसार गातेहैं १३ जैसेकिसु
बर्ण सुहागाके योगसे अग्निमें सन्तप्तकरनेसे उज्ज्वल
होजाताहै तैसेही श्रीरघुनाथजी कायशगानेसे मेरीमति
भी निर्मल होजायगी १४ तदनन्तर यह बचन कहि
के शेषजी ध्यानावस्थ होकर ज्ञानदृष्टिसे श्रीरामचन्द्र
जीकी मनरंजन कथाका स्मरण करतेभये १५ अरु क-
था स्मरण के आनन्द में प्राप्त होकर गद्गद गिरासे ध्या-
न करके श्रीराम कथाका प्रारम्भकरतेभये १६ (कथा
प्रारम्भः) श्रीशेषजी बोले किहेमुने जब श्रीरामचन्द्रजी
त्रैलोक्य दुःखद रावण कोबधकर के त्रिभुवन को सुख
दिया तब सूर्य्य चन्द्र अपनी२कांति को प्राप्त होतेभये व
अप्सरादि आनन्दसे नृत्य करने लगीं वइन्द्रादि देवता
आनन्द पूर्वकश्रीरामचन्द्रजीकीस्तुतिकरतेभये १७।१८
औ धर्म्मात्मा बिभीषण को लंकापुरीका राज्या भिषेककि
या आप सीता समेतपुष्पकयान में उपस्थितभये १९
तदनन्तर बिभीषण सुग्रीव जाम्बवान अंगदहनुमदादि
व समस्त भालुकपि श्रीरघुनाथ जीके बिरह में क्लेशित
होकर साथ चले २० चलते २ रघुनाथ जी मार्ग बिषे
उस टूटी भई लंकाको देखते हुये अशोक बनको देखा
देखतेही सीता जीका क्लेश स्मरण करके मूर्छित होग-
ये२१तदनंतर क्यादेखते भये किशिंशुपा व कोरक आ-
दि वृक्ष सीता जी के रहनेसे पुष्पित होकर बसंत ऋतु
में प्राप्त होरहेहैं अरु वहीं हनुमान् जीके भयसे मृतक
राक्षसियों कोभीदेखा २२ यहिप्रकार समस्त लंकापुरी

को श्रीराम चंद्रजीने देखके अयोध्या पुरीको प्रस्थान किया तेहिसमय बिषे ब्रह्मादिक देवताओंसे स्तुति व देव दुन्दुभियों का शब्द सुनते हुये व अप्सरादिकों का नृत्य देखते हुये व मार्ग बिषे सीता जीको मुनिआश्रम मुनि पत्नी पतिव्रताओं को देखाते हुये व मार्ग के अनेकतीर्थ व जहां लक्ष्मण सहित पूर्ब वास कियेरहैं वह सब स्थान सीताजीको देखातेभये २३ । २४ । २५ २६ यहि प्रकार सीता लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्र जी अपनी पुरी अयोध्याके समीप नन्दिग्राम देखते भये२७ तहांधर्म्मात्माभरत जी ज्येष्ठ भ्राताश्रीरघुनाथजी के बियोग जनित चिह्नोंसे चिह्नित२८ भूमिशायी जटाभूर्जपत्र धारणकिये व रघुनाथ जी के बिरह से कृश शरीर होकर अहर्निशि स्मरण करतेहैं २९ अरु अन्न तोखाते ई नहीं व जल भीबारम्बार नहीं पीते श्री दिवाकर जगन्नेत्र सूर्य्यनारायणजीसे प्रति दिन प्रातः काल प्रार्थना करतेहैं किहे स्वामिन् जगत्पूज्य श्री रामचंद्रजी हमारे अर्थ बनकोगये यह अयश रूपी महत् दुःख दूरकरौ ३० । ३१ अत्यंत सुकुमार सीता जोपुष्प शय्यापर शयन करनेवाली तिनके सहित श्रीरघुनाथ जी बन भ्रमणकरतेहैं ३२ अरु जो कोमलाङ्गीसीता कभी सूर्य्यकी किरण भी नहीं देखसकी सोई सीता महादुर्द्धर्षबनमें अनेक प्रकार केदुःख सहतीहैं ३३ अरु जो सीतादेव राज करकेभी कभीनहींदेखीगई सोई सीता महाविकट बनमें दुराचारी राक्षसोंकरके देखीगई हाहृदयऐसेदुःख

से क्यों नहीं बिदीर्ण होजाता ३४ अरु जो सीता क्षुधा में भी अत्यंत मधुरभोजन न करतीरहैं सोईसीता हमारे अर्थ फल मूलादि कनकी इच्छा करतीहैं ३५ यहिप्रकार प्रतिदिन प्रातः काल रामप्रिय महात्मा भरत जी प्रत्यक्ष देवता सूर्य्यनारायणसे बिनय करतेथे किहेदिवाकर मेरा अभीष्ट आप पूर्ण करिये कि श्रीरघुनाथजी के साक्षात् दर्शनहों ३६ अरु फिर भरतजीमंत्रीसुहृदमित्रादिकनसे बोले किहेभाई जेहिके अर्थ ज्येष्ठभ्राता व कोमलाङ्गी सीता व परम प्रियलक्ष्मणवनमें अनेकप्रकारकेदुःख सहैं ऐसे दुर्भागी पुरुषाऽधमको धिक्कारहै ३७। ३८ अरु स्वपति प्रिया वीरप्रसविनी सुमित्रा धन्यहै जिनके पुत्र लक्ष्मण जो अहर्निशि श्रीरामचंद्रजीके चरणकमलों कासेवन करतेहैं ४० इसप्रकार भरतजी परम कारुणिक बचनोंसे अहर्निशि जहां बिलापकरतेरहैं वही नन्दिग्राम श्रीरामचंद्र जी देखतेभये ४१ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधेभाषायां रघुनाथस्य भरतः बास नन्दिग्राम दर्शनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले कि हेमुने जब यशस्वी श्रीरामचन्द्र जी नन्दिग्राम देखकर बारम्बार बिह्वल चित्तसे भरत को स्मरण करतेहुये बायुपुत्र हनुमान्‌जीसे बोले १। २ हे पवनज हमारे भाई महात्मा भरतजी मेरे बिरहके

दुःखसे दुःखित कृशशरीर होकर हठसे दर्शनन कीआ-
कांक्षासे अहर्निशि ध्यान करतेहैं ३। ४ अरुजोभरतकु-
शासन परबैठे भूर्जपत्र जटा धारणकिये बिरह दशा में
जलते फलमात्रतक तो भोजननहीं करते वपरस्त्री जिन
केमाता समान सुवर्ण लोह समान व प्रजन की रक्षा
पुत्र समान करते एसेजो महात्मा भरतजी सोमेरे बिरह
अग्निसे सन्तप्त होतेहैं सो तुम जलरूपी मम आगमन
से परम प्रिय भरत को शीतलकरो ५।६।७ कि सीता
लक्ष्मण बिभीषण सुग्रीव अङ्गदादि बानरन सहित श्री-
रामचन्द्र पुष्पक यानपर सवार आतेहैं ८। ९ पुर्षोत्तम
श्रीरामचंद्रजीका यहवचन सुनकर मारुतनन्दन हनुमान्
जी अपनेको धन्यवत् मानिकै नन्दिग्राममें प्रवेशकरते
भये १० तहां सकल कलाऽध्यक्ष मतिमान् धर्ममूर्ति
भरतजी वृद्ध मंत्रिन करके संयुक्त ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम
चंद्रके बिरहसे क्लेशित व कमल स्वरूपी चरणोंको रज
की आकांक्षा करते मंत्रिन प्रति श्रीरामकथा कहते ऐसे
जो महात्मा भरतजी तिनको हनुमान्जी प्रणाम करते
भये ११।१२।१३ तदनन्तर भरतजी उठिकै हाथ
जोड़कर हनुमान् जीसे स्वागत कहिकै ज्येष्ठ भ्राता श्री
रामचन्द्र जीको कुशल पूछते भये १४ अरु उसी सम-
य भरतजी को शुभ शकुन हुये फिर दक्षिण भुजाफरक
ने लगा व आनन्द रूपो जल नेत्रनमें छाइरहा हृदय
शीतल होगया १५ यह दशा भरत जी की देखिकै प-
वनपुत्र हनुमान् जी बोले कि हे भरत जी तुम्हारे नगर

के समीप सीता लक्ष्मण भालु कपिन सहित शत्रुको रणमें जीतिकै व ब्रह्मादिक देवता यशगाते हुये यशस्वी श्रीरामचन्द्रजी आयेहैं १६ यह परम प्रिय हनुमान् जी का बचन सुनकर भरतजी अतीव आनन्दको प्राप्तहुयेव हृदय शीतल होगया १७ फिर हनुमान् से बोले कि हे पवनज तव उपकार के सदृश देनेको त्रैलोक्यमें कुछनहीं है यहिसे हेपरम प्रिय जन्म पर्य्यन्त हम तुम्हारे दासहैं १८ यह बचन कहकर महात्मा भरतजी आनन्द हृदयसे बशिष्ठ सुहृद वृद्ध मंत्रियों सहित अर्घपाद्यलेकर हनुमान् जीके साथ राम मार्ग को चले १९ दूरही से श्रीरामचन्द्र जीको सीता लक्ष्मण सहित पुष्पक यानपर आरूढ़ देख अति हर्षित हुये अरु श्रीराम चन्द्र जीनेभी जटा भूर्जपत्र कौपीन धारण किये भरत जीको देखा २०। २१ अरु भरत केजे सुहृद मंत्री मित्रादिक भरतहीके समान आचरण वाले जटा भूर्ज पत्र धारणकिये रघुनाथजीके बिरहसे कृशशरीर होगयेथे उन कोभी अत्यन्त करुणापूर्बक करुणानिधि रामचन्द्र जीने देखा २२ उन समस्त सुहृदों समेत भरतजीको देखकर अति दुःखको प्राप्त होकर बोले कि हेदैव बड़े आश्चर्य कीबातहै कि महाराज राजेन्द्र दशरथ नन्दन भरत जटा कौपीन धारणकिये अतीवदुःखसे दुःखित पायन२ चलेआतेहैं २३। २४ हाजितना क्लेश हमारे बियोग करके प्राण प्रिय भरत कोहुआ उतना हमको बनबास में भीनहीं पड़ा २५ अबदेखो हमारा निकट आगमन

जानिकरसुहृद वशिष्ठादिक वृद्धमंत्रिनसहित अति आनन्द में प्राप्त होकर हमारे दर्शनों की आकांक्षासे आतेहैं २६ यह कहिकै सीता लक्ष्मण बिभीषण जाम्बवान् सुग्रीवादिकन सहित श्रीरामचन्द्रजी प्राणप्रियभ्राता हेभाई२ यह कहते हुये पुष्पक यानसे उतरपड़े तदनन्तर भरत जी ससैन्य रघुनाथ जीको उतरे देख सहर्ष दण्डवत् करते भये २७।२८।२९ तब यशस्वी श्रीरामचन्द्रजी नेदण्डवत् करते देख परमप्रिय भरत को उठाकर हृदय में लावते भये फिर हृदय से लाकर बारम्बार उठाने लगे तब महात्मा भरत जी ज्येष्ठभ्राता श्रीरामचन्द्रजी के कमल स्वरूपी चरणोंको पकड़कर रोदन करते हुये बोले हेकरुणानिधे महाबाहोमैं जो दुराऽचारी दुष्ट पापी हौं तेहिको कृपादृष्टिकरके देखो ३०।३१।३२ अरु हे स्वामिन् जो आपके कोमल चरणसीताजीका हाथलगने से आपकठोर मानते रहौ सोई मेरे अपराधसेभक्त जनोंके आनन्द कारक चरण महा दुर्गमबन भ्रमण किया३३ भरतजीऐसे २ कारुणिक बचन कहतेहुये आनन्द सेबिह्वल बारम्बार दीनवत् होकरमिलतेभये ३४ तदनन्तर कृपासागर रामचन्द्रजीपरमप्रिय भाई को हृदय से लगाकर अरु वशिष्ठादिवृद्ध मंत्रिन सोंप्रणाम करके सादर कुशल पूछते भये ३५ तब भरतजीपुष्पक यानमें चढ़कर अनिंदित, धर्मचारिणी, पतिव्रत में अरुन्धती, अनुसूया, लोपा मुद्रा के समान जनक नन्दिनी सीता जी को देख साष्टांग प्रणाम करके बोले हे माता मैं जोदुरा-

चारी हैं तेहिको अपराध क्षमाकरो व आपके समान
जो धर्मजाननेवाली पतिव्रतास्त्रीहैं सो सबका कल्याण-
ही चाहतीहैं ३६। ३८ यह भरतका विनीत बचन सुन
जनकजासीताजी परम प्रियदेवर को आशिष देकर कु-
शलाऽऽरोग्यता पूछती भईं ३९ तदनंतर श्रीरामचंद्रजी
सम्पूर्ण जनन करिकै सहित पुष्पकयान पर सवार हो-
कर अयोध्यापुरीको देखने लगे ४० इतिश्रीपद्मपुराणे
पातालखण्डे शेषवात्स्यायन सम्बादेरामाश्वमेधे भाषा-
यांरामोराजधानीदर्शनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥ २ ॥

तीसरा अध्याय॥

शेषजीबोले कि हेमुने निजस्थान बैकुण्ठही केसमान
उज्ज्वल जोअयोध्यातेहिको बहुतकालकेअनन्तर देखिबे
की लालसासे मतिमान् रामचन्द्रजी अति आनंदको
प्राप्तहोते भये १ तब भरतजी अपने सुहृद् मंत्री मित्रा-
दिकन को नगर उत्सवके अर्थ आज्ञा देतेभये कि सम्पूर्ण
अयोध्यावासी परम प्रिय श्री राज राजेन्द्रराम चंद्रजीके
आगमन के उत्सवमें शीघ्रही राज मार्ग चौहट्टादि
चन्दनादि सुगंधित बस्तुओंसे सींची जावें व मांगल्यि-
क बस्तु कलश बन्दनवार सुवर्णके पताका सम्पूर्ण न-
गरके द्वार २ में सुशोभित कियेजावें २। ५ अरु अगर
की धूप इस प्रकारकी जावे कि जेहिके धुआंसे आकाश-
में बादर सा जान पावस ऋतु मान मोर आदि समस्त
पशुपक्षी आनन्द पूर्वक नृत्य करैं व पर्वताकार महाउत्तं

से यंत्रित समस्त जो हमारे हाथीहैं सो गेरू आदि रंगों
से चित्रित व गज मुक्ताओंसे भूषित किये जावें ६। ७
व जिन घोड़ों को देखकर उच्चैः श्रवादि देवताओं के
घोड़ों का गर्वदूरहोताहै ऐसेजो मनोजव रूपघोड़े सोभी
बिचित्रित किये जावें ८ अरु हजारों मनोहरकन्याआ-
भूषणों करके भूषित हाथिन पर सवार होकर रघुनाथ-
जीपर मुक्ता दधि दूर्वादि मांगल्यिक वस्तुओंको सिंच-
नकरें ९ व महात्मा ब्राह्मण लोग हाथोंमें दूब रोचना
लिये श्रीरामचन्द्रपर छिड़कते हुये मंगल गीतपढ़ें १०
अरु जो महारानी कौशल्या श्रीरामचन्द्रजी के विर-
हसे कृश होकर अहर्निश शुभसन्देशसुनने को लालसा
किये रहतीहैं सो यह शुभ संदेश सुनकर आनन्दको
प्राप्तहोयं ११ यहि प्रकार परमप्रिय श्रीरघुनाथजीके
आनेका उत्सव सम्पूर्णमतिमान् अयोध्यावासी आनन्दि-
तहोकर करैं १२ तदनंतर भरतजी के यह बचन सुनिकर
सुमुख मंत्री सो नगरोत्सव के अर्थ अयोध्या पुरीमेंप्र-
वेश करतेभये १३ वहां जाकर सम्पूर्ण जनोंसे श्रीरामचंद्र-
जीके आगमन का उत्सव करनेको उसी बिधिसे आज्ञा
देतेभये १४ जिन पुरबासियों ने श्रीरामके बिरहसे
कृश होकर सम्पूर्ण भोग सुखादिकत्यागदियेसो श्रीआ-
नंद कंद रामचंद्रजी को पुरीके निकटआये जानकर
अतीव आनंदित हुये १५ तदनंतर समस्त पुरवासीवेद
पाठी स्वकर्म्मी ब्राह्मण लोग पवित्र कुश मांगल्यिक
बस्तु हाथोंमें लिये स्वस्त्ययन पढ़ते १६ बरणधीर

धनुर्बाण धारणकिये संग्राममें अनेक बीरोंके जीतनेवाले क्षत्रीलोग चिरकाल में रामचंद्रजीके दर्शनों कोलालसा से १७ उज्ज्वल बस्त्र पहिरे धनवान् बनियांभी आनन्दित होकर १८ अपने धर्ममें स्थिर तीनोंवर्णोंकीसेवाकरनेवाले बेदके आचार को माननेवाले शूद्रजन व सम्पूर्ण अयोध्यावासी अपने २ वृत्तिकी बस्तु लैकर शीघ्रतापूर्वक दर्शनों को आते भये १६ । २० यहि प्रकार भरतके संदेश से समस्त अयोध्याबासी नाना प्रकार के कौतुक नसहित मांगलियक बस्तु लैकर श्रीरघुनाथजीके निकट आवतेभये २१ तबऊर्द्ध गामी देवतन सहित श्रीरामचंद्रजी मोहनी अयोध्या पुरीको प्रबेश करते भये २२ तब सेनाध्यक्ष न भपथचारी भालुकपिन सहितमें सुग्रीवादि पीछेचले २३ अरु सीता सहित रामचन्द्र पुष्पक यानसेउतरपालकीमें सवार होकरसमस्तपरिवारसहित अयोध्यामें प्रवेश करते भये२४ जेहि अयोध्या बिषेद्वार द्वार कलश बन्दनवारादि अनेक मांगल्यिक बस्तुओंसे भूषित २५ ढोल झांझ नगारा बीणादिकन के शब्दों करके सुशोभित सूतमागध बन्दी जन स्तुति २६ व बेदपाठीब्राह्मण स्वस्त्ययन पढ़ते व पुरवासियोंकी आनन्दित बाणी सुनते आपभी दर्शनोंकी लालसा से हर्षित२७ चन्दनार्क नवीन पत्र पुष्पबिछेहुये राजमार्ग चौहट्टादिकों की शोभा देखते हुये चले जातेथे २८। २६ तेहि समयबिषे नगरकी स्त्रियां झरोखेनसे सीतासहित रामचन्द्रको देखकर आपसमें कहतीभईं ३० हे सखि

वनके समस्तद्रुम वभील कन्याघन्यहैं जोश्रीसीताराम को कमलस्वरूपी मुखारबिंद नित्तप्रति देखती रहीं३१ जेहि रामचंद्रजीके कोमल मुख के दर्शनको ब्रह्मादिक देवता बड़ी भाग्यसे प्राप्तहोतेहैं सोई कंज वर्णनेत्र सुंदर मुखका दर्शनकरके हमधन्य भईं ३२ व चारुहास उत्तम मुकुटसे शोभित मस्तक व होठोंकी ललाई गुड़हरके फूल को लजाते हुये तिनके बीच दांत महाशोभा को प्राप्त होतेहैं ३३यहि प्रकारके बचन सबस्त्रियां कहतीहुईं स्नेह के भारसे कमलदल समान नेत्रोंसेजल डारती रघुनाथ-जीको प्रसन्न करतीभईं तब श्रीरामचन्द्रजी स्नेह पूर्वक तिनको देखते हुये माताजीके मंदिरकोचले३४इतिश्री पद्मपुराणेपातालखण्डेशेषबात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेघभाषायांरघुनाथपुरप्रवेशोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय॥

श्रीव्यासजी बोले कि हेसूतयहिप्रकारफिर बात्स्या-यनमुनि दोनों हाथ जोड़ चरणोंमें शिरनाय शेषजीसे पंछतभये किहे धरतीके धरनेवाले भुजगेश्वरशेषजी यह मेरा संदेहदूरकरो कि श्रीरामचन्द्र केबन जाते समय कौशल्याजी हृष्टपुष्ट शरीरसे ऐसा दारुणदुःख पाकरे केहिप्रकार प्राणोंकी रक्षाकी १।२व निशिदिन सुतबियो-गसे कृशशरीर मलीन चित्तसे केहिप्रकार परमप्रिय रामचन्द्रका आगमन सुनकर आनन्दित होतीभईं अरु सुमुखके मुखसे रामचन्द्रजीको आयेजान फिर कौशल्या

जीने केहिप्रकारके बचनकहे ३।४ हे बुद्धिबर अहिनाथ यह मोर संशय नाश करौ श्रीरामचन्द्र जीकी कथाको उदयकरके हमारा भ्रम दलनकर सनाथकरौ५ यह मुनिश्रेष्ठ वात्स्यायनका प्रश्नसुन शेषजीबोले किहे द्विजेन्द्र मुनिराज जो तुमने सुखदायक प्रश्नकिया सोचित्तस्थिर मन लगायकै सुनौ तुम्हारे हित हम उत्तम कथाकहतेहैं ६ कि जब रामचन्द्रजीका आगम सुमुखके कमल स्वरूपी मुखसे अमृत समान पान करके बिह्वल दशामें ७ थकित होकर कहती भईं कि हे बिधाता स्वप्नसा चित्तभ्रम हुआ कि मैं मतिमन्द हतभाग्य दुःखखानि होकर रामचन्द्रके दर्शन संसारमें सबप्रकारसे मुझको दुर्लभहैं ८ पहिले हम उग्रतप कीनरहै तेहितपके प्रभावसे जगदीश श्रीरामचन्द्रजी सुत प्राप्तभये, फिर अब हमारे पापके उदयभये से बनबासकोगये ६ हे सुमुख सीता लषण सहित परमप्रिय रामचन्द्र जीकी कुशलकहौ जोअतिदुःखो बनके बिचरने वाले पुत्र केहि विधि हमारी सुधि करते भये १० यहि प्रकार कारुणिक बचन कहतेहुये वसुतके मनरंजन चरित्रोंको स्मरणकरते सुत वियोगकी ब्याकुलताके कारण अपन पराव कुछ नहीं सूझि परतरहै ऐसीदशामें प्राप्तहोकर अत्यन्त करुणा पूर्बक कौशल्या जीरोदन करतीभईं ११।१२ तबसुमुखमाताजीकोअत्यन्त ब्याकुलदेख ब्यजनकी मनोहरवायुकरके सुखीकर आनन्ददायक बचन सुनाताभया कि हेमाता सावधानहोकर देखोसीतालक्ष्मण सहितरामचंद्र तुम्हारेभवनमें खड़ेहैं

सोआशिषदेप्रसन्नहोकरसुतबियोग कादुःखदूरकरौ१३
१४सुमुखके ऐसे प्रिय बचन सुनकौशल्याजीके आनन्द
रूपी समुद्र उमगि उठ्यो सोहे मुनिराज उससमय जोसु-
ख कौशल्याजीको प्राप्तहुआ उस सुखको मैं बर्णन नहीं
करि सकौहौं १५ तदनन्तर कौशल्याजी सुतका आग
मन सुनिकै आनन्द पूर्वक पुलकित गात विह्वल बदन
आनन्दरूपी जल नेत्रन में छाइरह्यो यहिप्रकार दर्शन-
न की लालसासे शोचतीभई १६ तेहि अवसर में पाल-
की पर सवार होकर श्रीरामचन्द्र जीकैकेयीकेघर जाक
र भरत समेत दण्डवत् करते भये कैकेयीने सकुचि कै
कुछ न कहा नम्रचित्त करिकै चिन्तामें प्राप्तहोकर पछि-
तातीभई १७। १८ तब सूर्यवंश भूषण रामचन्द्र दोनों
हाथ जोरि बिनयपूर्बक मधुर बचनोंसे प्रबोध करते हुये
माता से बोले१९कि हे माता तुम्हारी आज्ञा का प्रति-
पाल करके चौदहबर्ष वनबास कर तुम्हारे प्रसादसे
रणमें रणधीर राक्षस मारेगये अब इससमय जोआज्ञा
देउ सो करें२० अरु मोसे कौन अपराध परा जेहिसेतुम
पुत्रत्व मानिकै नहीं देखतीहौ भरत समेत हमको शिर
घ्राण स्पर्शकर सकुच बिहाय आनन्दित होकर आशिष
देव २१ हे मुने रामचन्द्रजीके विनीत बचन सुन कैकेयी
ने शिरनाय सकुचिकै आशिष देकर सन्मान किया त-
दनन्तर श्री रामचन्द्र सुमित्रा के घर जाय माताको देख-
कर दण्डवत् करके अतीव आनन्द को प्राप्तहोते भयेल-
क्ष्मण सहित पुरुषोत्तम रामचन्द्र जीको देखकर आनन्द

पूर्वक आशिष देकर चिरंजीव कहि उठिकै चलती भई २२ तेहि अवसर माताका आशिष सुन अत्यन्त करुणा पूर्वक करुणानिधि लक्ष्मण सहित माताके चरणों में गिरते भये चरणोंमें गिरते देख माताने अंकमें लगायलिया२३।२४।२५तब रामचन्द्र जी सुमित्रासे बोलेकि हेमाता परम प्रिय लक्ष्मण जीके गुण कहां तक बर्णन करैं हमारे अर्थ महाबनमें बड़ादुःख अंगीकार किया, अरु जहां २ हमको महा दुःख पड़ातहां २उबारि कै रक्षाकरतेरहे अरु हे माता इनसमान कोई बुद्धिबर नहींहै हमको सब दिन सुखदेतेरहे २६ एक समयमें देवतोंका दुःखदायकरावण समय पायकै सीताजीको अगम दुर्गलंकामें हरिलै जाताभया, तहां बीरत्वभूषित लक्ष्मणजीके बाहुबलसे उसदुराचारी रावणको नाशकरके सीताजी प्राप्त भई तेहिसे हेमाता आशिषदेकर अपने हाथसे शीशस्पर्शकरौ ऐसे बचन यशस्वी रामचन्द्रजी कहते हुये अपनी माताके घरजातेभये २७।२८ माता कोदर्शनोंको लालसासे अति प्रसन्नदेखकर पालकी छोड़ चरणनमें गिरतेभये, तब कौशल्याजी मारे आनन्दके चित्तमें बिह्वल होगई वगद्गद गिरा होकर बचन तोकुछ कही न सकीं उसीदशामें अंक लावतीभई अरुबार२ अंकमें लायकैमिलती भई जेहिप्रकार दरिद्री महाधन पारसको पायकै अतीव आनन्दित होताहै २९।३० यहिप्रकारश्रीरामचन्द्र माताको मिलिकै सुखीकिया अरु फिर माताको देखते भयेकि कृशशरीरमें आनन्द छायकै गद्गद गिरा होकर

कण्ठ रुन्धित होगया व नयनों से संतप्त जल बहने लगा ३१ बनूपुरादिके बिना दुःखित मलीन वस्त्र धारण किये पुत्र के विरह करनेते तन क्षीणताको प्राप्त व अपने स्नेह के वशमें दुःखित देखि कै रामचन्द्रजीने कहा कि हे माता समय को बिचारिकै धैर्य्य करौ मैंबड़ा भग्यहीन हुआ ३२ कि इतना समय व्यतीत करके तुम्हारी सेवा कुछ न किया सो मेरा अपराध मन्दभाग्य जानिकै क्षमा करौ ऐसेबचन कहके अत्यन्त करुणापूर्बक करुणानिधि रामचन्द्रजी हृदय को विदीर्ण करतेभये ३३ ३४ हे माता जे पुत्र माता पिताकी सेवा मोहवश हो-कर नहीं करते तेअधम संसारमें कीटसमान जन्मलेकर अन्तकाल में निश्चय करके नरकको प्राप्त होतेहैं ३५ मैंतो पिताकी आज्ञा प्रतिपाल कर बनको गया वहांजा कर दुःखसागर में पड़गया सोमातातुम्हारी हीपूर्णकृपा से पारहोकर अब चरण कमलदेखिकै सकल सुखको प्राप्तभया ३६ अरु वहां दुराचारी रावणने सीताहरण किया वहांभी तुम्हारीही कृपासे रावणकोमार सीताजी को लैकै सब दुःख नाशकिया ३७पतिव्रत धर्ममें तत्पर सब को सुख देनेवाली मनसा सहित तुम्हारे चरणोंको ध्यानकरने वाली सीता चरणोंमेंप्राप्तहै आनंदितहोकर आशिषदेउ३८ कौशल्याजीसुतकीबाणीसुनसीताकोदेखि कैप्रसन्नहोकर आशिषदेतीभई अरु पतिव्रताओंमें श्रेष्ठ जानकर हृदयमें लगायलेतीभई ३९ कहाहेसीते दारुण बिपत्तिकोनाशकरकेप्राणप्रिय रामचन्द्र सहितबहुतकाल

राज्यकरो तहां कुल पवित्र करनेहारे सबसुख दायक दुइपुत्रउत्पन्नहोंगे ४० अरु हे सीते तुमसमान सुमति परायण स्त्री चौदहो भुवन में नहीं है कि पतिके सुखसे सुखी व दुःखसेदुःखित यहहमको आश्चर्यहै अरु रामचंद्र कीसेवा करके अपने पिताकाकुल व अपना कुल पवित्र कियो अरु जेहिके घरमें तुम समान पतिव्रता स्त्रीहै तेहि को कोटिन शत्रु कुछभी नहीं करसक्ते ४१।४२ लक्ष्मण सहित रघुनाथजी बनसे कुशलतापूर्वक तुम्हारेहीप्रताप से आयेहैं ऐसे मनोहरबचन कहिकै कौशल्याजी आशिष देतीभई ४३ सासुके ऐसे प्रियबचन सुनकर सीता जीके हृदय में आनन्द छाइ गयो पुलकित तन नेत्रोंसे जलढारती बिह्वलतासे अपन पराव कुछनहीं सूचित होता ऐसीदशामें मूच्छित होगई ४४ तदनन्तर महात्मा भरतजी प्रसन्नहोकर बुद्धिमान सूर्य्यकुलदीपक रामचंद्र जीको समस्त राज्य समर्पण करिकै रघुनाथ जीके चरणन में प्रीतिबढ़ावते भये ४५ तब सुमंतआदि मंत्रिन भरतकी यहरीति देखिकै सुखदायक शुभमुहूर्त श्री रघुनाथजीकै राज्याभिषेक के अर्थ पूछतेभये ४६ शुभ नक्षत्र शुभदिन जानिकै मंगल द्रव्यादिक लावते भये तबगुरु बशिष्ठजी मंत्रिन सहित बिधिपूर्वक रामचन्द्र जीको सीता सहित राज्य सिंहासन में सुशोभि तकरते भये श्रीरामचन्द्रका अभिषेक सुनकर देवता सिद्धनाग नरसब सुखको प्राप्तभये४७तब मंत्रिन मृगछालामें सप्त द्वीपपृथ्वी जहांतक यशस्वी रामचन्द्रकी राज्यरहै सब

लिखिकै देखावतेभये राज्य प्रमाण देखिकै श्रीरामचन्द्र जीदुःख दूरकरिकै सुखीहुये वसमस्त जन सुखको प्राप्त भये४८ तेहिदिनसे सुजनजन मुनिसिद्ध आनन्द होकर स्वतन्त्रतापूर्वक पृथ्वीमें बिचरनेलगे शेषजी कहतेभयेकि हेमुने तेहिसमय खलदुष्टजनों को सबओरसे बिपत्ति आ घेरी ४६ तबसंपूर्णअयोध्याबासी नरनारिछलकपटछांड़ि मनसाबाचा कर्मणासे रघुनाथजीका भजनकरकेसंपूर्णबि पत्तिसे छूटतेभये५० अरु देवतायक्षकिन्नर नरनाग रा- क्षस सब अनुरागभरे श्रीरामचंद्रजीकी आज्ञाशिरधरिकै करतेभये५१अरुसमस्तजन अहर्निशिपरउपकारमेंउद्यत रहनेलगे सबजन निजस्वामी केयोगप्राप्त अर्थकर्मकरते अपने अपनेधर्ममें तत्पर सब नरनारी सहित बिचार के आनन्दपूर्वक रहतेथे ५२ अरु नगरीमें मूर्खकोई नहीं था सब पण्डित् आचारीथे अरु रंक धनद समान था अर्थात् सब धनवान्ही थे दरिद्री कोई नहीं था अरु प्रभु की प्रभुताई समुझिकै बायु हरसमय मन्द२ चला करताथा अरु सब नरनारि झीन वस्त्र पहिरतेथे परन्तु बायु नहीं उड़ायसक्ताथा शेषजीबोले कि हेमुने उससमयका वर्ण- नमें कहांतक करौं सम्पूर्ण जड़ जंगम सुखसे निवास करनेलगे किसीको भी प्राकृत गुणनहीं ब्यापि सक्ताथा ५३ अरु पुरविषे नित्य नये २ आनन्द दायक कौतुक होतेरहैं अरु भ्रातन सहित रामचन्द्र हर समय गुरूकी सेवाकरतेथे गुरूवशिष्ठ पुरुषोत्तम रामचंद्रजीकी यहरीति देखकर निशि दिन प्रसन्न होकर आशिष देतेरहैं कि हे

भक्तोंकेरक्षा करनेवाले तुम्हारी कीर्त्ति वृद्धिहो ५४।५५ इतिश्री महापुराणे पाताल खण्डे शेष वात्स्यायन सम्बादेरामाश्वमेधभाषायां रघुनाथ राज्याभिषेकोनाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले कि हेमुने यशस्वी श्रीरामचन्द्रजी को पृथ्वीपति जानिकै समस्तमुनि देवता तेहिसमय श्रीरामचन्द्रके समीपआय दैत्योंकी त्रासतेछूटिकै आनन्दित होकर रघुनाथजीको छबिदेखिकै नेत्र संतुष्ट नहींहोतेथे अरु रावणकाबधसुनिकै पुलकितगातहोकर सावधानो से देवतादि मुनिबर स्तुति करतेभये१ हे रघुकुल भूषण सदैव प्रणतजननके आनन्दकारक करुणानिधि सर्बदा स्वतंत्र बास करनेवाले तुम्हारी यह रीति बिदितहै कि दुष्टोंको मारि भक्तोंको सुख देतेहो अरु खल रूपी बन के भस्म करने वाले व कोह रूपी बादल के पवनरूप होकर नाश करने वाले व सम्पूर्ण जगत् के हृदय को प्रकाशित करनेवाले तुम्हारी जयहो२ अरु हेदाशरथे देवताओं के ताप को हरनेवाले व दनुज कुल के नाश करने वाले तुम्हारी जयहो अरु देव बधुन के दुःख दायक दुराचारियोंके नाश कारक दनुजेंद्र रावण को अपने भुजाओं के बलसे परास्त कीन्ह्यो अरु यह जो आपकी शुभ कीर्ति जे कवि पण्डित् गान स्मरणकरेंगे तिनको संसारका जो भवबन्धनहै तेहिसे मोक्ष होंगे३

अरु हेजगत् के उत्पन्न पालन नाश करने वाले अपनी लीला बिस्तार करिकै भक्तन का क्लेश नाश करते हो अरु जन्म, जरा, मरण केदुःखसे परे महा बलवान् राक्षसों के नाश करने हारे धर्म्ममूर्ति न्याय धर्म में मन लगाये अरु प्राकृत दोषोंसे रहित तुम्हारी जयहो अरु हेदेवताओंके शिरोमणि आनन्द देनेवाले तुम्हारा नाम निश्चय करके पाप हारक है ५ अरु हेनाथ तुम्हारे कमल स्वरूपी चरणों की रज पायके मुनिपत्नी अहल्या उत्तमस्वरूप कोप्राप्त होतीभई अरु हेस्वामिन् तुम्हारे चरण कमलों का ध्यान अहर्निशि महादेवजी करतेहैं वही सम्पूर्ण आपदा हरनेवाले चरणों को जो जनस्मरण करतेहैं तेजनआनन्दपूर्वक इच्छानुसारफल पातेहैं ६ अरुहे प्रभो जब हम सब पातकों से दुःखित होतेहैं तब आप मदनमोहन रूप धारणकर संसार में अवतारलेकर उबार तेहौ अरु जब पृथ्वी में दुराचारी पाप कर्म्मी बढ़ते हैं तबतब उनको नाशकरिकै आनन्द देतेहो व पूर्णकृपा करिकै भक्तजनोंका दुःखहरतेहो, अज अव्यय अपनीइच्छानुसारी तुम्हारी अमृतसमान लीला संसार में छाइ रही है नारदादिक हृदय में धारण करके गावते हैं किप्रभुकेसकल चरित्र सबपापों के नाशकारी हैं अरु हेईश तुम्हारे गुणगण कीर्ति संसारमें मनुष्योंको सब प्रकारसे दुर्लभहै ८ ऐसीउज्वलकीर्तिसंसारमेंदेदीप्यमानकरके फिरनिज स्थान बैकुण्ठ कोप्राप्त होगे, अरु हे नाथ आदि अनादि शरीरके धारण करनेवाले व मस्तक

में मुकुटधारी व हृदय में हार बिहारी कोटिन कामदेव कीछबिको लजावन हारे प्रभु तुम देवताओं को अतीव सुखारी कियो अरु हे नाथ तुम्हारे चरणकमल सदैव शिवजी हृदयमेंधरिकै ध्यानकरतेहैं यहीसे विषम प्रकृति केगुणनको नाशकारी हैं ६। १० यहिप्रकार ब्रह्मादिक देवता अगस्त्य आदिक मुनिवर आनन्द से रामचन्द्रजी की स्तुति. करतेभये अरु फिरि देवताओंके दुःख दायक रावणकाबधबिचारिकै मानसेपरे सबदेवताप्रार्थनाकरते भये तब देवताओं की नम्रता पूर्बक बिनय सुनिकै व सम्पूर्ण देवताओंको मस्तक नवाये देख सर्बगुणाध्यक्ष रामचन्द्रजी मनोहर बचन बोलते भये ११। १२ कि हे देवतो तुमको हम बिशाल बरदेंगे जो इस समय यक्ष दिगपाल असुरों को दुर्लभ है यह महात्मा रामचन्द्र के बचन सुनकर देवतागण बोलतेभये कि हे स्वामिन् यहिसमय में हम आपकी पूर्णकृपा पायकै सबप्रकारसे सनाथहैं किजो सदैवका दुःखदेनेवाला हमारा शत्रुरा-वणतेहिको आपने बधकिया यहिसे सबअभीष्ट फल एक हीबार पूर्णहोगये तेहिपर जोआप बरदानदिया चाहतेहैं तो हमपरसनेह करिकै यहमांगेदेउ१३।१४कि जब जब दुराचारी असुरहमें दुःखदेइँ तबतब आप अवतारलेकर उनका नाश करतेरहो यह देवताओंकी बिनीत बाणी सुन एवमस्तुकहिकै सब पातकोंसे छुटानेवाले रामचन्द्र जीबोले १५ कि है देवतो सादर यहमेरीबाणीसुनो१६ कि जो तुम हमारी स्तुति व अद्भुत गुणों से मिश्रित

मेरा यश जो प्रातः काल पाठकरेंगे वेजन अवश्य भव बन्धन से मोक्ष ह्वैकै परमानन्द को प्राप्त होयँगे अरु जो जन आनन्दपूर्बक संसारमेंपढ़ैं व सुनैंगे अथवास्मरण करैंगे तिनको स्वप्नमेंभी विपत्ति पराभव नहींहैअरु व्याधि दरिद्र भी कभीनहीं होगा अवश्य करकेमेरे चरणों की भक्ति पावैंगे १७ । १८ अरु जो देवतादि सहित प्रेम से यह स्तुति पठैंगे सो अहर्निशि आनन्द में मगन रहैंगे १६ ऐसे बचनकहिकै राजाओंके शिरोमणि रामचन्द्र जी चुपाइ रहे तब सब देवतादि ऋषीश्वर चरण कमलों में मस्तक नाय २ कैआनन्द पूर्बक अपने २ लोकको जाते भये २० श्रीशेषजी बोले किहेमुने यहि प्रकार हम देवताओंकी स्तुति तुमसे कथनकि या अब यशस्वीरामचन्द्रके राज्यकी कथासुनो कि महात्मा रामचन्द्र जी भाइन में व प्रजा में पुत्र समान प्रीति करकेपालन करते रहें २१ अरु त्रिभुबनपतिरामचन्द्र की प्रभुताई देखिकै अल्पमृत्यु रोगपराभव आदिपीड़ा कुछ नहीं व्यापति रहै सबजन बैररहित सुखकरतेथे २२ राम काराज्य पायकै सब वृक्षादि फलके सहित झूमते हुये मानों पृथ्वी को स्पर्श ही किये लेतेहैं व सब जन सपरि वार आनन्दसे रहतेथे २३ अरुराम राज्य बिषे स्त्री जन पति बियोग के दुःखको नहीं पातीथीं अहर्निशि रामचन्द्रके गुणगान करतीथीं २४ अरु कोईजन पराये गुणोंका दोष निन्दा आदिक कबहूं नहीं देखतेरहैं व पाप कर्म्म काबिचारस्वप्नमें भीन करतेरहैं संतत रघुनाथ

जीका भय मानिकै कर्म्ममन बाणीसे पाप नहीं करतेथे अरु श्रीरामचन्द्र का चन्द्रवत् मुखारबिन्द देखिकै सम्पूर्ण नरनारि शोकसेरहित आनन्द रहतेथे २५।२६ यहि प्रकार करुणामय सकल लोकनमें बिनश्रम राज्य करते थे अरु ऋषि मुनि आनन्द पूर्बक अहर्निशि नगर में निबास करतेथे व सब अयोध्या बासी हाटक में भूषण बसन सहित प्रसन्न चित्त २७ धर्मकी राहमें मति प्रकाशित कियेहुये बास करतेथे अरुपृथ्वी निरन्तर कृषी करके सम्पन्न शोभित होतीथी तेहिके अर्थ किशान लोग जंगलमें बास करतेथे २८।२९ रामचन्द्रकेराज्य में घर घर प्रति मंगल बास रहतेथे व अन्न तृण असंख्य पैदा होताथा तेहिसे गो ब्राह्मण सुख करतेथे३० अरु रामचन्द्रजी के राज्यमें अगिनित देवता बिचराकरतेथे ग्रामग्राम बिषे यज्ञस्तम्भ रुचिर बितान शोभितहोरहेथे सबवृक्ष फूलफल दायक होगयेसरवर बायु सम्बन्धसे छबि को प्राप्त होतेथे उज्वल जल से सब नदो नद बहने लगे अरु सब नर नारि दम्भ पाषण्ड रहित बास करतेथे ३१ । ३२ अरु धन से तो समस्त अयोध्याबासी समानहीथे पर अपने अपने वर्ण आचरणसे भिन्न भिन्न सूचित होतेथे व सम्पूर्ण पण्डित् जन नम्र चित्त होतेथे अरु चंचलता केवल स्त्रिनमें होती थी ३३ अरु कुटिलता केवल नदिन में थी व सब नर नारी क्रोध ईर्षा त्याग किये रहतेथे अरु तमोगुण करके युक्त एक रात्री तो होती भई और समस्त जन तम

रहित होतेभये ३४ अरु रजोगुण युक्त स्त्री तो होतीभई और पुरुष रजोगुण से रहित होते भये अरु सब अयोध्याबासी धनके मदसेरहित व भोजन स्वाधीन करके निवास करतेथे ३५ अरु नीति रहित रथतो होते भये कि चाहे जैसो चलाये जावें व राज पुरुष सबनीतिवान् होतेभये अरु दण्ड तो परशु,कुदार,पंखा, शत्रु छत्र इनके विषे होताथा अन्यत्र किसी को नहीं ३६ अरु बिषयको कोई नर नारि न देखतेथे सब रघुनाथ जी का रूपही देखतेथे ३७ अरु पाश तो केवल पांसा खेलनेवालोंके हाथहीमें देख परतेथे अर्थात् पाश बन्ध दुःख किसीको नहीं मिलताथा अरु जड़ता केवल जल हीमें होती भई अन्यत्र नहीं व दुर्बलता केवल स्त्रिनके कटिहीमें होतीथी ३८ अरु कठोरजन रामचन्द्रके राज्य में कोईनहीं थे कठोरता केवल स्त्रिनके कुचनमें होती भई अरु कुष्टरोग औषधियों के सिवाय किसी नर नारिनमें न होताथा ३९ व छिद्र केवल मणिनहीमेंथा अपर किसीमें नहीं व शूल केवल देवतों के हाथमेंथा और किसी को नहीं व्यापताथा अरु दयाकेभावसे चाहे हृदय कम्पाय मान भीहोय पर भयसे नहीं कम्पित होताथा ४० अरु नर अहर्निशि निष्काम रहतेथे व पाप दरिद्रका दुःख सब प्रकार से नाशको प्राप्त होताभया व सम्पूर्णबस्तुको सबजन रामचन्द्र की कृपासे प्राप्त हुये ४१ अरु ऐसे मदमें प्रमादित कोई नहींथा अर्थात् युद्ध जलमेंभीन होताथा व दानकी क्षीणता सम्पूर्ण

नगर में कहूंनहीं देख परतीथी व तीक्ष्णता केवलकांट-
नें में रहै अपरमें नहीं ४२ अरु गुणका परित्याग
केवल चाप मेंथा अन्यत्र नहीं व मजबूतबन्धन पुस्तक
केसिवाय अपरमें नहीं अरु स्नेहका शोक दुष्टन में
था कहीं सज्जननमें नथा ४३ यहिप्रकार यशस्वी श्री-
रामचन्द्र जी राज्यका प्रतिपाल करतेहुये धर्म्मके सदैव
रक्षाकरनेवाले व दुष्टनके नाशकारक ग्यारहहजार
बर्ष धर्मनीति संयुक्त सुखधाम रामचन्द्रजी राज्य करते
भये ४४ । ४५ तदनन्तर क्षुद्र रजक के बचन सुनिकै
श्रीसीताजी को त्याग करते भये, तबभी तिनकेबिना
धर्मसहित अयोध्याबासिन को सुखदियो ४६ । ४७
तदनन्तर एक समय श्रीरामचन्द्र सभा गृहमें बैठेथे
उसी अवसरमें ऋषिकुलतिलक जिनकी कीर्ति श्रुतिन
में गाईहै अरु जिन लीलामात्र महासमुद्रको पानकरि
गयेथे ऐसे मुनिराज अगस्त्य जी आते भये ४८ तिन
महात्मा मुनिराज को कौशलाध्यक्ष श्रीरामचन्द्रजीने
गुरुबशिष्ठ सहित उठिकै अर्घ्य पाद्यदेकर स्वागत पूछते
भये कि हे स्वामिन् सब दुःखसे बिगत तो है। तदन-
न्तर आसनस्थ करिकै बोलते भये४६ । ५० ॥ इतिश्री
पद्मपुराणेपातालखंडे रामाश्वमेधभाषायांशेषवात्स्यायन
सम्वादेदेवस्तुतिवश्रीरामराज्यवर्णनतथाअगस्त्यसमाग
मो नाम पंचमोऽध्यायः ५ ॥

———*———

छठवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले कि हे मुने जब मुनिवर अगस्त्य जी श्रीरामचन्द्रजी की सभामेंसुशोभितहुयेतबरघुकुलभूषण श्रीरघुनाथजी फिर स्वागत पूछिकै कहतेभये कि हे ब्रह्मचर्य्य तपोनिधे जगत्पूज्य हम तुम्हारे सब प्रकारसे अनुगामीहैं व तुम्हारे दर्शन पायकै हम सब परिवार सहित निर्मल होगये १।२ अरु वेद शास्त्रके जाननेमें निपुण, तुम्हारे तपोबलमें बिघ्न करनेवाला संसारमें कोई नहींहै, व जाके घरमें पतिव्रता स्त्री होतीहै तेहिको स्वप्न में भी दुःखनहीं प्राप्तहोतहै फिर आपके यहांतो धर्मचारिणी पतिव्रतोंमें श्रेष्ठ लोपामुद्रा आपकी नारीहै यहिसे आप धन्यहैं ३।४ अरु हे महाभाग धर्म स्वरूप दयासिन्धु हम गृहस्थाश्रम के बासी विषयमें आशक्त तुम्हारा सुखदायक आगमन हमको सदैव दुर्लभहै व हेस्वामिन् जो हमको आज्ञाहोय सो कहो हम तुम्हारे सब प्रकारसे अनुगामीहैं, व तपोबलसे तो आपके सब मनोरथ पूर्णहीहैं तथापि मेरेको अपना आज्ञाकारी जान कुछ कहिकै हे कृपार्णव सनाथ करो ऐसे बिनीत वचनकहिकै श्रीरघुनाथजी मस्तक नवावते भये ५।६ श्रीशेषजीबोले कि हे वात्स्यायनअगस्त्यजीत्रैलोक्यगुरुरा-जराजेन्द्र धीमान् श्रीरामचन्द्रजीके बिनीत वचन सुनिकै दोऊहाथजोरिकै श्रेष्ठवचनबोलतेभये७कि हे कृपानिधि बिश्वनाथ तुम्हारे दर्शन ब्रह्मादिक देवताओंको यहिसं-

सार में दुर्लभहैं सो हम पायकै आज सबप्रकारसे कृतार्थ होगये ऐसे बचन कहिकै फिर मुनिराज आनन्दित ह्वैकै बोले कि हे स्वामिन् देवताओं के सुख देने हारे तुमने देवतोंके कंटक दुःखद रावण को बध कियो यहिसे सुखसे परिपूरित समस्त देवताओं को देख्यों व प्रभु भक्त बिभीषण को राज्य सिंहासनमें देखिकै आनन्द को प्राप्तभयों ८। ९ अरु हे नाथ तुम्हारेदर्शन पायके हृदयसे सम्पूर्ण दुःखकृतोंका समूह क्षीण होजाता भया यह कहिकै कुम्भोद्भव अगस्त्यजी मौन ह्वैकै श्रीरामचन्द्रके दरशके आनन्दमें प्राप्त होकर श्रीरामकी छबि देखिकै तेहि अवसर ऋषिनाथ बिह्वलहोजातिभये तब मुनिनाथ को रघुपतिने सर्बज्ञान बिशारद देखिकै चरणोंमें माथ नायकै बोले १०।११।१२ हेमुनि त्रिकालके ज्ञानी हमारा संशय शोक भ्रम नाशकरो व दीनदयाल, मुनिनायक, सहित बिस्तारके यह व्याख्यान कहो कि रावण कुम्भकर्ण दोऊरणघोर जो हम करिकै समरमें मारेगये तिनको कौन ज्ञाति बर्गहै देवताहैं कि राक्षस, कि पिशाच, कि मनुष्य,कौनबंशमें उत्पन्न भयेहैं १३।१४ सो हे त्रिकालके जाननेवाले अपना जन जानिकै यह मनोरथ पूर्ण करो जेहिप्रकार मोर संशय नाश होय यहि बिधि रघुनाथजीके बचन सुनिकै अगस्त्यमुनि बोलतेभये१५।१६कि हेभूपशिरोमणि मन भावनो आख्यान सुनो कि संसारके मूल ब्रह्माजीकेपुत्र पुलस्त्य मुनि तिनके ज्ञानबिशारद बेद

बिद्या में निपुण बिश्वश्रवा भये १७ तिनके दुइ पतिव्रता
स्त्री एक मन्दाकिनी दूसरी कैकसी होती भई १८ मन्दा-
किनी के पुत्र इन्द्र, उपेन्द्र, समान सुखीकुबेर हुये तिन
सदाशिवके प्रसादसे सुवर्णमयी लंकापुरी प्राप्तकी
अबकैकसीकी कथा सुनो विद्युनमाली राक्षसकी कन्या
थी तिहिके तीनपुत्र रावण, कुम्भकर्ण, तथा पुण्यवान्
धर्म्मात्मा विभीषण उत्पन्न हुये १९।२० तिनका जन्म
राक्षसोंके उदरसे दिवस अन्तसन्ध्या समयमे होताभया
तहां रावण, कुम्भकर्ण, तो पापकर्म्मी देवतोंके दुःख
दायक हुये २१ तदनन्तर एक समय में धनाध्यक्ष
कुबेर पुष्पकयानमें सवार होकर तोरण ध्वजापता-
काओंसे शोभित व सब गणन करकेसेबित अपने पि-
ता बिश्वश्रवाके दर्शनोको जातेभये, आयके चरणोंमें
परिकै बिह्वल होजाते भये २२।२३ तब पिताने पुत्रको
चरणोंमें देख मुदित ह्वैकै आशीर्वाद दियो तबगद्गद
गिरासे कुबेरजी पिताकी स्तुति करते भये कि हे पिता
तुम्हारे चरणकमलोंको देखिकै मेरात्रयतापदूरहोगया
मैं आज धन्यहोकर मेरा भाग्य उदय भया व तुम्हारे
चरणों को देखिकै मेरा जन्म उज्ज्वल होगया २४।२५
यहिप्रकार कुबेर पिताकी स्तुति करिकै आनन्द पूर्वक
अपने भवनको जातेभये तब पुत्रका शील स्नेह देखि-
कै बिश्वश्रवा प्रसन्न होजाते भये २६ तब रावण कुबेर
की प्रभुताई देखिकै अपनी मातासे पूंछताभया कि हे
माता देवता, यक्ष, गन्धर्व, मनुष्यनमें यह कौनहै जोमेरे

पिताकी बन्दना करिकै आनन्द पूर्वक व महाभाग्यवा-
न् बिभव निधि सैन समेत कौने सुकृतसे मनोज व रूप
बिमान प्राप्त किया व बिपिन बाटिका सुखद पल्लव में
बिलास करताहै २७।२८। २६ श्रीशेषजी बोलेकि हे मुने
यहिप्रकार रावण के बचनसुनिकै कैकसी नैन तरेरिकै
क्रोधातुर ह्वैकै बोलती भई ३० हे पुत्र मेरीबाक्य सुन
मैं शिक्षाकरतीहैं। कितुम्हारे सब दिनब्यर्थब्यतीत होते
हैं ३१ अरु यह मन्दाकिनी का पुत्रकुबेर कुलका उज्ज्वल
करने हारा व सबबिधिसे कलत्र को उजागर करिकै
माता पिता को सुख देताहै ३२ अरु मेरे उदरते तुम
कीट समान अपनी देहकेरक्षक मतिमन्द उत्पन्न भयो
जैसे गदहाको अपने भारका ज्ञान रहताहै वैसेही तुम
सबको शरीर सुखके सिवाय औरसे कुछकाम नहीं रहता
याती अपना २ पेट भरिकै सोवा करतेहौ अरु तुम्हारा
पुरुषार्थ मैंने देखलिया कि रातिभरि सोयकै सबेरे उठि
कै पेटभर लेतेहौ ३३।३४ देखौ कुबेरने अपने तपोबल
सेसदाशिवकोसंतुष्टकरिकैवायुकेसमानचलनेवालाबिमा-
न व सुवर्ण मयीरत्नोंसे भूषित लंका प्राप्तकरिकै राज्य-
करताहै अरुउसकी माताकोधन्यहै जेहिकापुत्रशीलवान्
गुणवान् मातापिताका भक्तहोताहै ३५।३६ यहिप्रका-
र माताके क्रुद्धित बचन सुनिकै दशाननकीबुद्धि चलाय
मान होतीभई व अपना पुरुषार्थ हृदयमें सम्हारिकैमा-
तासों बोलताभया ३७ किहेमाता तुम्हारा गर्भ संसार
में रत्ननिधिके समानहै तेहिते हमतीनिपुत्ररत्नवत् उत्पन्न

भयेहैं कीटके समान तुम कहा कहतीहौ, अरु हे माता लघुलंका थोड़ी सैनाको क्या प्रशंसा करतीहौ चित्तमें उत्साह करिकै मेरेबचनसुनौ कि बिना सहायी जोमैं करिहौं सो अभीतक कोहूं न कीनहोई चौदहौ भुवन में अपने वशकरि तुमको सुखदेऊंगा हेमाता तेहिसे स्वप्न में भी तुमशोच न करौ मैंब्रह्माजीका महाघोर तप अन्न जल निद्रादि रहित करिकै प्रसन्नकरिहौं अरुजो इतना न करौंतौ पिताके वचन उल्लंघन करनेका पापभागी होऊं ३८।३६।४० अगस्त्य जो बोले कि हेरघूत्तम यहि प्रकार प्रतिग्याकरिकै दोनों भाइनसहितदशमुखरावण महाघोरवनमें गया वहां जायकै अति दुर्द्धर्ष तपस्या करने लगा न कुछ खाताथा४१।४२।४३॥ इतिश्रीपद्म पुराणेपातालखण्डे रामाश्वमेधेभाषायांशेषवात्स्यायनसम्वादेरावणोत्पत्तिर्नामषष्ठमोऽध्यायः॥ ६॥

सातवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले कि हेमुनिराज रावण कुम्भकर्ण बिभीषणचरणतो आकाशमें लगाये व शिर पृथ्वीमें धरिकै जगन्नेत्र सूर्य्यनारायण के सन्मुख दृगजोरिकै अतिउग्र तप दशहजारवर्ष करतेभये व महात्मा बिभीषणनेपुरुषोत्तम में ध्यानकिया १।२ श्रीअगस्त्यजीबोले कि हे रघुराज यहिप्रकार महादुर्द्धर्ष तपस्या करतेदेखसचराचरनायक प्रजापति ब्रह्माजी उनके समीप आयकै आनन्द पूर्वक प्रसन्न ह्वैकै बरदान देतेभयेकितुम त्रिभु-

वनके राजा महाबलवान् हो अरु तपस्यासे क्षीणदेह देखिकै अतिमनोहरकरिदेतेभये३।४यहिप्रकार बरदान दैकै ब्रह्माजी अपने स्थानको चलेगये,तदनन्तरसम्पूर्ण बिश्व अपने आधीन जानिकै अपनी माताके बचनोंका स्मरण करिकै पहिले ज्येष्ठभ्राता कुबेर के यहांकोचला महाबलवान् यक्षपति को बिनप्रयास रावणने जीतिकै पुष्पकयान सहित सुबर्ण मयी लंकागढ़ हठकरिकै छीन लेताभया ५ अरु सब संसार कोतो अपना करिकै छोड़ि दिया व देवताओंके जीतनेकी भी अभिलाषा किया व ब्राह्मण ऋषि मुनियों को दण्डदैकर निकालदेताभया६ तदनन्तर इन्द्रादिक देवता ब्याकुल ह्वैकै ब्रह्माजीकी शरण में जायकै नम्रता पूर्वक अनेक नामोंसे स्तुति करिकै ६।७ते सब देवता ब्रह्माजीकोप्रसन्न करतेभयेतब प्रसन्नित ब्रह्माजीबोले कि हेदेवतो तुमकेहिकारण ब्या कुलहो तब सब देवताओंने जेहिबिधिदुराचारी रावणने कष्टदिया सो सबकथा दुःखित ह्वैकै कह्यो ८।६ तब ब्रह्माजीने बिचार करिकै सब देवताओं सहित कैलाश कोगये वहां जायकै परमप्रकाशित बिचित्रित कैलाशको देखिकै अपने स्वार्थ में निपुण सुरेन्द्र सदाशिवजीको प्रणाम करिकै स्तुति कियो कि हेनीलकंठ देवगन्धर्व सब तुम्हारा प्रणाम करतेहैं१०।११ स्थूल सूक्ष्मतुम्हारे अनेकरूपहैं मैं अबिबेकी केहिप्रकार बन्दनाकरौं हेदीन दयाल शक्तिमान ईश्वर रक्षाकरौ रक्षाकरौ देवताओंकी यह बिनयसुनिकै सदाशिवजीनेनन्देश्वरसेमनोहरबचन

कह्यो किशीघ्रजाउदेवता आरतहैं बुलाइलाओ १२।१३
देवताओंनेआज्ञापायकै शिवजीकेमन्दिरको प्रवेशकियो
मन्दिर को अतिरम्य देखिकै देवता बिस्मितभये तब
सदाशिवने दर्शनदियो १४ तहां कोटिनगण नग्नविरूप
कुटिल बिकटानन आदिगणोंसे सेबित कपाली ब्याली
सदाशिवजीको सब देवताओं सहित ब्रह्माजी प्रणाम
करतेभये फिर स्थिरहोइकै सबदेवताओंका दुःखबर्णन
किया १५। १६ कि हे दीनदयाल हम तुह्मारी शरणाग
तहैं कृपाकरौ हे शरणागत बत्सल दुःखद दुराचारी
रावण के बधकाउपाय चित्तमें धरिकै सम्पूर्ण देवताओं
को निर्भय करो १७ रावणके भयसे पीड़ित देवताओं
कीवाणीसुन सदाशिवसबको लैकै क्षीर सिन्धु के समीप
पुरुषोत्तमनिर्बिकार के पास जायकै पुलकितगात स्तुति
करते भये कि हे देवेश माधव दयाकरिकै अपनेजनजा
निकैदुःखकोदूरकरो १८। १६ हेकरुणाकर दासनके
दुःख हरने वाले संसार से मुक्त करनेवालेसुरनायक
स्वामी कृपाकरिकै रक्षाकरौ हे प्रभो हम सब प्रकार
से आरत हैं रावण असुराधिपके ताड़नेसे २० श्री
शेषजी बोले कि हे मुने यहिप्रकार सबदेवताओंनेबड़े
ऊंचस्वरसे पुकारा किहेमहाप्रभु कृपाकरिकै रावणका
नाशकरौ २१ तेहि अवसर विषे मेघके समान गम्भीर
शब्दहुआ तेहिको सुनिकै सब देवता निर्भयहोगये कि
हेशिव ब्रह्माइन्द्रादि देवतो मेरी वाणीको सुनिकै दुःख
दूरकरौअरुजो तुमकोरावणके भयसेदुःखहै सोमैंअवतार

धरिकै नाशकरिहौं २२ । २३ अयोध्या पुरी सूर्य्यवंशमें प्रजाको पुत्रसमान पालनेवाले विद्यमान राजादशरथ के ऐश्वर्य्यतो अनेकप्रकार केहैं परन्तु पुत्र उनकेकोईनहीं इसकारण वे उक्तशृङ्गीऋषिकी आज्ञासे पुत्रार्थ यज्ञ करतेहैं, अरु उनमहात्माने पहिलेही हमको तपोबलसे प्रसन्नकरके बरलियाहै सो हेदेवतो मैं उनका मनोर्थ पूर्णकरके तुम्हारीभयदूरिकरिहौं अरु उनकी पतिव्रता तीनोंस्त्री पुत्रभावकी याचना करतीहैं सो मैं चारिअंश अर्थात् राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुहन व सब गणनसहित अवतारधरिकै सकुटुम्ब दुराचारी रावण को मारिकै सब देवताओंको उद्धारणकरिहौं हे इन्द्रादिकदेवतो तुमहूं हमारीलीला के अर्थ संसारमें बानर भालुके अवतार धारणकरौ २४ । २८ श्रीशेषजी बोले कि हेवात्स्यायन ऐसेबृचन कहिकै आकाशबाणी मौनह्वैगई तब सब देवताओंने अभयबाणीसुनिकै अतिआनन्द को प्राप्तभये श्रीअगस्त्यजी बोले कि हे रामचन्द्रजी सब देवताओंने पुरुषोत्तम की आज्ञापाय के अपने २ अंशनसहित पृथ्वीतलमें भालुकपिरूप धारण करतेभये २९ । ३० अरु श्रीपतिदेवोंकेदेव सबदेवताओंके दुःख नाश करनेवाले राजाओंकेराजा तुमहौ व बुद्धिमान् ऐश्वर्य्यवान् तुमतेपरे और कोईनहींहै अरुभरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तुम्हारेहीअंश हैं वदेवताओंका दुःखदायी रावण तुम्हाराही सेवकहै, अरु पूर्बजन्मके बैरसे सीताजीको हरण किया, तब तुमने बधकरिकै संसारमें यशलिया, अरु उसकीजातितो ब्रह्म

राक्षसकीहै परन्तु पुलस्त्य मुनिकानातीहै अगस्त्यजी बोले कि हे राजन् उसदुःखदायो महाशठ रावणकोबध सुनिकै देवता, ब्राह्मण, तीर्थ, आदि सम्पूर्ण जगत् सुखीभयो अरु तुम्हारे राज्यमें सब चराचरोंकी सम्पूर्ण पीड़ा दूरहोगई, हेरघुराज जो तुमने हमसे पूछा सो हम रावण जन्म मरणादिकथा अपनीमतिके अनुसार बर्णन किया, रावणारि श्रीरामचन्द्रजी यहिबिधिके बचन सुनिकै मलीन चित्तहोकर दुःखितहोगये फिर अति ब्याकुलतासे कंठ सूखगया व नेत्रोंसे जलबहनेंलगा बिह्वल गातसे पृथ्वीमें गिरकर त्रिभुवनपति मूर्च्छित होगये, अरु ब्राह्मणका बंश जानिकै अधीर्यहोकर आपको अभाग्य मानिकै तनकी दशाको भूलगये जैसे सर्पमणिबिहीन बिह्वल होजाताहै वैसेही महात्मा श्रीरामचन्द्र जी ब्याकुल होगये शेषजी बोले कि हे मुने ब्राह्मण बध के मोक्षार्थ व सब संसारके हितको अश्वमेधयज्ञ किया चाहतेहैं ३१। ३८ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेरामाश्वमेधभाषायां शेषवात्स्यायनसम्बादे रावणोत्पत्तिर्नामसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले किहे वात्स्यायननिर्मलअघनाशिनो कथासुनो कि जब महात्मा ब्रह्मभक्तधर्म्मके रक्षकश्रीरामचन्द्रजीको मूर्च्छित देखिकै अगस्त्यमुनि बिकलह्वैकै अरु अपने भुजनसे रघुनाथजी को सम्हारिकै बोले कि

हे राजन् तुम ग्लानि त्यागकरौ तुम्हारा अवतारही दुराचारी दुष्टोंको नाशकरने के कारण हुआहै व सब चराचर भूतोंमें तुम्हाराही सत्ताहै, केहि कारण मूर्च्छित होतेहौ १।५ अगस्त्यजीके यह वचन सुनिकै महात्मा रघुराज श्रीरामचन्द्रजी नयनोंसे जल बहताहुआ शिथिल शरीर बिह्वल गातसे विकल ह्वैकै बोले किहे कुम्भज मैंने ब्रह्मदोषते धर्मको बिमुखकियो अरु मेरीमूढ़ता देखौ कि कामके बशहोकर बिप्रबंश संहारकिया व- जो हमारे कुलमें धर्मात्माइक्ष्वाकु आदिरणधीर बीर हमकरके कलंकित हुये अरु जो हमारे दानमानयोग्य ब्राह्मण तिनको मैंने महाघोरबाणोंसे मारा, यहिप्रकारके महापापों करके कौन २ लोकमें जायकै कुम्भीपाक आदि दुःखदायी नरकोंका दुःख भोगकरूंगा अरु जो पृथ्वीतलमें ऐसे सामर्थ्य कोई तीर्थभी नहींहैंजो मुझको इस महापापसे निवृत्तकरैं ६।११ अरु जप तप दान देवमूर्तिपूजन आदिके करनेवाले भी द्विजद्रोहकरिकै नहीं मोक्षहोसक्के अरु जिन मनुष्योंने ब्राह्मणोंको दुःख दियाहै उन्हींको अन्तकालमें यमदूत ताड़ना करतेहैं अरु सबधर्मोंकामूल श्रुति श्रुतिमूल ब्राह्मण तिहिको मैंने कुलसमेत बधकिया, यहिपापसे न जानो कौन लोक प्राप्तहोय हे घटोद्भव अब हम कौनउपाय करैं जेहिसे यहकलंक नाश ह्वैकै उभयत्र मंगलहोय१२।१५ ऐसा कारुणिक बचन कहिकै पुरुषोत्तम बिलाप करते हुये मनुष्य चरित्र करतेहैं तब अगस्त्यमुनि बोले कि

हेनाथ तुम वृथाबिलापकरतेहौ तुमको बिप्रबधदोष नहीं लगसक्तातुमने अवतारलैकै दुष्ट कामियोंको बधकरिकै पृथ्वीका भारउतार भक्तोंको सुखीकियो, अरु तुम पुरुषोत्तम जगदीश सबकालके देखनेवाले व सबबिश्वको सुख देनेवाले व आपही बिश्वको उत्पन्न करते व रक्षा करते व संहार करतेहौ व त्रिकालके ज्ञानी सदैव आनन्दित प्राकृत गुणनसे रहित व निर्मल गुणोंकरके सम्पन्न दीनदयाल करुणाकर सदैव स्वतंत्र रहनेवाले तुम अपनेमनमें व्यर्थ शोकमानतेहौ अरु मदिराके पान करनेवाले व सुवर्णके चोराने वाले आदि महापापी तुम्हारा नाम लैकै क्षणमें महापातकोंको दूर करतेहैं अरु जनकसुता तुम्हारीभार्य्या रमास्वरूप हैं उनके सुमिरणसे महापाप दूरहोतेहैं, अरु हे महाराज पुराणोंसे प्रसिद्धहै कि रावण तुम्हारा सेवक जय बिजयहै तिनको एक समय बिषे सनकादिकोंने शाप दिया था उसीसे असुरदेहको प्राप्तभये तिहिपर आपने अधमजानि अनुग्रहकरिकै अपने चरणोंकी भक्तिदियो यह समझकर शोचबिहायकैहे कृपासिन्धु धैर्य धरो यहि बिधि मुनिके बचन सुन सुखधाम रामचन्द्रजी गदगद गिरासे बोलते भये १६। २३ हेमुनिराज श्रुतिमें दो प्रकारके पातकहैं उसमें ज्ञान अज्ञानका भेदहै ज्ञान पाप वहहै जो जानिकै करै व अज्ञान पाप वहहै जो बिना जानेकरै अरु जो जन जानिकै पापकरतेहैं सोतो बिना भोगकिये नहीं दूर होते व जो अनजानत अज्ञान

से करै उसका उपाय श्रुतिमेंहै तेहिसे हे मुनीश्वर मैंने यह महापातक बिना जानेकियो यहिसे उपाय कहो जेहिसे शीघ्र ब्रह्मपाप दूरहोय अरु दान यज्ञ तीर्थ, सेवकाई आदिजो आप कहैं उसका उपाय मैं करौं जेहिसे सब संसार को निर्मल करनेवाली मेरी कीर्ति उज्ज्वल होय, अरु जगत्में जिनको बिप्रबधादि महापातकलगें उनको मेरासुयशसुनतेहीमहापातकदूर होय यहिबिधिके बचन कहतेहुये श्रीरामचन्द्रजीसे तपोनिधि अगस्त्य जी बोले हेराम सुर नर असुर आदि सब सदैव तुम्हारी आरती करतेहैं अरु ब्रह्मपापके नाशनेवाले मेरे बचन सुनिकै उसको सबिधि रचना करौ २४।३० कि जो पुरुष अश्वमेध यज्ञ करतेहैं उनके सब पातक नाशहोतेहैं,तेहिसे संसारके हितार्थ तुमहूं अश्वमेध यज्ञकरो हे रघूतम तुम सैन्यबल सब बस्तुओंसे भूषितहौ यहिसे अवश्यही यज्ञकरो हे महा राज पूर्वकालबिषे राजा दिलीपने यज्ञकियो व फिर इन्द्रने सौयज्ञकियो उसीके प्रतापसे देवता दानव सब सेवा करतेहैं फिर मनु,सगर, आदि राजाओंने किया अरु नहुखने करिकै स्वर्ग राजप्राप्तकियाथा अब तुम सब प्रकारसे सामर्थहौ व तुम्हारेभाई सब तुम्हारी आज्ञा मानतेहैं यहि बिधिके बचनसुनिकै श्रीरामचन्द्रजी ब्रह्मपापसे भयमानिकै मुनिसे बोले हेमुने सब अश्वमेध यज्ञका बिधान आप कथन करैं सो हम यहि समयमें शिर धरिकै करैं हेमुनि राजतुम सब बिधि से उदार

हो यहि बिधि कौशलाध्यक्ष बारंबार कहतेहैं अरु हे नाथ गुरु पण्डित अपने जनको दीनजानि कृपा करतेहैं यह विचारिकै आप कृपा दृष्टिसे हित करिकै कथन करौ ३१।३७ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेरामाश्वमेधभाषायांशेषवात्स्यायन सम्बादेरघुनाथस्य अगस्त्य उपदेशो नामा ऽष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोलेकिहे बात्स्यायन फिरमहात्माश्रीरघुनाथजीनेपूछा कि हे अगस्त्यजी अश्वमेध यज्ञका अश्व कैसा चाहिये केहिबिधिसे उसको पहिचानिये व यज्ञ कर्त्ता समर्थ आदि सब वृत्तान्त हमको सुनाइये, तब अगस्त्यजी बोले कि हे रघूत्तम अपने सुखद प्रश्न का उत्तर श्रवण करो देहतो गंगाजलके समान उज्ज्वल अरुणमुखकर्ण श्याम मुखरक्त पूंछपीली बायुकेसमान बेग उच्चैश्रवाके तद्वत् सबस्थानोंमें जाने आनेकी सामर्थ्य ऐसा अश्वचाहिये अरु निर्मलबैशाष मासमें एक दिन पूजाकरके व उसके मस्तकपर कनक पत्रमेंअपने बल बिभवके चिह्न लिखिकै यत्न समेत छोंडै व उसके साथ महाबीर रणधीर सैन्य उसकी रक्षार्थर है जहां कहीं बल गर्बित राजा लोग घोड़ा बांधें उनको परास्त करैं यहि प्रकार एक बर्ष पर्य्यन्त अश्व पृथ्वीतलभ्रमण करै व तुमबिधिसेनियमपूर्बक ब्रह्मचर्य्य हवैके मृगचर्म व यज्ञको अवधिपर्य्यन्तअक्षपदान दीन

अन्ध, बधिर, आदिकनको देउ व अन्नदान सबको देना चाहिये चाहे कृपण भीहो व ऋषिनको अनेकदैकै बिमल कीर्ति प्रकाशित करो॥१६यहि प्रकार यज्ञसेपाप को दूरकरिकै निर्मल यशको प्राप्तकरौ हेरघुबीर तुम सब प्रकारसे समर्थ हौ अवश्य करिकै यज्ञकरो यह सुनिकै रघुनाथ जी बोले कि हे मुनिराज शुभलक्षणसे भूषित अश्व यज्ञकेलायक हये शालामें चलकर देखिये, करुणाकर मुनिनाथ ऐसे रामचन्द्रजीके बचन सुनिकै उनकेसाथ शालामें जायकै देखते भये कि कहूं तो बिचित्र मनोजवरूप अरुण बदनवाले कहूं श्याम करण वाले व कहूं कस्तूरी प्रभासी देह वाले वकहूं नीलवर्ण वाले यहिप्रकार मुनिवर सबवर्ण के अश्वोंको देखिकै बिस्मित हुये व फिर उनको देखते भये मानों श्रीरामचन्द्रजी को कीर्ति के तनुधरेहैं अरु फिर अपर शालामें जायकैयज्ञके लायक हजारन देखते भये१०॥१८यज्ञके लायक रुचिर अमित अश्वदेखिकै अगस्त्यजी बिस्मयबश तनपुलकित ह्वैकेआनन्दसेउन को देखते भये वैसेही देह दूधके समान, मुख अरुण॰ कर्ण श्याम पूंछ पीली सब सुलक्षणों से लक्षित मनो जव रूप सबहय कीर्तिनिधि देखिकै रघुनाथजीसेबोले१६।२२कि हे पुरुषोत्तम तुम्हारे बाजी देखिकै नेत्रतो तृप्तनहींहोतेफिर उपमा कहि बिधिकहिसकैंअरु हे नाथ सुरासुर वन्दनीय तुम बिस्तार पूर्वक अश्वमेध यज्ञ करिकै निर्मल यश पृथ्वीतलमें बिस्तार करौ जेहि प्रकार

इन्द्रने अमित यज्ञ करिकै जैसे दिवाकर तमकोना
श करतेहैं वैसेही सब शत्रुओंका नाश किया तैसेहीतु-
म यज्ञकरिकै संसारमें कीर्ति प्रकाश करिकै पृथ्वीका
भोग करो २३।२५ मुनिराज के यह बचन सुनिकै आ-
नन्दित होकर सब यज्ञकेपदार्थ मंगाये शिल्प कारोंके
सहित सब सामग्री आगई तब मुनिराज सहित श्रीरा-
मचन्द्रजी सरयूजी निकटगये, जायकै मुनिकी आज्ञा
से सुवर्ण के हलसे चारियोजन पृथ्वी यज्ञार्थ शुद्धकर-
ते भये तेहिबिषे बिचित्र रचना करी मंडप बितानबि-
धिवत् कुण्ड मुनिबरगुरुवशिष्ठ अपनेहाथसेवेदस्मृतिशा
स्त्रकेअनुकूलऋचाओंसेयज्ञस्थलनिर्माणकरतेभये २६
३० तब महात्मा बशिष्ठजीने अपनेशिष्योंको बुलायकहा
कि मुनियोंसे जायकरकहो कि श्रीरामचन्द्रने अश्वमेध
यज्ञप्रारम्भ कियाहै सो हे नीति निधानकृपाकरिकै
यज्ञस्थान को सुशोभित करो यह बशिष्ठके बचन सुनि
कै सबशिष्य मुनियों के स्थानको गये सुनतेही सब
केसबआनन्दितहोकर दर्शनोंकी लालसाकिये आनेलगे
नारद, असित, परबत, कपिल, जातकर्ण, अंगिरा, बेदव्यास
अत्रि, शुक, हारीत, बामदेव, याज्ञवल्क्य, आदि ऋषीश्वर
आवत भये श्रीरामचन्द्रको देखिकै आनन्द रूपीज-
ल नेत्रनमें छाइरहा तब रघुनाथ जीने तपो निधि मुनि-
योंको देख हर्षसेपूजन किया फिर मुनिप्रति कुशलप्रश्न
पूछिकै अर्घ्यपाद्यआसन दियाव उत्तमगोभूषण बसनोंसे
भूषित कंचनादि यथा योग्य परम उदार आनन्दित

श्रीरामचन्द्र जीनेसबकोदियाश्रीशेषजीबोले किहे मुनि राजतेहिसमय बिषेधर्म्मनिधि मुनिनकेसमुदायजुरेथेऐसे शेषजीके बचनसुन वात्स्यायन जीबोले किहेशेषजीतहां कौन धर्म्मबार्ता होतीथी सोआप कहिये व साधुजन लोकहितार्थ धर्म कथा बर्णन करतेहैं, यह मुनि का बचन सुन शेषजी बोलतेभये किहेमुने महात्मा श्रीराम चन्द्रजी मुनियोंको देखके बोले किहेमुनिश्रेष्ठ हमको अपना जन जानिके बर्णाश्रम धर्म कथनकरो, जेहिको सुनिकै नर असार संसार से मुक्तहों ३१।४० श्रीशेष जी बोले कि हेवात्स्यायन जो धर्म मुनियोंने पुरषोत्तम श्री रामचन्द्रजीसे कहेहैं, सोमैं अबतुमसे कहताहूं, ऋषीश्वर बोलेकि हेभगवन् हमबर्णाश्रम धर्म अपनी मतिके अनुसार कथन करतेहैं श्रवणकरो, ब्राह्मणों को उचितहै कि सप्रीति तुम्हारे चरणोंकी पूजनकरें अरु सन्तत बेदपाठमें रतरहैं अर्थात् अहर्निशि शुभकर्मों में ध्यान लगायेरहैं,तेहिमें हेरघूत्तम भेदयह है किजोरजो गुणसे विगत होय वह यतीहै अरुजेहिकीमतिरजो गुणमें लीनरहै उसको गृहस्थजानो,अबहमगृहस्थ धर्म कहतेहैं अपनी स्त्रीके सिवायकोई दूसरो सेंगमन नकरै, यहश्रुति का परम धर्म्महै अथवास्त्रीकेमनकी लालसासे रतिदेइ उसमें पापभागी नहोगा अरु दिनबिषे व पितृश्राद्ध व पर्वबिषेरतिबर्जितहै यदिकोई मोहबशहवैकैजोकरैं उनके धर्मका विनाश दोनोंओरसे होताहै अरु जोपुरुष निज स्त्रीसे भी बिना ऋतुके गमननहींकरते वेईजन धर्मनिपुण

ब्रह्मचारीहैं, अरु सोरह दिन पर्य्यन्तस्त्री ऋतुसे रहतीहै तेहिमें प्रथमके चारिदिनमें रतिनकरना चाहिये बर्जितहै ४१।४५ अरु जो समदिनमें रतिकरतेहैं उनमेंसुतोद्भव अनुमानकरतेहैं व विषमदिनके गमनसे कन्या का उद्भव जानो अरु मृगशिरा, मूल, मघा, खल, ऋक्ष इनको छोंड़िकै स्त्रीको इच्छा पूर्ण करिकै यहिविधिसे जो रहतेहैं सो अवश्य पावन भाग्यवानपुत्र पातेहैं, अथवा पावन कन्या जोपुरुष उत्तमकुलमें देके मोहवश से कुछलेतेहैं उनको महापातक लगताहै वबाणिज भूपसेवा श्रुति धर्म्म त्याग, मन्द ब्याहकुल धर्म्म त्यागिकै इनके किये बंशकोबिनाश होतेदेरनहीं लगैहै अरु अतिथि को अपनेमन्दिरमें देखिकै दानमान युक्तपूजन करतेहैं उन कोगोदानके समान पुण्य प्राप्तहोताहै४६।५०व जेहिके घरसे अतिथि बिमुख ह्वैजातहै उसका सबपुण्यक्षय होकर पापभागी होताहै यहश्रुति पुराणोक्त वाक्यहै अरु जो पुरुष पितर देवबलि वैश्योंको अर्पणनहीं करते वेनर मलमूत्र के समान पेटभरिलेतेहैं अरु षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस, पूर्णिमा, इनको क्षौरकर्म्मनकरै अरु रजस्वला स्त्री सदैव त्यागने योग्यहै व भोजन में स्त्रीको साथनलेय व दोवस्त्रोंके बिनाभोजननकरै व भोजनकरते समय स्त्रीका दरशनमात्रनकरै वमुखसे अग्निप्रज्ज्वलित न करै व नग्न स्त्रीकभी न देखे ५१।५५ अग्निकभी चरणसों न स्पर्शकरै व सब चराचर प्राणियोंमेहिंसा न विचारै आदिअन्त दोनों सन्ध्यामेंभोजन न करै वगोदान

करके प्रकट न करै व गौको खातेहुये देख न बरजै अरु रात्रिमें दधिभोजन न करै वपतिव्रता स्त्रीसे बाद विवादनकरै व रात्रिको परिपूर्ण भोजन करै अरु हे प्रभु बिषय स्वप्नमें भी न करै व गीत नाद्य बाद्य सब छोड़िकैतुम्हारे चरणोंका ध्यानकरै व कांसपात्र से चरण न धोवै व अशुद्ध देहसे कभी शयन नकरै व लोभके वश होकर उच्छिष्टधान्य न ग्रहणकरै व परबश स्वप्न मेंभी नहोय व किसीका पादत्रानकभीन चुरावै व टूटे पात्रमें कभी भोजननकरै व पायंधोयकै ओदे पायन भोजन न करै व मलीन पात्र त्यागकरैअरु उच्छिष्ट पृथ्वीमें कभी शयन नकरै व शयन करते महापापी को भीनजगावै,व मनुष्यन की प्रशंसा स्तुतिनकरै व नकिसीमनुष्य को दण्डवत् करै व सम्पूर्ण जीवमात्रमें समता भाव सदैव राखै व मर्मछेद बचन कबहूंनकहै,हे महाराज यहिबिधि गृहस्थाश्रमके कर्म्मकरिकै तदनन्तर बाणप्रस्थ धर्म्मको प्राप्तकरके सहित स्त्री के अथवा स्त्री त्यागकरिकै रजोगुणसे दूरह्वैकै आनन्द को प्रप्तहोय यहिप्रकार जोगृहीमदमान छोड़िकै यहिपंथमें चलतेहैं वेजनकछु दिनके अनन्तर अवश्य तुम्हारे चरणोंकी भक्ति प्राप्त करके मुक्त होतेहैं यहि प्रकार के धर्म ऋषियों ने महात्मा दशरथनन्दन श्रीरामचन्द्रजी से कथनकिये सुनि कै प्रभुकेमनमें अभिलाष उत्पन्नभई तब मुनिबोले कि हेनाथ यहि बिधिसे जे जन बर्णाश्रम में चलैंगे वै अवश्य असार संसार से मुक्त होंगे व कृपालुका सनेह देखिकै हमने

कहा सदैव गृहिनको यही कर्म्म करना उचितहै, श्रीशेषजी बोलेकिहे मुने यद्यपि पुरुषोत्तम सबजानतेहैं तदपि सुनिकै आनन्दित होजातेभये ५६। ६३ इति श्रीपद्म पुराणे पातालखण्डे रामाश्वमेध भाषायांशेषवात्स्यायन सम्बादे गृहस्थ व वर्णाश्रम धर्म्म कथनोनाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

दशवां अध्याय॥

श्री शेषजी बोलेकि हे मुने श्रीरामचन्द्रजी सबधर्म सुनिकै अति प्रसन्न हुये यहि भांति कछुक दिन उपरान्त तब बसन्त ऋतुप्राप्तहुआ तबसब राजा यज्ञक्रिया आदि वमुनिवैष्णव अपना२ धर्मकरतेभये तबमहात्मा वशिष्ठजी व अगस्त्यजी यज्ञकाअवसर जानिकै त्रैलोक्य पति श्रीरामचन्द्रजीसे कहतेभये किहे रघूत्तम जेहिकार्य्यके अर्थ तुमने सबसामग्री उपस्थितकीहै सोई यज्ञका समय आगया अब यज्ञके अर्थ घोड़ाछोड़ो व सब सामग्री यज्ञकी मंगाय दीन कृपण आदि सब याचकोंको दान करौ व ब्राह्मणोंकी बिधिपूर्बक पूजन करौ, व सुबर्णकी प्रतिमा रूप जनकसुता संगलैकै ब्रह्मचर्य ब्रत अर्थात भूमिशायी, मृगचर्म, कटिमेंमेखलाअजिनदण्डधारणकरो व सम्पूर्णसामग्रीयज्ञकी उपस्थित करौ १।७बशिष्ठजीके येवचन सुनिकै महात्मा रामचन्द्रजो मुनिवरकी प्रशंसा कररणधीरलक्ष्मणजीसेबोलेकिभ्राता शीघ्रसजिकैयज्ञके अर्थ घोड़ालाओ तब लक्ष्मणजीने जायकै सेनाध्यक्षसे

गम्भीर वचनबोले ८।१० कि हे सखे श्रीरामचन्द्रजी
ने यह आज्ञादीहै कि काल कोभी जीतनेवाली चतुरं-
गिनी सेना बल प्रताप संयुक्त सब अंगों सहित तय्या
रकरो वसैन्यके चारो अंग बराबर रहैं अर्थात् गज,रथ,
तुरंग,पदचर, अस्त्र शस्त्र बल समहोय अरु घोड़ोंकीपं-
क्ती बायुके बेगको लजानेवाली व माल के अनुहार
चलतेहुये तिनपर महा धनुर्द्धरशूर पराईसेनाके जीतने
वाले सवार होयं यहिबिधिसे अश्वसमूह रचौ अब
और सुनो हेप्रिये जो मतवारे हाथी शैलसमान भयंकर
मदसे प्रमादित यहि भांतिके हाथिनपर अस्त्रशस्त्रधारी
बीर सवारहोयंअरुतिनके शिरपर चतुर महाउततीक्षण
अंकुशसे तिनको प्रचारते जावैं अरु अनेक प्रकारकेकं-
चन रथ मणिनसे भूषित बायु बेगके समान चलनेवाले
शीघ्र गामी तिनपर निपुण अरु पर सेना के मर्दने वाले
सारथी सहितरणधीर क्रोधित हो सवारहोयं यहिबिधि
से रथ समूह साजो ११।१४ व पदचर अनेक प्रकार के
अस्त्र शस्त्र धारणकिये यज्ञके घोड़ाकी रक्षा केअर्थ तैयार
करौ यहि प्रकारहे निपुण कालजित शीघ्र सेना तयार
करौ,यहि प्रकारमहात्मा लक्ष्मणजीके बचनसुन अनेकन
सेनाध्यक्षों सहित चतुरंगिनी सेना सजीव यज्ञके घोड़ा
कोभीसाजते भये कि मणिनके अनेकदीप्ति वालेमाला
हृदयमें शोभायमान होतेथेवकुबिनिधिघोड़ाके हमेलभी
सुशोभित होतीथी व मुख ललित ग्रीवा विशाल कोमल
वार कमलकेसमान शोभित होतेथेशोभानिधिकर्णश्याम

छोटे२ अरु बहुत चिह्नोंसे चिह्नित देखिकै देवतादिक मोहित होजाते भये व चन्द्रमा के समान द्युति बदन कीवमणियोंसेभूषित निर्मल चमर छत्र संयुक्त घोड़ेको चलतेदेख चारोंओर सब मनुष्य देखने लगे १५।१६ तब फिर प्रबलसेना घोड़ेको वीचमें करके चले तेहिके कुलाहल से पृथ्वीसे आकाश पर्य्यन्त घोरशब्द पूरि रह्यो जेहिप्रकार देवता निजनाथ बिष्णु भगवान् को ध्यानकरतेहुये, भजतेहैं उसीप्रकार सबजन घोड़ेके स्वरूप को ध्यानकरके सनाथहोतेथे गज, रथ, तुरंग, पदचरों समेत रणधीरों को सुखदेतेहुये सेन चलतीभई व सेनापति का आयसुपायकै घटाटोप ह्वैजातभयोसेन के चलते हुये दुन्दुभी, बीणा, आदिके स्वरोंसे नगरमें कोलाहल होजाताभया २०। २२ सो कोलाहल सुनि कै पर्वत कम्पाय मान होजातभये व मन्दिर भयभीत हो कर थरथरानेलगे श्रीरघुनाथ जीके यज्ञका घोड़ा नगरमें विचरताभया वहकौतुक देखिकै रणधीरवीर आनन्दित होतेथे वनगरके नरनारि घोड़ेकी हींसनि सुनिकैवचरित्रदेखिकै मोहित होगये व रथसमूह इतने राजमार्ग होकर निकलेजेहिके चक्रोंका स्पर्श पृथ्वीनहीं सहिसकी श्रीशेषजी बोले किहेमुने तेहिसमय में हाथी घटाटोप करके चलतभये तब पृथ्वी में धूरिउठिकै आकाश को आच्छादित करदिया २३। २५ अरु सेनके ध्वजापताकाओं कीओटसे सूर्य्यनारायण छिपगये व सब रणधीरबोरगर्जते तर्जतेरणबांकुरेश्रीरघुनाथ जीकेयज्ञकेअर्थमृगमद

आदिरागतानमेंशोभित पुष्पोंकीमालापहिरेमणिनकेसं-
युक्तमुकुटदियेहुयेसबबीरचलेश्रीशेषजीबोलेकिहेबात्स्या
यन यहि प्रकार चतुरंगिनि सेनसजिकै अश्व को मध्यमें
लैकै यज्ञार्थ चलतेभये तेहिसमय घोड़ोंके खुरनकी रज
सेअन्ध धुन्ध होगया आकाश पृथ्वीनहीं देखपड़तीथी
यहिबिधि मन्द २ सबसेना जहां श्रीरामचन्द्र जी यज्ञ
स्थान में सुशोभितथे वहींप्राप्तहुई वयज्ञका अश्वमनोहर
सजाहुवा देखिकै श्रीरामअति आनन्दित होकर गुरु
वशिष्ठजी सेबोलेकिहेनाथ अश्वका पूजनकरौ २६। ३१
तब वशिष्ठजीने सुबर्णकी सीता सहित श्रीरामचन्द्र जी
कों बुलाय कह्यो किहेराम अबयज्ञका प्रारम्भकरौ यह
लेह्ी गुरुनेमंडप केमध्यमेंकुंड सब बिधिके निर्माण कर
रक्खेथे बेदस्मृति मेंनिपुण व अपने कुलके गुरु वशिष्ठ
जीको यज्ञके आचार्य्य अस्थापित कियो व तपोनिधि
अगस्त्यमुनिको ब्रह्मपद देतेभये व बाल्मीकि मुनि
ऋत्युज होकर यज्ञका सब अधिकारलिया फिर मंडपमें
आठ द्वार मणिनके ध्वजा पताकाओं से शोभित रच्यो
तिन एक २ द्वारनमें दो २ बेद पाठीवृद्ध ब्राह्मण उप-
स्थित कियो,पूर्व द्वारमें देवल,असित,व दक्षिणमेंअम्ब,
कश्यप व पश्चिम में जातकरन, जाबालि व उत्तरमें
महामुनिराजउपस्थितहोकरवेद मंत्र पढ़नेलगे अरुजेहि
विधि चारोंदिशन कोवर्णनकिया यहीप्रकार बिदिशन
कोभी मुनियोंनेबर्णनकियाहैयहिप्रकार द्वारनप्रति मुनि
योंको उपस्थित करके हर्षित होकर अगस्त्यमुनि वगुरु

वशिष्ठजी अश्वको मंगायकरबेदविधानसे पूजा आरम्भ कियो३२।३८ बिचित्र बसनभूषणसजिकै स्त्रीजनथारन मेंअक्षत रोचनादूर्वा सेपूजनकरतीं फिरअगर धूप नैवेद्य बिधानसे दैके आरती करती भईं व तेहि समय प्रभुकी आज्ञासे नटी नृत्यकरनेलगीं ३६।४१यहिप्रकार अश्व कामस्तक चन्दन से चर्चित कुमकुमादिकगंधोसे शोभा-यमान तेहिके मनोहर मस्तकमें सुवर्ण कापत्रसूर्यसा दे दीप्यमानवशिष्ठजीने बांधकरके उसमेंबोरत्व भूषितराम चन्द्र जीका बलप्रताप हर्षित होकरलिखनेलगे४२।४३ सूर्य्यबंशकेध्वजा बाणविद्यामें निपुण तिनको देवतादनु-ज मुनिशैलआदि चराचर अपने २ कार्यार्थ मस्तकझु कातेथे तिनकेपुत्र शत्रुकेमदको नाशकरनेवाले धनुर्द्धर श्रीरामचन्द्रजी महाभाग्यवान् बीर शिरोमणि उनकी माताकौशल नृपकीकन्या कौशल्या तिनकेरत्नगर्भ से उदारचित्त रामरत्न उत्पन्नहोतेभये जिननेशत्रुगणोंको नाशकरके देवताओंको सुखदिया तिनमहात्मानेब्राह्म-णके वचनमानिकै अश्वमेधयज्ञ प्रारम्भकीहै श्रीरामच-न्द्रजीने घोरनिशाचर रावणको बधकिया सोपातकमा-निकै उसके निवारणार्थ यहघोड़ा छोड़तेहैं व अश्वरक्षा केअर्थ सेनचतुरंगिनी व अपने भ्राताशत्रुहनवलवणांत-क तिनकेसंग अनेक प्रकारके रणमत्तबीरहैं ४४।४६ जेक्षत्री अपनेबल प्रताप कोश्रेष्ठमानिकै धनुर्विद्याजान-तेहोयं ते यहघोड़ा कनकपत्र बांचिकै बांधें अरु जेक्षत्री कामकेवश होकर रत्नमाला सा मनोहर देखि कै हठसे

बांधैंगे तिनका बधशत्रुघ्नजी केहाथसे होगा ५०। ५२ यहिप्रकार यशस्वी श्रीरामचन्द्रकेयशकी कथा व भुजों कापराक्रम लिखिकै सुबर्णपत्र घोड़ेके मस्तकमें भूषित कियावायुके समान बेग अतिचंचल सब स्थानोंमें जाने की शक्ति ऐसेमनोजव रूप अश्व को छोड़ने काबिचार कया तब शत्रुहन जीसे महात्मा श्रीरामचन्द्रजी नीति युक्त बचनकहतेभये ५३। ५४ हेतातघोड़ाके रक्षणार्थ जाउतुमको मार्गमें मंगलसाज प्राप्तहोय व तुम सबपृथ्वीतल को बिजयकरोगे तुम्हारे भुजोंमेंशत्रुका नाशक गुणहै जोक्षत्री बीर संग्राम में चढ़ैंउसको रणभूमि में प्रचारिकै बधकियो व ससैन्य अहर्निशि घोड़ाकीरक्षा कियो व काल जो सन्मुखजुरै तौ उससेभी संग्रामकियो व यह हमारी नीति अवश्यकरौ कि सोताहुआ व भय भीतनग्नभृष्ट बुद्धि बिनाअस्त्रबाला वसमरसे जोभागिकै शरणआवे उसकी रक्षासदैवकियो यहश्रुति स्मृतिबेद का बाक्यहै अरु जोजन बिरथसे रथमें चढ़िकै संग्राम करतेहैंमोहवशहोकर व भयभीतके ऊपर अस्त्र छोड़तेहैं वेजन निश्चय करके नरकगामी होतेहैं व परधन बिष केसमान जानना चहिये व परस्त्रीसदैव त्यागने योग्य है व नीचसंग सदैवत्याग कियो व साधुसमागममेंध्यानराख्यौ५५।५६ वृद्धक्षत्रीकोरणमें चढ़पायकै प्रथमप्र हारनकरियो व पूज्यमानकीपूजानाशनकरियोवयहमेरी आज्ञामानियो व प्रजा सैन्य बिषे सदैव करुणाकिये रह्यो ६० अरु ब्राह्मण, गौ, बैष्णव, आदि धर्म्मयुक्तोंको

सबकाम छोंड़िकैप्रणामकियोहेतातजोतुमयहिविधिसेच लिहोतौमार्गमें अवश्यमंगललाभहोगा६१ अखिललोक पति जगव्यापकसर्वेश्वर साक्षी बिष्णुरूप वैष्णव पृथ्वी तलमें बिचरतेहैं तिनकोसब छल त्यागिकै सेवनकियो मार्गमें चलते उनकेदर्शन कियो वे महात्मासब प्राणि योंसे समभाव रखते हैं अर्थात् शत्रु मित्र बराबर मान तेहैंतिनके दर्शनकिये क्षणमें सबपातक नाश होतेहैं सो हे तात तिनकेदर्शन अवश्य करिकै महादुःखजाल को नाशिकै परम सुख प्राप्तकरना ६२।६४ हेतात जिनके ब्राह्मणवैष्णव प्रियहोतेहैं वेईनर निर्मल कीर्ति से बैकुण्ठ को जातेहैं वनिजइष्टसे ध्यान रखके प्रीति ब- ढ़ातेहैं वसंसारमें गुप्त रहिकै प्रकट नहीं करते अरु जे मुख सेहरिनाम हृदयसे बिष्णु भगवानका ध्यान करके प्रसादका सेवन करतेहैं यहि बिधि से स्वपच भी चलैं तौ वहभी निश्चय मोकोसाधुके समानप्रियहै ६५।६६ अरु जेजन संसारके सुखोंको त्यागकरके बेदकापाठक रतेहैं व धर्मकी मार्गमें आरूढ़रहतेहैं,तिनको अपनासब कामछोड़िकै प्रणाम कियो व ब्रह्मा बिष्णु, महेशइनमें भेदनहींहै,जोजनअधर्मसेभेदमानतेहैं वेनाशकोप्राप्तहोते हैंव गौरी, गंगा, महालक्ष्मी, इनके बिषे जिनकाद्वैती यभाव नहींहै वे नर स्वर्ग गामी देवताओं के समान हैं ६७।६८ अरु जेनर शरणागतकी रक्षाकरतेहैं वबि ष्णुकी प्रीतिकेअर्थ यथाशक्ति दानकरतेहैं तेईउत्तमवै- ष्णवहैं ७० अरु जो ब्रह्महत्याआदि महा पापकरनेवा-

ले मनुष्य जेहि ईश्वरका स्मरणकरिकै महापातक नाश करतेहैं तेहि ईश्वरके चरणों में जिनकी भक्तिहै वेईजन परम बैष्णवहैं ७१ अरु जिनकी इन्द्रीमनकेवशहैं वमन अहर्निशि पूजाआचार हरिचिन्ता में तत्पररहताहै वे ईं बैष्णव जगत् में माननीय पूजनीय स्तुतिकरनेके योग्य हैं ७२ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेरामाश्वमेधभाषायांशेषवात्स्यायनसम्बादेरामेणशत्रुघ्नशिक्षाकथनोनाम दशमोऽध्यायः १० ॥

गेरहवां अध्याय ॥

श्रीशेषजीबोले किहे वात्स्यायन यहिप्रकार उक्तश्री रामचन्द्रजीने अपनेभाई शत्रुघ्न कोशिक्षा दैकै फिरि बीरनकी ओर देखिकै गम्भीर बचन बोले १ कि हम अश्वकी रक्षा करनेको शत्रुघ्न को भेजतेहैं सो उनकी पृष्ठ रक्षा महा रणधीरोंसे करनेको कौन बीर समर्थहै जो रणधीर बल गर्बित होय सो आनन्दित होकर यह बीरा उठावै २।३ श्रीरामचन्द्रके कमलस्वरूपी चरणोंकीबन्दना करिकै भरतपुत्र पुष्कल बीरा उठाय बोला किहे नाथमैं आयुध धरिकै रिपुसूदन का अनुगामी होकरपृष्ठ रक्षामें रहिहौं व तुम्हारे प्रतापसे सुर नर आदि सब बीरोंको जीतिहौं ४।५ अरु हे नाथ कारण मात्र यह सब सैन्यहै बिजयतो आपके निर्मल प्रतापसे होगी औआपतो सर्बज्ञही मेरा बिक्रम देखोगे मैं अवश्य शत्रुघ्नजीकीपृष्ठि रक्षामें जाकर तुम्हारे प्रतापसे अश्वकी रक्षा क-

रिहैं। ऐसे वीरत्व भूषित बचन कहिकै भरतपुत्र पुष्कल मस्तक नावताभया,, यह सुनिकै श्रीरामचन्द्र धन्य२ कहिकै वायुपुत्र हनुमान् जीको देखकर बोले ६।६ हेअंजनी नन्दन मेरे बचन आनन्दित होकर श्रवण करो कि तुमने जल निधिको उल्लंघन करिकै श्रीसीताजीसे संयोग कराया व तुम्हारेही प्रतापसे निष्कण्टक राज्य हमको मिला हे तात अब मेरी आज्ञासे सैन्यपाल होकर जावो,व परम प्रिय मेरे भाई शत्रुघ्नकी रक्षा करो व जहां२ शत्रुघ्न ज्ञानको बिस्मरण करैंतहां२ तुम मगमें ज्ञान शिक्षा करते रहियो ६।१३ तब हनुमान्जीने ऐसे बचन सुनकर श्रीरामजीकामुख देखि दण्डवत् करतेभये १४ फिरि श्रीरामचन्द्रजीबोले किहे बीर शिरोमणि जाम्बवन्त सुग्रीव तुम शत्रुघ्नके साथ अश्व रक्षाके अर्थ पयान करो अरु हे रणधीरो अंगद,गवय,मयन्द, सतबल, नल, नील, आदि भट तुम्हारा बल अगमहै तुमभी अश्व रक्षाको तैयार होवो अरु मणि हाटकमयभूषणादि कवच, टोप बस्त्रादिक सजिकै जावो, यहि प्रकार तिन सबसे कहिकै आदि मंत्री सुमन्तको बुलावते भये १५।१८ अरु सन्मान करिकै बोले किहे सचिव शिरोमणि कौन रणधीर बीर घोड़ा पालैको समर्थ है वहभेजा जावै १६ तब प्रभुके श्रेष्ठ बचन सुनिकै मंत्रि राज प्रभुसे निर्मल बाणी बोले किहे नाथ अपने बीरोंको भिन्न२ करिकै सुनौ २०।२१ प्रताप अग्र, नीलरत्न, लक्ष्मीनिधि, रिपुताापन, उग्रासु,इन सबके बलमें कहतहौंदेखि

ये नीलरत्न राजा महाबलवान् रथीहै कि लक्षवीर सेभी रण करिकै अपने दलकी रक्षा व शत्रुदलका नाश करताहै २२।२३ और इसके साथ दश अक्षौहिणी सैन्य महा युद्ध करने वालीहै आप आज्ञा देंतो बाजि राजकी रक्षाको जावै औ राजा प्रताप अग्रको देखौ कि शत्रुके नाशनेमेंप्रवर्तही रहताहै २४।२५ अरु अस्त्र शस्त्र विद्यामें निपुण इनके साथ बीस अक्षौहिणी सबल सैन्यहै आप इनकोआयसुदेउ तो ये सदैवरिपुसूदनकी रक्षा करैंगे२६ औ लक्ष्मीनिधिने प्रथम ब्रह्माजीको प्रसन्नकरके सम्पूर्ण बिद्यापढ़ीहैं अर्थात्‌बाणबिद्यामेंतोपाशुपत अस्त्र, गरुड़ास्त्र बिष्णुअस्त्र, नकुलास्त्र, इन्द्रास्त्र, मयूरास्त्र, मारुतास्त्र, कुलिशास्त्र, अग्न्यास्त्र, बरुणास्त्र, इन सबको मंत्रनसहित प्राप्त कियाहै व एक अक्षौहिणी सैन्यसाथहै कालपरभीसंग्राम कर सक्ते हैं यहभी जावें अरु राजा रिपुतापनकोदेखौकि सब अस्त्रोंमें निपुण रिपु कुल नाशने वाला शूर शिरोमणि है आप इसको आज्ञादें तो शत्रुघ्नके साथप्रस्थान करै ३२ अरु राजा उग्रासु आदि बीरोंकोआप निदेशदीजिये शीघ्र अश्व राजके रक्षणार्थ महा प्रस्थान करैं तदनन्तर मंत्रि राजके श्रेष्ठ बचन सुनिकै रघुनाथ जी प्रसन्न होकर सब बीरोंको कृपादृष्टिसे अवलोकनकरके व मृदुल बचन कहिके सुखी करदेते भये, ते सब बीर श्री रामचन्द्रजीके प्रेमके आनन्दसे उमगि उठे व सब बीर तो संग्रामके क्षुधित थेही आज्ञा पाकर अतीव आनन्दित होगये व फिरि कवच, टोप सनाह आदि अस्त्रशस्त्र

सजिकै श्री रघुनाथजीके चरणों की बन्दना करिकै जहां ससैन्य शत्रुघ्न जी थे वहां प्रवेश करते भये ३३ ३६ श्री शेषजी बोले किहे बात्स्यायन तेहिसमयमेंमहात्मा बीरत्व भूषित श्रीरामचन्द्रजीने बेद बिधिसे आचार्य बशिष्ठजी की व सब ऋषिनकी बरदक्षिणासे पूजन करतेभये३७ प्रथम गुरु बशिष्ठजीकी सुखधाम रामचन्द्रजीने इस प्रकार पूजन किया कि एकऐरावतके समान बलवान् दीप्तिवान् वायुकेसमान बेगवाला एक बाजी मणिमुक्ताओं से भूषित करिकै व एक स्यन्दन मणिनसे भूषित जिसमेंचार घोड़ेबायुके समान बेगवाले संयुक्त किये व सम्पूर्ण बस्तु परिपरित करिकै बशिष्ठजीको समर्पण किया व एक लक्षमणि मुक्ताहल सततुला प्रमाण, बिद्रुम सततुला प्रमाण, सहित उछाहकेदान किया ३८। ४० अरु एकग्राम सबउत्तम बर्णोंसे सुशोभित व सब प्रकारके धनधान्योंसे भूषित वहभी बशिष्ठजीको देतेभये व ऋत्युज होता इनको असंख्य दानकरते भये यहि प्रकार सब ब्राह्मणों व मुनियों को भूरिदान बिधि पूर्बक करिकै प्रणामकरतेभये ४१।४२ तब सब मुनिजन प्रसन्न ह्वैकै यह आशिषदेते भये किहे रघूत्तम चिरंजीवि अर्थात् चिरकालपर्य्यन्त राज्य करो व सम्पूर्ण सुखसौख्यसे भूषित होतेरहो ४३ अरु प्रभुने कन्यादान अनेकन दिये व महिदान, अश्वदान हाटक तिल मुक्ताहलदान, अन्नदान,सन्मानकरकेदिय व अभयदान ''कनकोदिया व रक्षादान सम्पूर्ण बिश्व

को समर्पण किया (बिश्वस्त्रज नामहीहै) व सब अन्नभोग
न युक्त दैकर बोले कि धनदान असंख्यकरो ४४। ४६
यहिप्रकार महात्मा श्रीरामचन्द्र जी सबको सबदान
करिकै फिरि अश्वमेध यज्ञका प्रारम्भ करतेभये ४७
तदनन्तरशत्रुघ्नजी माताके भवनजायपदबन्दन अर्थात्
दण्डवत् करिकै प्रसन्नतासे बोले कि हे माता मैं अ-
श्वरक्षाको जाता हूं तुम आनन्दित होकर आज्ञादेउ
तुम्हारी कृपासे सम्पूर्ण पृथ्वी तलको बिजय करके
फिरि तुम्हारे चरणोंकी बन्दना करोंगा तबमातु हर्षित
ह्वैकैबोली किहे पुत्रसम्पूर्ण रिपु गणोंको बिजय करके
कुशल समेत भेंटोगे ४८।५० अरुहे पुत्र महाबलवान्
पुष्कल श्रीरामचन्द्र जीकी सेवाकोजानिकैजाताहै तेहि
की रक्षा करते रहियो यदि वहरणधीरहै तथापि बाल-
कहै हेतात ऐसी यत्न करते रहियो जेहिसे हमको शो-
कनहो यह कहिकै माता चुपह्वैरही तबशत्रुघ्नजी शि-
रनायकै बोलतेभये कि हे माता तुम्हारे प्रतापसे शीघ्र-
ही रिपुगणन को परास्त करिकै तुम्हारे सुख समूह
चरणोंके दर्शन करूंगा अस कहिकै फिरि शत्रुघ्नजी प्र-
णाम करिकै सरयू तीर यज्ञ स्थानको हर्षितहोकर आ-
तेभये तहां मुनि समाजमें श्रीरघुनाथजी कैसे शोभितहो
तेथे मानों यज्ञ भेषहीधारण कियेहैं ५१।५५ यहि प्रकार
प्रभुको शोभा छबि देखिकै प्रेम सहित दण्ड प्रणाम
करके बोले किहे छबि धाम राम अश्वरक्षाको आज्ञादी-
जिये तबश्रीरामचन्द्रजी बोले किहे तावतुम हर्षितह्वैकै

प्रस्थान करो मार्गमें तुमको सदैव महा मंगल होता जायगा, अरु बालक, स्त्री, माता आदिका नेह छोड़िकैसन्मुख संग्राम करियो ५६।५८ तदनन्तर जनक नन्दन लक्ष्मीनिधि चपल नैन करिकै व हंसिकै श्री रामचन्द्रजीसे बोलता भयाकि हे महा बाहु तुमने कुलरीत्यानुसार शिक्षा दईहै अरु फिरि बोलाकि हे समदरशी मैं कुछ हास्यरस सानीबिनय करताहूं यहिका अपराधक्षमाहो, जो तुम ने शत्रुघ्न को कहा उसके अनुसारइनको चलने में यश व लोकसे मोक्षनहींहै परन्तु कुलका कर्म्मअवश्य करनायोग्यहै ५९।६० औ आपने कहाहै कि ब्राह्मण सदैव माननीयहै उसका बधनकरैं, सोतुम्हारे पिताने अच्छी प्रकार जानिकै श्रवण पर्य्यन्तधनुष चढ़ाइ कै द्विजवर को बधकिया अरु तुम्हारी तो कीर्ति लोकमें प्रख्यात हीहोरहीहैवसबलोग छोटे बड़ेयहजानतेहैंकि स्त्री सदैव अवध्यहै जिस ताड़काको आपने तीक्ष्ण बाणोंसे बध किया व लक्ष्मण जीका सुयशतो संसार में बिदितहै कि सूर्पणखा कोनाक कान से हीनकरदिया महाराजयहिप्रकारकी तुम्हारीआज्ञा शिरधरिकैवअपने कुलरीति बिचारिकै अवश्य करैंगे६१।६४ ऐसे बचन सुनिकै मुसकराकर श्रीरामचन्द्रजी मेघकेसमान गम्भीर बचन बोलतेभये६५ कि तुमबिज्ञानी समदरशी अर्थात् सुखदुःख कोसमजाननेवाले योगी भवबन्धन तेमुक्तहौ इतना पुरुषारथतो तुममेंहै परन्तु क्षत्रिधर्म्म का मार्ग नहीं जानतेहो जे अस्त्रशस्त्र विद्यामें बिशारद रणगति

के जानने वालेहैं ते बीरकुमार्ग गामी व परदुःखदेनेवाले दुराचारियों कोलोकके सुखकेअर्थअवश्यबधकरतेहैं६६ ६८ सब सभासद यह हास्यरसके बचन महाप्रभुके सुनिकै सबआनन्दहोजातेभये तब बशिष्ठ व अगस्त्यजीने बिधि पूर्बक बाजिराजको पूजन किया व अश्वको करकमलसे स्पर्श करिकै बिजयके अर्थ बाजिराज के कानमें यहमंत्र कहते भये किहे बाजिन् इच्छा पूर्बक सम्पूर्ण पृथ्वीतल भ्रमणाकरो तुमको यज्ञके अर्थ छोंड़तेहैं शीघ्र सब पृथ्वीतल बिचरिकै प्राप्त होउ अस कहिकै बाजि॰ राजको बहुतसे रणधीर बीरोंसे पालित छोंड़ते भये तब बाजिराजने पूर्बदिशाको प्रवेशकिया तबसबबीरों करके युक्त शत्रुघ्नजी पूर्बको प्रस्थान करतेभये ६६।७२ तेहि समय पृथ्वी, पहाड़, समुद्र, दिग्पाल सब कम्पित हुये व शेषनागजीका शीश हालने लगातबसम्हारिकैपृथ्वी घरतेभये अरु सब दिशा प्रकाशित होगईं तिनसे सब पृथ्वीमें शोभा होगई व महात्मा शत्रुघ्नकी पृष्ठ रक्षा के वास्ते पवनतनय हनुमान् वअनेकरणधीरबीर मन्द २ गमन करतेभये व दक्षिण भुजा बार२ फरकतेहैं मानो मंगलाकार बिजयोंकोसाक्षात्सूचित करतेहैं ७३।७५ तदनन्तर भरत पुत्र पुष्कलबिदाकेअर्थ अपने परम रम्य स्थानको गये तहां सखिनकी पांतिमें शोभितबिधुबदनी सुन्दरि प्रेमके प्रकाश करनेवाली पतिदेवताकोलालसा किये तेहिके समीपजाकर गम्भीर बोले कि हेप्रियेरिपुसूदनशत्रुघ्न जीकीपृष्ठरक्षाकेअर्थमहात्माश्रीरामचन्द्रजी

हमकोभेजतेहैं सो हेप्रियेहमतोप्रस्थान करतेहैं तुमहर्षसे माताकी सेवा करिकै तेहिका प्रसाद सदैव ग्रहण करते रहियो व मुनिपत्निनसे सदैवस्नेहव सेवा करिकै सुन्दर यशकोप्राप्तकरतेरहियो,तपोनिधिकुम्भजादिकीस्त्रियोंको जानिकै तिनका सेवन मनसा बाचासे करियो जिनके सेवनसे तुम्हाराभी पतिव्रतधर्मभूषितहोगा७६।८३इति श्रीपद्मपुराणे पातालखंडे रामाश्वमेधभाषायां हयमोचनं नामएकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले किहेबात्स्यायन यहिप्रकारके बचन स्वामीके सुनिकै प्रेमदृष्टिसे अवलोकन करिकै प्रसन्न होकर बोली कि हे नाथ रणमंडल को बिजय करिकै शत्रुघ्नजीकी रक्षाकरो१व श्रीरघुनाथजीकी आज्ञासे अश्व का पालनकरो मैंतो आपकी दासीहूं आप मेरे हृदयमें सदैव बसतेहो औ मेरा सुमिरणसदाकरतेरहियो इसीसे तुमको विजय प्राप्तहोगी२अरुमेरा मनतो आपके चरणों से कभी अन्यत्र होहोगानहीं अरु हे नाथ ऐसीकरियो कि जिससे यहां हंसी न होवै अर्थात् समरमेंपरास्तनहो ना जेहिसे मुझको उर्मिला आदि रानी हास्यन करैं३।५ जो आप रणसे भयभीत होकर भागि ऐहौ तौ सब कुलस्त्रिया मुसकराकर मुझको भीरुकी स्त्री कहैंगी ६ इससे तुम सबवीरनसे आगेह्वैकै बाजिराजकी रक्षाक रियो व धनुषकाशब्द भयानक करौ जेहिकोसुनिकै शत्रु

नके कान विदीर्ण होजायं अरु खड्ग हाथमें लेकर शत्रु-
ओंको बिकल करो, अर्थात् जेहिप्रकार से कुलभूषितहोय
वह यत्नकर तुम शत्रुघ्नके साथ गमनकरो तुमकामा-
र्ग बिषे मंगल होवें ६।१० अरु अपना धनुष करमेंधा-
रण करो जेहिका शब्द सुनिकै अरि दल बिकल होतेहैं
व शत्रुओंके नाशने वाला अक्षय तूणीर धारण करो अरु
बज्रके समान कवच सनाह शोभित करो व शीशत्राण
अवतंस युक्त मणिनसे भूषित हर्षित होकर धारण करो
११।१४ यहि बिधिके बचन पतिसे कहिकै स्वामीकी
छबिदेखिकै तन पुलकित होगई, निज स्त्रीकेबचनसुनिकै
महाबीर पुष्कल बोले हे कान्तवती जैसा तुम कहतीहो
वैसाही करेंगेहमने पहिलेहीसेहृदयमेंनिरूपणकर लिया
है तुमको संसारमें सबबीरपत्नी कहिकै तुम्हारा यश
व कीर्ति गावैंगे१५।१६ अरु जो तुमने कवच, मुकुट, चाप
तूणीर दियाहै सो मैं धारण करलिया व बसन भूषण
आदि व अस्त्र शस्त्र सब ग्रहण करलिये श्रीशेषजीबोले
किहे मुने उस समय सुभट शिरोमणि पुष्कल अस्त्रशस्त्र
युक्त पुष्पमाल पहिरे कस्तूरी, चंदन, अगर, सुगन्धोंसे
चर्चितयहिप्रकार पतिका शृङ्गार करिकैआरतीकरतीभई
फिरछबिसेछकित होकर मुक्ताहलोंकीबर्षाकियाअरुनेत्र
सजल करिकै पतिको भेंटिकै आनन्दित भई तब पुष्कल
प्रेम नवीन देखिकै अनेक प्रकारसे परितोषण किया
अरु कहा किहेप्रिये सब प्रकारसे संशयदूरकरोतुम्हारे
मनोहर बचनोंको अङ्गीकारकरिहौं असकहिकै पुष्कल

कान्तमती निजस्त्रीको सम्बोधन करिकै फिरि रथमें चढ़िकै चलतेभये तब वह बाला इकटकदृष्टिसे देखती रही १७। २३ फिर पतिदेवता का ध्यान करके धीर्य्य किया तब महाबीर पुष्कल पिता भरतजीके भवन को गये वहां जाकर माता पिताको प्रेमबश जानिकै स्तुति करने लगे कि हे नाथ प्रसन्न होकर आज्ञादीजिये अरु श्रीरामचन्द्र जीको सदैव सन्तुष्ट करते रहियो व लक्ष्मण पितुभ्राता भी सर्बदा पालनीयहैं यह कहिकै माता पिताके चरणोंकी बन्दना करिकै गमनकरते भये तब महाबीर शत्रुघ्न की सैन्यमें पृष्ठरक्षा करने को शत्रुघ्नजीके रथके निकट अपना स्यन्दन उपस्थित किया तब सब बीर अस्त्रशस्त्र से पूरित अपने २ रथ गजोंमें आरूढ़हुये तब शत्रुघ्नजीकी आज्ञासे अश्वराज कोआगे करिकैसबचमू चलती भई २४।२६ तदनन्तर प्रथमतो अश्वराज पूर्बदिशामें पांचालदेश वफिर उत्तर कुरु देशोंमें प्रवेश किया तहां श्रीमान् देश व सब मनुष्यों को देखतेभये जहां की शोभा अपूर्व थी ३० श्री शेषजी बोले कि हे बात्स्यायन यहिप्रकार जहां२ बाजिराज सब रणधीर बीरों से रक्षितगये तहां का श्रीरामचन्द्र जीकायशश्रवण करो जब सब भक्तोंने रावण का बध देवताओं के अर्थ समुझिकै तेहिकेनिवारणार्थ अश्वमेधयज्ञ सुनिकै सम्पूर्ण जगत्में निर्मल परम पद अर्थात् योगाभ्यासके देनेवाली कीर्तिको प्रकट करनेलगे ३१।३२ तिनकी यहरीतिदेखिकै शत्रुघ्नजीने

आनन्दित होकर उनको नानाप्रकारके भूषण, बसन रत्न, माला देकर पूर्णकिया ३३ अरुतेजस्वी सुमंतनाम श्रेष्ठमंत्री रघुनाथजीकाभक्त सबविद्याओंका ज्ञाताभी ससैन्य शत्रुघ्नजीकी आज्ञाकेअनुसार चलेजातेहैं ३४ यहिप्रकार नगर, ग्राम, देशोंमें बाजिराज ससैन्य भ्रमण करने लगे परन्तु श्रीरामचन्द्रजीकी उज्ज्वल कीर्ति से कोई वीर नहीं बांधसक्तेथे ३५ अरु तिन देशनके राजा गजरथ, तुरंगआदिसे चतुरंगिणी सेनासाजिकै व बहुतधन मणिगण समेत भेंटलैकैशत्रुघ्नजीको मिलतेथे अरु कहतेहैं कि हेरामप्रिय पुत्र, कलत्र, धन, धामहमारा कुछ नहीं यह सब श्रीरामकी मायाहै तब शत्रुघ्नजी फिर उन्हींको राज्य समुदाय सौंपतेजाते थे यहिप्रकार अनेकन राजा नितप्रति मार्गमें मिलतेरहें तेऊसंगमें होजातेथे ३५। ३६ यहिक्रमसे अश्वसमेत ससैन्यरघुराजशत्रुघ्नजी अहिछत्रपुरी के निकट आतेभये तेहिपुरी में समस्तजन संकुलित व सब स्त्रीपतिब्रता व बेदपाठी ब्राह्मण व मणियोंसे भूषित गृह व हाट मणिमयशोभित मनोहरस्त्री जिनके दर्शनोंसे मनमोहित होताथा यहिप्रकार अपने २ धर्म्ममें तत्पर सबनरनारि ऐसे सुखभोग करतेथे मानोधनदपुर के बासीहैं यहि प्रकार बिभव देदीप्यमान होताथा ४० । ४३ तहां कोटिन रणधीर बाणबिद्यामें निपुणसदैव निष्कपटसे राजाकी सेवकाई करतेथे ४४ यहिप्रकार का उद्भट नगर दूरसे देखिकै जेहिके समीप कोवृक्ष पुष्पबाटिका अर्थात् देव-

दारु, नागतिलक, चंम्पक, पाटल, मन्दार, अशोक, आनन्ददायी को विदार आदि पुष्प फलोंसे भूषित शत्रुघ्नजी तेहिबाटिका को देखतेभये तब पुष्पबाटिका के समीप सुभटन सहित बाजिराज प्रवेश करतेभये तहां अद्भुत देव भवन वैडूर्य्य आदि मणिमुक्ताओंसे भूषितदेखा व वहां अमरपुरके समान शोभामानो कैलाशकी शोभा प्रकाशकरतीहै व द्वारोंमेंसुवर्णकेखम्भा आदिमांगल्लिक वस्तुशोभित होतीथी तेहिपुरकी शोभाको देखिकै हर्षसे शत्रुघ्नजी मंत्रिराज सुमंतजीसे पूछते भये ४५।५२ हेमंत्रिन् यहां कौन देवराजकी प्रभुताईहै अरु यहां कौन पूजनीयहै यह भेद बर्णन करो ५३ तब सुमंत ने स्वामीके प्रश्नको सुनिकै व सब मन्दिरोंकी शोभा देखिकै बोले कि हे राजन् यहां त्रैलोक्य मातुभक्तों के हितार्थ कामके देनेवाली अर्थात् कामददेवी बासकरती हैं जिनके दरशमात्रसे भक्तजन सर्बदुःख जालसे नाश होकर सर्व सिद्धिको प्राप्तहोतेहैं अरु देवदनुज आदि चराचर इनके आश्रयीहैं येई आदिशक्ति सबको काम अर्थ, धर्म, मोक्ष कीदाताहैं प्रथम सुमद राजाने तपो बल से इनको प्रसन्न किया तब महारानीजी ने प्रसन्नहोकर तबसे यहि स्थल में बासकिया, अरु भक्तके दुःखनाशनहेत व तेहिके उद्धारणके कारण, तेहिकी प्रीतिसेयहां बासकरतीहैं, इनको ध्यानकरके बन्दना करो तब शत्रुघ्नजीने मंत्रिराज की यहवाणी सुनिकै प्रसन्नता पूर्वक प्रणाम करके फिर सुमंत से बोले कि

हे तात कामदादेवीकी समस्तकथा सुनाइये कि सुमद नाम राजाने केहिकारण प्रबलतप करिकै कामद देवी को बशकिया आदि कथा प्रीतिपूर्बक बर्णन करौ, तब रिपुदहनकी यह वाणी सुनकर सुमन्तजी बर्णन करनेलगे ५४।६१ कि प्रथम सुमदने शत्रुगणों को परास्त करके सब राज समाज प्राप्त किया त-दनन्तर बहुग्लानि हृदयमें बिचारिकै सब देवोंसे शो-भित व निर्मल तीर्थ व मुनि वृन्दोंसे सेबित हिमालय नाम पर्बतमें जायकै तप का प्रारम्भकरदिया व तीन बर्ष एकचरण से ठाढ़ेरहे व कर्ण अग्नि नेत्र जोरे तप करने लगे हृदयमें कामदा देवी का ध्यानकिये प्राण सूखने लगे यहिबिधि महाउग्र तप अर्थात् तीनबर्ष पर्य्यन्त शीतल जलमें बास कियो व एकबर्ष पंचाग्नि से तप्तहुये महाधीर यहि प्रकारसे तनक्षीण कियो फिर तीनबर्ष ऊर्ध्वमुख करके बायुपानकिया तदनन्तर तीन वर्ष पवन भी रोंकलिया इसबिधि से कामदा का ध्यान करते अठारह बर्ष बीतगये तब घोरतप देखिकै सुरराज इन्द्र कम्पित हुये अरु कामदेवको स्तुति करने लगे तेहिसमयमें मदन कैसागर्बित था कि ब्रह्मा शिव आदिका बल कुछनहीं समझताथा तिन रतिनाथ से सुरेन्द्र बोले हेतातमेरे अर्थ कुछरचनाकरौ कि सुमद नाम राजा मेरे पद के अर्थ घोरतप करताहै तेहिका तप जायकै भंग करौकि तुम्हारेही बलसेइन्द्रपदमें बासकरें यह सुनिकैजगबिजयीकामदेव गर्वयुक्तबाणीबोला किहे

नाथसुमद राजाकीक्यागिनतीहै उसकोतो निमिषमात्रमें परास्तकरूंगाव आपक्याअल्पतपकाबखान करतेहौमेरा प्रभाव सुनौ कि मैंने महाब्रह्मचारिन का तप क्षणमें भंग करदिया है ६२।७२ देखोमेरेही बाणसे बिकलह्वैकै चन्द्रमाने गुरुपत्नीतारा से रतिकिया, अरुतुमनेभी मुनि पत्नी अहल्यासे भोग कियो जेहिकारण घोर शाप प्राप्त हुआथा, अरु महामुनि राज राजर्षि बिश्वामित्रजीने उर्वशीसे गमनकिया, यहिप्रकार सबको परास्तकिया आपशोचनकरिये तुम्हारे अर्थमैं राजा सुमदका अवश्य जीतिलेउंगा यहि बिधिसे कामदेवनेसुरेन्द्रका परितोष करकेहेमकूट अर्थात् हिमालयपर्वतमेंमनमें रोष बढ़ायकै जाताभया ७३। ७५ संगमें अपने सहायी बसन्तऋतु राज व रम्भा, मेनकादि अप्सरा लैकै सुमदराजके समीप जाताभयावहां जातेही पहिलेतो बसन्तऋतुका निर्माण किया जेहिसे सम्पूर्णवृक्ष नव पल्लव होगये तिनमें शुक आदि मनोहर बोल बोलने लगे अरु भ्रमर गण गुंजार करने लगे जेहिको सुनिकै मुनियों के कामाग्नि प्रज्ज्वलित होतीथी अरु शीतल मन्द२ सुगन्धित बायुबहनेलगी अरु अगर लवंग सुगन्धसे पूरित पवनलानेलगी यहिप्रकार शोभामें प्राप्त रम्भादिक अपनी २ सखिन समेत सुमदराज केनिकट आईं अरु किन्नरस्वरकेसमान मनोहर गीत प्रणव, मृदंग, बीणा, करताल बजायकै गानेलगीं तब गान सुनिकै राजाजागि कै अद्भुत चरित्र देखनेलगा अरु तिनने भूपकी मति

रससेबिरुद्ध देखिकै अनेकप्रकार के कटाक्ष करने लगीं अरु कामदेव नेभी अत्यन्त क्रोध किया अरुपीछेसे सुमन बाण प्रहार किया तब अप्सराओं ने कामबाण प्रहार जानिकै सुमदराजके चरण कटाक्ष करिकैचापनेलगींकोई गाने लगीं कोई नृत्य करने लगीं, कोई कटाक्ष करके नृपमन क्षोभित करनेलगीं यहिप्रकारसे अप्सराओंने अनेक मायाकी परन्तु जितेन्द्रिय राजर्षिका मन चलाय मान न हुवा ७६।८३ अरुमनमें जाना किये अप्सरागण मेरा तप नाश करनेको इन्होंने छल ठानाहै अवश्य सुर राजने कामको भेजाहोगा उसीकी यह सबमायाहै यह बिचारांशकर परमधीर सुमद राज उनसे बोलेकि तुम्हारास्थानकहांहैव तुमनेकेहिकारणयहसनेहउतपन्न कियाहै अरु जो तुम्हारादरश महत्तपसेमुनियोंकोप्राप्त होताहैसोतुमनेअल्प तपसेहमकोदियाहै इसकारणइस समयमें हमारीअहोभाग्यहै अरु तुम्हारेदर्शन संसारको अगमहैं यहि प्रकार चतुर शिरोमणि सुमदराज बोलताभया ८४।८६ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषबात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायांकामाक्षमाख्यानंनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले कि हे बात्स्यायन यहिप्रकार राजा के वचन सुन अप्सरा गण भाव दरशाय अपने बशजानि कै बोलीं १ हे कन्त हम बर नारी तुम्हारे तपोबल

के अनुसार प्राप्तभई आप अब तप छोड़िकै हमसब
को अपने आश्रय जानिकै भोगकरौ २ देखो यहघृता
क्षी नाम अप्सरा चम्पकवर्णा जेहिकेमुखमें बिशद कपूर
की गन्धउड़तीहै अरु रुचिर शरीर अतिछबिवाले उरज
मुसक्याती हुई तुमको याचतीहै यहिके अर्थ मुनिजन
तप करतेहैं तेऊनहीं देखसक्तेहैं हेनाथअबदुखमूल तप
छोड़िकै रमणकरो अब देखोमैं केलि करनेमें निपुण मेरे
साथ रतिकरौ ३। ५ अरु उत्तम बिमानमें सवार
होकर पुण्यसेवित हिमालयकेकंगूरोंमेंहमारेसाथ विहार
करौ ६ देखो सुन्दर छवियौबनवारी तिलोत्तमा तुम्हारे
शिरमें चमर ढारतीहै यह तुमसे अहर्निशि कामकथा
वर्णन करती रहैगी यह बाला देवताओंको भी दुर्लभहै
तुम अधरामृतपानकरौ अब हम सब अप्सरागणसमेत
बिमानमें आरूढ़ह्वैकै नन्दनआदिबनमें भ्रमणकरौ ७।८
यहिप्रकार अप्सराओंकी बाणी सुन सुमदराज मनमें
जानाकि मेरे तप विघ्न करनेके लिये इन्होंने मायाठा-
नीहै अरु इनके सनेहसे सब तपो बल नष्ट होगा यह
चित्तमें दृढ़करिकै तिनसे गम्भीर बचनबोले कि हे मा-
ता तुम सदैव जगत जननीसी मेरे हृदयमें बासकरती
हो अरु मैं जिहिके जिहिके अर्थ चिन्तना करताहूं सोई
ईश्वरी अवश्यकरके दर्शन देगी ६।११ अरु तुमने जो
स्वर्गका सुख याफल कथनकिया उसकोतो वेदने तुच्छ
वर्णन कियाहै अरु मेरीस्वामिनी मेरीभक्ति देखिकै बर-
दान दैकै अशोक करैंगी जेहिके भजन से ब्रह्माजीको

सत्यलोक प्राप्त हुआ उसीका सब मुनिजन आरतभंज-
न यशगातेहैं सोईहमको बरदान देगी जोसदैव आनन्द
रूप रहतीहै १२।१३ अरुनन्दनगिरि, अमृत, स्वर्ग, ये
तोस्वल्प पुण्य के भोगहैंऔ येई अन्तसमयपरभवरोग
दायक होतेहैं १४ ये वचन सुनि कै कामदेवने अत्यन्त
क्रोधसे पांचौ बाण श्रवण लगि तानिकै सुमदराज की
पीठमें मारताभया अरु अप्सराओंने काम क्रोध देखिकै
अपार कटाक्षकरनेलगींकोईनाचने, गाने, कोईबिचारांश
करनेलगींयहि प्रकारसकलकलामन्मथने प्रकाश किया
परन्तुतपोनिधि सुमदराजके कोईनव्याप्तहुईतबलज्जित
होकर सुरेन्द्रके पासजायकै सब प्रसंग बर्णनकियातब
भयभीतहोकरविष्णुभगवान्से बिनयकियातब जगज्ज-
ननी भगवतीनेसुमदराजकोविषयआदिसेबिगत जानिकै
सिंहमें आरूढ़ हाथमेंअंकुश, पाश, धनुष, बाण धारणकि
ये संसार में भक्त जनोंको रक्षाकारिणी, कोटिन सूर्यकी
द्युति अंगमें देदीप्यमान, अरु बसन भूषण धारणकिये,
ऐसीजगदम्बाकी छबि देखिकै सुमदराज हर्षित होजाते
भये अरु मन्द २ मुसक्यातेहुये शिरमें हाथ लगाये ऐ
सीज त्माताको अवलोकन करकेहृदयमें सिद्धि दायिनी
निरूपण करिकै बारम्बार प्रणाम करते भये १५।२१
सुमन्तने कहाकि हे शत्रुघ्न स्वारथमें निपुण सुमदराज
गद्गद कण्ठ, हर्ष उरमें छाइरहा जेहिसे नैननमेंनीर
प्रस्फुरित हो आया फिर राजाने दास भावहोकर शीश
नायकैअस्तुति करनेलगे २२ (अथदेव्यास्तुतिः) जय देबि

महादेवि भक्त वृन्दैकसेविते॥ब्रह्मरुद्रादिदेवेन्द्र सेवितां
घ्रियुगेऽनघे१ मातस्तवकलाविद्धमेतद्भातिचराचरं॥त्वद्दते
नास्तिसर्वत्रमातर्भद्रनमोस्तुते २ महीत्वयाधारशक्त्या
स्थापिताचलतीहन॥ सपर्वत बनोद्यानदिगंतै रूपशोभि
ता ३ सूर्य्यः तपतिखेतीक्ष्णैरंशुभिःप्रतयन्मही ॥ त्वच्छ
क्त्यबशुधासंस्थंरसंगृह्यान्विकुचंति ४ अन्तरर्वहिःस्थितो
बह्निः लोकानांप्रकरोतिशं ॥ त्वत्प्रतापान्महादेवि सुरा
सुरनमस्कृते ५ त्वंबिद्यात्वंमहामायाबिष्णोर्लोकैकपालि
नः ॥त्वंशक्त्यासृजसी दत्वेपालयस्यत्सिमोहिनी ६ त्वतः
सर्वेसुराःप्राप्यसिद्धिंसुखमयंतिवै ॥ मांपालयकृपानाथेव
न्दितभक्तवत्सले७रक्षमांसेवकंमातस्त्वदीयचरणारणम्।
कुरुमेंवांछितेसिद्धिंमहापुरुषपूर्वजे ८सुमन्तजीबोले किहे
रघुराज यह सुमदराजकी स्तुतिसुनजगत्माता भगवती
मग्न होकर बोलीकि वरम्ब्रूहिअर्थात् हे राजन् वरदान
मांगो२ तबनृप अपना कार्य्य स्मरण करिकै बोलाकिहे
जगदेश्वरी शत्रुनकोनाशकरिकै निष्कण्टक राज्यकोप्राप्त
करौ अरु अपने चरणोंकी रति दीजै व सदैव कृपा क-
रते रहिये अरु अपना जन जानिकै यह काज करिये
कि अक्षय मुक्ति दीजिये ३१।३२ तब कामदा भगव-
ती बोली किहे राजन् तेरा राज्य निष्कण्टक होगा
यह मेरा सत्य बचनहै अरु पति देवता माननीय सुख
धामपतिव्रता स्त्रीतोको प्राप्तहोगी अरु तुमकभी शत्रुसे
अजय न होगे अब हे सुत मुक्तिका कारण श्रवण करो
आगे रघुकुल शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजो रावण बधकरैं

गे तेहिको प्रायश्चित्त मानिकै अश्वमेध यज्ञकरैंगे तेहि यज्ञमें अश्व छोड़ैंगे अरु अश्वके रक्षणीय उनके लघु-भ्राता शत्रुघ्नजी होंगे सो अश्व ससैन्य तुम्हारे नगरमें-आवैगा हे सुत कलत्र,धन,धाम, सब कामतजिकै तिन को अवश्य मिलियो अरु सब अपनी सेनालैकै तिनके साथ सम्पूर्ण पृथ्वीतल भ्रमण करियो अरु सबसे बि-जय करके शत्रुघ्नजी के साथ अवध अर्थात् अयोध्या जीमें प्रवेश करियो जहां खल गणोंके नाश कारक श्री रामचन्द्रजी बिराजमान होंगे जिनकी बन्दना ब्रह्मादि-क देवता चराचर करतेहैं जब तिनको शरणागत जा-यकै उनके दर्शन करोगे तब प्रकृति परिहरिकै मुक्तिको प्राप्त होगे अरु हे तात जो गति मुनियोंको दुर्लभहैसो गति तुमको अवश्य करके मिलेगी तबतक तुम आनन्द पूर्बक राज्य करो जब तक बाजिराज न आवै जब आवै तब सब कार्य्य छोड़िकै शरणागतजाना उसीसे मुक्तपद को प्राप्तहोगे ३४।४० अस कहिकै कामाख्यादेबी अं-तरध्यान होतीभई तब सुमदराज ने शत्रुगणोंको परास्त करिकै निजराज्य श्रीजगज्जननी की कृपासे प्राप्त करता भया सोई यह अहि छत्र पुरहै अरु इसीमें सुमद राज ससैन्य बीरत्व भूषित राज्य करताहै सोकामाख्याका-बचन स्मरण करिकै अपने पुरसमीप श्रीरामचन्द्रजीका बाजिराज सुनिकै आनन्द पूर्बक सहित समाजमदत्या-गिकै मिलैगा अरु नाना प्रकारसे तुम्हारी सेवा करेगा श्रीरघुनाथजीके प्रतापसे हमने सुमद राजकी कथायहि

प्रकार बर्णनकिया ४१।४४ श्रीशेषजी बोले कि हे बात्स्यायनयशस्वी सुमद राजकी निर्मल कथा श्रवणकरके रघूत्तम शत्रुघ्नजी बोलतेभये किहे ज्ञान निधि साधु साधु ज्ञानियोंके शिरो मणि हमारे ऊपर अतीव कृपा कियो यहकहिकै शत्रुघ्नजी आनन्दित होजाते भये ४५ श्री व्यासजी बोले कि हे सौनकादि ऋषियो अब हम सुमदराजकी राज्यका वर्णन करतेहैं अर्थात् सुमदोपाख्यान श्रवणकरो तेहि समय बिषे सुमदराज पुरजन परिजन सहित सुखासीन सभामें बैठाथा तेहिका सहन शील देखिकै अनेकन राजा हाथजोरे रहतेथे अरु भूसुर अर्थात् तपोनिधि ब्राह्मणोंके समूह बेद पढ़नेमें निपुण सभा गृहमें स्वस्त्ययनके अर्थउपस्थित रहतेथे अरु तेहि नगरमें कुबेरके समानधनवाले बैश्य मनसाबाचासे नृपतिकी सेवा करतेथे अरु बेद बिद्यामें बिनोद व न्यायमें निपुण द्विजबर आशीर्बाद देतेथे अरु प्रजापुत्र समान धर्म्म युक्त पालताथा व बेदानुसार कर्म्म सदैव करताथा यहि प्रकार शुभ आचरणोंसिसभा गृहमें सुमद राज बिद्यमानथा ४६ ।४८ तेहि अवसरमें एक राज दूत पुरके निकट बाजिराज को देखिकै राजाके निकट आयकर बार२ पदबन्दना करके शुभ वचन प्रकाशकरता भया किहे नाथ सुवर्ण पत्र युक्त मनोहर अश्वआया है मैंकुछ भेदतौवर्णन नहीं करसक्ता परन्तु रणधीर बीर उसकी रक्षा करतेहैं दूतके बचन सुन सुमदराजने चतुर दूतबोलिकै आज्ञादी कि तुम सूचित करो कि केहि रा-

ज राजेन्द्रका अश्वहै शीघ्रता पूर्वक यह कार्य्य करौ त-
ब चरणोंकी बन्दना करके दूतराजक्षणपर्य्यन्तमेंसमस्त
हाल जानिकै नृपति के समीप आताभया व समस्त
व्याख्यान यथाकर्म बर्णन करदिया तब सुमदराज सुनि
कै सब अंगोंसे पुलकित होगये अरु रघुनाथजीका अ-
श्व जानिकै प्रेमकेबिवश होकर तन दशा भूलगये फिरि
सचेत होकर बोले किहे मंत्रियो ध्वजा,पताका,तोरण क
लश आदि मांगल्लिक वस्तु सब नगरमें सुशोभित क-
रौ अरु सहस्त्रों कन्या शुभ भूषणोंसे भूषित करके हा-
थियोंपै आरूढ़ करकेवगज मुक्ता हलोंकी बर्षाकरैं अरु
समस्त पुरजन मंगल साज साजिकै श्रीशत्रुघ्नजी के
मिलनेकोचलोयहि प्रकारसबकोआज्ञादेकैआपसकुटुम्ब
प्रस्थानकिया४९।५४ इहांशत्रुघ्नजीनेपुष्कलआदिभटन
सहितसुमदराजकोआतेदेखाकि अमितगज,रथ,पदचर,
पालकीचित्र बिचित्र सैन्यबनायमिलनेकोसुमदराजआय
कै रामानुजशत्रुघ्नजीके चरणकमलोंमेंप्राप्तहुयेअरुहाथ
जोरिकैबोलेकिहे नाथतुम सब प्रकार से पूर्णहौ अरुमैं
आज तुम्हारे चरण कमल देखिकै धन्यहुआ अरु यह
जोमेरा राज्य ,कोष ,परिवार,मणि ,माणिकगृह ,बिभ-
व सो अपना जानिकै मोको अपना अनुचर करौ ५५।
५६ औसिद्धिदायिनी कामाख्याने पूर्वमें कहाथा सोबा-
जिराज की मार्ग देखताहीथा आजमाताका बचनसत्य
हुवा व मेरा भाग्यफल प्राप्तहुवा कि सहित रघुराज के
वाजिराज प्राप्तभये अबहेनाथ मेरानगरदेखिकै अनुगा-

भो जानिकै कृतार्थ करिके मेरे कुलका पालन करौ तुमदीनदयालु हो ६० । ६१ ऐसे कारुणिक बचनक-हिकैसुमदराज ऐरावत केसमान दीप्तिवाला गज मंगाइ कै पुष्कलसहित शत्रुघ्नजी कोआरूढ़ कराइकै अपनीसे ना को आज्ञादीकि प्रणव, भेरी, बीणा आदि निशान शब्दित हों तबसुमदराज के नगरमें प्रवेश करनेसे अने-कन कन्या कुंजरोंमें चढ़ींगजमुक्ता मणि मोतियोंकी ब-र्षा करनेलगीं वआनन्द पूर्वक मंगल गानेलगीं तबइन्द्रा दिके सेवनेयोग्य शत्रुघ्नजीपुष्कल समेतमन्द २चलते नगर में पहुंचे सबप्रकार से ग्राम मनोहर देखिकै प्रसन्न होतेभये तबयज्ञ तुरंग व बीरों सहित महारा-जेन्द्र कोराज भवनमें लैजाकर अर्घ्यपाद्य दैकर पूजन किया अरु मिष्ठान्न भोजन कराये फिरि यथा योग्यसब को बास कराया अरु सम्पूर्ण राज, कोष परिवार, आदि विभवआनन्द पूर्वक सुमदराजनेश्रीरामजीकेसमर्पणकि या६२।६७ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्याय नसम्बादेरामाश्वमेधभाषायां शत्रुघ्नांहिक्षत्रांपुरींप्रबेशो नामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

श्रीशेषजीबोले कि हे मुनेतदनन्त सुमदराजनेमहा-त्मा शत्रुघ्नजीको अतीव प्रसन्नकियाफिरिमुदितह्वैकै राजराजेन्द्र श्रीरघुनाथ जीकी कुशलपूंछा किहे कृपालु अखिल लोकनायक भक्तोंके रक्षार्थ अवतार लियाहैअरु

मेरे अनुग्रह करनेवाले कुशलतोहैं १। २ अरु अयोध्या
बासी नरनारि धन्यहैं जेअहर्निश श्रीरामचन्द्रका कम-
लस्वरूपी मुखारबिन्द अवलोकन करके महासुखसाग-
रमें बिहार करतेहैं अरु मैंभी जब शरण में जायकैप्राप्त
होऊंगा तब मुझको भी सकुटुम्ब मुक्तकरेंगे अरु मेरासब
राजकोष अवश्य करके पवित्र करेंगे जो पहिले कामदा
देवीजीने कहाथा कि श्रीरामके दर्शनकरकेसकलत्र मुक्त
होवोगे सोई अवसर अबप्राप्तहुवा ३।५ प्रेमसहित सुमद
राजके ऐसे बचन सुन हर्षित ह्वैके शत्रुघ्नजी श्रीराम
गुण सहित कुशलके बर्णनकिया फिरि तीनरात्री बास
करके राजाको सुखदिया तदनन्तरगमनकी इच्छाकरते
भये सो देखिकै सुमदराजने शीघ्रता पूर्वक पुत्रको राज्य
दैकर आप फिर भेंटकीसामग्री लैकर प्रसन्नहोकर जहां
शत्रुघ्नजी पुष्कल समेतथे उनके समीप आय बिनय
पूर्बक भेंट आगे धरिकै व रामभ्राताकी कृपादृष्टि दे-
खिकै जितने रिपुसूदनके किङ्करथे सबको बसन, भूषण
धन,से तोषित किया अरु कोटिन गज, रथ, पदचर
रणधीर गर्जते तर्जते तिनके मध्यरथमें शत्रुघ्न पुष्कल
मंत्रिन सहित व अनेक राजाओंसे सेवित हास्य करते
हुये मार्ग बिषे श्रीरामचन्द्रके प्रतापसे सब बीर अभय
चलेजातेथे ६।११ चलतेर पयस्विनीके निकटगये आगे
बाजिराज तिनके पाछे सबसेन समाज सहित रिपुदहन
संगमें चतुरंगिणी सैन्य लिये आनन्दपूर्बक भ्रमण कर-
तेथे जहां तहां तप निधान ऋषीश्वर श्रीरामयश वर्णन

करतेथे वहां प्रमुदित शत्रुघ्नजी जातेथे १२। १३ तेहि समय अद्भुत च्यवन ऋषि मनोहर वचन बोले कि श्लोक॥ एषधीमान्हरिर्यातो हरिणापरिरक्षितः हरिभिर्हरिभक्तैश्च हरिवर्यारुहैर्मुहुः१॥दोहा॥ बुद्धि मान हरिज्ञातुयह हरि रक्षहि बलवान॥ हरिसब हरिके भक्त हैं हरिवर चतुर सुजान॥ १४ यहि प्रकार मुनि गणों की बाणी सुन शत्रुघ्नजी अति सुखमें प्राप्तहोकर धर्म धुरन्धर प्रेमवश होगये पुनः मुनिराजोंको देखने लगे त्रैलोक्यके पावन करनेवाले ऋषि समूहवेदपाठकरतेथे जिसके श्रवण करनेसे क्षणमें महापातक अमंगल नाश होतेथे अरु अगणित मुनि श्रुतिके अनुसार अग्निहोत्र करतेथे जेहिके धूमसेनभविषेघनघोरसा सूचित होताथा अरु यज्ञस्थल अनेकन बनेथेउसीके प्रभावसे वहां सब जीवबैर रहित बास करतेथे देखो सहित सनेहके सिंह बनमेंगौओंको चरातेथे व त्रासत्यागिकैमूषक बिलारोंके अंकमें शयनकरतेथे अरु मोर, सर्प, नकुल येसब एकत्र होकर बिहार करतेथे अरु सिंहगज कोह भाव छोड़िकै तेहि स्थल बिषे बिचरतेथे मुनियोंके प्रतापसे सबोंने बिषमता छोड़दिया स्वप्नमें भी बैर भाव न मानतेथे अरु त्राससे बिगत सबसे सुहृद भाव मानिकै आनन्द पूर्वक बास करतेथे अरु मुनि गणोंने अपने आहार के अर्थ पसही संग्रह कीथी तिनको सब पशु भयत्या-गिकै चरतेथे ऋषिगण बरजते भीथे तोभी न मानतेथे सुरभीगणकुम्भसमान ऐन धारे नन्दिनीकेसमान खुरन

से निर्मलकरनेवाली मंगलमूलधूरिउड़ातीथीं तिनकेआ-
श्रयसेमुनिजन धर्म्म क्रियाकरतेथे शत्रुघ्नजीने यहिप्रका
रकारमणीय आश्रमदेख सचिवशिरोमणि सुमन्तजीसे
बोले२५।२५ कि हेमंत्रिराज यहिशुचिस्थानमें कौनमुनि
वर बास करतेहैं देखो यहां सब जड़जन्तु बैरबिहायकै
आनन्दपूर्वक बिचरतेहैं अरु अनेक मुनिराज बासकरतेहैं
यहसब सुखमूल कथा बर्णन करौजिनकी कथाश्रवणक-
रिकैमेरेगातनिर्मल होजायंगे तब रिपुनाशनके बचनसुनि
कैमंत्रिराज बोलते भये कि हेराजन् च्यवन नाम तपोनि
धि जीका यह प्रकाशितस्थानहै अरु तिन्हीं मुनिराजके
तपोबलसे सब जीव सुहृद्भावमें प्राप्तहैं अरुयहां अनेकन
मुनिपत्निन सहित रहिकै च्यवन ऋषिराज का भजनक-
रतेहैं हेशत्रुघ्नजो प्रथम इन्हीं मुनिराजने मनुके यज्ञ
बिषे सुरेन्द्रकामानभंगकरकेयज्ञकाभाग सुरवैद्य अर्थात्
अश्विनीकुमारकोदिया सोई च्यवन मानोंश्रुतिका शरीर
धारण किये यहिस्थलबिषे बिराजित हैं यह सुमन्तको
वाणीसे सुखदानि च्यवन ऋषिका चरित्रसुन सुमन्तसे
शक्रका मानखण्डन व समस्त कथा अनुरागसे पूछते
भये२६।२६ हेमंत्रिबर तेहिसमय बिषे सुरराजने कौन
सापापकर्म्म कियाथा जिससे च्यवनमुनि ने यह उग्र
दण्ड दियाकि उनका भाग बैद्यक में निपुण अश्विनी
कुमार को दिया यहमुझको बड़ा आश्चर्य्यहोता है इस
कारण समस्त कथा हमसे समझायकै बर्णन करौ तब
हर्षित होकर सुमन्तजी बर्णनकरनेलगे३० किभृगुबंशमें

बिख्यात भृगुमुनि सन्ध्या समय समिद लेनेको बनमें गये तेहि अवसरबिषे मुनिकेगृह में दुःखहोताभया कि दमननाम राक्षसअति घोर गर्जताहुआ भृगुजीके गृहमें प्रबेशकर दुर्वचन कहताभया कि मुनि तिय कहांहै तब अग्निने दनुज राजकी भय मानिकै बताइदिया तब गर्भवती अघरहित मुनितिय कोदुष्कर्म्मी पकड़लेजाता भया तब अत्यन्त ब्याकुलहोकर मुनिपत्नी मृगीके समानरोदन करकेबोलीहेभृगुनाथ,हेपति,हेकृपालुरक्षाकरहु २ यहिप्रकार मुनिपत्नीको बिलापकरते हुये दुष्टराक्षस पकड़े लियेजाताथा अरु फिर २ दुष्टबचन कहताहीथा सो सब सतीशिरोमणि भयबशहोकर सहतीथी हेरघुराज दारुणत्रासके बिबश तेहिसमय बिषे मुनिपत्नी का गर्भपतन होताभया तेहिसे अग्निके समान प्रज्वलित पृथ्वीमें गिरतेही कठोर शापदेतेभये किहे दुर्मति साधु सतावन हारे अवगुण खानि माताको दुःखित करिकै श्रुतिके प्रतिकूल मंगल चाहताहै हेरघूत्तम यह शाप सुनतेही दुःखदायी राक्षस भस्महोगया तब मुनिपत्नी अनमनीह्वैकै पुत्रको गोदमें उठायकै कम्पित गातसे निज सदन को आती भई तबतक तप धामभृगुमुनिसब प्रकारसे निज पत्नी को बिमल देखिकै अनलका पातक सूचित करिकै हुतभुक कोशाप देतेभये किहे अग्नि हमारे सत्यशापसे सर्वभक्षी होगे तब अग्नि भृगु जीके बचनसुनिकै ब्याकुल होकर दीनतापूर्बक विनयसुनाई किहेनाथ दयार्णव पाप अनुग्रह करौ मैं भयभीतहोकर

झूठ कहदिया तब मुनिराज दीन बचन सुनिकै बोले
कि सर्वभक्षी तो संसारमें होगे परन्तु सदैव शुद्ध रहौगे
पातक कभी न ब्यापैगा अर्थात् पापगामी न होगे
यहि प्रकार दयार्णव भृगुनाथ जीने अग्निको अनुग्रह
किया ३१। ४३ तदनन्तर मुनिराज भृगुजीने निजपुत्र
का श्रुतिके अनुसार जातकर्म्मकिया अरु गर्भते पतन
सुनिकै च्यवन असनाम धरतेभये तबदिन २ द्वितीयाके
चन्द्रसमान ऋषिबढ़नेलगा हेरघूत्तम यहि प्रकार कुछ
कालके अनन्तर च्यवन ज्ञान निधान होगये अरु
तपके अर्थ गृहको त्याग करके प्रस्थानकिया संसारके
पावन करनेवाली रेवानदीके तटपर शिष्यनसहित जाय
कै तपमें प्रवृत्तभये अरु उसी स्थलविषे दशसहस्रसम्बत्
व्रतधारणकिया तबरेताउड़ि२कै शरीरमेंजमिगईअर्थात्
शरीर कुधरखण्डके समानभूधरसा होगयाअरु अंशनमें
किंशुकके वृक्ष जमिगये अरु देहमें सर्पोंनेस्थल अर्थात्
बँबौरैं बनालीं व पक्षीगण देह खुजलातेहैं परन्तु मुनि
राजको तपमें मग्नहोनेसेकुछ विदितनहोताथा४४।४८
श्रीशेषजी बोले किहे वात्स्यायनयहि प्रकारच्यवनऋषि
राजने बड़ाउग्रतपकिया अबहमराजा मनुकोकथावर्णन
करतेहैं देखोएकसमयविषे मनुराजानेतीर्थगमनकाबिचा
रांश करकेसेनाकुटुम्बसाजसजिकैआनन्दपूर्वक रेवातीर
गये वहां जायकै श्रुतिकी रीत्यानुसारमज्जनकरिकै स-
प्रीति सुर पितृनको अंजलि दैकै ब्राह्मणोंकोअनेक दान
देकर प्रसन्नकिया तहां राज कन्या भूषणों बसनों से

उज्ज्वल सखिन समेत चारोंओर बन शोभादेखती फिर तीथी व अपनी शोभाको भी प्रकाश करतीथी, जेहिस्थल बिषे बिल वृक्षधारी च्यवन तप करतेथेतहां मनुसुतासखिन समेत जायकै बिल आदि देखती भईअरु यकटक चषदेखिकै बिनाजानेकुश हाथमेंलैकै भ्रमबश डालदिया तब कुशके लगतेही रुधिर बहने लगा सो दशा देखिकै राजकन्या दुःखित होकर पछिताती भई सभीत निज स्थल को आती भई अरु माता पिता से गुप्तकिथा औ क्षण२ पर्य्यन्त शोचित होतीथी अरु फिर मुनि पापके कारण उपद्रव होने लगे कि गिरि, कानन, समुद्र, धरणी कम्पायमान हुये व दिनमें उल्कापात होनेलग। व दिशों बिदिशों में धुवां होआया४६।५७ दिवसमें उलूक रोने लगे अरु वहुत से हाथी घोड़ेकालबशहुयेवबहुतसा धन रत्न नाश होगया व परस्पर कलहहोनेलगी अर्थात् च्यवन के पापका फल उदय हुआ तब महाराजामनुयह सब उत्पात देखिकै भय भीत हो म्लान होकर मंत्रिनसे बोलेकि किसीने मुनिपापकियाहै फिर राजाने ध्यान करके देखातो जो कन्याने कराल पापकियाथा सो सूचितहुआ तबमहादुःखित होकर सैन समेत च्यवन मुनिकेआश्रम जायकै तपोनिधि मुनिको देखिकै दण्डवत्कियाअरुकहा कि हेनाथ दीनदयाल पातक दूर करिकै कृपा करो हे मुनिवर अपना जन जानिकै दुसह दुःखदूर करोतवच्यवन कृपालु ह्वैकै राजा मनुसेबोलतेभये कितुम्हारी कन्याने हमारे नेत्रफोड़ डाले इसीसे यह सबउपद्रव हुये

सोई सुता जो मोको देउ तौसब अमंगल नाश होयंगे अरु तभी सब उत्पात एकही बार दूर होंगे तब मनुने च्यवन के यह बचन सुनकर हृदयमें अत्यन्त दुःखित हुये अरु सोई रूप, शील, गुणागर, कन्या बुलायकै विधि पूर्वक हृदयको बिदीर्ण करके च्यवनको समर्पण किया तब सब उपद्रव शान्तहुये अरु राजामनु भी ससैन्य मुनिराजकेचरणोंकोबन्दना करकेव्याकुलतासेनिजनगरीको आतेभये ५६।६५ इतिश्रीपद्मपुराणे रामाश्वमेधभाषायांच्यवनोपाख्यानबर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोलेकि द्विजबरमुनिबर च्यवनराजकन्या को पायकैघोरतप छोड़िकै अपने आश्रमकोजातेभये १ देखो मुनिराज एकतो अक्षहीन, अरु निर्बल कृशशरीर होगयेथे परन्तु राजकन्यासदैवआनन्दपूर्बकसेवाकरती थी जैसे हरिभक्त अहर्निश हरिको भजनकरतेहैं तैसेवह राजकन्या मुनिकीगतिदेखिकै परमभावसंयुक्त सबलाज तजिकैकाजकरतीथीजैसे इन्द्राणीसुरेन्द्रका सेवन करती हैं बैसेही सुभग सबगुणोंसे सम्पन्न राजकन्या मुनिका सेवन करतीथी २।३ अरुपतिकी आज्ञानुसार मूल फल आहार करतीथी व काम, क्रोध, लोभ, आलस्या त्यागिकै व च्यवनकी शुश्रूषा करती थी यहि प्रकार मनसाबाचासे ध्यान सेवनकरते हुयेपतिब्रतमेंप्रवृत्तदिन रात्रि काव्यतीतभी नहींजानतीथी यहिबिधिसेशतसंवत

पर्य्यन्त कालक्षेप किया ४।५ एक समय बिषेसुरबैद्य आश्वनी कुमार च्यवन मुनि के आश्रम परआतेभये तिन निजाश्रम में आये जान मुनिपत्नीने उनका स्वागत पूछिकै अर्घादिक देकर प्रसन्नता पूर्बक पूजन किया तब अश्विनी कुमारने प्रीतिदेखिकै प्रसन्नहोकर बोलेकिहे सर जात कुमारी बरम्ब्रू हि अर्थात् बर मांगो तिनकीप्रसन्न देखिकै बुद्धिवरराजकन्या स्वपतिकी इच्छासेबरकी याचनाकरके सुरबैद्यसे बोली किजो आप दयालु भये होतो मेरेपतिकेनयन नवीनकरो हेरघूत्तमताकेबचनसुनिकैसुर बैद्य बोलेकिहे पतिव्रता जो एक कार्य्यतुम्हारे पति करैं अर्थात् हमकोदेव समाजमें यज्ञ भागदेवेंतो हम यहि समय नवऊ नयन करदेवें यह सुनिकै च्यवनमुनिराजबोले कि तुमसुर श्रेष्ठभागके योग्यहो अवश्य हमतुम को यज्ञभागदेंगे ६।१४तब सुरबैद्य हर्षितहोकर बोले कियह तड़ाग सिद्धिरचित सुखदायक है इसमें तुम सबस्नानकरो यहसुनिकै तनक्षीण दुर्बलतपसे कृश शरीर ऊर्ध्व श्वास चलतेहुये निर्बलता से कांपते हुये बहुत कष्ट करके सरसमीप जायकैहर्षसे मज्जन करते भये अरु सुरबैद्य भी च्यवनके साथही जायकै मज्जन किया तव तीनों जन मज्जनकरके सुभग शरीर मदनके समान उत्तम स्वरूप स्त्रियोंके मोहने वाला कुण्डल कनकवर्णादिव्यमालाआदिसेभूषितसूर्य्य अग्निकेसमान तेज देदीप्यमान तेज देखिकै मुनिपत्नीने न पहिंचाना तबभ्रमकेबश होकर शरण जायकेपतिहित बिनयकिया

तब मुनिराज को सुरबैद्यने बताय दिया उनका सुभग शरीरअव लोकन करके अत्यन्तहर्षित हुई तबमुनिराजकी आज्ञासे बिमानमें आरूढ़ होकर यज्ञभाग की आशासे मुदित सुरवैद्य अश्विनीकुमार निजस्थान को जातेभये १५।१६ तबयहां च्यवनमुनिराज ने यह बिचारा कि राजकन्या ने मेरी बड़ी सेवा किया हृदयमें अत्यन्त कृपा करिकै प्रेमबश होकर बोले कि हम तुम्हारी परम भक्ति युक्त सेवासे यहिकाल बिषे अत्यन्त प्रसन्न भये कि संसारमें निजतन अत्यन्त प्याराहै सो हमारेअर्थ तुमने उसकोभी न बिचारकिया२०।२१ यहिसे आनन्ददायी बचन सुनो तपसमाधि ज्ञान आदि ममकृत सब सुकृतोंकाफल तुमनेमेरीसेवा करिके अपने वश करलिया जोसुख देवतोंको दुर्लभहै सोई आनन्द पूर्बक भोग करौ २२ अरुमेरे तपोबलसे दिव्यसुख आनन्द पूर्वक भोगकरौ तुमयोगमायामें निपुणहौ अस कहि च्यवनमुनि मौनहोजातेभये २३।२४ यहिप्रकार तपोनिधि च्यवनमुनिके बचनसुनलज्जित होकरहंसिकै वहराजकन्या मुनिपत्नीबोलीकि हेनाथतुमसमर्थ,त्रिकालज्ञ,अन्तर्यामी,हौ तथापिजोकृपालु दयाकरके पूछ्योहै तौसुनौ कि स्त्रिनको संसारमें यहीयोग्यहै कि एकबारभी स्वामीसंग भोगकरैं सोवेदनेभी कहाहै इसकारण आप अवश्य कीजिये हेकृपार्णव सो समयभीप्राप्तहै २५।२६ सुमन्त मुनिबोले किहेरघूत्तमयहित्रियकेबचनसुन मुनिराज तपो बलसे श्रेष्ठरचना करनेलगे कि रुचिर सुख

दायक दिब्यरत्नों से भूषित बिमान जिसकीशोभा बर्णन नहींहोसक्ती, अरु नानापदार्थमणिखम्भ, व दिब्यवस्त्र, बहुरंगके ध्वजा पताका, अरु फूलनकी माला तथा सुगन्धित पुष्पोंसेभ्रमरगण गुंजार करते भये अर्थात् ऐसी रचनारची कि जेहिको देखिकैविश्वकर्म्मा भीमोहितहोते थेअरु महामणिनके बिपुलपर्य्यंक अर्थात् शय्याभीशोभित होतीथीं मानोंचन्द्रमा शीतशोभासदनसुशोभितहो रहाहै अरु दिव्यविद्रुम वेदिकाअगिनितदेहरी हीरनके कपाटजो अमरपुरकीशोभाको लज्जितकरतेथेअरुनीलमणिके कंगूरा बहुत रत्ननकेकलश सूर्यकीदीप्ति वाले द्वारमें सुशोभित होतेथे अरु पद्मरागकञ्चन कुलिशकी भीती रचीं नानाप्रकारकेबितानललित शोभाछायदिया अरु तहां सम्पूर्ण गृह सुवर्ण मणि मय निर्माणकिये अरु बन तड़ागआदिसुखदायीवस्तुओं कामैं क्याबर्णन करूं तहां हंस कोकिला आदि मनोहर पक्षीनिज प्रतिबिम्बदेखिकै गुंजार करतेथे अरु विहारबिश्रामगृहभिन्न निर्माण किये यहि प्रकारकाउत्तम बिमानरचिकैमुनिबर राजकन्या को देखिकै बिस्मित भये किऐसा बिमानभी देखिकै भूपकुमारी हर्षितहुईतब त्रिकालज्ञ मुनिने जाना कि क्षीणदेहदेखिकै दुःखित भई तबबोले कि बाला यह शुभगसरोवर सुखमूलहै इसमेंजायकै मज्जनकरो तदनन्तर आनन्दपूर्बक बिमानमेंआरूढ़ ह्वैकै संपत्ति सुख अर्थात् सबसौख्य भोगकरो २७।३८मुनिबचन सुनिकै राजकन्यापतिदेवताको धन्यमानिकैचलती भई मलीन

बस्त्रोंसे क्षीण तनमें धूलि लपटि गईथी अरु केशबंधिकै जटाहोगयेथे इसदशासेपतिआज्ञाके अनुसारतड़ागविषे प्रवेशकरतीभईतहांमज्जनकरतेजलकेबीचमें हेममणिन के गृहबने उनमेंएकहजाररूपमें मन्मथको लजाने वाली बयकिशोर शुभलक्षणोंसे सम्पन्न तेसबराजकन्या मुनि-पत्नी को देखिकै हर्षसे हाथजोड़के बोलीं कि हेस्वा-मिनि हम सब तुम्हारी किङ्करी हैं यहिसमयविषे जो कुछ आज्ञादेउ तो हमसब करैं ऐसे बचन कहिकै प्रीति बढ़ायकै बिधिपूर्बक स्नान करातीभईं अरु दिव्य भूषण बसन अंग अंगनविषे पहिरावतीभईं अरु मधुर मिष्ठान्न भोजन करवाया तबपान बीरा खवाइकै मनोहर मुकुर अर्थात् दर्पणदिखाया यहिप्रकारसबसेवकाईकरिकैबिनय करतीभईं तब मुनिपत्नी दर्पणमें निजस्वरूपअवलोकन करनेलगी किमणिमुक्तनके हारउरबिषे सुशोभितचन्द्र-माके समान बदन कम्बुके समानग्रीवाऔर अंगभी छ-बिमें प्राप्त देखेव दिव्यबसन भूषण सजे देख रतिहूते अधिक दीप्ति अपनेमें देखतीभई ३६।४७तबतनमनमें अपनेस्वामीकोसुमिरणकरिकैसखिनसमेत च्यवनऋषि राजके समीपजातीभईतब सहस्त्र बिद्याधरियोंमें अपना में प्रकाशित देखिकै व मुनिराजको योगनिपुण देखिकै शंकितहुई तब मुनिनाथने तियके चित्तकीवृत्ती को जा-निकै सब सखिनसमेत निजस्त्रीकोबिमानमेंआरूढ़करके कैसे सुशोभितहुये मानोंजैसे तारागणमेंचन्द्रमाशोभित होताहै ४८।५२ अरु वहांसदैवमन्द २मारुतचलाकरता

व बसन्तऋतुका सदा प्रकाश रहताथा अरुतिहिस्थल विषे झरनाउत्तम जल झरतेथे वलोकपालबिहारकरतेथे अरुपुष्पभद्रु,वैभ्रक ,नन्दन, वृन्दारक, आदि बिपिनके सुखविमानमें आरूढ़तियगणानसहित च्यवन ऋषिराज विपुलकालविहारकरतेभये ५३।५४ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायां च्यवनस्यतपोभोगवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥ ॥

सोलहवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले कि हे बात्स्यायन यहिप्रकार च्यवन मुनिसौवर्षविमानमें आरूढ़बिहरतेभये १तब प्रियाकाम-नोरथ पूर्ण करिकै फिरतपमेंमनलायकै सब बिहारछोंड़ि पयस्वनीकेकिनारे आकर तपकरने लगे हेरघूत्तम तबसे इसीस्थानपरतपकरतेहैं उन्हींकेप्रभावसेसबजड़विगतबैर राग,द्वेष बासकरतेहैंसबशिष्यमुनिराजकोश्रुतिमेंप्रबीण मानिकैमनलायकैसेवन करतेहैं अरुयहांतपोनिधिवज्ञान निधान अनेकन मुनिनसहित च्यवनमुनेश्वरबासकरते हैं २।४इतनी कथा सुनाय सुमन्तजीबोलेकिहेराजन्एक समय विषे राजा सर्यातिने देवताओंके अर्थयज्ञरचनाकि-या तब पहिलेही अपने मंत्रीको निदेश दिया कि तुमच्य वन ऋषिराजको कन्या सहित लाओ तब वह शीघ्रगा मी मंत्री तुरन्त मुनिनाथ को ले आया तब राजाने स-हित कन्याके मुनिको अनल समान तेजसे आते देख म लीन होकर बन्दना करने लगा तब सुताने भेंट किया

तो श्रम बश आशिष कुछ न दिया व महा दुःखित हो-
कर सरोषसे बोले कि तूने क्या कर्म किया कि तपोनि-
धि च्यवन ऋषि राजको छोंड़िकै केहि कारण औरकेअ-
नुरागी भई अरु तू उत्पन्न तो उज्ज्वल कुलमें भईथीके
हि हेतु बुद्धि भ्रष्ट होगई जेहिसे कुल कलंकित करके प-
ति माता पिताकी कीर्ति को नाशकिया ७।१० ऐसे पि-
ता के बचन सुनिकै राजकन्या हंसिकै बोलती भई कि-
हे पिता येई मेरे पति भृगुनन्दन च्यवनहैं यह कहिकै
सकुचिगई अरु जेहि प्रकार युवावस्था मुनिने पाईथी
सो प्रसंग सुनाया तब राजाने कन्याकेयेबचनसुनिकै बि
स्मय बश होकर प्रेम सहित कन्याको अंकमें लगाय
कै आशिष दिया तदनन्तर यज्ञ क्रिया बिधि पूर्बकच्य-
वन जोसे करवाने लगे ११।१२ तब च्यवनजो ने जे
देव भागदायकनथे अर्थात् अश्वनीकुमार तिनको अपने
तपोबलसे इन्द्रका निरादर करके प्रथम भाग दिया
वपर्व बचन स्मरण करके अत्यन्त सत्कार किया भाग
लेते देख सुरेन्द्र क्रोधित हो काल समान बज्र हाथमें
लेकर अपना अपमान देखिकै दौड़ते भये तब च्यवनने
इन्द्रको वज्रलिये मारनेके लिये आते देख गर्ब सहित
हुंकार शब्द करते भये अरु मेरु समान बाहु थकित
अर्थात् जैसेके तैसे कर देते भये तब थकित बाहुसे सुर-
पति बेमन खड़े रहगये जैसे मंत्रबशसर्पसम्पूर्ण जन यह
कौतुक देखिकै बिस्मयकियो तब इन्द्र यज्ञमें अभिमान
छोड़िकै अस्तुति करने लगे किहेतपनिधान च्यवन भले

अश्वीनीकुमारकोपहिले भागदियो अरुअब मोपर प्रसन्न होकरकृपाकरिकै अभयकरौअरुहे दीनदयालमुनिनायक कृपालुमेरा अपराध क्षमा करौयह इन्द्रके बिनीत वचन सुनिकै च्यवनने क्रोधशान्त करलियाअर्थात्उसऊर्ध्वगामी भुजाको शान्तकिया औ पाप क्षमा करिकै आशिष देकर वाकयथारथ करते भये १३।१६ यहकौतुक देखिकै नगर लोग च्यवन का तेजबल सूचित करते भये व-अपना२भाग लैकर सब देवता जाते भये तब राजास-र्यातिने ब्राह्मणों को दानदिया यहि प्रकार विधि पूर्बक यज्ञ पूर्ण करिकै सहित समाज मज्जन करता भया २०।२१ सुमन्तजो बोले किहे शत्रुघ्नजी तुमने च्यवन मुनीश्वरको कथा पूछी सो हमने जन्म, योग, बिहार, सहित बर्णन किया अब आप तपोनिधि मुनिको प्रणा-म करिकै उत्तम आशिष प्राप्त करौ अरु तिय सहितअ-वश्य रघुपतिके पास यज्ञ विषे पठाओ २२।२३ यहि प्रकार बार्त्ता करके सब मग्नहोगये तब तक बाजिराज मुनिराजके आश्रममें बायु बेगसे प्राप्तहुये २४ तेहिस-मय बिषेच्यवनजी मज्जनके अर्थतेहि स्थलमें बिचरतेथे तब अश्वको देखिकै चकितसे देखने लगे उसी अवसर में बाजिराजकी रक्षक सेनभी समीप आगई तब शत्रुघ्न जीने रथ त्यागिकै समाज युक्त अनुराग पूर्बक च्यवन स्थान को गये वहां जाय तपो मूर्ति च्यवनको राजकन्या सहित बन्दना किया किहे नाथ दयालु चित्त कृपा करौ मैं सूर्य्य बंशमें श्री रामचन्द्रजीका लघुभ्राता शत्रु-

इन यज्ञके अश्वकी रक्षा को आयाहूं हे नाथ पावनकरौ यह प्रिय बचन सुनिकै मुनिबरने हर्षसे आशिष दिया कि तुम्हारा सहित कीर्तिके कल्याणहो २५।३० हे मुनियो देखो बड़े आश्चर्य्य की बातहै कि त्रिभुवन पति श्रीरामचन्द्रब्रत धारण करिकै अश्वमेध यज्ञ करतेहैं जिनके सुमिरणसे त्रैलोक्य क्षणमात्रमें पर स्त्री गमन आदि पाप समूह नाश करतेहैं अरु जिनकी चरण कमल की रजसे मुनि पत्नी अहल्या मोक्षहुई अरु शिव ब्रह्मा के पावन करने हारे ते पावन हेत यज्ञ करतेहैं आश्चर्य्यहै अरु दुराचारीराक्षसरण मण्डलमेंजिनकारूपदेखिके सायुज्य मुक्तिको प्राप्तहुये हे मुने ते अखिलेश्वर यज्ञ करतेहैं अरु जिनके अर्थ योगीजन योग करके परम पद को प्राप्त होतेहैं जिन रामकी छबि अवलोकन करिहौं यहिसे मैं पृथ्वीतलमें धन्यहौं। जिन रामकी कोटि कामके समान छबि चन्द्रवत् तेज शरीरमें देदीप्यमान कमलनैन शुभग कपोल, मदन धनुषके समान भृकुटी,मुक्तावलिके समान रदकी द्युति,कम्बु कण्ठ, उर बिशाल, बाहु रसाल, अरुण पाणि, त्रिबली मनोहर उरमें शोभित, इन्द्र नील मणि कदली समान युगुल जंघ, रुचिर ऊरू पद नखन को कौन कबि बर्णन करसकै अरु सुबर्ण की सीता व मुनिगणों समेत सरयूतीर यज्ञ करते देखिहौं। जे जन ऐसे श्री राम नामको त्यागिकै अपर देवके अनुरागी होतेहैं तिनकी रसना सर्पकीजिह्वाके समान ब्यर्थहै ३१।३८ आजु मैंने सब तपका

फल पाया कि मेरा मन भावन मनोरथ पूर्ण हुवा अरु जो रामदरश शिव ब्रह्मादिकनको दुर्लभहै सोमैं आज-तिनके दर्शन करि पद रज गातमें धरिकै निर्मलहोजाऊं गा अरु जब परस्पर बार्ता लाप करिहैं। तब मेरी भी रसना निर्मल होजायगी ३६।४०॥ यह कहिकैमुनिनाथ प्रेम मग्न होगये अरु गद्गदगिरासे नेत्रोंसे जलश्रव-त बोले हे रघुनाथ दीनदयाल धर्म मूरति प्रणतपालभ व निधिसेपारउतारौअसकहिकै ध्यानमें मग्न होगयेजि-ससे अपन पराव नहीं सूझि परताथा तब शत्रुघ्नजी बि-नीत वचन बोले कि मुने आप अयोध्या में चलिकै सब को सुख देकर यज्ञ उज्ज्वलकरौ अरु बिश्व पूज्यतुमको पायकै रघुपतिभी भाग्यवर होंगे मुनिच्यवनजीने यह बचन सुनिकै प्रेमसे हर्षित ह्वैकै सकुटुम्ब होम साज साथ लैकै चले तब पायन २ जाते देख बायुनन्दन हनु-मान जीको अत्यन्तदया लगी तब श्रीरामचन्द्रजीके भक्त शिरोमणि जानिकै शत्रुघ्नजीसे कहा कि महाराज मु-निनाथ को पायन २ जाते हुये मार्ग बिषे अत्यन्तखेद होगा देखोरामभक्तके कोमल चरणहैं जो आपअनुशा-सनदेउतोमैं अवध बिषे प्राप्तकरिआऊं कपिके बचनसुन हर्षसे आज्ञादेदी तब हनुमान् जी मुनि समीप जायकै सकलत्र पीठ चढ़ाइकै बायुके समान गमनकिया क्षण मात्रमें सरयूतीर जहां रघुनाथजी यज्ञकरतेहैं वहां प्राप्त हुये तबश्रीरामचन्द्रजीने च्यवनमुनि को आतेदेख हर्षसे उठिकै अर्घ्य पाद्यदेकर प्रेमयुक्त बोले कि हे मुनिनाथ

तुम्हारे दर्शन करकेमें धन्यहोगया व यज्ञपावनहोगया
च्यवनने रघुनाथजीके ऐसे बचनसुन प्रेम सेमग्नहोकर
गद्गद गिरा तनपुलकित लोचन श्रवतबोलेहेस्वामिन्
जोतुमनेपूजनकियासोधर्मकी शिषाप्रकटकीहै जिसमेंब्रा-
ह्मणकोसम्पूर्णजगत् इसप्रकारमानें ४।१।५।३ इतिश्रीपद्म
पुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्वादेरामाश्वमेधभा
षायांच्यवनस्याश्रमेहयगमनोनामषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले कि हे वात्स्यायन कपिराज हनुमा-
न् जोश्रीराम के पदवन्दन करके शत्रुघ्नजी को कटक
बिषे प्राप्तहुये १ अरु कृपार्णव शत्रुघ्नजी महाराजच्यव-
नकातपतेज देखिकै विस्मय युक्त प्रशंसा करनेलगे कि
तप तेज निधान च्यवनधन्यहैं कि जिन्होंने सुरदुर्लभ
बिमान निर्माण करके त्रियाहेत नानाप्रकारके सुखभो-
गप्रकाशकिये २ अरु फिर बिचारकिया किभोगते च्य-
वन आगरनहींहैं जैसंतत हरि पदभक्तिमें लीनहैं अरु
विराग बिषे परमप्रबीणहैं तिनको जीवनका सुख संसार
में सब प्रकारसे दुर्लभहै इसमें संशय नहींहै ३ यहि
प्रकार मुनिराजकी प्रशंसा कर शत्रुघ्नजी क्षणमात्रतेहि
आश्रम बिषे रहे तब पयस्वनीका जलपानकरके बाजि
राजने शीघ्रतापूर्वक पवनगतिसे गमनकिया ४।५ तबबा
जिराजकोजाते देखरणधीरवीर पृष्ठरक्षकभी चले कोटिन
गज रथमें सवार कोटिन अश्वन बिषे आरूढ़ तिनके पीछे

शत्रुघ्नजी सुमन्तादिकवृद्ध मंत्रिन युक्त तिनपीछेअगणित राजा अस्त्रशस्त्रधारी चलतेभये ६। ७ महाराजशत्रुघ्नजी मार्ग बिषे समाजमें ऐसेशोभित होतेथे जैसे सुरसमूहमें इन्द्र शोभा कोप्राप्त होतेहैं ऐसे जहां २ बाजिराज त- हां २ सब सैन्य भी देखतेथे यहिप्रकार रघुनाथ जीका बाजि राज बिमल राजाकेयहां प्राप्तहुआ अरु तेहिका मनोहर रत्नतटाख्य नगर था जिसमें सब शोभा सुशोभित थीं तेहिबिषे बाजिराज ससैन्य प्रवेशकरते भये तब राजा ने यहसुधि पायकै आनन्द पूर्बक सातसै अनूपम नाग चन्द्रसमान दीप्तिवाले भेटके अर्थ साजेगये अरु दशहजार बाजी एकहजार उत्तमरथादि और सैन्यसाजिकै रामानुज के मिलनेको चले वहां जायकै सब अभिमान सेंविगत होकर चरणनमें गिरते भये अरु आगेसब भेट राखिकै राज,कोष,सब समर्पण करिकै दीनता पूर्वक बिनय किया तब रामानुजने बिनीत बचन सुनिकै सप्रीति भुजभरिकै भेटतेभये ८। १२ तब शत्रुघ्नजीने बिमलके पुत्र को बुलायकै राज्य तिलक करते भये फिर बिमलको भी संग लैकै शत्रुघ्नजी नाना ग्राम नगर देखते व सब बीर त्राससे बिगत आनन्दपूर्वकचलेजातेथे तिन देशनके राजा लोग भेट लैकै सब मिलतेहैं अरु बाधातोस्वप्नमें भी नहींकरतेऔर जोअश्वको देखतेथे वह बन्दनाकरतेथे १३।१४ तब शत्रुघ्नजी मार्गबिषेस्फटिक रत्नसुवर्णमयशिखर तिनमेंझरनाजलझरतेवचित्रबिचित्र पृथ्वीपर रंग २ के अनूपम दिव्यस्थान तिनमें सिद्धजन

सपत्नीकबिहारकरतेथे अरु वृन्दारक, गन्धर्व,नाग,अ-
प्सराओंके वृन्द आनन्दपूर्बक उस शैलपर बिहारकरते
थेअरु सुरसरि को स्पर्श करके मनोहर बायु चलती थी
उससेहंस, कीर,भ्रमर आदि सब मनोहर शब्द बोलते
थेतहांकी अद्भुत छबि देखिकैबिस्मय बशशत्रुघ्नजी सुम
न्तजीसेपूछाकि हेमंत्रिराजयहबिस्मयदायी कौनपर्बतहै
जेहिबिषेमार्ग,स्थान,अनेकन पक्षी मनोहर शब्द बोलते
हैं अप्सरा बिहार करतीहैं हेतात यहां कौन देवराज-
बास करतेहैं अरु अलौकिक शोभा, छबि, सुन्दरता
देखिकै मेरे मनमें क्षोभभयो आप समस्त कथा इन शै-
लराजकी कहिये १५।२१ तब गुणागार सुमन्तजी कह
नेलगे किहे राजन् यह नीलाचल नाम पर्बतहै जिसके
दर्शनोंसे परस्त्री गमन कारक,परकृत घातक,वेदनिन्दक
संतत स्वारथरत, नील लाखके विक्रयी, रसबिक्रयी
द्विज, मद्यपी द्विज, अरुजो पुरुष उत्तमकुलवाले लोभसे
कन्या बिक्रय करतेहैं वे यमपाशके योग्यहैं, अरुजे पति
व्रताओंके दुःख देनेवाले कलत्रको छोड़िकैजे मूढ़ आप
मिष्ठान्न भोजन करतेहैं, अरु जे दुष्टब्राह्मणोंकेअर्थपाक
बनाइकै आप छिपिकै भोजन करलेतेहैं,अरु स्वाद बिप्र
केशिर धरतेहैं अरुजेमध्याह्नकाल बिषे अतिथिको छो-
ड़िकै भोजन करतेहैं,ऐसेभी महापातकी कपट त्यागिकै
दर्शन करतेहैं ते सब पापों से मुक्त होकर परम पदको
प्राप्त होतेहैं जो शरणागत आतेहैं २२।३०औइन शैल-
राज बिषे महाराज संसारके पावन करनेहार श्रीपति

पुरुषोत्तम जगन्नाथ बास करतेहैं तिनको मुकुट युक्त देवता मस्तक झुकातेहैं व निर्मल दर्शन करिकै अभय पद पातेहैं अरु इन्द्रादिक देवता जिनकी चरण कमल की रजको इच्छतेहैं अरु वेदान्त सार जानिकै बुधजन अस्तुति किया करतेहैं ऐसे पुरुषोत्तम दीनदयालु यहां बास करतेहैं जे सुकृतीजनहैं तेप्रीति युक्त बन्दना करतेहैं अर्थात् भजन कियाकरतेहैं उसीकेप्रभावसे प्रकृति त्यागिकै चतुर्भुज स्वरूपको प्राप्त होतेहैं ३१। ३५सुमन्त बोले अब हम पुरातन कथा राजा रत्नग्रीवकी वंश युक्त कहतेहैं वे प्रकृतिको त्याग चतुर्भुज रूप को प्राप्त हुयेथेजो गति देवताओंकोदुर्लभहै सोउनको दर्शनों से मिली, संसार बिषे कांचनपुरी नाम नगरी बिख्यातहै जिसमें महाजन असंख्य सेन धन युक्त बसतेथे अरु द्विजवर षट्कर्म समेत राम भक्ति करतेथे अरु क्षत्री रणधीर अस्त्र शस्त्र युक्त परस्त्री परधन को न देखतेथे व रणमें पीठ न देतेथे अरु शूद्र द्विजसेवा में निपुण श्रीरघुनाथजीका नाम अहर्निशि जपतेथे मानो कोई पाप करना जानताही नहीं दान, दया, सत्यमें प्रवृत्तथे पर चवाव व परधन लोभ नथा यहि प्रकार प्रजा लोग पापसे दूर बसतेथे तिनको नीति निधान रत्नग्रीव पुत्र समान पालन करतेथे अरु प्रजासे षष्टमांश धन लेतेथे और किसीमें लोभ न करतेथे यहि प्रकार राज्य करते विपुल काल व्यतीत हुवा तब एक दिन राजाने रानीसे कहाकि हे प्रिये अब पुत्रसबप्रकारसे राज योगहुवा अरु

हम तुमने बहुत भोग बिलास किया अरु इस समय में सब प्रकारसे परिवार भी श्री बिष्णुजीके प्रसाद से परिपूर्णहै मेरे एक लालसा उत्पन्न भईहै कि सब त्यागिकै तीर्थ गमन करौं जेहिके प्रभावसे जन्म जरादिक दुःख नाश होयं व श्री बिष्णु भगवान् कृपा करैं देखो अब सब इन्द्री भी निर्बल होगईं अरु वृद्धता को प्राप्त भये ३६।५२ यहिसे तो अब हम अवश्य करके तीर्थ करेंगे जो श्रीपति दयालु होकर कृपा करैंगे अरु जेनर नित्य उदरही भरतेहैं श्रीपतिकी सेवा नहींकरते ते नर जगमें गर्दभके समानहैं ताते बिष्णु हित तीर्थ करैंगे५३ मनमें यह मंत्र दृढ़ाइकै राजाने शयन किया तो स्वप्नमें एक ब्राह्मण देखते भये तब प्रातःकाल उठिसन्ध्यादिक कर्म्म करिकै सभामें सचिव महाजन सहित शोभित हुये तेहि अवसर बिषेजिस ब्राह्मणने स्वप्नमें दरशदिखा याथा सोई जटा, मुकुट, बलकल, कौपीन, दण्डपाणि तपस्वी निर्मल तेज तनमें दे दीप्यमान अनेकन तीर्थों का सेवित शोभायमान होताथा५४।५७ उस तपस्वीको आते देख महिपालने प्रणाम करके बिधि पूर्वक अर्घ्यादिकसे पूजन किया अरु कुशल पूछते भये कि हे तपोनिधि स्वामिन् तुम्हारे दर्शन पायकै मेरा कुटुम्ब निर्मल होगया अरु आपतो महाभाग्यवान् हौमुझमूढ़जानि कृपा कियो व आपतो सर्वज्ञ सब तीर्थ बिधिपूर्बक करके उनका भेद भिन्नर जानतेहौ तातेहे बिप्रबर मुझको अपना किङ्कर अनुगामी जान सब समुझायकै बर्णन

करौ जेहिसे जन्म मरण का दुःख नाश होय ऐसाकौन तीर्थदेवहै अर्थात् ज्यहिप्रकारतुमनेसुनाहोय सो बिस्तार पूर्बक वर्णनकरौ तब द्विजराज प्रसन्नतापूर्बक बोले हे राजन् तुम्हारे प्रश्नका उत्तर हम बर्णन करते हैंजिहि के स्मरण मात्रसे अनेक महापातक नाश होतेहैं श्री पुरुषोत्तम सीतापति के बिना और कोई गर्भबास नाश न अर्थात् मुक्तिदाई कोईनहीं उनके बाह्य और कोई सेवन के योग्य नहींहै अरुमैंनेभी अनेकन पाप हरण सुखकरणतीर्थ अवलोकनकियेतिनको बर्णनकरताहूं मैंने अवधपुरी अयोध्या देखी जहां श्रीरघुनाथजी बासकरते हैं फिर सरयू,ताप्ती हरद्वार,जो पापतूलकोअंगारहैंअरु रेवासागर संगम अवन्तिकापूरीअरुअति चित्रितकांचन पुरी बिमल आदिनरेश हाटकाख्य गोकर्णमें बिधिपूर्बक भ्रमणकिया ये सबतीर्थ पापकेबिनाश कारकहैं अबहम पुण्यप्रकाशक तीर्थबर्णन करतेहैं ५८। ६७ मल्लिकमो क्षदायी पर्वतअघहरनेवाला देखा अरुजेहिद्वारावतोको देवदनुज मस्तकझुकातेहैं सोभीदेखा जहां गोमतीबहती हैं जहां कोईभीजीव तनत्यागकरै वेसब एकबर्ष पर्य्यन्त तृषित बिभागसे सबचक्र होजातेहैं अरु पाषाण चक्र सेहोताहै तहां सब जन चक्रही धारणीय होतेहैं अर्थात् त्रिजग ,कीट ,खग सब होतेहैं वहां पर श्रीपति बिष्णु भगवान् बासकरतेहैं वहभीदेखाअरु कुरुक्षेत्रकेआनन्द दायी सबतीर्थ मैंनेदेखे अरु मनोहर बाराणसी अर्थात् काशी जहां बिश्वनाथ सदैव बासकरतेहैं अरु वहांकोई

भी जीव बासकरनेसे कर्मभोग त्याग कैलाशमें निवास करताहै अरु मंत्रप्रसाद सबजानतेहैं तहां मणिकर्णिका तीर्थ व उत्तर वाहनमें गंगाजी सम्पूर्ण पातकोंके नाश करनेवाली शोभायमानहोतीहैं ६८।७७ अरु वहांस-दाशिवजी मुण्डमाल, अहिभूषण शृङ्गारकिये नागछाला युक्त बासकरतेहैं अरु धर्म्मराजसे दण्डनहीं होताथा व सब रोगों व पातकोंका न्याय करलेतेथे ऐसीसुखदायक वाराणसी अवलोकनकिया अरुअनेकनतीर्थ सुखदायक पापनाशक देखे अरु एकआश्चर्य नीलाचल विषे देखा जगन्नाथ त्रैलोक्याधि पतिबासकरतेहैं ७८।८१॥ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्वादेरा-माश्वमेधभाषायां बिमलरत्नोपाख्यान वर्णनोनामसप्तद शोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोलेकिहे वात्स्यायन फिर द्विजराजबोले हे राजन् जो नीलाचलमें चरित्र देखा सो सुनो वहांजाते ही हरिपद प्राप्त होतेहैं १ एक बारमें तेहिस्थलविषेप्राप्त हुआ अरु गंगासागर मज्जन करके तहां शैलपरचारि भुजा युक्त भीलन को देखा कि धनुषबाण धारणकिये कन्द मूल फल भक्षण करते थे उनको देखिकै २।४ मनमें संशयहुआ कियहस्वरूप इननेकैसेपाया अरु श्री-पति के पुरबासिनके रूपको शिव ब्रह्मादिक दुर्लभ मान तेहैं वेचारिभुजा चक्रादिक धारणकिये बनमाला उरमें

शोभितहोरहेथे यह संशयमोरे मनमें हुआ अरु बहुतयत्न सेभीबोधनहुआ तबमैंने उनसेपूंछा कितुमने यहबिशाल रूपकहांसेपायाहै अरु अपना नामग्राम वासस्थानबर्णन करो जेहिसे संशय नाशहोय९।१०तबभील मोंसे बोले किहे द्विजबर तुमकुछ नहींजानतेहो जिनकामहत् प्रताप त्रैलोक्यमें देदीप्यमानहोरहाहैतिनकोतुमनहींजानतेयह बड़ा आश्चर्य्यहै तबमैं कह्यों कि केहिप्रसादसे कहांसे प्राप्तहोताहै सबबिस्तारपूर्बकबर्णनकरो तबभीलबोलेकि हे द्विजेन्द्र एक बार हम सब शिशुन समेत बिहरते कन्द मूल फल खाते यहि नीलाचल पर्वत पर आये वहां आकर एक मन्दिर सुबर्ण मणियोंसेभूषित वहां सुरगणोंको देखिकैंबिस्मित भये अरुफिर शोचकैंकहा कि आज हमने कौनका भवन देखा फिर मणियोंसे देदीप्यमान- मन्दिर देखिकैंअनुमान किया कि केहू देवराजकास्थान है व महाभाग्य जानिकैं मन्दिरके निकटजाते भये जहां देव शिरोमणि त्रिभुवनपति पुरुषोत्तम जिनको देव दनुजआदि चराचर बन्दना करते ववेदपुराणयशगातेहैं तिनको हम सब बालकों समेत देखने लगेअरुप्रेमबश अनुराग किया अरु दिव्य कनक मणि कोटिन व कर्णा भूषण किंकिणीं नव प्रसून युक्त तुलसीचरण कमलोंमें चढ़ी देखी तिहिके सुगन्धसेभ्रमर गण गुंजार करतेथेव शंख, चक्र, गदा, पद्म, कर कमलोंमें धारण कियेबिष्णुभगवान् बिराजमान्थे११।१२वनारदादि मुनीश्वरयशगान कर रहेथे कोई गाते कोई नृत्यतेकोई प्रेमबश बिहंसते

कोई बन्दना कोई स्तुति कोई छबि देखिकै हृदय मेंमग्न
होतेहैं यहि प्रकार ब्रह्मादिक देवता धूप,दीप, आरती
नैवेद्यसे पूजनकरदीनता से बिनयकरतेथे ऐसेनानाप्रकार
से भोगलगाके प्रसादपातेथेसब समूह आनन्दसेवन्दना
कर अतिकृपापाके निजर लोकनको गमनकिया हेद्विज
वर ते शिशु बड़े भाग्यवान् थे जे कौतुकसे मन्दिमेंरप्रवेश
कियातहांप्रसाद का सीथ व कण पाया जो श्रुतिमें गा-
याहैकि देवतोंको दुर्लभहै तहां मनुष्यनकी क्यागतिहै
तिन बराबर २ से उसको भोजन किया तबपुरुषोत्तमने
दर्शनदिया तबते चतुर्भजरूप होगये व शुभग हाथबिषे
गदाबिराजमान सुन्दर कमलके समानउज्ज्वल स्वरूप
सबोंने धारणकिया तब वेबालक अपनेर घरन कोआये
तब हर्षितहो मातापिता पूंछनेलगे कि गात केहि बिधिसे
उलटगये तब वे बोलेकि नीलशिखर बिषे जायकै देवशिरो
मणिकेदर्शनकरकेउनका प्रसाद पायकैसबबालकन समेत
ग्रहणकिया तबसे यहस्वरूपहोगया सोसुनिकै हे ब्राह्म
ण उनको आश्चर्य्यहुवा १६।२५ फिरवे बिष्णुभगवान्
के समीपगये तब वेभी प्रसादपायकै चतुर्भुजस्वरूपको
प्राप्तहुये हेब्राह्मण जोस्वरूप देवताओंको दुर्लभहै सो
हमकोप्राप्तहुवा यहिसे अब तुमभी श्रीपतिके दर्शनकरो
प्रसादलेतेहा तुम्हाराभीचतुर्भुजस्वरूप अवश्यकरके हो
जायगायहमेरासत्यबचनहैहे द्विजेन्द्रजैसाप्रश्नतुमनेपूंछा
सोहमनेविस्तारपूर्बक बर्णनकिया२६।३० इतिरामाश्वमे
धभाषायांब्राह्मणोपदेशबर्णनोनामअष्टदशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

श्रीशेषजी बोले कि हे वात्स्यायन यहिप्रकार द्विजराजने राजासे कहा कि मैं ऐसे भीलके वचन सुन मेरुमें चढ़कर नाना रत्नमणियों से देदीप्यमान गंगासागरमें स्नान करके वह उक्त मंदिरदेखा अरु श्रीपति पुरुषोत्तम जेहिको श्रुति यश गातेहैं तिनके दर्शन करके बन्दनाकी २।३ उसीसमय सब रागद्वेष दूरकरके चतुर्भुजस्वरूप को प्राप्तहुवा अरु शंख, चक्र, गदा, पद्म, शोभित हुवा तब रत्नगर्भ के यह वचन अति प्रियहुवा तब द्विजने कहा हेराजन् तुम नीलाचल गिरिराज में प्रवेश करो वहां जानेसे तुम्हारा गर्भवास दुःख अवश्यनाश होगा ४।५ विप्रके ऐसे वचन सुन राजा प्रसन्न होजाता भया फिरि सप्रेम बन्दना करके बोले कि हेद्विजोत्तम परम साधु मोपरअतीव कृपाकियो किजो जगन्नाथजीका प्रभाव वर्णन कथन कियो अब सब पातकोंकेनाश करनेवाली तीर्थविधि वर्णनकरो जेहिसे पुरुषोत्तम प्राप्त होतेहैं ६।८ ब्राह्मणने कहा हेराजन् तीर्थविधान श्रवणकरो जेहिसे सपत्नीक तुमको पुरुषोत्तम प्राप्तहोंगे जिनको सब चराचर बन्दना करतेहैं ६ व शरणागत होकर बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री आदि बासना जीतिके जगन्नाथ जीके चरण कमलोंकीभक्तिअर्चन कीर्त्तन वन्दना, श्रवणादिक १०।११ यहिप्रकार जो करतेहैं वे सब रोग दुःखसे मोक्ष होकर परमगति को प्राप्त होतेहैं अरु सेवक तो श्रीपतिके अ-

तीव प्रियहै यह वेदनेभी गायाहै अरु काम, क्रोध, मद लोभ,दम्भ इनकेभी वशहोकर भजन करै तौभी सब दुःखदूर करके परमगति पाताहै १२।१३ ऐसे कृपालु गुणागार, सद्धर्मके प्रकाशित, तिनके जन्म पृथ्वीतल मेंहैं जे आनन्द पूर्वक विचरतेहैं तिनका सत्संग अत्यन्त आनन्ददायी है अरु राग लोभादिसे परे श्रीपतिके चरण कमलोंमें रत रहतेहैं जैसे जलमेंमीन रत रहतीहै वे विना हेतु सब काल बिषे केवल जीवनको सुखदेने के अर्थ तीर्थोंमें बिचरतेहैं ऐसेहरिके भक्त नाम रत्नधन पर कल्याणी ते तिमिर रूपी पातकों को भानुहैं तिनके दर्शन तीर्थभी पायकै अवश्य मुदित होतेहैं १४।१६ अब जो जन भव, भय, भीति होकर तीर्थको जातेहैं उनको बर्णन करतेहैं वे जन दृढ़ बिश्वास करके श्रीपति का स्मरण करतेहैं अरु काशमात्र घर छोड़िकै भजन करतेहैं अरु सब मुनिजनोंके पाप बारनमें छिपतेहैं इस से क्षौरकर्म करके तीर्थयात्रा करना चाहिये अरु बिना दण्ड ग्रंथके धारण किये कपट लोभ हृदयते नाश किये व मनोहर कमण्डलु व मृगछाला इन सबसे तपस्वीकारूप धारण करके कन्द, मूल,फल, आहार करतेहैं व श्रीनारायणके उदार चरित्र गान करतेहैं यहि प्रकार विधि पूर्वक तीर्थ करतेहैं उनको शीघ्र फल प्राप्त होताहै हेराजन् बेदकी रीति देखिकै सप्रीति तीर्थ गमन करौ व मनसा बाचासे गमन समय बिषे हरि चरणोंका स्मरण करिकै ध्यान करौ १७।२३ कि हेभक-

बत्सल, कृपानिधान, प्रणतके हितकारक, हरि, हर, बिष्णु, मुरारी, पाहिमां अर्थात् मेरी रक्षाकरौ मैंतुम्हारी शरणागत हैं। यहिप्रकार बारम्बार ध्यान करनाचाहिये फिरि आनन्द पूर्वक पादत्राण रहित गमनकरै, हेराजन् यहि प्रकारसे जो तीर्थ प्रस्थान करतेहैं उनको सबफल प्राप्त होतेहैं अरु जे पादत्राणसहित जातेहैं वे चतुर्थांश फल नहीं पातेहैं अरु जो रथ बिमान इत्यादि में आरूढ़ित जातेहैं उनको आधा फल मिलताहै अरु जेशठ गो सुत वृषभ यान अर्थात् गाड़ी आदिमें जातेहैं उनको गोवधके समान पातक लगताहै अरु जे स्नेह व्यवहारके साथ तीर्थ गमन करतेहैं उनको तृतीयांश फल मिलताहै अरु जे दास्य भावसे जातेहैं उनको अष्टमांश फलमिलता है अरु जे इच्छा रहित जातेहैं वे भी पातक दूर करके आधा फलपातेहैं यहिते आप हर्षित होकर तीर्थ गमन करौ श्री निवास जनके मिलनेसे सकल त्रास छूटजातीहै अरु वहां अद्भुत साधु समागम होगा तिनके पूजनेसे व ध्यान बन्दना करनेसे हरिभक्ति प्राप्त होकर अक्षयफल प्राप्त होताहै हे राजन् यहि प्रकारमैं सारभाग संक्षेपसे बर्णन किया अब हृदयमेंधारण करके पुरुषोत्तम हित गमन करौ २४।३१ तुमको पुरुषोत्तम निकट जानिकै बिज्ञान सहित भक्तिदेंगे अरु भवसागरसे निवृत्त होगे यह हमारा सत्य वचन अंगीकार करौ सुमन्तजी बोले हेराजन् जे यह श्रवण करेंगे वे अवश्य सब पातकों से मोक्ष पावैंगे तब द्विजराज

की यह वाणी सुन राजाने बन्दना किया अरुपुरुषोत्तम दर्शनोंकी आकांक्षासे हृदयमें आनन्द समुद्र उमंगि उठा जेहिसे विह्वल होगये अरु अपना परावा कुछ नहीं सूझि परताथा तदनन्तर नृपतिने सचेत होकर सचिव राजसे कहा कि हेमंत्रिन् मैं अब तीर्थराज का प्रस्थान करूंगा यह मेरी आज्ञा सप्रीति पुरवासिन से वर्णन करौ कि सबजन पुरुषोत्तमके दर्शनार्थ सकलत्र गमन करौ अर्थात् जे बाल, वृद्ध, युवा, मेरी आज्ञाकेपालनीयहोंवे अवश्य शीघ्रता पूर्वक प्रस्थान करैं अरुजेमनुष्य मेरी आज्ञा भंग करके घरोंमें रहैंगे उनको नाना प्रकारसे यमदूत ताड़न करैंगे ३२।३८ जो सुत, बांधव धन, धाम, हुवातो क्या सब शूकरी यूथके समानहैं जिनके नाती कलत्री पुरुषोत्तम पुण्यदके शरण नहींजाते उनके जन्म पृथ्वीतलमें शूकरके तुल्यहैं अरु जिन श्रीपतिका नाम स्मरण करिके पातकोंको भस्म करतेहैं वेजन बन्दनीयहैं यह कहिकै नृपति मौनहोजाताभया तब मंत्रिनने राजाकी श्रीपतिगुण मिश्रित वार्तासुन अत्यन्त हर्षित हुये ३९।४२ अरु एक मनुष्य बोलिकै सहित नगारा केहाथी पर सवार कराके नगर को पठयो व आप राजाके समीप रहे तव वह मनुष्य जायकै नगरमें नगारामें चोब दैकै बोला कि हेपुरवासियो सकलत्र तुम्हारे राजा नीलाचलको प्रस्थान करतेहैं सो तुमहूं सकुटुम्ब राजा के साथ गमन करौ जेहि नीलाचल विषे पुरुषोत्तम देदीप्यमान होरहेहैं तिनके तुम सब

दर्शनकरके गोपदकेसमान भवसागरसे मोक्षह्वैकैशंख, चक्र, गदा, पद्म, धारी चतुर्भुजस्वरूपको हरिभक्तके समानप्राप्तहोंगे यहिप्रकार तिस मनुष्यने सम्पूर्ण नगर बासियोंसे नगाराकी चोबसे सुनादिया तदनन्तर राजाके निकट प्राप्तहुवा मंत्रिनदेखकै आनन्दितहुये४३।४६ तेहिके वचन सुनतेही समस्त पुरवासियों के पुरुषोत्तम के दर्शनकी लालसा उत्पन्नभई अरु दर्शनाभिलाषी ब्राह्मण सुबेष धारणकरके शिष्यनसहित नृपतिको आशिष देते चलतेभये, अरु बलसे गर्वितक्षत्री, व बैश्य, व सेवा करनेमें निपुण शूद्र, सूत, मागध, बन्दीजन, अरु चतुर्वेद ध्वनिकारी सभासद, सुवार, गायक, नट, चेटकी जुआरी, तेली, तमोली, रजक, सूचीकार, चित्रकारक, धणिक, सराफ, शिल्पकारी, क्षौरकर्म्मी, चर्मकादि ये सब अपने २ गुणोंमें निपुण राजाकी आज्ञासे प्रस्थानकरते भये ४७।५४ तदनन्तर राजाशिरोमणिने प्रातःकाल उठके सन्ध्यादिकर्म्म करके वेदपाठीब्राह्मणोंकी पूजनादि वन्दनाकरके उनकी आज्ञासे आनन्दपूर्वक नगरसे बाहरनिकसे पुरजनोंके संयुक्त राजाकैसे शोभित होतेथे जैसे नक्षत्रों के युक्त शरद चन्द्रमा शोभितहोताहै तब कोशमात्र चलिकै क्षौरकर्म्म किया अरु दण्डकमण्डल मृगछाला धारणकरके पुरुषोत्तम केध्यानमें मग्नहोगये वसब कामक्रोध राग द्वेष दूरहोगया तहां अत्यन्तमङ्गलाचार सेपुरबासी मग्नहोजातेभये अरु तेहिसमय भेरी, प्रणव, मृदंग, बीणा, शंख, झांझआदिबाजनेबजतेभयेतिन

के शब्दसे दिशों बिदिशोंमें रवछाइरहा तब समस्तपुर बासिन सहित राजा सुरईश पुरुषोत्तम आर्त्त हरण करुणायतनका ध्यान करके कहा हेभगवन्‌हमतुम्हारी शरणागतहैं दर्शनदेव यह आर्त्तबचन बारम्बार समस्त जन कहतेहुये पयानकिया ५५।६०॥ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डेशेषबात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायां रत्नग्रीवस्यतीर्थयात्रागमनोनामैकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले कि हे बात्स्यायन फिरि शत्रुघ्नजी से सुमन्तजी बोले हेराजन् राजा रत्नग्रीव प्रजायुक्त मार्ग बिषे जयमाधव,जयकृष्ण,भक्तोंके हितकारक,शरणद पुरुषोत्तम यहिप्रकार सबपुरजनध्यान करते व राजास-प्रीति मार्गमें सुनते जातेथे १।२ अरु मार्गबिषे अनेक नतीर्थ मिलतेथे तिनकेसमीप सप्रीतिराजा जाकरदर्शन स्पर्शन करतेथे व ब्राह्मण तिनकी कथा कहतेथे अरु मार्ग २ बिषे बिष्णुभगबान् की कीर्तिगान करतेथे ३।४ अरु कृपण,अधम,दीन,पंगु,गुंग,रोगी,तिनकोभी जितेन्द्रिय राजा रत्नग्रीव श्रेष्ठ भोजनदेतभये लियेजाते थे५ यहिप्रकार प्रजासंयुक्त राजा अनेकतीर्थकिये तबएक निर्मल नदी देखी जिसमें चक्रन युक्त सम्पूर्ण शा-लग्राम श्रीपतिके समान रूपवाले व तहां अनेक मुनि गण वेद स्मृति पाठ करतेथे व अनेकन ऋषीश्वर वहां बास करते थे व मनभावन सारस,मोर आदिपक्षी

किलोल करतेथे ऐसी पुनीत नदीदेखिकै राजाने मुनि से कहा हेमुने यह तीर्थकामाहात्म्य मेरे बोधके अर्थ आप कथन करें कियह अतिपुनीत मेरे चित्तको आनन्ददायी कौन नदीहै ६।१० राजाके बचनसुन हर्षितहो मुनिनाथ सरिता माहात्म्य वर्णन करनेलगे हेराजन् यहअति निर्मल गण्डकीनाम नदीहै यहिको देवदनुज सम्पूर्ण चराचर भजनकरतेहैं अरु मानसी पातकतो दर्शनमात्र सेनाशहोतेहैं व स्पर्शसे तोक्षणमात्रमें सम्पूर्ण महापातकनाशहोतेहैं अरु नाम केस्मरणसे सब बंचक पापदूर होतेहैं व सब शत्रुगणनाशहोतेहैं अरु पानकरनेसे कोटिन जन्मकेपाप समूह क्षणमात्रमें नाशहोतेहैं यह हमारासत्य २ बचनहै ११।१२ प्रथम चतुरानन प्रजापति जगत्को पापकर्म्म देखविचार करके जगत्के निर्मल करनेकोअपने कपोलसे उत्पन्नकिया अरु गण्डकी नाम सेप्रसिद्धकिया१३।१४ सोहे राजन्यहनिर्मलनदीअनेक पातकोंके नाशकरनेवाली जो यहिका जल किसी प्रकार सेभी मज्जन करेतोसंसार केदुःखकोनहींप्राप्तहोताहैव ये सब शालग्राम चक्रांकित भगद्रूपजो इनको भक्तिपूर्वक पूजनकरताहै वह गर्भबास अर्थात् आवा गमन सेरहित मुक्तपदको प्राप्तहोताहै १५।१७ अरु जेबुद्धिवर सदैव सुधर्म्ममें रत, दम्भ, लोभरहित, परत्रियबिमुख, मनुष्य सप्रेमद्वारावतीमें शालग्राम स्वरूप हृदयमें धारणकरके पूजन करतेहैं तिनके कोटिन जन्मके महापातक शालग्रामके प्रतापसे एकनिमिषमें नाशहोतेहैं इस

में संशयनहींहै मैं यहवेदकीबाक्य कहताहूं अरु द्विज२
प्रतिजीव हजारन पातककरें परचरणामृतके पानकरते
ही सब कलुष दूर करके महा शुद्धिको प्राप्तहोताहै १८
।२१ ने गृहस्थ द्विज शालग्रामकी पूजनकरतेहैं वे अव
श्यमोक्षको प्राप्तहोतेहैं २२ मुनिराजबोले हे राजन् अब
नीतियुक्तइतिहास वेदस्मृतिके अनुसारबयानकरतेहैं कि
स्त्रीको शालग्रामका पूजनसदैव बर्जितहै चाहैपतिविही-
नहो व शुभगा अरु जो स्त्री दोनों लोक बिषेसुखचाहै
वह स्वप्न में भी पूजाऽर्चा शालग्रामकीनकरै २३ । २४
और जो कामिनी मोह बश होकर स्पर्श करतीहैं उनका
उसी समय सब पुण्य नाश होजाताहै अरु बहुत काल
तक नरकमें बास करतीहैं स्त्रीका चढ़ाया हुआ पुष्प
बज्रके समान विष्णु भगवान्के लगताहै तिससे महा-
पाप भागी होतीहैं स्वप्नमें भी सुगतिको नहींपातीं अरु
उनका चन्दन बिषके समान व नैवेद्य हलाहल तद्वतहै
इससे श्रुतिमें स्त्री को पूजन बर्जितकियाहै जोकदाचित्
शालग्रामके स्वरूपको स्त्रियां स्पर्शकरैं तौजबतक चौदह
इन्द्र सुरपुरमें भोगकरैंतबतकवह नरकमें रहैंताते सब
प्रकारसेश्रीपतिकेपूजन योग्यस्त्रीनहींहैं अरुजोनरहजार
ब्रह्महत्या करने परभी त्रिभुवनके पावन करने वाला
चरणामृत पान करै वहपरम पदको प्राप्तहोयहै तुलसी,
चंदन, शंख, घण्टा, तांबेकापात्र, चक्र, गण्डकीकेशालग्राम,
जल, ये आठबस्तु जबहोयं तो शालग्रामका चरणामृत
सुखमूलहोताहै अरु वहीपापरूपीतूलकोप्रचण्डाग्निके

समानहै वसंसारकेसबशूलोंको हरनेवालाहैमुनिकोविद
यहि प्रकारचरणामृतकामाहात्म्य वर्णनकिया२५।२९
हे राजन् सर्ब तीर्थनके स्नानका फलशालग्रामभगवान्
के चरणामृत पानसे मिलताहै ३० सुमन्तजी बोले हे
रघूत्तमजेहिस्थलबिषेशालग्रामकातुलसी अक्षत,चन्दन,
धूप,दीप,नैवेद्यसे पूजन होताहैवह भूमि योजनपर्य्यन्त
निर्मल होकर उसमें सप्तकोटि तीर्थ बास करतेहैं
अरु सबकाल बिषे सम स्वरूपका पूजन करना चाहिये
जेहि प्रकारका जेहि समय बिषे रूपहो जो द्वारावती
चक्र मिलायकै प्रभुको पूजन करतेहैं गंगा सागरकेसम-
स्थल उसके दर्शन परसनसे उत्तमगति मिलतीहै अरु
शुभग सचिक्कण चिह्न युक्तजोआनन्दपूर्बकपूजतेहैं तिन
को सब मनोकामना पूर्ण होतीहै अरु अन्तसमय बिषे
मुक्त पदवी को प्राप्त होतेहैं जो गति बेद पुराणोंमें
गाईहै कैसाहू मन्द भाग्य नर अन्त कालमें व्याकुलहो
उसके हृदयमें शालग्राम धरै व हरि मंत्र कानमें सुनावै
तब वह जीव ब्रह्माण्ड पथसे परम पद पाताहै ३१।३८
यहशालग्राममाहात्म्य प्रथमश्रीभगवान्ने अम्बरीबसन
कादिसेबर्णन कियाथा अरुजो शालग्राम,ब्राह्मण,संन्या
सी मेरे स्वरूप वाले मुनिजनजे इनका अपमान निन्दा
करेंगे तिनकी गतिको अब हम बर्णन करतेहैं कि महा
घोर नरकमें जबतकसूर्य्यनारायणस्थिरहैं तबतकनरक
में नाना दुःख भोगकरके फिरअधम रूपहोतेहैं अब हे
राजन् और नीति सुनो जो ब्राह्मण शालग्रामकी पूजन

करतेहैं उनको जेमतिमन्ददुष्टात्मा वर्जतेहैंवे मातु,पिता,
सुत,स्त्री,बन्धु,आदि कलत्र सहित नरक गामी होतेहैं
जबतक चन्द्र सूर्य्य प्रकाशितहैं तब तक नरक बासकरते
हैं अरु जे उत्तम पुरुष ब्राह्मणों को शिक्षा देतेहैं कि
शालग्राम पूजन करौ वे द्विजवर गो पदके समान इस
असार संसारसे मोक्ष होकर अवश्य बैकुंठ बासकरतेहैं
अब हे राजन्पुरातनइतिहासवर्णन करतेहैं श्रवणकरौ
३६।४३एक कृपालु मुनि काम क्रोध हतिकै शान्तमनसे
अधर्म्मरूप कीकट देशमें जाते भये४४तहां सबर नाम
बधिक महा प्रचण्ड धनुष बाण धारण किये अनेकन
जीवनको बध करताथा जिसके स्वप्नमें भी दया शीलन
था जे जन तीर्थ करनेको जातेथे तिन सबको बध कर-
ताथा यहि प्रकार अनेकन जीव नाश किये परस्त्री पर
धन खूब भोग किया काम, क्रोध, लोभादि बिकार स-
हित व अनेक पाप रत घोरबनमें बिचरता हुआ अने-
कन जीवनको बध करताथा अरु महा अधर्मको शंका
कुछ नहींथी ऐसा पापमें लीन होरहाथा उसी अवसर
में यमदूत महाभयानक मुद्गरपाश धारण किये अरुण
केश बड़े२ भयावने नख कराल दांत वाले उसकोदेख
कर परस्पर बोलते भये प्रथमएक बोला कि इसने अने-
कन जीवों को वधकियाहै इससे मैं अभी त्रासित करके
इसके प्राण निकालेलेताहूं दूसरा बोला कि जीवनिकाल
लो तीसरा बोला कि नानाप्रकारकेताड़नादैकै शूलसे इस
के नेत्र निकाललो कि देखो इस शठने स्वप्नमेंभी दया

नहीं किया व परधन हरण करता रहाहै तबचौथा महा कोप करके बोला कि खड्ग प्रहारसे इसके चरण काट डालो तबअपर दूतबोले किइस महापापीके कर्णकाट-लो यहि प्रकार सब यमदूत महा क्रोधित परस्पर ऐसे बचन कहतेथे ५५,५५ तदनन्तर एकयमदूत सर्पह्वैकै उस महा पापीके चरण में काटता भया तब वह व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा व कंठ सूखगया मुखसे कुछ बोल न सका तब सब यमदूत आकर उसकोपाशों से बांधलिया बांधिकै मुदगरआदि दण्डोंसे ताड़नादेने लगेतब व्याकुलतासे यमराजकीशपथ देनेलगातबबोले हे शठ तैंने श्रुति रीतिको उल्लंघन किया उसका फल तुझकोदैकररौरव नरकमेंडारैंगे तेरामांसकाकगणभक्षण करैंगेजो तैंनेहरि हरभक्तोंकीपूजननहींकिया उसकाफल अब प्रकट हुआ रेखल निज परिवार बिरुद्धीतनपोषक पापमें मन लायकैहरिकीशरणागत नआया तातेबांधिकै नानाप्रकार से दण्डित करिकै यमराजकी आज्ञासे कुम्भीपाक महाघोर नरकमें डारैंगे यहिप्रकार यमदूत कहकर त्रासित करिकै लैचलनेलगे तेहि अवसरमुनि नाथ आये जिनकीकथामैं प्रथममेंबर्णन करचुकाहूं कैसे मुनि कि राग,द्वेष,कामादि से बिगत शुद्ध सत्य हरिपद में लीन तिनको धर्मराजके किङ्कर देखा व अस्त्र शस्त्र धरे महा भयानक रूपवाले बोलेकि इसदुष्टको शीघ्रले चलो यहि प्रकारसे व्याधाकोबिकलदेखिकैकृपालु मुनि बरके दयाउत्पन्नहुई तबमनमें बिचारकिया किमेरे निकट

यह दुःखितहै अवश्यइसको यमदूतनसे छुड़ालेनाचाहि-
ये, ५६। ६५ यहबिचार मुनिवर उनके निकट जाते
भये जायकै शालग्राम शिरसे लेकर तत्काल चरणामृत
तुलसीयुक्त उसकी सब देहमें डारदिया अरु ऊर्ध्वपुण्ड्
माथेमें दिया अरु श्रीहरिमंत्र कर्णमें सुनाया अरु तुलसी
युक्त शालग्राम हृदयमें धरदिये फिर यमदूतों से बोले
कि इसने शालग्राम स्पर्श करके सब पाप नाशकिये
अब दयाकरो यह कहतेहुये तबतक हरिगण आगये
कैसेकि शुभग पीताम्बर शंख, चक्र, गदा, पद्म, शोभित
यमदूतोंसे क्रोधित होकर बोले देखलो हरिजनको क्यों
ताड़नाकिया शीघ्रजाकर मोक्षकरो असकहिकैलोहपाश
से छुड़ाया फिरबोले कितुमने हरिजन को किसकी
आज्ञासे बांधा अनीति करते हो सम्हारिकै कहो ६६।
७४ तब यमदूत भयभीत होकर बोलेकि धर्मराजकी
आज्ञासे पापमूलजानिकै लेनेआयेथेयहिखलने स्वप्नमें
भी दयानहीं किया व अनेकनजीव बधकियेहैं यहिका
शरीर केवल अघमयथा इसने अनेकनतीर्थ यात्री बनमें
लूटिकै मारडाले व सदैव परस्त्रीगमन कियाहै व नीति
तो स्वप्नमेंभी नहींजानीहै यहि प्रकार सबभांतिसे पाप
मूल देखिकै लेनेआयेअबतुमकेहिकारणछुड़ातेहो अपना
नामकहो तुमकौनहो ७५। ७८ यहसुनिकै विष्णु गण
बोले हे अज्ञानियो तुम अनीति करतेहो श्रीपुरुषोत्तम
शालग्राम की महिमा संसारमें विदितहै कि बिप्रबध
आदिपाप युक्तव विश्वद्रोहीहो सोभी शालग्रामस्वरूप

स्पर्शकरके निर्मल होकर परमगति को प्राप्त होताहै अरु फिर श्रीराममंत्र पाप रूप तूलको प्रचण्ड अग्निहै अरु इसके तो श्रीतुलसीमाथमें शोभित व श्रीशालग्राम हृदयमें ऊर्ध्व पुण्ड्र माथेमें अरु पापनाशनपादोदक देहमें पड़गया सब प्रकारसे यहनिर्मलहोगया तुम कैसे सन्देह करतेहौ ७६।८३ अरु पापिनको सदैव स्वर्गलोक दुर्लभहै हजार बर्षभोगकरिकै फिर शुभ परिणामको पातेहैं काशी जन्मभूमि सुरसदन तहां हरिशरणमें जाइकै ध्यानकरतेहैं तिनकोजोधाम ब्रह्मादिकों को दुर्लभहै उनकोवह प्राप्तहोतेहैं तुमशठो शालग्राम का प्रताप नहींजानतेहौ पृथ्वीतलमेंबिदितहै किजिनकेदर्शनपरसन कियेसे पापसमूह क्षणमात्रमें नाशहोतेहैं यह कहिकै रामदूत आनन्दपूर्वक उसकोबैकुण्ठ धाम को लैगये तब धर्मराजकेगण लज्जित होकर अपने स्वामीसे समस्त वृत्तान्त बर्णन किया-यहां बधिककोत्रास हीन देखिकै मुनिनाथ जातेभये तब सुरपुरसे अनूपम मणिकंचन से जटित मनोहरबिमानआयातेहिमें आरूढ़ह्वैकैवह बधिक आनन्द पूर्वक स्वर्गलोक को जाताभया वहांनानाप्रकार के भोग बिलास करके फिर शंभुसुरनाम नगरमेंब्राह्मण कुलमें उत्पन्न हुआ तबकुछ कालके अनन्तर ज्ञानप्रकट हुआ तबहरिकी शरणागतजायकै राममंत्र लिया फिरकुछ दिनके अनन्तर तनत्यागि कै शालग्राम के प्रभावसे परमगतिकोप्राप्तहुआ हेराजन्निजमति अनुसारहम शालग्राम कथा बर्णनकिया जे जन श्रवण करेंगे वे दुःखजाल

से मोक्षहोकर अनेकसुख भोगके अन्तमें स्वर्गको प्राप्त होंगे ८४।६२ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायां गंडकीशालग्राम माहात्म्यवर्णनोनाम विंशोध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले कि हेवात्स्यायनयहिप्रकारशालग्राम की महिमासुनिकै राजा रत्नग्रीव अपनी आत्मा कोसनाथ मानिकै सप्रेम गण्डकी में स्नानकरके बिधि पूर्वक पितृनकोजलदिया १।२ अरु चौबीस शालग्राम कीमूर्ति लेकर बेदबिधानसे चन्दन, अक्षत, धूप, दीपनैवेद्यसे पूजन किया अरुदीन अन्धोंको यथायोग्य दानदियातदनन्तर श्रीपुरुषोत्तम के दर्शनों को चलतेभये ३।४ यहिप्रकार क्रम पूर्वक गंगासागर में पहुंचे वहां जायकै मुनियोंका सन्मान करके बोले हेस्वामिन् यहांसे नीलगिरि कितनी दूरहै जिसमें शरणागतके प्रतिपालक, पुरुषोत्तम जिनको देवदनुज सब चराचर भजन करतेहैं उनका प्रकाश करो ५।६ राजाका यह बिनीत बचनसुनिकै मुनिजन बिस्मय बश होकर बोले हे राजन् तुम्हारे सन्मुख नीलगिरि प्राप्तहै प्रणाम करो मोहमें क्यों पड़तेहौअतिप्रकाशित पावन दरशी क्याकारणहै कि दर्शन नहीं होता तब सुख देखिकै द्विजराज बोले कि प्रथम मैंने यहां पर मज्जन करके फिर भीलन के दर्शनकियाअरु यही मार्गसे शैलमें प्रवेशकियाथा ७।८ अबमोको बड़ा आश्चर्यहै किमैं

देखता हूं तुमनहीं देखते यह सुनिकै राजा रत्नग्रीव दुः खितहोकर फिर लालसा करके बोले हे मुनिवर ऐसा उपाय वर्णनकरौ जेहिसे गिरिराजयुक्तपुरुषोत्तमकेदर्शन प्राप्तहों १०। १२ राजाके दुःखित वचन सुनिकै मुनि वरबोले हेराजन् अबदृढ़ बिश्वासमानिकै इसगंगासागर में स्नानकर जबतक नीलगिरि सहित श्रीबिष्णुभगवान् के दर्शननहों तबतक खड़े होकर पुरुषोत्तम पाप नाशकका यश गानकरो वे प्रणातके पालन करनेवाले करुणाकर अवश्य कृपाकरेंगे १३। १५ यहिप्रकारसे श्री हरिके उदारनाम प्रेमपूर्बक उच्चारण करो कि जहां २ निजभक्तनको विपत्तिसे उबारि कै सुखीकियेहैं तेई शुभ चरित्र गानकरौ करुणाकर अवश्य दर्शनदेंगे १६ मुनिके यहमृदुबचन सुनिकै दुखीराजाने गंगासागर में मज्जनकिया अरुस्नानकेउपरान्तदृढ़बिश्वासधरिकै अशन पान, निद्रा, अंगरागादिकत्यागकरकेबिधिपूर्बकशालग्राम की संयमसेपूजनकरके हर्षितहृदयसेकहनेलगे१७। १६ हे प्रणतपाल भगवान् दीनानाथभक्तोंके दुखहरनेवाले तुम्हारी जयहो, हेभक्त वत्सल जहां २ अपने भक्तोंको दुःखित देख्यो तहां २ विपत्ति नाशकरके रक्षा कियो देखो अम्बरीषको मुनिशापसे उद्धार कियो, अरु जब द्रोण सुतने कोप करके ब्रह्मास्त्र छोड़ा था तब चक्रधरिकै पाण्डु पुत्रकी रक्षा उदरमें भी कियो, अरु असुर पतिने प्रह्लाद भक्तको ताड़न कियो तब हे हरि आप ने नृसिंह रूप धारण कर उसका नाश करके भक्तकी

रक्षा किया, अरु गजराजको शरणमें दीन जानिकै गरु-
ड़ को छोड़ चक्रसे ग्राहको छेदनकरके रक्षा किया, अरु
हेनाथ जब २ तुम्हारे भक्तोंको दैत्योंने क्लेशित कियाहै
तब २ अवतार लैके सब प्रकारसे निहाल करते रहेहौ
तेतुम्हारे उत्तम चरित्र सब मुनिजन गानकरके पापपुंजों
को नाशकरतेहैं अरु ब्रह्मा, शिवादिक देवता कपट छोड़
अहर्निशि तुम्हारे चरणकमलोंका ध्यानकरतेहैं अरु मनु-
ष्यतुम्हारे चरण कमलोंका पूजन हर्षित गातसे करिकै।
बिनप्रयास सब पातकों को दूरकरके परमगतिको प्राप्त
होतेहैंहे दीनानाथतेई चरण मुझको दीनदुःखी जानिकै
अवलोकन कराओ, यद्यपिमैं समस्त अवगुणों कीखानि
दर्शनोंकेयोग्य नहींहौं, जैसे अधम पुरुष परम पदभोग
चाहताहै तथापि शरणमें दुःखित जानिकै दर्शनदेउ अरु
तुम पापनाशक, शुद्धात्मा, सत्यमय, सुखदायक, संसारके
दुःखोंकेनाशक, बिरद सम्भारी यहबानि सत्यकरौ नहींतो
गुणगानकरके लोग हंसैंगे-यह अनुमान करिकै हेप्रणत
पाल दासको दुःखित जानिकै दर्शन देउ अरुजो तुम्हारी
शरण होतेहैं वे तनुतजिकै सुरलोक कोजातेहैं जे संतत
पापपरायण तेउ तुम्हारा नामस्मरण करके बिनप्रयास
गोपदके समान संसारसे मुक्तहोतेहैं यह बेदभी उच्चारण
करतेहैं हे दीनानाथ तुम्हारायश नेति २ कहि बेदगातेहैं
तेपार नहींपाते, मैं मतिमन्द मनुज केहिभांतिसे गान
करौंअब हे नाथ आरतहरण, दीन जानिकै दर्शन देउसु
मन्तजी बोलेहेरघत्तमयहिप्रकार निर्मलबाणीसे राजा

रत्नग्रीवने पुरुषोत्तमबिष्णु भगवानकी स्तुतिकी २०।
३० यहि भाँतिसे राजा अहर्निशिभजनकरतेथे क्षणमात्र भी बिश्राम नलेतेथे अरु अशनपाननिद्रादि सब छूटगये अरुबैठतेउठते चलनेश्रीहरि गुणगानकरतेहैं ऐसेतलफते हुये पांचदिन ब्यतीतकरके गंगातट छोंड़ आगे पहुंचे-तब श्रीभगवान् करुणा निधि करुणा करके जाना कि यह राजा मन बचसे मेरादासहै अरु स्तुतिसे पापभीनाशकिया अब देव दनुजोंके बन्दनीय रूपसे दर्शन देहैं। यह बिचार करके भगवान् प्रेमबश होकर लोचन श्रवत संन्यास बेषसे दण्ड लैकै राजारत्न ग्रीव के समीप गये ३१।३४ अरु कृपादृष्टिसे राजाको देखा तबराजाने हर्षित होकर ओं नमोबिष्णु कहिकै आसन देकरअर्घ पाद्यसे बिधि पूर्बक बिष्णुकेसमानपूजनकिया फिरराजा बोले हे स्वामिन् मेरा बड़ा भाग्य हुवाजो आपने दर्शन दिये अरुहे यती शिरोमणि तुम्हारा दर्शन मुझकोपुरुषोत्तमकेसमान प्रियलगाहैऐसे राजाकेबिनीत बचन सुनिकै यती बोले ३५। ३७ हेराजन् तुमअपनेविज्ञानके बलसे भूतभविष्य जानते हौ तातेकहताहूं सुनौ श्रीबिष्णुके सब भव शूल हरने हारे दर्शन जोशिव ब्रह्मादिकोंको दुर्लभ अवश्य तुमको युगयाम बीते प्राप्तहोंगे यह मेरा बचन सत्यमानों अरुफिर तुम पांचजनों समेत वैकुन्ठको प्राप्तहोगे एकतो तुम,तुम्हारीस्त्री,मंत्री,मुनि,कार्य्यकारक, ये पांचोजन में बुझायकै कहतहैं जोगतिब्रह्मादिकों को दुर्लभहै उसपरम गतिकोप्राप्तहोगेहेरघूत्तमऐसे राजाको

शिक्षादैकै वहयती अन्तर्ध्यान होगया ३८।४१ तेहिके
बचनसुनिकैराजाप्रेमबशहोगया अरु फिरसावधान ह्वैके
यतीको अन्तर्द्धान जानिकै अत्यन्त बिस्मय हुवा अरुफिर
मुनिबरसे चकित होकर बोले हे स्वामिन् आप कहो वह
यती स्वरूप कौनथा जिसने मोसन मनोहर बचन कथ-
नकिये सो अब मोंको नहीं देखपड़ता शीघ्र कहो वहक-
हांगया तब मुनि बोले हेराजन् तुम्हारा अहोभाग्यहै
कि तुम्हारा अगाधप्रेम जानिकै पुरुषोतमआयेथे अब
थोड़ेही कालमें तुमको नीलगिरि प्रकट होताहै तेहिमें
चढ़िकै श्री बिष्णुभगवान्के दर्शन करिकै परमपदकोप्रा-
प्त होगे यह मुनि राजके अमृत सम बचनसुनिकैहृदय
सेसबदुःखसंशय दूरहुयेतब प्रेममें मग्न होगये जेहिसे
रोमांच होआया व दृगनसे जल ढरने लगा जो पद
ब्रह्मादिकों को दुर्लभ हैं तिनके दर्शन अवश्य कुछ का-
लके बीते मुझको प्राप्त होंगे अरुफिर बिचार करने लगे
तब सभाको आनंदित जानिकै तेहि अवसर विषे दूतन
ने नगारा दुन्दुभी बीणाआदि बजा दिये अरुमारेआन-
न्दकेक्षणबैठैहैं, क्षण उठैहैं, क्षणहंसैंहैं यही दशासेपुरुषो
त्तमके गुणगान करतेथे४२।४८इतिश्रीपद्मपुराणे पाता
ल खण्डे शेष बात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेध भाषायां
रत्नग्रीवयती दर्शनो नामएकबिंशोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय॥

शेषजीबोले किहेबात्स्यायन सुमन्तजी यहकथाशत्रु

द्यनजी को सुनाय कर बोले कि हे रघूत्तम यहि प्रकार राजा रत्नग्रीव दिनभर हरि गुण गान करके आलस्यमें गंगा निकट शयन किया १तहां स्वप्नमें अपना स्वरूप चार बाहु युक्त अर्थात् शंख, चक्र, गदा, पद्म, चतुर्भुजी स्वरूपसे पुरुषोत्तमके नीलगिरि पर दर्शन भये २ कैसे पुरुषोत्तम कि कोटिन मनोजकी छबि तनमें शोभित चार बाहुसे शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये, उत्तम मुकुट प्रकाशित मणियोंकी माला पहिरे बाम भाग में चंद्र मुखी लक्ष्मी जी बिराजमान ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि देवता नृत्य करतेहैं यहि प्रकार से देखिकै राजाने दण्डवत् किया तब प्रभुने बांछित बरदान भी दियाअरु सब भांतिसे प्रभुको दयालु देखिकै हर्षितहोकर अपना को कृपापात्र निश्चय करके जाना ऐसा स्वप्न देखिकै राजा जागिकै बिस्मित होगये अरु तपस्वी मुनिसे सब कहा उन्होंने सुनि आश्चर्य मानिकै बोले हे राजन् तुम्हारा अहो भाग्यहै कि प्रणत पाल कृपानिधि को तुमने देखा ३। ७ श्रीपति भक्त हितकारी शंख चक्रादिधारण किये और कोई नहीं वेई पुरुषोत्तमहैं यहिसे आज अवश्यही दर्शन होगा ८ मुनिके ऐसे बचनसुन राजारत्नग्रीव हर्षित होकरदीनों को दान देकर फिरि मज्जन करके सुर पितृनको जल दैकर श्री हरि गुण गानकरने लगे अरु हृदयमें यह बिचारते कि कब मेरा ध्यानहो ९।१० ऐसी दर्शनकी लालसा बढ़ी कि क्षण२ में प्रेम मग्न होजातेथे ऐसे२ दोपहर व्यतीत हुये तेहिअ-

वसर बिषे अकस्मात गगनमें निशान बाजने लगे मा-
नो प्रलय के मेघहैं व देवताओंने राजाके ऊपर पुष्पों
की बर्षाकी वसव बधुन समेत आनन्दित कहने लगेकिहे
राजातुमबड़े भाग्यवान्हो अगाध अगमनीलगिरि कादर्शन
र्शन तुमको प्राप्तहुवा यहदेवोंके वचनसुन राजाआनन्दि
तहोगये तदनन्तर तेहि समयबिषे पूर्वदिशामें शैलराज
प्रकटहुये श्रीनीलगिरि अतुल तेजको धारणकिये कनक
शिखर शोभित चारों ओरसे बराबर देखिकै राजा मोहि
त होगये व बिचाराकि क्या सूर्य्यनारायण उदयभयेकि
द्वितीय दिवाकर जगत्के दण्डदेनेको तेज धारण किया
है ऐसाराजा बिचारकरताथा तब तक नीलगिरिब्राह्मण-
नेदेखा तब हर्षित होकर राजासेबोले ११।१६ हेराजन्
अबगिरि राजकी रचना अवलोकनकरो इनका दर्शन
अतिपुनीतहै कि शीघ्रही संसारके भय हरताहै १७
यह सुनिकै राजाने प्रणाम करके सप्रेम पूजन किया
औ कहाकि आजसे सब प्रकारसे गिरिराजके दर्शनकर
के धन्यहुवा यहकह प्रेम में मग्न होगया फिरि धैर्य्य
धरिकै स्थिर हुवा अरु मुनि,त्रिया,मंत्री,प्रोहित,सहित
राजा हरिनामलेते हुये गिरिराजमें प्रवेशकिया सुमन्त
जी बोले हेरघूत्तम वे अहोभाग्य विजयी पांचोंजन
गिरिराजकीशोभा देखतेचलेजातेथे तेहिसमय बिषेपृथ्वी
व आकाशमें अनेकनबाजा बजे,वतहांब्रह्मादिक देवता
कपट त्याग पुरुषोतम की सेवा करते ,व जगज्जननी
लक्ष्मीजी स्वामीके अर्थ उत्तमपाक बनातीथीं ,तेहिस्थ-

लविषे राजाजाकर देवभवन देखतेभये जहां धर्म्मनिरू
पण,व वर्णाश्रम सम्मत होताथा अनूपम चित्रित महल
देखिकै प्रणाम करके पांचोजन उसमें प्रवेश किया
तहां दिव्य कनक मणि रत्न भूषित देखते हुये मनको
चुराये लेताथा ऐसा मनोहर सिंहासन जिसमें छबि
धामकोटिन कामके लजा वन हारे चारि भुजा युक्त शंख
चक्र गदा पद्मधारण किये मुकुट दिये मणियों कीमाला
पहिरे जगज्जननी लक्ष्मीजीके सहित जगन्नाथविष्णु
भगवान् विराजमान उनके दर्शनकिये अरु तहां जिन
मुनियोंके दर्शनकिये उनका वर्णन करताहूं १९।२२
चण्ड, प्रचण्ड, जय,विजय,भद्र, सुभद्र आदि मुनियोंको
राजाने सबजन समेत २३ पुलकित गातसे दण्डवत
किया फिर सावधानी से वेद बिधान पूर्वक अर्घपाद्य
आचमनसे निजनाथकहिकै स्नान कराया व चन्दन,
तुलसीपुष्पमाल व चित्रित बस्त्र नाना प्रकारके पहिराय
धूप,दीपनैवेद्यकरिकै फिरआरतीकियोअरुताम्बूलादिक
अर्पणकरिकै प्रणाम किया यहिप्रकारराजा रत्नग्रीवने
निष्काम होकर अर्चन किया अरु तपस्वी युक्त निजम
तिके अनुसार स्तुति करनेलगे २४।२७[स्तुतिः] एक
स्त्वंपुरुषःसाक्षाद्भगवान्प्रकृतेःपरः कार्य्यकारणतोभिन्नो
महत्तत्वादिपूजितः१ त्वन्नाभिकमलाद्यज्ञेरुद्रस्त्वंनेत्रसंभ
वःत्वयाज्ञप्तःकरोतुयस्यविश्वस्यपरिचेष्टितं २ततोजातोपु
राणोद्य जगत्स्थाण्णुचरिष्णुच चेतानांशक्तिमाविश्यत्वमे
नंचेतयस्यहो ३ तवजन्मतुनास्त्येवनांतस्तवजगत्पते

वृद्धिक्षयपरीणामास्त्वयिसंत्येवनोविभो ४ तथापिभक्त
रक्षार्थंधर्म्मसंस्थापनहेतवे करोषिजन्मकर्म्माणिह्यनुरूप
गुणानिच ५ त्वयामात्स्यंवपुर्द्धृत्वाशंखस्तुनिहतोसुरः
वेदाःसुरक्षितःब्रह्मन्महापुरुषपूर्वज ६ शेषोनवेत्तिमहितं
भारंत्यपिमहेश्वरी किमुतान्येमहाविष्णो नादृशास्तुकुबुद्ध
यः ७ मनसात्वांनप्राप्नोतिवागियंपरमेश्वरो तस्मादहं
कथंत्वांवैस्तोतुंस्यामीश्वरप्रभो ८ यहिप्रकार जबराजा
रत्नग्रीवने विष्णुभगवान् की स्तुति करके प्रणामकियातो
पुरुषोत्तम,दीनानाथ हर्षित होकर बोले२८।३६ हे नृपो-
त्तम तुम्हारी बिनय सुनिकै हम प्रसन्न भये अरुतुम्हा-
रीमति प्रकृतिसेपरे है अब सुखदायक हमारी बाणीसुनौ
तुमशीघ्रता पूजन प्रसाद भोजनकरौ जेहिसे चतुर्भुजहो
तुम्हारे मनकाबिषाद शान्तहो अरु फिरब्रह्मादिक देव-
ताओंको जो भवन दुर्लभहैं तिनको पूर्ण कामनासे
प्राप्तहो औ हे राजा यह तुम्हारी की हुई स्तुति जेनर
आनन्दित होकर पढ़ैंगे व सुनैंगे तिनकोमैं दर्शनदेकर
भुक्ति मुक्ति अर्थात् परम पदको प्राप्त करूंगा-यह कृपा
युक्त त्रिभुवनेश्वर का बचन सुनिकै पांचो जनयुक्त राजा
हृदय से शीतल होगया तदनन्तर प्रसाद ग्रहणकिया
तेहिसे सब चतुर्भुज रूपहोगये सुमन्त बोले हे रघूत्तम
तबतक जाज्वल्य मान कमलों से युक्त अप्सरागानकर
तीं ऐसा बिमान आगया तबप्रभुगण प्रभुकी आज्ञापा
यकै राजाको चढ़ातेभये तब राजाप्रभुकी आज्ञापाय
चरणोंकी बन्दना करिकै सपत्नीक मनोहर बिमानमें

आरूढ़हवैके वैकुंठको गमनकिया ३७। ४८ तिसपीछे धर्मात्मा राजमंत्री उसी भांतिगया तदनन्तर तपस्वी ब्राह्मण चतुर्भुज रूपसे गये तापीछे तंतबायकअर्थात् प्रोहित आदि पांचोजन बिष्णु भगवान्के दर्शनोंके प्रतापसे सब त्रयताप तजिकै बिष्णु लोकको चलते भये तब सुरगण पहुंचाने चले व अमित देवता दुन्दभी बजाय के पुष्पवर्षानेलगे-सुमन्तबोले हेशत्रुघ्न राजाके पुरबासियोंने आकाश मेंबिमानोंकाप्रकाश वशब्दसुनिकै बिस्मितहवै तिननें एक ब्राह्मण हरि पदरतबड़ा भाग्यवान् गगनमें बिमान देखिकै महांकष्ट से दर्शनपाये तब वहभी दर्शनोंकेप्रभावसे चतुर्भुज रूपहोकर परमगतिको राजा के निकट पहुंचा पुरबासी यह आश्चर्य देखिकै राजाकी प्रशंसा करने लगे अरु सबोंने तब गंगासागरमें स्नानकरके महाराज बिष्णु भगवान्के गुण गाते हुये अपने पुर को चलतेभये ४६। ५१ औकहने लगे कि राजारत्नग्रीव धन्यहैं व हरिपद अनुरागी सत्यहैं जैसेसदेह बिष्णुपुरको गयेहैं यह गति श्रुतिने ब्रह्मादिकों को दुर्लभ कहीहै यहिप्रकार सब नर नारियोंने राजाकी कीर्त्ति सारे नगर में घर २ प्रकाशित कर दिया औ कहा कि पुरुषोत्तम व नीलगिरि सब सुखरूपहैं यहिका दर्शन करनेसे संसारके जालसे मुक्तहोकर परमपद मिलताहै जोयह गिरिराजकी कथा सुनैं सुनावैं तेनरपृथ्वीतलमें बड़े भाग्यवान्हैं अरु तनु त्यागिकै अवश्य सुगतिको प्राप्त होतेहैं अरु जो यहि काध्यान स्मरण करतेहैं उनके घोर स्वप्नभी नाश होते

हैं ५२। ५५ हेशत्रुघ्न जो यहि नीलगिरिपर पुरुषोत्तम
जिनका नामहै तेई रघुकुल मणि तुम्हारे भ्राता श्रीराम-
चन्द्रजीहैं अरुजो जनकनन्दिनी जानकीजी सो साक्षात्
लक्ष्मीहैं अरुजो यह अश्वमेध यज्ञ करतेहैं सो संसारके
निर्मल करनेके अर्थहै कोईदूसरा भेदनहींहै देखो जिन-
का नाममात्र लियेसे ब्रह्महत्या दिमहापातक नाशहोतेहैं
तिनको क्यहि प्रकार पाप लगिसकै है जिनके नाम-
का ऐसाप्रतापहै हेराजन् तुमहूंहर्षित ह्वैकै नीलगिरि
के दर्शन करौ औ प्रणाम करकेनिर्मलहोकरअन्तमेंमुक्ति
पावो, जेहिप्रसादसे सबजीव परमगतिपाते हैं, तिनका
दर्शन सम्पूर्ण भयनाशनहै सो सुखीह्वैकै अवश्य करौ
५६। ५६ शेषजीबोले हेवात्स्यायन जबतक यहवाक्य
सुमन्तने कही तबतक बाजिराज बायुकेसमान बेगसे
गिरिराज के निकट पहुंच गये तिसपीछे महात्मा शत्रुघ्न
सचिव समेत गंगासागर स्नान करके नीलगिरिपर
चढ़गये अरुमंदिरमें जाय दर्शन करके आनन्दित होकर
प्रणाम करके पूजनकियो औ अपनाको कृतार्थ मानिकै
प्रसाद लियो औप्रभुसे अनेकप्रकारसे बिनतीकरी६०।
६२ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषवात्स्यायनस-
म्बादेरामाश्वमेधभाषायांनीलाचलमाहात्म्यबर्णनोनाम
द्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले कि हेवात्स्यायन पुरुषोत्तमके दर्शन

करके रघुराजशत्रुघ्नजी कटकमें आये तबतक तृणचरते हुयेबाजिराज चलते भये १ कनकपत्र शिरमें शोभितहै व चमर छत्र शोभित होतेहुये तिनके पीछे रणधीर अनी चलतीभई २ नाना अस्त्रशस्त्रोंसेभूषितशत्रुघ्नजी, लक्ष्मीनिधि, पुष्कल, प्रतापअग्र, आदि राजा साजसे साजित अश्वराजकी रक्षा करतेथे पंथमेंचलतेहुये चतुरंगिणीसेना समुद्रकोभीलजातीथीयहिप्रकार चलते २ बाजिराज चक्रांकित नामनगरीमें गयेवहांसुबाहुनामराजा कोटिन भटन सहित रक्षाकरताथा तेहिअवसरबिषे राजपुत्र दमननाम ससैन्यमृगया को गयाथा तहांउसने सबप्रकारसेचर्चित बाजिराजको देखा अरु मस्तकमें कनकपत्र बांचा तब अपने वीरोंसेबोला कि यहकनकपत्र चामर युक्त मन मोहित तुरंगमकेहिकाहै इसकोहमारे पासलाओराजाके बचनसे सुभट बाजिराजको पकड़ लातेभये तब राजपुत्र बलसे गर्वित पत्र बांचनेलगा कि अवधपुरीमें बलधाम राजशिरोमणि दशरथके पुत्र शूरशिरोमणि उनके समान अस्त्र शस्त्र बिद्यामें कोईनहीं तिनने अश्वमेधके अर्थ यह बाजी शिरमें कनकपत्र भूषित करिकै छोड़ाहै अरुतेहिकी रक्षाकेअर्थ शत्रुरूपीवनकोअग्निकेसमानशत्रुघ्नजीभस्म करनेवाले अनेक रण धीरोंसे युक्तहैं जे क्षत्री आपुको छत्रधर्म में जानिकै रणगति जानतेहों अर्थात् जिनके यह गर्बहो कि हमारेसमान दूसरा कोई नहीं सोबीर अवश्य बरजोरीसे बाजीको पकरै तिनको शत्रुघ्न जीतिकै नीतियुक्त बाजिराजको लैलेंगे नहींतो शंकावअभिमान

छोंड़िकै धनुर्बाण त्यागिकै चरणमें परो यहिप्रकार पत्र बांचिकै अभिमानी कोपकरके बोलता भया ३। १२ किअब संसारमें रामचन्द्रही बीरहैं हम कोई क्षत्रीनहीं हैं देखो मेरे पिताका बल संसारमें बिद्यमान होरहाहै तिनपर उनने गर्बकिया हमको निदरि डारा उसका फल बिधि पूर्बक आजु मैं रणघोर करिकै देऊंगा अरु शत्रुघ्नको अनेकन बाणमारिकै तरुपत्र के समान करिदेहौं। औ जितने हाथी उनकी सेनामेंहैं तिनको क्षण-मात्रमेंनाशकरूंगाऔर सब घोड़ोंको रुधिरनदीमें बहाय दूंगा औ योगिनी मनुज कपाललेकर आनन्दसे रुधिर पियेंगी अरु शृगालआदिआमिष भक्षीपक्षी मेरेबाणबल से सन्तुष्ट होंगे तिनके देखते २ सबसैन्यका नाशकर दूंगा और प्रणकिया कि पिताकीशपथहै जोकाल समा-नभी सैन्य आवैगी तौभी ब्याकुल करदूंगा १३। १८ यह कहिकै घोड़ा नगर को भेजदिया और अपना दमन राजसेनाध्यक्ष के निकट जायकै बोला हेतात शीघ्रता पूर्बक जायकै शत्रुके मर्दनेवाली कालसमान चतुरंगिणी सेना साजो १६ यहसुनिकै सेनापति नगरमें जायकै बिधिपूर्वक सब सेना सजबातामया सजिकै राजपुत्र दमन राजके निकटलाया तब दमन कोपकरके सेनाको सम्हारिकै रणमें ठाढ़ेभये तदनन्तर वाजिराजके अनु-चरभी आयगये तबअश्व को नदेख करके परस्पर सब ब्याकुल होकर कहनेलगे किहेभाई श्री रामचन्द्रजीका बाजिराज अब दृष्टिनहीं आता कहांगया तबतक प्रताप

अथ आगये तिनने प्रबल चमूको आते देखा तिसमें रणधीर बीर सिंहनाद करतेथे तब किङ्करोंने बिकलहोकर राजाको सुनाया कि हेमहाराज तुरंग हमने बहुत ढूंढ़ा नहीं मिलता किसने चुरायाहै यहसुनिकै राजाने फौजदेखी तबमनमें बिचार किया कि इसमें संशयनहीं है इन्हींनेघोड़ा लियाहै केहि भांतिसे रणमें ठहरैं यह बिचार करके एक दूत भेजतेभये अरु उसको अनेक प्रकारकी शिक्षादीं तब दूत दमनराजके निकट जायकै कहनेलगा हेराजन् रघुपति रामचन्द्रजीका घोड़ा कैसी गया किसने पकड़ा वहकौनजगहमेंहै किआपहीनेछिपायाहै तोबिनाजाने धरोहै यहजानिकै इसका उत्तर शीघ्र दो जो मखबाजी बिनाजाने धरोहै तौशीघ्रछोड़ो हमदोष नमानैंगे अथवा बलसेगर्बित होकर धरोहै तो रिपुसूदनादि वीरतुमको जीतैं जो यहबचन न सुनोगे तौ निदान तुम्हारे ऊपर यमराज कोपकियेहैं यहीबिचारो १६।२७ यहसुनिकै राजपत्र निदरिकै गम्भीर वचन बोलता भया हेदूत हमने जानिकै घोड़ा बांधाहै छोड़ैंगा नहीं चाहे अनेक उपाय करो अरु सब शूर बीरों को जीतैंगा सब को शपथहै उबारिले मोको बिनाजीते स्वप्नमें भी उसका रूप न देखने पावैंगे यह सुनिकै रोषवश दूतने कहा छोड़ो नहीं उपायकरौ अरु प्रतापअग्र से जाकर सबहाल सुनाया सो सुनिकै बड़ाकोप किया निडर वचन सुनिकै नेत्र अरुण होगये तब चारि अश्व युक्त सुवर्ण का रथ सजवाय के अस्त्र शस्त्र धारण करके

चढ़ते भये अरु प्रबलसैन्यभी लैकै दमनपर कोप करके क्रुद्धित भये अरु हाथमें धनुष टंकारते क्रोधसे नेत्रजल श्रवत हेशिशु ठाढ़े होउ अबकहां भाजि जाउगे मेरे सामनेसे यहिप्रकार बार२ बोलते हुये चले तिनके पीछे कोटिन असवार नग्न तलवारें लिये व गजारूढ़ व पदचर चले सब बीर खड्ग कलामेंबड़ेही प्रबीणथेवहां दमनने सैन्यको आते देख क्रोधकरके रथमें आरूढ़ होकर कवच सनाह पहिरिकै अस्त्र शस्त्र लैकै सन्मुख आता भया और शरासन में प्रचण्ड बाण धरे अरु सब अस्त्र यमदण्डही के समान थे तरुण गात अति बलवान् अपने दल सहित आगया जैसे मृगगणमें सिंह ऐसेही अशंक कुछभय न करताथाशेषजी बोलेहेवात्स्यायन तेहि समय दोनों बीर अति क्रोध करके भिड़ते भये२८।३७अरु दोनों ओरसेतीक्ष्ण कराल वचन कहते हुये शस्त्र चलाने लगे तब पदचरसे पदचर गजारूढ़से गजारूढ़ सवारसे सवार सब सैन्य बराबर२ सेभिड़गये तब कठोरबाणोंके लगनेसे अगणित गज कटने लगे अरु अनेकन नर शिरनसे पृथ्वी पूरित होगई व बीरोंके मारे रुण्ड बिचरने लगे तब राजा प्रतापअग्र अपने दलको लोप जानिकै अत्यन्त क्रोधकिया तब दमनने देखा कि सैन्य संहारत दल सहित मेरे निकट आताहै तब तक प्रताप अग्र मातलिसे रथ हँकाइकै दमनके निकट गये तहां शूरशिरोमणि को रथमें आरूढ़ संग में अनेक रणधीर बीर ऐसे दमनको देख धनुषमेंबाण

धरिकै कोपसे बोले रे राजपुत्र कहां भागजायगा मैं तेरा काल आगया हेमूढ़ राजनके राजा वीरत्व भूषित श्रीरामचन्द्रजी को नहीं जानता जिन्होंने जग विजयी रावणको बधकिया अरु उनका प्रताप सारेसंसार में प्रकाश हो रहाहै तिनकी यज्ञका बाजी शठ तूने नगर को पठैदिया यहिसे सजगहो मैं काल समान तेरे शिर पर आगया३६।४६नहीं तो बाजिराजको छोड़िकै बाल- कोंमेंखेलकर आनन्दितहो औरकिसकापुत्रहै औ शीघ्रअ- पनानाम कह औ शीघ्र घोड़ा देकै भवनको जामुझकोबा- लकदेखिकैदया आतीहै५० यह बचन सुनिकैदमन राजा कोतृण समान जानिकै बोला ५१ मैंनेअपनेबलसे घोड़ा बांधाहै हेराजन्‌जियतमैं स्वप्नमेंभीनदेऊंगाहेराजशिरो- मणि समर करूंगा अरु तुमनेजोकहाकिबालकों मेंखेलो जाय सोहमक्षत्रीके बालकहैं हमको रण खेलनेकीउमंग है ५२ शेषजी बोले कि हेबात्स्यायन ऐसे कहिकैधनुष चढ़ाइके अत्यन्तक्रोध हृदयमें धरिकै सौबाण मारता भया कादरोंके हृदय को डरावनी शंखध्वनिकी, राजा प्रताप अग्रने सर्प समान बाणोंको आते देख एकबहुत छोटा बाण प्रहार करके सबको व्यर्थ करदिया तब अ- पने बाणोंको भंगदेखिकैसुभुज तनयरणमें अत्यन्तक्रोध करके शर समूह छुरासम धार काकपक्षयुत कठिन चापमें गुनिकै प्रहारकिया उनमें उसके नामभी अं- कितथे हे मुने वे बाणधरणीआकाशको पूरित करलिया मानो सावनके मेघ आगये जब वे शरभिरिकै प्रकटे

तब उनसे महा कराल अग्नि उत्पन्न हुई तब प्रताप-अग्रके दलमें सब बीर,गज, रथ,तुरंग, बिकल होकर जरने लगे तब प्रतापअग्र निज सैन्यको ब्याकुलदेख क्रुद्धित हो बोले हे राजपुत्र तिष्ठ तिष्ठ अर्थात् खड़ा हो २ यह कहिकै धनुष श्रवण तक तानिकै दशबाण मारे तथापि राजपुत्र नटराजैसे उन्मत्त हाथीकोबालक के अल्पगदाकी प्रहारसे पीड़ानहीं होती ऐसेही रणधीर दमन न मुरा अरु बाणलगे शिरकैसाशोभित होताथा, मानों दशतरु युक्त पर्वतहै,तब फिरराजपुत्र कराल कोप करके तीनसौबाण हेमपक्षवाले मारे तेशरप्रलयकालकी अग्निसमान भूपहृदयको पयानकिया जैसेरघुपति भक्ति विमुखनर पक्षितायके नरकमें पड़ताहै ,ऐसेहो वे बाण राजा प्रताप अग्रकेहृदयमें पड़े जायकै तबवेबाणसहिकै राजानेक्रोधसे धनुष चढ़ायकै सहस्त्रनबाणसर्पके समान छोड़े अरुउसके रथके घोड़ा चारबाणसे बधकिये दोबाण से ध्वजा पताका व एक बाण से सारथी निपात किया व चार बाण अति तीक्ष्ण हृदयमें मारे औ दमनको रथ से पृथ्वीमें गिरादिया,तब राजपुत्र राजाका अमितपरा-क्रम देखिकै अत्यन्त क्रोधसे सम्हारिकै उठता भया अरुद्वितीय रथमें धनुषलैकै बैठा तदनन्तर राजाके नि-कट जायकै बोला हेराजन्महाबीर बलवान् तुमने बड़ा पराक्रम किया अब मेरे धनुषका बलदेखो यह कहिकै दश बाण प्रहार किये तिसमें चार बाणसे चारों घोड़े बध किये व चारसे रथको तिल २ करदिया व एकबाण

से सारथी का बध व एक बाण राजाके हृदयमें प्रहार किया यह बिक्रम करिकै शंखध्वनि कर गर्जता भया यहि प्रकार दमनका बाहुबल देखिकै राजाने साधु कर्म्म कहा व कोपसे पूरित द्वितीय रथमें आरूढ़ होकर बोले हे राजपुत्र अब मेरा बल देखना यहकहिकै महा घोर बाण छोड़े जिनसे दिशाबिदिशा छागईं अन्धकारसेकुछ नहीं देख पड़ताथा अरुते बाण ऐसे सैन्यमें पूरिरहे जैसे ब्रह्माण्ड बिषे परब्रह्म छाइरहेहैं ६३।७४इस शरपंजर से अपनी सैन्यको व्याकुल देखिकै अतीव क्रोध करके महा तीक्ष्ण बाण छांटे तिनसे राजाका शर पंजर करिके अपने बाणोंसे आकाश पूरित करदियाअरुअरुण नयन करके राजाप्रति गंभीर बचन बोलाहेराजनतुममहाबीर कहावतेहौ अबमेरा एक प्रहार सहौ मैंप्रतिज्ञा करताहूं सजग ह्वैकै सुनौ जो तुमको यहि बाणसे परास्तकरके पृथ्वीमें न डारौं तौजो पातक बेदनिन्दक निजस्वार्थीको लगताहै वहपातकअवश्यमुझकोलगिकैनरकमेंवासकरौं यह कहिकै राजपुत्र करालबाणको दण्डमें चढ़ाताभया भूपके हृदय का निशानमानिकै छोड़ा बाणके प्रकटतेही अनलपुंज आकाशमें छागया व बाण लाघवसे अर्थात् शीघ्रता पूर्बक चला तबराजा प्रतापअग्र काल समान बाण आतादेख शीघ्रता पूर्बक उसके काटने के अर्थ अमित बाण छोड़े तिन बाणोंको हतिकै राजपुत्रका कठोर बाण हृदयमें लगा लगतेही क्षणमात्रमें हृदयमें पारहोगया राजापछार खाके पृथ्वीमें गिरपड़े वमूर्च्छित

देखिकै सारथीने रथमें लैकै शत्रुघ्नजीके कटकमें लैगया हेमुने तेहिसमय सबसैन्य आरतशब्द पुकारतेभागचली जहां कोटिन भटनसहित शत्रुघ्नजीथे वहां घायल व्याकुल गातसे प्रतापअग्र पहुंचे यहां सुभुज पुत्र राजा को जीतिकै आनन्दितहो खड़ा शत्रुघ्नजीकी बाट देख रहाथा ८१। ८८ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेष वात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेध भाषायां राजपुत्र युद्धो नाम त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

श्रीशेषजी बोले कि हे वात्स्यायन यहिप्रकार शत्रुघ्न जी सैन्य व बीरोंको घायलदेखकरकेअतीव क्रोधसे दंत पीसनेलगे अधर जीभ दाबने लगे अर्थात् अत्यन्त क्रोध प्रकाश किया अरु बीर बाणी बीरन सों बोले १ कि किसने घोड़ा बांधा व प्रतापअग्र को मारा बार२ अरुण नयन करके क्रोधसे पूरित यह बचन बोलते भये तब किङ्कर भयभीत होकर बन्दना करके बोले महाराज सुबाहुपुत्र दमन महा रणधीर उसीने घोड़ेको बांध करके राजा प्रतापअग्रको परास्त किया अरु संक्षेपसे समरभी बर्णन किया २।३ यह सुनिकै शीघ्रता पूर्बक ससैन्य अत्यन्तक्रोधसे समर भूमिमेंआये वहां देखा कि हाथीघायलपड़ेथे रुधिरबहरहाथामानोंपर्वतनसे झरना बहताहै व अनेकन असवारन सहित घोड़ा मृत देखे औरभी बीर मृतकदेखे व रथ खंड २ होकर पड़ेथे

रुधिरमें मृतकगज कैसेदेखे मानों समुद्रमें पर्वतहैं यहि प्रकार सब सैन्यका संहार देख करके हृदयमें अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ तबतक सन्मुख कटक सहित अशंक दमनको देखा तब शत्रुघ्नजी अरुण नयनहोके बोले हे बीरो यह दमन महारणधीर बीरहै जो सुभट यहिको जीति सकौ सो सजिकै सन्मुख आओ ५।८ यह सुनिकै भरतपुत्र बलधाम राजशिरोमणि पुष्कल दमनके दलन हित अनेक अस्त्रशस्त्र धारण करके शीघ्रता पूर्वक शत्रुघ्नजी सों मोद दायक बाणी बोले हे नाथ दमन बध कितनीबातहै व तुच्छसैन्य कितनीहै मैं अभी जीतिहैं जबलग मैं तुम्हारा किङ्कर सजीवहौं तबतक बाजिराज के समीप कौन आनेवालाहै महाराज राजेन्द्रके प्रभाव से सबकार्य्य कौतुकसे करूंगा जो बिनु प्रयास दमन को न जीतौं तौ प्रतिज्ञा सुनौ जो पुरुष श्रीरामचन्द्र को छोड़िकै अपर देवको भजतेहैं जो गति उनकी होतीहै सोईगति जो मैं राजपुत्रको न जीतौं तौ मुझको प्राप्तहो, अरु जो पातक जे पुत्र घरमें माता पिताको छोंड़िकै मोहवशसे तीर्थनमें भ्रमतेहैं उनकापाप मुझको लगै जो दमन पुत्रको न हतौं, यह सत्य बचन सुनिकै शत्रुघ्नजी सुखी भये औ अनुशासन दैकर सदल पठाते भये ६।१७श्रीशेषजी बोले कि हेमुने प्रबलसैन्य लैकर पुष्कल दमन पर कोप करके चलते भये वहां राजपुत्र सेनको आते देख निकट आगया तब रणमंडलमें दोनों रथोंका समागम हुआ व दोनों रथ कैसे शोभित

होतेथे जैसे पूर्वमें इन्द्र व वृत्तासुर समरमें शोभित हुये थे तब निकट जानिकै पुष्कल बोले हे राजपुत्र मैं रण करनेको आयाहूं अपनादलसम्हारो अपरंच मैंने आज तुम्हारे जीतनेके अर्थ प्रतिज्ञा करीहै मैं भरतपुत्र मेरा पुष्कल नामहै और तुमको इसस्थानमें आज अवश्य जीतौंगा मन बच क्रमसे श्रीरामका दासहूं मैं बिनु प्रयास शत्रुसंहार करताहूं अब तुम सजग ह्वैकै मेरे कराल बाणोंको अंगीकार करो यह सगर्व पुष्कलकी वाणी सुन अभिमानी दमन बोला मैं सुबाहुपुत्र मेरा प्रसिद्धनाम दमनहै मैं मन क्रमसे पिताका भक्तहूं मैंने जानिकै बाजिराज बांधाहै अरु तुमने जो क्रोधकरके ह-मसे कहा कि हम बिजयकरैंगे यह सुनिकै हमारे हृदय में स्वप्नमें भी शंकानहींहै जेहिपर श्रीहरि कृपाकरैंगेवह बिजय गामी होगा १८।२७यह कहिकैचाप श्रवणपर्यंत चढ़ाइकै बिषमबाण छांटे तेबाण आकाशमें छाइरहे जिनसे दिवाकरजी आच्छादित होगये२८ अरु उन्हींसे हाथी दोखण्ड होकर रुधिर बहनेलगा मनों पर्वतोंसे गेरूबहताहै औ विपुलबीरहय रथ भंगहोगये यहिप्रकार सब सैन्यको ब्याकुल करदिया तब निजसैन्यको ब्या-कुलदेख रणधीर पुष्कल क्रोधित होकरआचमन करके अग्निबाण प्रत्यञ्चामें चढ़ाया बिधिपूर्वक आचमन करके धनुषमें भयंकरबाण धरिकै श्रवणपर्यन्त चढ़ायकै छोड़ा तब बाणसे प्रचण्डअग्नि समुद्रकी लहरों समान प्रकटहुई तिससे दमनकदल जलतेहुये ब्याकुल होने

लगा जिसमें जड़ाऊ अनेकन रथ व आभरण अर्थात् उत्तमवस्त्र भस्महुये व अग्निकी भयावनी लपटें उठीं तहां जलतेहुये घोड़ा भागनेलगे व बहुतबीर जलतेहुये आरतशब्द बोलनेलगे व अनेकरथ पालकीभस्महोगये हे वात्स्यायन जेहि प्रकार हनुमान् जी ने लंकाको भस्म कियाथा उसीप्रकार प्रचण्ड बाणने दमनकी सैन्यको भस्मकिया तब निजसेनाको ब्याकुल देखिकै दमनने अग्निशान्त केअर्थ शीघ्रता पूर्वक बरुणास्त्रछोंड़ा छोंड़तेही बाणसे सजल मेघ उत्पन्न होकर गर्जिकै बर्षनेलगे क्षणमात्र में अग्निबुझायकै फिरि पुष्कलके सैन्यमें जल वर्षताभया तब बारुणास्त्रके जलसे भयावनी नदीबहनेलगीं तिनको देखिकै सबअधीर्य्यहोगये २६। ४४ तब दमनके बरुण बाणसे पुष्कलके सैन्यमें रथ तुरंग हाथी आदि वहने लगे, अनेकन रणधीर बीर बूड़ने उछलनेलगे व अत्यन्त शीत उत्पन्न हुआ जेहिसे सब कटक थरथराने लगो ऐसीवृष्टिभई कि बीरोंके हाथ से हथियार गिरगये अरु सब सैन्यको पंथतक न सूझ पड़तीथी सबसैन्य ब्याकुलहोगई तब पुष्कल निजसैन्य को सब प्रकारसे अधीर देखिकै अत्यन्तक्रोध उत्पन्नहुआ जिससे नयन अरुणहोगये अरु मारुतास्त्र अर्थात् बरुणास्त्रकेनिवृत्यार्थ बायुबाण छोंड़ा तबबाणसेबायुउत्पन्न होकर सबमेघ इधर उधर उड़गये व दमन के दलमें प्रचण्ड वायु बहनेलगी जिस से उड़ि २ कै गजपरगज रथमेंरथ उछल २करगिरनेलगे सवार से सवार गिरने

लगे कौतुकसे सब वीर वायु बेगसे बारछूटे घूमरहेथे मानों भत, पिशाच, बैतालहैं ४५। ५० तब बायुसे अपनीसैन्यको ब्याकुलदेख अमित पराक्रमकरिकै पर्वत बाण चढ़ाइकै शैलवृन्द बर्षनेलगा अपने दलके निकट शैलोंसे कोटबनालिया जिससेबायु न आवै, तब पुष्कल के सैन्यमें पर्वतबर्षनेलगे जिनसेसबसैन्य ब्याकुल होकर आरत शब्दपुकारनेलगीतबपुष्कलशीघ्रता पूर्बकवज्रबाण छोड़ातबउससेसबपर्बत चूर्णहोगये अरुवहीबाणदमनके हृदयमेंलगाजाय बाणकेलगतेही राजपुत्रब्याकुलहोरथ सेपृथ्वीपरगिरपड़ा, महाबिकलहोगयाकठिनबाण नसह सका, यह दशा राजपुत्र कीदेखसारथी ने रथमें लेकर कोसपर्यन्तलेगया तब सबसैन्य भी दमनकी यह दशा देख आरत बचन पुकारते भागचली५१। ५६ चलते२ सब नगरमें पहुंचे तब रुधिर बहताहुआ व कम्पायमान बीर राजाने देखाइहां पुष्कल जीतिकै निश्शंक मनहोकर जो सेनाभजी जातीथी उनपर श्रीरामचन्द्र के शिक्षित बचन स्मरण करकेअस्त्रप्रहार न करतेथे उस समयबिषे शंख, निशान, नगारा बाजतेभये सब सैन्यमें साधु २ होनेलगा वशत्रुघ्नजी पुष्कलकोबिजयदेखिकैआनन्दित होकर बीरवर बिचारि प्रशंसा करने लगे ५७।६० इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायन सम्बादेरामाश्वमेधभाषायांपुष्कलबिजयोनामचतुर्बिंशोऽध्यायः२४॥

——❋——

पच्चीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हेवात्स्यायन तब सुबाहुने अपने बीरों को खण्डित रुधिरबहतेदेख हृदयमें अत्यन्त शोच करके बोला १ हे बीरो दमनपुत्रका सब प्रसंग बर्णन करौ जेहि प्रकार घोड़ा बांधाहो अरु कितनीसेना शत्रु के साथहै व सेनाध्यक्ष कौन है जिसने मेरे रणधीर पुत्रको बधकिया मुझसेशीघ्र बर्णनकरौ मैं उनको क्षण-मात्रमें जीतौंगा२।३राजाके ऐसेबचनसुन क्रोधितजानि कै बीर रुधिरके बस्त्रधरिकै बोले४हे राजन् प्रथम तुम्हा-रा पुत्र दमन मृगयार्थ बनको गयाथा तहां कनक पत्र युक्त बाजिराज देखिकै पत्रबांचा पत्रके बांचतेही क्रोध से युक्त होकर घोड़ा नगर को पहुंचाय दिया अरु तृण समान रघुनाथजी को मानिकै ठाढ़ेभये५।६ तदनन्तर तबतक एकवीर घोड़ेका रक्षणीय सेनायुत आया उससे कुछकाल बिकटयुद्ध हुआ अरु दमनने उसको तीक्ष्ण बाणोंसे मूर्च्छित करदिया औ बिजय पायकै तुम्हारेपुत्र रणमें हर्षितहुये तब महाराज शत्रुघ्नजी सहित समाज आये जिनके संग अनेक अस्त्रशस्त्र युक्त हजारोंरणधीर बीरथे,तब तिन्होंने क्रोधकरके पुष्कल नाम बीर पठायो तेहिसेमहायुद्ध हुआ दोनोंओरसे बिकट बाण चलेतदपि पुष्कल बलवान्था उसनेएक प्रचण्डबाणछोंड़ा तुम्हारे पुत्रने उसके ब्यर्थ हेत उपाय किया तबतक वह बाण हृदयमें लगगया जिससे रथत्याग पृथ्वीमें गिरपड़े७।८

तब सारथीने व्याकुल देखिकै रथमें डाल लैभागा तब आरतशब्द पुकारते सब सेनाभी भागचली १० यह सुनिकै राजा थकितसे होगये अरुअत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ, जैसे पूर्णचन्द्रको देखिकै उदधि समुद्र उमगताहै व जैसे आहुति को पायकै अग्नि प्रचण्ड होतीहै वैसेही यह वृत्तान्त सुनिकै राजाका क्रोध प्रचण्डहुआ, अधर फरकनेलगे भृकुटीचढ़गई नेत्र अरुणह्वैगये दांतपीसने लगे अर्थात् महा क्रोधकरके सेनापतिसे बोले शीघ्रता पूर्वक सैन्यसाजो रामचन्द्रका दलदेखों जेहिनेमेरेपुत्रको मारके सब बीरोंको पीड़ित किया ११।१२ और जो महेश्वर जी रक्षाकरैंगे तौभी घोरशरोंसे सबको परास्त करूंगा तब सेनापतिने राजाके यहबचन सुन शीघ्र चतुरंगिणी सैन्य तैयार किया १३।१४ व हर्षित होकर राजाके निकटआय बोलामहाराज चतुरंगिणीसेना कोटिनशत्रुओंकेसंहारणकरने हारी अर्थात् कालसेभीकराल सजिआई यहबचन सुन राजा सुतकीसूरत करिकैअमित क्रोधसे युक्त नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्र धारण किये उत्तम रथमें आरूढ़ ह्वैके पयानकिया१५।१६ तिनके पीछे मदोन्मत्त कुंजर चले,उनके पीछे तुरंग स्यन्दनोंके समूह चले सब सैन्ययुक्त राजा सुबाहु क्रोध युक्त शत्रुघ्न जीके जीतनेकोचले श्रीशेषजीबोले किहेमुने राजासुबाहु क्रोधातुरचलतेहुये पृथ्वीथरथरानेलगी शेषनागकाशीश कंपितहुवा और धूलिऐसीउठीकिदिवाकरसूर्य्यनारायण जीकारथ छिपगया अरु घोड़ोंकी टापनसे शिलाशृंग

अर्थात् छोटेमोटे पर्वतभी चूर्णहोगयेऔर सबबीर समर की लालसासे प्रमादित अपना २ बल बर्णतेहुये आतुरतासे चलेजातेथे तेहिसमय बिषे राजासुबाहुका भ्राता सुकेतनाम गदायुद्धमें निपुण सो नानाप्रकारके आयुध धारण करके उत्तम रथमें आरूढ़हो चला, अरु राजपुत्र चित्रांगनामरणकर्त्ता सोभी चला और उसीका एकऔर भाई बिचित्रनाम रणधीरहृदयमें बन्धुशोकसेपीड़ितवह भी चला अरु इसीप्रकार अनेकन रणधीर बीर निशान बजाय २ चलतेभये तेहि समय बिषे अमित दुंदुभी नगारा, बीणा, जुझाऊढ़ोलबजतेहुये समर भूमिको पहुंचे जहां शरोंसे पीड़ितदमनपुत्रपड़ाथा उसकोदेखा १८।२४ सुबाहुने रथसे उतर समीप जाय अत्यन्त करुणा पूर्वक रोदन किया औबाणोंको निकाल२के घायलअंगकोदेखा औ अपने बस्त्र से बायु करके व शीतलजल भंजिके श्रमदूरकियो अरु बार२पुत्रको स्पर्श करिकै रूपदेखिकै अत्यन्त बिलाप करतेथे हेबात्स्यायन तेहि समय ईश्वर की कृपासे सब ब्यथाओं को दूर करके दमनजागा तब जागतेही बीरत्व भूषित पिताको निकट न जानिकै बोला हेसूत मेराधनुषकहांहै व पुष्कल कहांभाग गयो क्यामेरे करालबाणनहींसहसका२५।२७तब पुत्रके सचेत बचन सुनिकैराजासुबाहु अतीव हर्षित होकर पुत्रको हृदयमें लगायातब दमनने पिताको देखके सकुचिकै भक्तिपूर्बक चरणोंमें गिरा तबराजाने बहुतभांतिप्रशंसाकरके हाथों से उठाय रथमें सवार कराया२८।२६ तदनन्तर सेना

ध्यक्षसेबोले अबतुमसब प्रकारसे शत्रुगणोंकोअगमचक्र
व्यूह निर्माणकरो जिसमें शत्रुघ्नका दलनआसकै हेमुने
राजाकी आज्ञापाय शीघ्रतापूर्वक सेनापतिनेव्यूहरचना
की व्यासजीबोलेहेसूतदुर्गमव्यूहरचनाकियाजिसकेमुख
में अर्थात् अग्रभागमें सुकेतुनामबीरस्थिरहुयेअरुपूंछमें
तोअनेकअतुलबलीहुये अरुबलवन्तरणधीरदमनपक्षनमें
हुये वसब कटकउदरअर्थात् पेटयामध्यमेंरहे ३०।३३य-
हिप्रकारव्यूहकीरचनाकरके राजाकोसुनायोराजाविचि
त्ररचनादेखिकै हृदयलगायहर्षितहुये अरुक्रोधकरकेसब
सैन्यचली तबआपभीचले,रणकोमनकरिकै ३४।३५इति
श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषबात्स्ययानसम्बादेरामा
श्वमेधभाषायांसुबाहुसैन्यगमनोनामपंचदशोऽध्यायः २५

छब्बीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले किहेमुनेतबशत्रुघ्नजीने प्रचण्ड चतुरं-
गदल सन्मुख देखा, तब मंत्रिराज सुमन्त जीसे बोले
हे मंत्रिन् यह सैन्य संमुख किसकीहै और यहि समय
पर बाजिराज कहांहै यह जो जलधिके समान सैन्य स-
मरके साज साजे आतीहै सो इसका नाम ग्राम कहो
जेहिसे मेरा संदेह दूरहो ,जो यह १।२ शत्रु दलहो
तोमैं उपाय करूं अर्थात् शीघ्रता पूर्वक निजदल पठवों
जिसमें परास्त करैं ३ यह सुनिकै सुमन्तबोले हेराजन्
यहचक्रांकितनामनगरहै इसमेंजेनरनारिहैं सबअंकितहैं
यहांसेचक्रांकितनामहै जेयहिके बासीहैं ते सब हरिपद

के अधिकारीहैं अर्थात् निष्पाप होकर बिष्णु की भक्ति करतेहैं औरइसीका सुबाहुनाम राजा बेदस्मृति पथमें निपुणतुम्हारेसन्मुख समरकेअर्थजाताहै४।७ अरुसुबाहु राजस्वप्नमेंभी परतिय रत नहींहै, औ निजस्त्री मेंभी ऋतुके अनन्तर नहीं जाता ८अरु हरि यशके सिवाय अन्यकायशनहीं सुनताहै व बेदानुसार कर्मकरताहै व श्री बिष्णु भगवान् की सेवा सदैवकरता है व प्रजासे षष्ठमांश लेताहै और किसी अन्यमेंमननहीं देताहै अरु नित्य प्रेमयुक्त श्रीहरिकेभक्तोंमें प्रेमरखकेहरिका ध्यान करताहै जैसे भ्रमरका ध्यान कमलमें रहताहै,औ क्षत्रि धर्ममें निपुण उसीमें रतहै, दूसरा धर्म्म नहीं जान ताहै, यह दल उसीकाहै किसी दूसरेकानहीं ६ ।११ अपने पुत्रको मूर्च्छित सुनिकै रणधीर संग्रामकेअर्थआ- याहै देखौ चतुरंगिणी सेना साजे रोषशोकसे सबब्या- कुलभाई पुत्र कलत्र बीरों सहित तुम्हारे जीतिबे अर्थ आ याहै १२ इस कारण आप अपने कटक से रणधीरबी- र पठाओ शत्रुके जीतने अर्थ प्रथमतो महा बलवान् लक्ष्मीनिधि को व रिपुके तप्त करने वाले रिपुताप व पुष्कर व नील रत्न व उग्रासु अरि मर्दन ये सब रण- धीर क्रौंच ब्यूहकाभेद बिधि पूर्वक जानतेहैं, मंत्रिराजके यह बचन सुनिकै शत्रुघ्नजी बीरोंको बुलाते भये १३। १४ तदनन्तर तिनको निकट देख बोले हे बीरो मेरी आज्ञा श्रवण करौ कि सुबाहुराजापुत्र शोकै किये रणमें क्रोधित होकर क्रौंच ब्यूह रचे संग्रामके अर्थ खड़ाहै,जो

अपने बलसे जीत सकै उसीकीआज कीर्तिबिजय बिभू-
तिहै, सो अस्त्र शस्त्र धारण कर निडर ह्वैकै हर्षितहो
मेरे हाथसे बीराले ऐसा कौन रणधीरहै यह सुनिकै
राजालक्ष्मीनिधि हर्षितहो ब्यूहके संहारबे अर्थ आयुध
सजिकै निकट जाय बन्दना करके बीरा को लेते
भये १५।१७ शेषजी बोले हे मुने राजा लक्ष्मीनिधिने
पूर्बमें ब्यूह भेद बिद्या परशुरामजीसे पायीथी १८ सो
बीर वीरा लैकर सेन साजि शीघ्रता पूर्बक गमन किया
तिनके पीछे पृष्ठ रक्षामें पुष्कर महा कोपकरके फिरि
रिपुताप, नीलरत्न, उग्रासु, अरि मर्दन आदि रणधीर
राजा शत्रुघ्न की आज्ञा पाय अपनी२सेन साजि महा-
क्रोध करके प्रस्थान किया अरु सबकी रक्षा अर्थ पृष्ठ
भागमें रामानुज शत्रुघ्नजी उत्तम रथमें आरूढ़ महा-
क्रोधसे पूरितचले १६।२१ ब्यासजी बोले हे सूत जब
दोनों सैन्य दोनों ओरसेचलींतब मानों प्रलयकालके मेघ
बोरनेको आतेहैं व जलनिधिकोलहरैंसी उठने लगीं२२
अरु गो मुख भेरीबिपुल शंखआदि जुझाऊ बाजादोनों
ओर बाजनेलगे वघोड़ाहींसने लगे व द्विरदमत्त गर्जने
लगे रथ समूहकहांतक कहूंकइनेसे रसना थकित होती
है अर्थात् अपार रथहैं तब दोनों ओरसे सुभट गर्जि
तर्जिकै भिरने लगे मानों भिरतेही जगत्को नाश कर-
देंगे औक्रौंच ब्यूहके मुख पर सुकेत नामरणधीर ठाढ़े
गर्जतेहैं तिनके समीपजाय लक्ष्मीनिधि गम्भीर बचन
बोले २३।२६ हे राजन् मुझको राजा जनक का पुत्र

लक्ष्मीनिधि नाम रण बिशारद महा सुभट गुनौ अर्थात् सूचित करौ २७ अरु रावणादिकेमद नाशन हारे रघुकुलके सुखदायक श्री रामचन्द्र तिनका यज्ञ तुरंग शीघ्र दैकरशत्रुघ्नजीके चरणोंमेंशिरधरौ नहींतो आजतुमको यमलोक को प्राप्त करके तुम्हारे कुलकोशोकितकरूंगा२७।२८ यह सुन महाक्रोध करकेशीघ्रतापूर्बक धनुष टंकारके अनेकन बाण लक्ष्मीनिधि पर चलाये मानों मेघ बरसेहैं ते बाण रणभूमि दिशा बिदिशा आकाशमें छाइगये तिनसे सब बीर घबड़ाने लगे तब लक्ष्मीनिधिने कटकको ब्याकुल देख कोदण्ड,श्रवण पर्य्यन्त चढ़ाइ कै तीक्षण बाण छोड़ शर पंजरतोड़ डाला अरु कराल बाण सुकेतके हृदयमें मारे तबश्रोणित भरे बाण हृदयसे पारहोगये तब सुकेतने वे बाणसहिकै कोपसेकठिन बीस बाणमारे, तेबाण सहिकै लक्ष्मी निधि भी महा घोर बाण मारतेभये यहिप्रकार दोनोंबीर परस्पर दोनों ओर देखिकै मारतेभये अरु दोनोंके शरीर क्षीण होरहेथे व रुधिर बहताथा तथापि कुछपीड़ा न मानतेथे अरु दोनों बीर रुधिर श्रवत रणमें कैसे शोभित होतेथे मानों बसन्त ऋतुके पलास फूलेहैं २९।३४ दोनों बीर शिरोमणि प्रचारि २कै अर्थात् कहि २कै बाणछोंड़तेथे,दोनों बीरोंके धनुष मानोमेघहैं जिनसे पावस ऋतुके समान अमित जलरूप बाण बर्षतेहैं अरु बीरन के शीश कुंडल मुकुट सहित पृथ्वीमें छागये औधनुष बाण युक्त अनेकन रुण्ड पृथ्वीमें लोटतेहैं औहाथी,घोड़ा, रथ

दोनों ओरके खण्डित भये अरु दोनोंबीर महा क्रोधकर के महास्त्र मारने लगे हे बात्स्यायन तेहिसमय विषे समयुद्ध होताभया जेहिसे देवतादिक बिस्मितहुये अनेकन बीर शरपंजर से देखतेईनहीं ३५। ४० तेहिसमय बिषे सुरशिरोमणि जनक पुत्र आठबाण प्रहार किये जिसमें चारसे तो चारों घोड़े व एकसे ध्वजा पताका व एकसे सारथी व एकसे धनुष खण्डनकर एकबाण राजा को मारकरके पृथ्वीमें गिरादिया तब सुकेतुने यह बिक्रम देख बिस्मय होकर खिसिआइ कै रथमें नचढ़े व महाकोप करके गरुईगदा लैकैचले तब जनक पुत्रने गदासमेत राजाको आतेदेख आपभी रथ छोंड़के शीघ्रता पूर्वक गदालैकै निकट आय सब धातुओं से विरचित गरुई गदा बज्र समान सुकेतुके हृदयमें प्रहारकिया सो प्रहार लगतेही महाबलीने कुछ शंका न की जैसे उन्मत्त हाथी बालक के मारनेसे पीड़ित नहींहोता ४१। ४६ तब राज बन्धु सुकेतु लक्ष्मीनिधि से बोलते भये कि हे बीर तुम भी रणधीर कहाते हौ अब मेरी एक प्रहार अंगीकार करौ ५० यह कहि कै गरुई वज्रवत् गदा शीघ्रता से लिलाट में मारी प्रहारसे मग्न होगये व रुधिर बहने लगा तब लक्ष्मी निधि ने काल समान गदा शीश मेंमारी फिरि राजाने कन्धपर प्रहार किया यहिप्रकार दोनों बीर अपना २ बलोऽच्चारण करके बिजयकेअर्थ धर्म्मयुद्ध करतेथे फिर इधर उधर देखिकै घातपाय गदामारतेथे परन्तु कोई वीर हारिजीतिन मानतेथे शिरलिलाट, हृदय

भुजाओंसे रुधिरबहताथा तब लक्ष्मीनिधिने क्रोधकरके एक गदा हृदयमें मरी तब प्रहार सहिकै सुकेतुने शत्रुको सन्मुखदेख कराल गदाप्रहार मस्तक में कियातब लक्ष्मीनिधिने वही गदालेकर फिर हृदयमें मारी५ १।५८ तब सुकेतुने अपना को गदा बिहीन देखिकै लज्जित हो महाक्रोध करके बाहुयुद्ध अर्थात् मल्ल युद्ध को भिरा५६। ६० तब लक्ष्मीनिधि ने एक मुष्टिक अर्थात् वज्रसमान घूंसामारा फिरि सुकेतुने भी एक मुष्टिकमारा यहिप्रकार दोनों बीर परस्पर वज्रसमान मुष्टिघात करतेथे अरु बारम्बार तालठोंकि दपटि झपटि कै भिरतेथे अरु रदसोंरद नखसों नख करसों कर अरु केशपकड़िकै नखोंसे बिदारतेथे हे वात्स्यायन यहि भांति रणमंडल में दोनों बीरअपने २ बिजयहित क्रोध करकेलड़तेथेऔरतुमुलरोम हर्षण युद्ध देवता गणआकाशसे देखतेथे६१।६३ तब राज बन्धु सुकेतुने लक्ष्मीनिधि के भुजा पकड़कै कईबार भ्रमाइ कै पटकदिया, तदनन्तर शीघ्रता पूर्वक जनक पुत्र उठिकै औ प्रचारिकै दोनों बाहु पकड़ लिया औ क्रोधसे अपना सप्तगुण भ्रमाइकै हाथियों के ऊपर फेंकदेताभया उससे सुकेतुक्षणमात्र मूर्च्छितहोगये फिर सचेत होकर अत्यन्त क्रोधसे शीघ्रतासेनिकटजायलक्ष्मीनिधि को पकड़ भ्रमाते हुये आकाश में लैजाकर पदसों पद उरसोंउर करसोंकर अर्थात् सर्वाङ्गसे भिरिकै मल्लयुद्धकरनेलगे यहि प्रकारपरस्पर दोनों बीरसंग्राम करके हारि जोति कोई नमानतेथे तब दोनों बीर थकित होकर

मूर्च्छित होकर पृथ्वीमें गिर पड़े तब दोनों कटकके बीर महाघोररण देखिकै दोनों बीरों से धन्य २ कहते भये ६४। ६६ इतिश्रीपद्म पुराणेपातालखण्डेशेषबात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायांलक्ष्मीनिधिसुकेतुगदायुद्ध वर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

शेषजी बोले हे बात्स्यायन चित्रांग बीर जो क्रौंच व्यूहका कंठथा, सोतिसने महाक्रोध करके शत्रुघ्नजीको सैन्यको ऐसा मथा अर्थात् व्याकुलकिया १ जैसेबिष्णु भगवान् ने बाराहरूप धारण करके समुद्रको मथकरके व्याकुल कियाथा वैसेही चित्रांगने शत्रुघ्नकी सैन्य को फिरि २कै मथा औ बार२ सिंहनादकरके क्रोधसे धनुष चढ़ाय कोटिन महाकठिन बाण सब ओरसे सैन्य को मारे२।३ तबबीर समूह खण्ड २होगये व अनेकन हय गज,रथ पृथ्वीमें लोटने लगे अरु बीरों के शीश कुण्डल मुकुट समेत रुधिरयुक्त अत्यन्त छबिदेतेथे, यहदारुण संग्राम देखिके पुष्कल मणिमय रुचिर शत्रुमदहारी को दण्ड चढ़ाये सिंहनाद करते हुये चित्रांगके समीप आये ४।५ दोनोंबीर समस्वरूप धनुष बाणधरे व कटिमेंतूणीर कसे ऐसेशोभितहोतेथे जैसेपूर्बमें शम्भुपुत्र स्वामिकर्तिकवतारक शोभित हुयेथे तब शीघ्रता पूर्बक भरतपुत्र शर छोंड़े तबसुबाहु पुत्रने भीबाणमारे दोनों बीरोंनेबाणोंसे दिशा बिदिशा छायदीं तबपुष्कर क्रोधा

तुरहवैकै महा कठोर बाणमारा तिसको आते देखरा-
जपुत्रने क्षणमात्र में तीक्ष्ण बाणसे तिलसमान करडा-
ला अरु सर्पवत् बहुत बाण हृदय में मारे ६।८ तब
भरत पुत्रने क्रुद्धित होकर रथ भ्राम्यक बाणमारा उस
के लगतेही रथ सहित चित्रांग पृथ्वीसे आकाशमें घूम-
नेलगा, दो घरीयह कौतुक आकाश मेंहुवा, बहुतयत्न
करके रथ पृथ्वीमें उतारा परन्तु स्थिर तबभी नरहता
था तथापि सावधानी से सन्मुखआय बोला, हेरणधीर
पुष्कल धन्यहौ तुमने साधुकर्म्म कियासब बीर तुमको
रण मण्डल में प्रशंसतेहैं जो तुमने मेरारथ उड़ादिया
अब सचेतहोकर मेराभी बिक्रम देखौ ६। १४ अबतुम
सहित रथके आकाशको देवता तुम्हारी पूजा करैंगे
उससे मनके फलपाओगे, यहकहिकै प्रचण्ड भ्राम्यक
बाण छोंड़ा, मंत्रसे प्रेरित बाणके लगतेही स्यन्दन स-
हित पुष्कल उड़गये, सारथी अश्वन सहित चंग समान
गगनमें घूमने लगे, तब महाकष्टकर के रथस्थिर किया
तवतक चित्रांगने दूसरा बाण मारा उससे फिर भ्रमने
लगा किसी तरहसे स्थिर नहुवा यह पुत्रका अद्भुत
बिक्रम देखिकै राजा सुबाहु बिस्मित हुये, हेवात्स्यायन
तेहि समय बहुत यत्न करके पुष्कलने रथ आकाशसे
उतार स्थिर किया अरु कठिन बाण प्रहार करके
चित्रांगके घोड़े रथ सारथी भंग किया १५।२० तब
शीघ्रतासे दूसरे रथमें आरूढ़ हुवा, क्षणमात्रमें उसी
प्रकार वहभी भंग किया, यहि प्रकार दश रथ निमिष

मात्रमें रणधीर पुष्कलने तिलसमान करडाले, तब औररथमेंबैठिकैगर्जते हुयेसन्मुखआय पांचबाणमारेतबवे बाणलगतेहीभरतपुत्र केहृदयमेंदारुणपीड़ाउत्पन्नहुईउस सेऔरभीक्रोधाग्निप्रज्वलितहुई२१।२५ तबधनुषचढ़ाइ दशबाण मारे उनसेभेदितहोकर राजपुत्र गिरपड़ा, जैसे मिथ्याबादीपितृनरकमेंपड़तेहैं तबराजपुत्र सम्हरिकैपांच बाणचापमेंधरेश्रवणपर्य्यन्त तानिकै हृदयमें मारे वेबाण पुष्कलकेपारहोगयेतबबीरशिरोमणिपुष्कलप्रहारसहिकै दारुण क्रोध किया व एक प्रलयाग्निकेसमान बाणहाथ में लिया औ धनुषमेंधरिकै प्रणकिया कि हेराजपुत्र मेरा प्रण श्रवण करौ यहि बाणसे तुम्हारा बध करूंगा तुम सजग होजाओ तुमभी सुभट कहातेहौ इस बाणसे जो न मारसकौं तौ दूषण सुनौ, जो पतिव्रता बर नारी अपने पतिकी आज्ञाकारी को जे दूषणदेतेहैं उनकीगति मुझको प्राप्तहो जो तुमको इस बाणसे न बध करूं २६।३२ यहसुन राजपुत्र बिहंसिकै बोला तुम बीरशिरोमणिहौमैं तुम्हारा बिक्रम जानताहूं व तुम्हारा प्रण सुनिकै कुछ भय नहीं करताहूं देखो सुर, नर, मुनि, जड़, जंगम जहां तक बिधिकी कीर्ति है सब कालके बश्यहैं यह स्मरण करके मेरे मनमें खेद नहीं होता, अवश्य तुम्हाराप्रण सत्य होगा तथापि मेराभी प्रण सुनो, जो यहबाण अभी मैं खण्डननकरसकूंतो जो पुरुष तीर्थयात्रीको रोंकतेहैं उनका पातक मुझको प्राप्तहो व जो नर एकादशी तेपरे दूसरा ब्रत जानतेहैं उनकेभी प्रायश्चित्तका गामी होऊं

जो तुम्हारा बाण खंडननकर सकूं,यह बचन कहिकै चुप होरहा ३३।३८तब पुष्कलने अनुमान करकेश्रीमहाराज रामचन्द्रजीका ध्यानकिया कि हे रघुकुलमणि प्रणत-पाल,नील कमलके समान शोभित अंग,रोम२में कोटिन मनोज मोहित होतेहैं,अरुसदैव प्रणत जनके मन राखन हारे तिनके जो कमल स्वरूपी चरण मैंने कपट त्यागि कै सेवन कियेहैं तो रण मण्डलमें वेई मेरा प्रण अवश्य सत्य करेंगे, अरुजो मैंने निजस्त्री के सिवाय आनस्त्री स्वप्नमें भी न देखी होगी तो अवश्यप्रणसत्य होगा यह प्रतीति हृदयमें ठहराय प्रलयकालके अग्नि समानबाण प्रहार किया तब सुबाहुपुत्रने आतेदेख शीघ्रता पूर्वक अग्नि समान बाण छोड़ा तब दोनों बाण आकाशमें भिड़गये तिनकी कला देखदेवताओंने आश्चर्य किया ३६।४३ तब राज पुत्रके प्रचण्ड बाणने पुष्कलके बाण को खण्डनकरदिया तबहाहाकारशब्द हुआ तबपुष्कल का खण्डहुआअर्द्धबाणकाल रूपसेजाकर चित्रांगकाशिर धड़ते भिन्नकरदिया तबपृथ्वीमें पछाड़ खाकर गिरपड़ा, जैसे फूलाहुआकमलनिर्मूलहोनेसे गिरपड़ताहै तेहिसमय निजस्वामीकोमृतकदेखहाहाशब्दपुकारतेसबसैन्य भाग चली,अरु राजपुत्रका शीश कुंडलमुकुटयुक्त पृथ्वीमें चन्द्र बिम्बकीभांतिशोभितहोरहाथा,अरुभरतपुत्रशत्रुकोमृतक देखकरालकोपकरकेसेनाकीथाह लेताभया ४४।४८इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्व मेधभाषायांचित्रांगवधोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हेवात्स्यायन तेहिसमय राजासुबाहु ने सुतबध सुन हृदयमें अत्यन्त दुःख करके निकट आय करुणा पूर्वक रोदनकरनेलगा औबार२सुतकेगुणस्मरण करदोनोंहाथोंसेशिरधुनताथा वथर२सबअंगकांपताथा, व दोनों आंखोंसे जल धार बहरहीथी २तब चन्द्र बिम्ब समानकुंडल मुकुटयुक्त रुधिरसे भरा पुत्रका शीश मोह से हृदयमें लगाताथा ३ तब राजाने चढ़ी भौंह व दांतों से ओठदाबे अर्थात् क्रोधसे पूरित देखिकै अधीर होकर महा मोहकरके बिलाप किया व बारम्बार मुख चूमता हुआ बोला हा शूरशिरोमणि मेरी आज्ञाके पालनीय यहिसमय क्योंनहीं धनुषबाण लेकर उठतेहौ कि श्रमित होकर मेरे वचनही नहीं सुनतेहौ या शत्रुशरों से हृदय बिदीर्ण होगया है उससे नहीं बोल सक्तेहौ हे तात मुझको क्यों नहीं मधुर कहिकै धैर्य देतेहौ४। ५ हमको मतिमन्द पापरूप हतभाग्य जानिकै क्योंनहीं प्रथमकी भांति मधुर बचन कहतेहौ हेपुत्र निद्रा त्यागकरके शत्रुघ्न का कनकपत्र शिरमें युक्त व नानाप्रकारके आभूषणोंसे भूषित बाजिराज पकरौ,मैं तुम्हारे विना नहीं पकड़सक्ता यहिसे शीघ्रउठौ, देखो तुम्हारे सन्मुख अभिमानी पुष्कल रणधीर चापमें शायकधरे खड़ाहैसो तीव्र बाणोंसे इसको समरमें जीतौ अरु यहि समय तुम्हारी सैन्यव्याकुल होकररणसे भगीजातीहै तुम्हारे

सिवाय कुछ अवलम्ब नहींहै यहबिचारिउठौ अरु हेपुत्र तुम्हारेबिना मैं कैसे शत्रु से जीतौंगा जब रिपुसूदन कोपकरिकै कठिनबाण छोड़ैंगे तब तुम्हारेबिना कौन हमारी रक्षा करैगा हापुत्र निद्रा त्यागिकै मुझको क्यों नहीं देखते हौ, व धनुष धारण करते हौ ७। १२ यहिप्रकार राजा महा बिलाप करके पुत्रशोकसे अत्यन्त दुःखित होगया १३ तबतक राजाके दोपुत्र दमन बिचित्र महाबलवान् पिताको दुःखी जानि, रथ हांकि समीप आये तब चरणोंमें शिरनाय समयानुसार दमन बोला, महाराज अभी मेराजीवनहै आप क्योंदुःखकरते हौ अरु चित्रांगका मोह करना सबप्रकारसे अनुचित है, अर्थात् जे उत्तम क्षत्रीहैं ते रणबधको शुभजानिकै इसकी याचना करतेहैं, औ सुभटमणि चित्रांग धन्यहै जिसने रणमें मृत्युपायी औ कुण्डल मुकुट युक्त अधर चापे तुम्हारेकरमें शोभित होताहै औ जेहिका यश व शाका सुभट समूहमें मचरहीहै यह अनुमान करके मोह को त्याग करिकै धीर्य्यधरौ अरु जेहि बिधिसे शत्रु जीता जाय वह बिचार करौ वसमयको देखिकै कठिन संग्राम करौ १४।१६ अरु मैं शत्रुघ्नकी सैन्यको अवश्य करके अनाथ करूंगा, अरु जो यह अनुज प्रहारी पुष्कल धनुष बाण लिये सन्मुख गर्ज रहाहै सो इसका शिर मुकुट युक्त अभी रणमें गिरादूंगा तुम बिषाद त्यागिकै समरके अर्थ उत्तम बिचार करौ अरुमुझको आज्ञादीजिये मैं दलको परास्त करौं १७।१८ तब वीररस की पुत्रसे

बाणी सुन राजाने शोक त्यागकिया अरु समरके क्रोध करकेसैन्यसाजिकैअमित जुझाऊबाजाबजवाताभया२० अनेकनबीर क्रोधसे पूरित साज बाजसे समरमें जाय धर्म्म युद्धकरने लगे अरु राजा रिपुताप व दमन दोनों रणधीर भिड़े अरु नीलरत्न व बिचित्र भिरिकै परस्पर घोर युद्ध करने लगे तब राजा सुबाहु महा क्रोध करके धनुष बाण धारणकर शत्रुघ्न जीके सन्मुख चला जहां कोटिन भटन युक्त शत्रुघ्नजी विद्यमान्थे सो सबका निरादर करके पुत्रबैर सम्हारि शत्रुघ्नजीके समीप निडर होकर गर्जता हुआ, चला, हे सूत वहां शत्रुघ्नजीके समीप तेहिसमय मारुतनन्दनबलबुद्धि निधान हनुमान् जीथे तिन महाबीरने सुबाहुको रोषित आते देख महा-क्रोध करके मेघनाद किया अर्थात् अट्टाट्टहास किया व मारे क्रोधके नेत्र अरुण होगये तब कट कटायकेभयभीत स्वरूपसे राजाके सम्मुख गये अरु बिकट लंगूर अर्थात् पूंछ शिरपर कैसी शोभित होतीथी जैसे शिवजीकेमस्त-कं पर सर्प शोभायमान होतेहैं २१। २६ तब राजाने मारुतनन्दनको निकटदेख सरोष हंसिकै बोला हेबानर यहां प्राणदेने क्यों आयाहै शीघ्र भागिकै प्राणोंकी रक्षा कर अरु यहकह कि मेरे पुत्रका मारनेवाला समरको त्याग कहांगया तेहिका मैं मुकुट समेत शीश अभी खंडन करूं औ तेराबलवान् शत्रुघ्न कहांहै वरामचन्द्र कहांहै कहु तिनको भय कुछनहींहै फिर अलपभटक्याहैं २७।२८ मैं अब सबका काल आयाहूं सब को कराल

बाणोंसे परास्त करूंगा यहसुन मारुत नन्दन हनुमान् जी गम्भीरबाणी राजासे बोले हेमूढ़ रिपुनाशक लवणा सुरनाशक यहि कटक बिषे विद्यमानहैं ३० अरु त्रैलोक्याधिपति श्रीरामचन्द्र जिन का यश श्रुति पुराण गातेहैं व उनका प्रताप खल तैंने अभीतक नहींसुना, मैं उनका सेवक अभी तुझको सदल जीते लेताहूं, तौ वे पुरुषोत्तम युद्धको क्यों आवैं तथापि जो हमसे जीतियो तौ उनसे करियो ३१ हनुमान्जीके गर्बित बचन सुन सरोष ह्वैकै महाकराल दशबाण शीघ्रतापूर्वक राजाने मारे हनुमान्जीने आतेदेख पकड़कर खंड करडाले औ फिर सिंहनादकरिकै हनुमान्जी निकटजाय शीघ्रता पूर्वक रथसहित राजाको लंगूरमें लपेट आकाशको लैगये व महाबलीने बड़ा कौतुक किया तब राजाने कठिन बाण पूंछमें मारे दारुण बाण लगनेसे तबअकुलायकै कपिराजने रथ छोंड़दिया गिरते गिरते राजाने अमित बाण मारे हनुमान्जीने सबचूर्ण करडाले तब राजाके सर्वाङ्गमें रुधिर धार बहने लगी उससे औरभी क्रोध उत्पन्न हुआ ३२।३८ तब हनुमान्जी आकाश से उतर राजाका रथ भंगकिया तब राजा शीघ्रता पूर्वक द्वितीय में सवारहोकर सन्मुख आय धनुष चढ़ाय मुख, हृदय, चरण पूंछ अर्थात् हनुमान्जीके सर्वाङ्गमें तीक्ष्णबाणमारे तब मारुतनन्दनने कोपकरके एक बज्रवत् लातमारी उससे रथ छोंड़ पछारखाय अचेत होकर राजा पृथ्वीमें गिरपड़े व मुखसे रुधिर बहने लगा

वचन बन्द होगया सब अस्त्र शस्त्र गिरपड़ेतब राजाको इस दशामें देख हनुमान्जीने अनाथकीतरह रथ,गज तुरंग मारेलातोंके चूर्ण करदिये ३६ ।४४ वहां राज-बन्धु सुकेतु व लक्ष्मीनिधि दोनोंबीर मूर्च्छात्यागि फिर दारुण संग्राम करने लगे अरु यहां राजासुबाहुको मूर्च्छित देख सेना भागचली तेहिपरपुष्कलनेशर जाल रचिकै औरभी ब्याकुलकिया तब राजपुत्र दमनने अपनी सैन्य परास्त देख बहुत उपायकरके रोंका जाय४५।४७ अरु राजा सुबाहुने मूर्च्छामें अद्भुत स्वप्न देखा अर्थात् पावन अवधपुरी सुबर्ण मणिमयसे प्रकाशितदेखी तहां सरयूकेनिकट नानाप्रकारके मणिमंडप देखे उनमें यज्ञ कुण्ड तिहकेसमीप रघुकुलमणि शोभितथे जिनकी शोभा क्या बर्णन होसके छबिनिधि जिनका रूप देखते कोटिन मनोज लज्जितहोतेथे, अलसीके पुष्पसमान शरीर शोभित कमल रूपीचरण सुखदायक देखे जिनकी रजबिषे भक्तोंकामन लगा रहताहै जैसे भ्रमरका ध्यानकमलमें रहताहै अरु बामभागमें सुबर्णकी सीता बिराजमानथीं व चारोंओर मुनिवृन्द शोभायमानहोतेथे अरु शंभु ब्रह्मा इन्द्रादि देवता करजोरे बिनय करतेहैं, यहि प्रकार लोकर के स्वामी जिनके सब देवता कर-जोरे अस्तुति करतेथे अरु नारदादि मुनि बीणा बजाय प्रभुका यश गाय रिझातेथे औ स्वरूप धारे श्रुति स्मृति यश गाते देखेव सब कला युक्त गन्धर्व कपटत्यागि गान करतेथे मयना रम्भादिक अप्सरा नृत्य करतीथीं सकल

पदार्थ दायक श्रीरामचन्द्र विद्यमान देखे ४८। ५३ औ मृग शृङ्ग हाथ में धरेथे यहि प्रकार मनोहर स्वप्न देख आश्चर्य्य किया तब उठिकै सचेत होकर हर्षसे कहने लगे मैंने क्यादेखा,हे वात्स्यायन विप्र शापसेराजा का ज्ञान भूल रहाथा सो हनुमान्‌जीका चरण लगतेही शाप दूरहुआ तब रघुनाथ जी के स्वरूप का अनुराग उत्पन्न हुआ तबसमरत्याग बहुत बीर संगलैकै प्रभुका ध्यान करि शत्रुघ्नजी को स्वामी जान प्रणतकी भांति पाहि २ अर्थात् रक्षाकरो २ यह कहते चले, फिर अपने भाईसुकेतु, व पुत्रदमन बिचित्र के निकट आय संग्राम बन्द कराया अरु धर्म युक्त बचन कहे हेभाई व पुत्रो वैर भाव त्याग परमतत्त्व बचन सुनौ कि श्रीरामचन्द्र जीका यज्ञतुरंग साजि लावो काहेसे कि ये रघु कुल मणि, अखिल लोक पति, पूर्णब्रह्म, चराचर स्वामी,सकल लोक पति व अन्तर्य्यामी, कारण करण जिनका यश वेदगातेहैं जिन्हों ने अपनीइच्छासे भक्तोंके हितार्थ अवतार लियाहै यहपरम ज्ञानमैंस्वप्नमें पायकै सुखीभयों ५४। ६० अरु मुझको पूर्बमें असतांग मुनि जीने शापदियाथा तबसे में ज्ञानबिस्मरण होगया अब वही ज्ञान कपिराजके प्रभावसे प्राप्तभया सो शापका कारण वर्णन करताहूं सब जन प्रमुदित श्रवण करो, मैं एकबार ज्ञान प्राप्तिके अर्थ तीर्थगमन किया तहां एक अकेला सबसे बाहर अर्थात् भिन्नआश्रम देखा प्रमुदित सब जीवविचरतेथे उसमेंधर्म्मनिपुण असतांगमुनि बास

करतेथे मैं तेहि आश्रम में जाय चरणोंकी बन्दना करके हाथजोड़ बोला हे मुनिराज परम तत्त्व बर्णनकरौ तब कृपालुचित्त मुनि उदारबचन बोले कि अवध नाथदश-रथनंदन श्रीरामचन्द्र परब्रह्महैं अरु उनकी शक्तिजनक कुमारी त्रैलोक्यके पालन करनेवाली लक्ष्मी हैं तिनते परे द्वितीयईश नहींहै मैं क्या बेद स्मृति यहीकहते हैं जिनके चरणकमलोंमें मुनियों कामन भ्रमरकी भांति रमा करताहै अरु योगीजन अनेक यत्नसे हृदयमें उनकाध्यान करतेहैं सबप्रकारके भवसिन्धु को गोपदके समान पारकरते हैं अरु उनहींके नाम मात्रके लियेसे दुष्टजन परमधाम पातेहैं औ पंडितजन सदैव मुदित होकर उनकाभजन करते हैं हेराजन् महामोहको दूर करके तिनके चरणोंको तुमभी भजनकरौ, महाघोर पातक के नाश करने वाले रघुनाथजीहैं तिनकी शरण होओ सब भवभीर दूरकरेंगे औ तिनतेपरे अन्यतत्त्व नहींहै यह शिव,ब्रह्मा,बेद, पुराण कहतेहैं किमहापाप-हारी गरुड़ध्वजहैं ६१। ६५ तबमैंने मोहबशसे मुनि-राज केबचन कल्पित मानिकै उपहास किया कि यह कौनतत्त्व प्रकाशकरतेहौ केवल मनुष्य राजपुत्रतिनको आपपरम तत्त्व कहतेहौ, व जोहर्षशोकके बश होगई उसको परम शक्ति निर्णय कियो अरु अलख अभेद निरङ्कार सो कैसे मनुजरूपसे अवधेश भये ६६। ६७ अरुजो निरङ्कारअरूपहै सोकैसे पृथ्वीतलमें चरित्र कर-ताहै, यहबिचारि हे मुनिनायक जोजन्म,मरण,क्लेशोंसे

रहित निर्विकारहै उस तत्त्वको मोहादि त्याग करके वर्णनकरो, तबमुनिवर बोले हेराजन् अबमैं कहताहूंसो श्रवणकर कि पूर्वमें रघुनाथजी अश्वमेध यज्ञ करेंगे उनके अश्वमेधका बाजिराज तुम्हारे नगरमें आयेगा तबतुम्हारेपुत्रपकड़कर महासंग्राम तुम्हारे सहितकरैं गे ६८।७२तबरणबिषे रामभक्त हनुमानजी तुम्हारेहृद-यमें चरणप्रहार अर्थात् एक लातमारैंगे तब तुमको शुद्ध तत्त्व मय मन भावन ज्ञानउत्पन्नहोगा, तबवेसच्चि दानन्द आनन्दकन्द समदरशी तुमकोभक्तजान दर्शन देंगेतबयज्ञतुरंग, धन, मणि, बसनराजसहितशत्रुघ्नजीको भेटियो फिर उन्हींके साथ जायकै श्यामलगात अवलो कन करके कृतार्थ होगे, यहिप्रकार असतांगमुनि मुझ से पूर्व समय में समझायाथा, सो अबसाक्षात् देखपड़ा ताते अबशीघ्र जाकर बाजिराज साजिकैलाओ ७३।७५ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषबात्स्यायनसम्बादेरा-माश्वमेधभाषायांशत्रुघ्नविजयोनामष्टबिंशोऽध्यायः२८॥

उन्तीसवां अध्याय

श्रीशेषजी बोले हेबात्स्यायनतबदोनों राजपुत्रदमन व बिचित्र पिताको श्रीरामपदमें लीन देखिकै बोले हे तात तुम्हारे चरणोंके सिवायहम और कुछ नहीं जान-तेहैं व तुम्हारी आज्ञासदैव शिरमें राखि कियाचाहतेहैं १।२ अरु आप चन्दनादि से चर्चित रत्न मणियोंसे सुशोभित करके राज, कोष, धन, धाम युक्त बाजिराजको

दीजिये ३ अरु फिर मत्तहाथी रथ अनेकन दीजिये व अमितदास दासी व सब ऐश्वर्य्यराज्यसहित अर्पणकरौ व हम समेत समस्त परिवार को भी समर्पण करौ अरु आपहमसे क्यापूछतेहौ हम सब प्रकार से आज्ञाकारी हैं ४। ८ श्रीशेषजी बोले हेवात्स्यायन पुत्र के बचन सुनिकै राजारोम २ से आनन्दित होगये व फिर बोले हेपुत्रयत्न पूर्वक श्रीरामचन्द्रजीका बाजिराज सबसाजों से साजिकै व निज बस्तु सब लैकै शीघ्र आओ हे तात जब तुम आओगे तबमैं शत्रुघ्नजीसे भेंट करूंगा६।११ यह राजाके बचन सुनिकै दमन बिचित्र सुकेतु नगरको आय श्रीरामचन्द्र जीका मनोहर घोड़ा देखि कै अति आनन्द हुये व सब किंकरोंको आज्ञादीतिनने शीघ्रता पूर्वक सब कार्य्य किये-अर्थात् रथ, गज, बाजी, सबपदार्थ व दासदासी जेसंतत सेवामें निपुण मन दिये, यहिप्र कार सजिकै आज्ञादी किबाजिराजको लैचलो- यहसुन सेवकगण आनन्द पूर्वक रामचन्द्रजीके अश्वको दोनों ओर पाटडोर पकड़े हुये चले तिसपीछे हाथीघोड़े रथ चले व रणधीर बीर भी चले १२। १५ अरु घोड़ेके दोनों ओर द्वै चमर ढुरतेहैं व बहुत जन रामचन्द्र जीका घोड़ाजान धूपदीप आरती करते व सब शूरबीर चारों ओरसे प्रसन्नित चलेजातेथे१६ तब छबि मैंकामदेव के समान व वेगमें मनोजव रूप बाजिराज को राजा सुबाहुने निकट देखकर राजसी चिह्न त्या- ग करके सकुटुम्ब शत्रुघ्नजीके मिलनेको चले, व सब

पदार्थ प्रभुके अर्पणकरके मनमें सत्य धैर्य्य धरके चले तेहिसमय बिषे मार्गमें चमर छत्र ढुरतेहुये, व अनेकन रण धीरबीरों से सेवित, अरु धनुषधारण किये सुमन्त मंत्रीसे पूछते हुये १७। २१ सबप्रकारसे अभयबीरत्व भूषित गौर शरीर में कवच व उत्तमबस्त्र धारण किये, तिनके चारोंओर हनूमान, सुग्रीव, अंगद, आदि बड़े २ बीर सदल सगर्व खड़े, यहिप्रकार शत्रुघ्नजीको देख आनन्दित होकर पुत्रनसहित दीनको भांति चरणोंमें पड़े व अपने को सबप्रकार से धन्यमाना अरुप्रेम वश से गद्गद गिरा होगई २२। २५ तब राजाको दण्ड प्रणाम करतेदेख रिपु नाशक शत्रुघ्नजी सभायुत उठे व बरवशसे पकड़कर परमप्रीति से हृदयमें लगाय लिया तब सुबाहु हर्षसे सजल नैन करके बोले कि महाराज आजमैं आपके दर्शनों से सकलत्र धन्यहुआ अरुहे करुणाकर बिनाजानेपुत्रने घोड़ाबांधाथा, सोअपराध बालक जान क्षमा करिये २६। २८ अरु बालक नेश्रीरघुनाथ जीकाप्रभाव नहीं जाना, जो ब्रह्मादिकों के प्रभु, सम्पूर्ण जगत् के पालन, संहार, उत्पन्न करता उनसे हठकिया सोअब अपना अनुगामी जान क्षमा करौ २९। ३०, अरु यहजो मेराराज, कोष, धन, धाम, हय, गज, रथआदि सकलत्रसब श्रीरामचन्द्रहीजीको व उनका किङ्कर मुझको जानो ३१ व सब को सफलकरके मेरेको अभय दीजिये, अरु श्रीरामचन्द्रजी के चरण कमलमें भ्रमररूपीहनुमान्जोधन्यहैं ३२ जिन

महात्माका क्षणमात्र सत्संगकरके श्रीरामके दर्शनपाये व महामुनिका उग्रशाप दूरहुआ, क्योंनहो संसार में साधु समागम से सब पदार्थ प्राप्तहोतेहैं, अर्थात् जिन के प्रसादसे मैं महामूढ़ ब्रह्मशाप से मोक्षहुआ ३३ यह-सुनहनुमान् जी सकुचिकै राजाकोमिले तब राजासुबाहु बिह्वलदशासे नेत्रोंसेनीर बहताहुआबोले हेतातरघुनाथ जीके विहीनबहुतदिन व्यतीतकिये, ३४ अब हेअञ्जनी-नन्दन कौनभांति अयोध्याजीमें पुनीतसरयू के निकट दिव्य सुवर्ण मय मण्डपमें मुनिजन युक्त ३५ मनोहर गात श्रीरामचन्द्र जीको देखौं, अरु सदाशिवके ध्यानमें बसनेवाले चरण कबदेखिहौं वजिनचरणोंको स्पर्शकरके मुनिपत्नी उज्ज्वलहुई, तिनचरणोंको मैं कब सकुटुम्ब देखिकै निर्मल हूंगा ३६ फिर शक्रसुत जयन्त काक-रूपसेबाणको स्पर्श करके क्षणमात्रमें उसकेपातकक्षमा किया, अरुगीधआदि भक्तोंको मुक्तिदी, औकमलस्वरूपी मुखारबिन्द का अवलोकनकरके कोटिन जीव अशोकित अर्थात् शोक रहित होतेहैं अरु जेजन रघुनाथ जीका नामस्मरणकरतेहैं तेअविचलधाम अर्थात्स्वर्गको विन-प्रयास प्राप्तहोतेहैंअरु अयोध्याबासी धन्यहैं जो सदैव प्रभुके कमलवत्स्वरूपकारस अपनेअपने नेत्रन में पान कर के आनन्दपूर्बक निहालरहतेहैं, यहि प्रकार राजाने गद्गद कण्ठनेत्रोंसे जल बहताहुआ हनुमानजीसे कहा ३७। ३८ महा राज शत्रुघ्नजीने राजाके बिनीत बचन सुनकेबोले हेराजन् तुमतो वृद्ध हमारे पूजनीयहौ तुम

ऐसा नकहो, अरु राज्य, कोष सब पदार्थ श्रीरामचन्द्रजीकेहैं ४० इसमें संशय नहीं, अबजो मैं कहताहूं श्रवणकरौ कि राज्य तिलक तो दमन पुत्रको करौ व मेरी आज्ञाका प्रति पाल करौ, अरु क्षत्रिनकोतो यह धर्मही है रणमें कभी नम्र नहीं होते अरु तुम मेरे लिये रघुनाथजीके समान पूज्यहौ व तुमतो राम भक्त विज्ञानीहौ ऐसे बचनक्यौंनकहो, अब आपभी बाजिराज के रक्षणार्थ अपनी सेना सहित चलो ४१। ४४ यह महाराज के बचनसुन राजासुबाहु आनन्दित होकर नगरमें जाय दमनकोराज्यदेफिर रणमेंआयचित्रांग की करुणापूर्वक क्रिया की वसबोंने तिलांजुलि देकर क्षणमात्र राजाने शोक किया, फिर ज्ञान दृष्टि से शोकको त्यागकरके रघुनाथ जीके चरणोंकाध्यानलगाया ४५। ४७ तदनन्तर उत्तमरथमें आरूढ़होकर चतुरंगिणीसेनसाजि शत्रुघ्नजी के सन्मुख जाय बन्दनाकिया, महाराज शत्रुघ्नजीने सदल राजा सुबाहुको सन्मुखदेख चलनेकी इच्छा- करके बाजिराज छोड़नेकी आज्ञादी, तब बाजिराज के चलतेही सब सैन्यभी चली व महाराज शत्रुघ्नजी भी सुभट रणधीरों को साथलियेउत्तमरथमें आरूढ़ आनन्द पूर्वकचले, बाजिराज बिचरनेलगे अरुमहाराज रामचन्द्र जीके प्रबल प्रतापसे कोईघोड़ेको तो पकड़ही नसक्ताथा परन्तु मार्गमें अनेकन राजाधन, धाम, राज्य, कोष अर्पण करके शरणमें आये उनको शत्रुघ्नजी ने अभय किया, अरु कोई राजातो सब पदार्थों से भेंटतेथे अरु

कोई केवल बचनहीसे भेंटकरतेथे ४८। ५२ इतिश्री पद्मपुराणे पाताल खण्डे शेषबात्स्यायनसम्वादे रामाश्वमेध भाषायां सुबाहुराज परस्पर संयोगोनाम एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले कि हे बात्स्यायन तदनन्तर बाजिराज सुबर्ण पत्रयुक्त शोभित शीघ्रतापूर्बक तेजपुर नाम नगर में पहुंचे १ जहां सत्यवान् राजा धर्मसे प्रजाका पालन करताथा तब बाजिराजके जातेही राजाशत्रुघ्न जी भी २ नगरके समीप गये तहां उसरम्य अर्थात् मनोहर चित्र बिचित्रित देखा ३ अरु सब जीव अशोकी अर्थात् शोकरहित आनन्दसे बिचरतेथे व नगरमें चारों ओर कोटजिसमें चित्रित कंगूरा बिराजमान ४ तेहि के ऊपर कलशधरे, अरु नगरमें परम प्रकाशित देवभवनोंके समान अनेकन महलदेखे, अरु हे द्विजोत्तम उसमें अनेकन यतिनके मन्दिरथे५ तिनमें चक्रतिलकारि युक्त अनेकन यती बासकरतेथे, अरु अनेकन कल्पवृक्ष के समान बांछित दाता वृक्ष थे जिनमें हंस कारण्ड आदि पक्षी बैठके मनोहर शब्द बोलते थे अरु अनेकन सर, बापी, कूप, सुखदायकथे अरु अनेकन बेदपाठी ब्राह्मण अग्नि होत्रादि यज्ञ करते थे, जिन महात्माओंके धूमकलगतेही महापातक दूर होतेहैं, यह पुरकी रचना देखिकै आश्चर्य्यित शत्रुघ्नजी मंत्रि-

राजसे बोले ६ । ७ हेसुमन्त यह कौन नगरहै जहां छबिका समुदाय प्रकाशित होरहाहै, इसको देखके मेरा-चित्त अतीव प्रसन्न हुआ, अब आप बर्णन करिये किकौन राजा इसका रक्षकहै - सो सुनके मेरासंदेह दूरहो यह राजाका बचन सुन सुमन्त बर्णनकरनेलगे हेराजन् ८। ९ सुनो मैं अपनी बुद्ध्यानुसार कहताहूं, कि परम भक्त, जीवन्मुक्त, श्रीरघुनाथजीकेचरणोंका अनुरागी, ऐसासत्य-वान् राजा यहि पुरबिषे प्रतिपाल करताहै, अरु सब अंगों युक्त यज्ञ कर्म्म का ज्ञाताहै अरु अभिमानीनहींहै १० । ११ यहिका पिता रितुंभर नामराजा धर्म्ममें निपुण, गऊके प्रसादसे यहपुत्र पायाथा, सो हमने तुम को सुनाया १२ यह सुन शत्रुघ्नजीने सन्देह किया किहेमंत्रिन् राजारितुम्भर कौनथा, १३ अरु किसप्रकार गौका आराधन पूजन किया, फिर कैसे बिज्ञानी परम भागवत पुत्र पाया जिसको पुराण श्रुतिमेंभी दुर्लभ कहाहै, १४ हेतात अब समस्तकथाकथन करोक्योंकि सज्जनोंका सुयशसुननेसे अत्यन्त सुखप्राप्त होताहै व महापातक दूरहोतेहैं, यहिप्रकार अरिनाशनकी मनोहर बाणीसुन सुमन्तअत्यन्त हर्षितहोकर कहनेलगे १५ । १६ कि पूर्वमें राजा रितुम्भर उदार चित्तथे अरु बिपुल स्त्रिन युक्त राज्यकरतेथे परंतुपुत्रसे हीनथे, इस कारण कुछ न सुहाताथा अर्थात् पुत्राकांक्षाहीमें प्रवृत्त रहतेथे, दैवयोगसे एकसमयबिषे राजाके गृह जाबालि मुनिआतेभये, तब राजाने बिधिपूर्वक मुनिकी पूजन

किया, तदनन्तर शिरनाय दोनोंहाथ जोड़ बोले हेनाथ जेहि प्रकार मेरे पुत्रहोय वह उपायकहिये, हेधर्म्मधुरंधर मुझको दीन जानिकै तीर्थ, दान, यज्ञ, व्रत, नियम, जप अथवा कोईदेवजेहि आराधनसे पुत्रोत्पन्न हो वह उपाय निश्चय कर कहिये १७। २० राजाके ऐसे बिनीत बचन सुनसप्रीति जाबालिमुनि बोले हेराजन् पुत्रोत्पन्न के तीन उपायहैं एकतो बिष्णुभगवान् का आराधन, दूसरे सदाशिव जीका पूजन, तीसरेगौका पूजन इनप्रत्यक्ष देवोंकी कृपा से पुत्रवान् होतेहैं, अरु हेराजासबसे सुलभ यहहै कि तुम गौका आराधनकरौ क्योंकि बेदमें भी कहाहै कि सबदेवमयगौकातनुहै, जोपुरुष आनन्द पूर्वक गौकापूजनकरतेहैं, तिनसे देव पितृतृप्त रहतेहैं, अरुजेनरनारि सदैव नियमसे गौको पहले अन्नभोजन देतेहैं उसके प्रभावसे तिनके सब कार्य्यबिष्णुभगवान् पूर्णाकरतेहैं अरु जिनके घरमेंक्षुधिततृषितगौवरजस्वला कन्या रहतीहै उनके पुराकृत पुण्यनाशहोतेहैं, अरुजेनर बिष्णु भगवान्के सिवाय अन्यदेवोंकानिर्मायल अर्थात् चरणामृतपानकरतेहैं उनकोभीयहीदशाहोतीहै २१।२७ अरु जे नर गौको अपना या पराया तृण चरते हटकते हैं उनके पितृ करालपापको देख स्वर्गमें भी यमराज के भयसे कम्पित होतेहैं २८ अरु हेराजन् जे दुष्टजन धेनुको ताड़ना देतेहैं वेनरयमपुरीमें करबिहीन महादुःखपातेहैं, हे राजन् अब पुरातन इतिहास कथनकरतेहैं २९ जेहिप्रकार जन करके अशोकित हो स्वर्गको

जायें,सो प्रसंग कहतेहैं सुनो ३० राजाजनक बिदेह योग द्वारा शरीर त्यागकियो तबतक एकबिमान किंकिणी जालयुक्त आया तब निकट देख राजा परमपदके अर्थआरूढ़हुये ,तदनन्तर किङ्करोंने बिमानको चलाया, तब बिमान यमराजके स्थानके ऊपरआया तो विदेहकी छाया व वायुसे कोटिन जीवजो ब्याकुल होरहेथे वायु कास्पर्श करतेहो दारुण ब्यथा दूरकरके सुखीहुये ,तब सबोंने आकाश को देखातो द्युतिवान् बिमानदेखा देखतेही सबोंने नरकका दुःखजान दीनवत् होकर ३१।३३ बोले , हे सुकृती दयानिधि दुःखी देखिकै न जाओ हमलोग तुम्हारे शरीरकी मनोहर बायुही के लगने से महापातक दूरकरके सुखको प्राप्त हुये, तब धर्म्मात्मा जनकजीने उनको दुःखोदेख अत्यन्त दयाउत्पन्न करके विचार करनेलगे , कि जो इनको हमारे रहनेसे ताड़नदुःखनहो तौ मुझको यहांही स्वर्गहै ३४।३७ में यहीं रहूंगा,यह अनुमानकरके,बिमान सहित स्वर्गमार्ग से उतर नरक द्वारमें आ बैठे,तदनन्तर तेहि समयबिषे धर्मराज महारोषसे पापियों को दण्डदेने वास्ते आतेथे द्वारमें अत्यन्त दयायुक्त धर्मात्मा जनक जीको देख चकितहोकर बोले,हे धर्म्मात्मा सुजन हितकारक आप यहां क्योंपधारे ,यहतो दुराचारी ,दुष्कर्म्मी,पापियों के वास्ते है , ३८। ३९ तुमसरीखे पुण्यात्मा यहां प्रकाश नहीं करते,यह अनेकप्रकारके पातकियोंका दुःखदायक स्थल है ,अर्थात् जेनर अपनी धर्म्म निपुण से वारत

आज्ञाकी पालनीय स्त्रीको त्यागकरके परस्त्रीसे रतहोते हैं अरु जे लोभके वशहोकर मित्रकाधन हृदयसे प्रीति करके अर्थात् बिश्वासघात करकेलेतेहैं उन सबको मेरे सुभटइसस्थलबिषे नानाप्रकारके दण्डदेकर त्राशित करतेहैं४०।४१ जे सकलपापनाशक सुखप्रकाशकआनन्द कन्द श्रीरामचन्द्रजीका भजन नहीं करते उन्हींकी यह गतिहोतीहै अर्थात् जिनके दम्भ,बैर,उपहास,प्रमादही प्रियहै अरु श्रीरामको किसीप्रकार नहींभजते वेई क्रूर शठ नरक भोगतेहैं,४२ अरु जीवनके बिषे तबतकपापका समूहबसतहै जबतक वह रामनामकास्मरण नहींकरते ४३ अरु जे धर्मसे बिमुखपापकर्म्ममेरत तिनकोमेरेगण नरकभुगावतेहैं,अरु जो तुम्हारे समान धर्म्मात्माजीवहैं तिनको मेरेगण बिष्णुभगवान् के भक्तजान डराकरतेहैं अर्थात् उनकेसमीपही नहीं जासके ४४ हेमहाराजयह बिचारिकैस्वर्गकोजायसुन्दरबासकरो औदयातजोइनका कुछबिचारनकरो,येपापीपापसमूहहैं बिनाभोगकियेइन कानिस्तारनहींहै ,४५ तब यह धर्मराजकी बाणीसुन राजा जनक अतीवदयायुक्त बोले हे नाथ मैं इनजीवोंको दुःखितत्यागिकै नहींजासका अरु इनकोदीनवत् देखकर मेरे चित्तमें अत्यन्तदया उत्पन्नहुई जिससेचलनेकी शक्ति दूरहोगई ४६ फिर देखो इनसबोंको मेरेशरीरकी वायु लगनेसे अत्यन्त सुख प्राप्त हुआ,यदि आप कृपा करते हैं तोइस समय इन सबको मुक्त कीजिये तो हम प्रसन्नता पूर्वक जावैं, यहिप्रकार भानुनन्दन धर्म्मराज जनककी

हठ वश वाणी सुनके ४७ सवपापियोंके भिन्न २ पातक कहने लगे व नरक देखाने लगे , कि देखो इसने यह कराल पातक कियाहै किसुहृद मित्रनिजस्त्रीको विश्वास घात करके मारा,त्यहिकारण हम अग्निसमान नरक में डार ताड़ना देतेहैं ऐसेही हजारवर्ष भोगकराइकैफिर शूकर कीयोनि दिलवैंगे ४८।५० , तदनन्तर मनुष्य का अवतार पायेगा तौनीचमें अंगसे भंग रोगयुक्त अल्पायुसे उत्पन्नहोगा,अवदेखो इसने बरवश परस्त्रीसे रतिकियाहै तेहिकारण दिव्य पचासवर्ष रौरव नरकमें त्रासितकरेंगे ,अवयह तीसर दुष्कर्म्मी देखो इसने परिजन अर्थात् कलत्रादिको नदेकर मधुरअन्न मिष्ठान्ना दिक छिपायकै खायाहै , अपनेही तनका पोषणकियाहै ५१।५३तातेइनकोवहीभोज्यश्रोणितादि कुण्डोंमें डाल करपचवातेहैं,और देखोइनने वेदकेप्रतिकूलमार्गकियाहै कि एकदिनसन्ध्या समयएकजीवक्षुधित वप्यासा पास आया,तेहिको अन्नजलनदिया अरुऐसाकठोर किआंखैं तरेरकेउसकोदुःखदायक बचनअर्थात् कुबाक्यकहे,उसी अपराधसे इनको तामिश्रनामनरक जिसमें घोरतिमिर अर्थात् वड़ा अंधेराहै व भ्रमरडसतेहैं तिसमे मेरेगणनग्न करके५४५८डालतेहैं औरयेपर निन्दक देखो इन्होंने पराई निन्दाकियाभी खूबहैऔर सुननेमेंतो अत्यन्तही ध्यानलगाकर सुनतेथे,इनकोअन्ध कूपमेंडालाहै उसीका फलभोगतेहैं५६औरये मित्रद्रोही देखो ये वहुतकाल रौ-रवमें वासकरेगें,यहिप्रकाररविनन्दनयमराजने अनेकन

नरक मय पापियोंके दिखाये औ कहा कि ये शठ विना उसका फल भोग किये नहीं छूट सक्ते इससेआप शोच त्याग स्वर्गमें जाय सुख भोग करो ६०।६१ शेषजी बोले हेद्विजोत्तम राम भक्तबिज्ञाननिधिजनकके अत्यन्त दया उत्पन्न हुई जिससे हृदय कम्प नेत्रनसे जलबहने लगा, हे रबिजात तुम नीतिज्ञहो अब यह निश्चय करके कहो जिससे इन सबको उद्धारहोवे अर्थात्‌दुःख जालसे मुक्त होवें, तब धर्म्मराज बोले हे जनकराज तुमतो चतुर बुद्धिबर हो इनको केहि प्रकार उद्धारहो कि उद्धार करने वाले पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजीको तो इन सबोंने स्वप्नमेंभी ध्याननहींकिया अरुसंसारकेसुखों में लीन रहेहैं, अरु विष्णु भगवान्‌की कथा कभी भी नहीं सुनी इनके पाप पहाड़के समान गम्भीर होगयेहैं क्योंकर छूटैं, तथापि जो आप इनकोमुक्त किया चाहतेहैं तो यह उपायहै कि एक बार तुम प्रतः काल उठकर श्रद्धा युक्त पुलकितगात से श्रीरामका ध्यान किया था जो वहपुण्य देउ तो ये जीवोंका मुक्त होसक्ता है यह सुन जनक राज आरत शब्दसेकहा कि जो हमने यज्ञ, जप, होम, आदिजन्म पर्यन्त कियाहै उसका सब पुण्य हमने समर्पण किया, ६२।७० जब यहिप्रकार राजा जनक जीने कहा उसी क्षण सब जीव दिव्यरूप दिव्य देहसे निकस आये अरु जनकराज से हाथजोड़ बोले हे स्वामिन् हमसबने तुम्हारो कृपासे अमित दुःखको छोंड़ परम पद पाया यहि बिधिके वचन सुन

होगा हे शत्रुघ्न यह सुन राजाने पुत्रलालसासे उसीविधि व्रतधारण किया, प्रथम पूजन करके अरु अशनसे तृप्त करताथा ऐसेही नितप्रति की क्रियाथी, इस प्रकार छः मास नियमकरते व्यतीतहुये, एकदिन गौ राजाके बलसे विपिन में अभय चरतीथी १८।२३ चरते २ पर्वतके पीछे दूरितक चलीगई औ राजा पीछेदूररहगये, उनकोसुर भी नदीखपड़ी तिसीसमय विषे मृगराजने गौकोपकड़ लिया तबये बारम्बार व्याकुलहोगये तबतक भक्षलिया तबतक राजा अन्वेषण, अर्थात् ढूंढ़ते २ गौका संहार देख अत्यन्त करुणापूर्वक रोदन करनेलगा, तेहिसमय राजाको बिह्वल देख वेई जाबालिमुनि आये, तब राजा नितुम्भर दारुणशोकसे बार २ बंदनाकर दोनों हाथजोड़बोले हेनाथ हेकृपार्णव तुह्मारीआज्ञासे तुह्मारे बलसे मैंने व्रतधारण कियाथा, हेतात जैसा तुमने कहाथा उसीप्रकार सेवा करताथा२४। २७ आज जंगल मेंचराने गयाथा बिनाजानेदुष्ट सिंहने संहार किया, हेस्वामिन् केहिप्रकार वह प्रायश्चित्त दूरहो व मेरापुत्र दाता व्रतभीपूर्णहो, हे प्रणतपाल निजजन जान वह विधान बर्णनकरो२८।२६ यह दीन वाणी सुन, दयानिधिमुनि बोले हेराजा यहअघ बहुतथोड़ाहै शीघ्रही दूरहोगादुःख त्यागकरोवेदोक्तकर्म्म करने सेमहापातक अर्थात् ब्रह्महत्या, सुरापान, मित्रद्रोह आदिक ऐसेनाशहोतेहैं जैसे सूर्य्योदयसे तिमिरका नाशहोताहै, इनके भजनहेत, अर्थात् मोक्षार्थ श्रुतिने बर्णनकियेहैं, नियम,

दान, संयम, चान्द्रायण यज्ञ, सेवकाई इनके किये महापातक नाशहोतेहैं, अरु जो महापातक अर्थात् गोवध श्रीपतिकी निन्दाकरनेवाले जनका प्रायश्चित्त मोक्ष नहीं होसक्ता वे नरकही भोगतेहैं, अरु धेनु बिरोधी भी नरकगामी होतेहैं, चौदहो इन्द्रके समयतक नरक भोगतेहैं, जे जन बिष्णुभगवान् की निन्दा करते हैं वेदुष्कर्म्मी सकलत्र नरकगामी होतेहैं यह समझकर जे सयान जनहैं तेस्वप्नमेंभी हरिगौकी निन्दा सुनते भी नहीं, अरुतुमकोतो बिनाजाने बधलगाहै, उसका उपाय सुनौ जिससे दूरहो, २८। ३७ राजा ऋतुपर्ण धर्मनिरत श्रीरामकाभक्त बुद्धिबर भाग्यवान् समदर्शी अर्थात् शत्रुमित्रजिनके समहैं अरु समभाव सबसेरखतेहैं वेतुम से गोबध नाशका उपाय कहैंगे, कि जिनका तुमने प्रथममें देश अपने भुजोंके बलसे लियाथा, अब बिरोध अभिमान त्याग उनकेघर जाय जो कुछ वहराजा बर्णन करैं वह श्रवणकरिये अवश्यइससे धेनुबधका प्रायश्चित मोक्ष होगा ३८।४० हे शत्रुघ्न यहसुन राजा ऋतुम्भर बार म्बारबन्दनाकरके ऋतुपर्णके घरजाय प्रमादत्यागचरणों में शिर नवाया तब तेहि राजाने ऋतुम्भर को मित्रसम देख प्रणामकर बार २ कुशल पूंछी अरु हृदयमें यहभी बिचाराकि कुछ ब्याकुलहैं तबराजाऋतुम्भरने हाथजोड़ भयभीत होकर कहा हेराजा ऋतुपर्ण ज्ञाननिधान राम भक्त जाबालिजीने गुण व मान बर्णनकरके आपके पास भेजाहै हेनाथ मुझको बिनाजाने गोबधपातक लगाहै

जेहिप्रकारसे वहदूरहो सोउपाय कृपाकरके बर्णन की-
जिये४१।४२यहऋतुम्भरके बचनसुन ऋतुपर्णबिहंसिकै
बोला हेनाथ मैं अवगुणखानि दुराचाररत प्रमादित हूं
और मुनीश्वर जावालि वेद स्मृति अच्छेप्रकार जानतेहैं
तिनमहाशय को छोंड़ तुमहमारे पास आये यह बड़ाही
उपहासहुआ, तथापि तुम्हारे आयेसेअपनीमति अनुसार
कहताहूं संदेह त्यागसुनो वेदस्मृतियोंका यही तत्त्वहै,
कि मनसा बाचासे श्रीरामचन्द्रके चरण कमलोंका
भजन करो अवश्यही गोबध दूरहोगा अरुदयालु होकर
वेईपुरुषोतम अभीष्ट पूर्ण करेंगे अरु अखिल कोटिपाप
समूहको भस्म करनेहारा जिनका नामहै हे राजन्यह
बिचारिसीतारामस्वरूपका ध्यानकरो अरु एकगौसुबर्ण
कीनिरूपणकरकेब्राह्मणकोदेवोगोबधादिमहापातकइस
उपायसेनाशहोतेहैं यहश्रुतिका बिदितबचनहै४३।४८
यह सुन राजा शोचत्याग घर आय श्रीरामचन्द्रजीका
ध्यान करके बिधि पूर्बक गोदान किया, उससे निर्मल
होकर फिर ब्रत धारण किया, अर्थात् फिर वैसेही
नित्य निमित्त गौ चारन जाय वहां पुरुषोत्तमका ध्यान
करताथा, हे मुने कुछ काल ब्यतीत होने पर कामधेनु
प्रसन्न होकर बोली हेराजा बरम्ब्रूहि अर्थात् बर मांगर
जो तेरा अभीष्टहो, यह सुन राजा हर्षित होकर बोले हे
माता राम भक्त धर्म्मात्मा निज कुल पालक पुत्र मुझ-
को दीजै, तब कामधेनु बोली एवमस्तु अर्थात् ऐसाही
होगा, यह कह कामधेनु अन्तर्द्धान होगई फिर राजाने

कहीं न देखा, तब आनन्दित होकर राजाघर आया, व कुछ कालके अनन्तर पुत्र उत्पन्न हुआ उसका सत्यवान् ऐसा नाम रक्खा रामभक्त पितु सेवक धर्म्मनिरत सुखदायक लीला करते कुछ कालके अनन्तर समर्थ हुआ तब राजा ऋतुम्भर ने पुत्र को सचेत जान सब राज्य कोष सौंपिके आप बिपिन में तप करने गये, वहां श्री हृषीकेश भगवान् का भजन करते हुये तनुत्याग उत्तम गतिको प्राप्तहुये ४६।५७ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायांसत्यवदाख्यानंनामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

बत्तीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हे वात्स्यायन फिरसुमन्तजीने कहा हेशत्रुघ्न सो यहसत्यवान्राजाऋतुम्भरका पुत्रहै, इसने अपना धर्म्म करके श्री पुरुषोत्तमको प्रसन्नकियाहै १ उन कृपालुने प्रसन्नता पूर्वक अविचल भक्ति दी है इस नगरमें सब जप योग यज्ञमें रत रहतेहैं कोई विषयाधीन नहीं रहते, अरु सब प्रेम नारायणकी कथा श्रवण करतेहैं, यह राजा सत्यवान् समस्त प्रजाको पावन कियेहै व दीनोंके क्लेशकोदूर करताहै और जे श्रीरामसे बिमुखहैं तिनको अनेक प्रकारसे ताड़ना देताहै, उनके वास्ते दया त्याग कालरूप होजाताहै २।४ अरुइस नगर में समस्त नर नारी पृथुके आठ बर्ष छोंड़ सब एकादशी ब्रत करतेहैं व रमानाथका अहर्निश ध्यान करतेहैं हे

शत्रुघ्नयह बड़ाधर्म्मात्मा राजाहै इसकेमुखवमाथेसे हरि
पदतुलसीकभी भिन्नअर्थात् अलगनहीं होती अरुभूषण
बसन, गन्ध, अशन आदि सब प्रसादही करके धारण
करताहै उसी ईश्वरकीकृपासे निष्पापहैऔ यह धर्मज्ञ
सुर मुनि पितृ सबको पूजनीयहै और मनुष्य जे प्रभुका
प्रभाव नहीं जानते उनकी क्या गणनाहै, हेमहाराजजो
आपने पूछासो मैंने निजमतिके अनुसार कहा अबजो
रजायसु हो सो शीश चढ़ायकरूं हे मुने तब तक बाजि
राज नगरमें प्रवेश कर गये, देखकरदूतोंने राजासेकहा
५।१० हेनाथ एक सुवर्ण पत्र शोभित गंगाजलकेसमान
निर्मल घोड़ा आयाहै सुनकर राजाने शोधके अर्थ चर
चतुरपठये, जेबुद्धिमान दूत बिधि पूर्बक राजासे जाकहा
हे स्वामिन् महाराज कौशलाध्यक्ष यशस्वी श्री रामचन्द्र
जीके यज्ञका यह घोड़ाहै तिनके बलवान् लघु भाई
शत्रुघ्न नामदल चतुरंग संग लियेरक्षाकरतेहैं ११।१२
ब्यासजी बोले हे सूत श्रीरामचन्द्रजीका नाम सुनतेही
अत्यन्त हर्षितहो नेत्र सजल होगये, फिर धीर्य्यधरिकै
गद्गद गिरासे कह्यो कि आज मैं धन्यहुआ व मेरे सब
मनोरथपूर्णहुये जिनअयोध्याधि पतिकामैं सदैवध्यानकर
ताहूंतिनका घोड़ा सहित शत्रुघ्नजीके मेरे नगरको आया
अरु परम बैष्णव वायुनन्दन अवश्यही संग होंगे, और
सब भक्तगण बाजिराजके रक्षणार्थहोंगे, जहां महाराज
शत्रुघ्न हनुमान् जीके युक्तहैं तहां दर्शन करके चरणों
की रज धारण करूंगा हे मंत्रिन् शीघ्रता पूर्वक सबराज

समाज साजिकै फिर आवो, मैं अभी स्वामीके वाजिराज की रक्षामें सेनसमेत जानाचाहताहूं १४।१८ यह सुन मंत्री आतुरजाय सब समाज तैयारकराई, व महाराज के सन्मुख आय क्रमसे सब बस्तुदिखाई, हेमुने तब राजासत्यवान् ससैन्य मिलनेके अर्थचले, अरु आनन्द के समुद्रमें मग्न अनेक प्रकारके मनोरथ करते जातेथे, तबतक शत्रुघ्नजीने सहित समाज रथ गज गर्जते तर्जते कुलाहलके साथ प्रवेशकिया, तबसत्यवान् आनन्दपूर्बक आय शत्रुघ्नजीके चरणोंमें प्रपातकी भांति गिरकर सब राजसमाज अर्पणकिया तब शत्रुघ्नजीने भुजभरि भेंटि कुशल पूंछि सन्मानकिया १६। २२फिर राजपुत्ररुक्म नामके राज्य तिलक किया व शुभ आचरण सिखाये तबसत्यवान् हनुमान्‌जीको अत्यन्तप्रीतिसे मिले व रा- मभक्त सुबाहुकोमिले, अरु सब भक्तोंको भेंटि अपने को कृतार्थमाना, तबतक बाजिराज शीघ्रतापूर्बक चलदिये, उनकोजातेदेख सबरणधीर बीरोंनेगमनकियाव शत्रुघ्न जीने भी सत्यवान्‌युक्तरथमेंबैठगमनकिया२३।२६इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषबात्स्यायनसम्बादेरामाश्व मेधभाषायांसत्यवान्‌समागमोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

शेषजीबोले बात्स्यायनकोदिनरथीमहारथी रणधीर शत्रुघ्नजीके साथचले हे द्विजोत्तम तेहिसमयमार्गबिषे १ एकआश्चर्यहुआ कि अकस्मात्‌क्षणमात्रमेंचारोंओर अन्ध

कारछागयाजिससेमोहवश सबसैन्य भ्रमित होनेलगी२ अरु गगनरेणुछागई दिवाकरछिपगये, आकाशमें दामिनी फहरानेलगी ३ मेघगर्जिकै आमिषरुधिर की बर्षा करनेलगे, ऐसीकराल बिपत्तिसे किसीको सम्हारमरहा सब रणधीर घबड़ायगये अधीरतासे बोलतेभीनहीं ४ शोचतेहैं किक्या होगया कहांआगये, हेमुनिराज अन्धकार सारे संसारमें छागया सबचराचर व्याकुलहोगये विद्युन्माली नाम राक्षस रावणका सुहृद मायावी पाताल का बासी प्रबलसैन्यलिये रथमें आरूढ़भेदरहित स्वेच्छाचारी अस्त्रशस्त्र धारणकिये ५।६ उसनेमायाकरके बाजिराजकोहरलिया किसीनेमायामें नपहिंचाना ७यहिप्रकार मुहूर्त्त मात्र सारे संसारमें अन्धकाररहा फिर सूर्य्यनारायणने आकाशमें प्रकाशकिया, तबशत्रुघ्नआदिबीर घोड़ा ढूंढ़नेलगे ८ व सब सेवकगण इधरउधरखोजमें हैरानहुये बाजिराजका कहीं पताहीनलगा, अरु हाथी घोड़ों रथोंमेंचढ़े बीरढूंढ़तेथे तब तक आकाशमें चंचल बिचित्र कटकयुक्त अशंकनिशाचरोंको देखबउसकीकराल सैन्यको देखकरके अनुमानकिया कि इन्हींदुष्टोंने चुराया है यह बिचार शत्रुघ्नजीके पासजायप्रकाशकिया, कि हे नाथ यज्ञ तुरंगको किसी दुष्कर्म्मी ने हरलियाहै हम सबने अन्धकार से नहींपहिंचाना ९।१० अरु जोयह तमीचरका बिमान आकाशमेंदेखपड़ताहै कदाचित् इसी दुष्टने चुरायाहोगा, यहसुन रामानुज शत्रुघ्नजी महा क्रोध करके बोलेकि तमीचरक्याहै जिसनेरघुनाथजीका

यज्ञ तुरंग चुरायाहै, अभी तीक्षणबाणोंसे ससैन्य व्या-
कुल करदूंगा, अरु हे राजाओंके बरूथ सब जन अपने२
यूथपों सहित संग्रामकेअर्थ सचेतहोकर असुरके सन्मुख
चलो, अरु श्रीरघुनाथजीकी यज्ञके अर्थ संग्रामकरौ, यहि
प्रकार सबको समझाय बुझाय लोचन अरुणकिये आप
भी चलना चाहा, परन्तु राजनीतिका बिचारकरके सुम-
न्तसे रोषितहोकर ११।१७ बोले हेमंत्रिन् निश्चरका
वध केहिप्रकारसे होगा मुझसे समझायकैकहौ, ऐसा कौन
बीर रणकर्ममें प्रबीणहै जो ससैन्य शत्रुदलका शिरभिन्न
करै यथार्थकहो, वैसी मैं रचनाकरौं, यहसुन सुमन्त य-
थार्थ बाणीकहनेलगे, १८।२१ कि हे नाथ पहले तो
भरतपुत्र पुष्करको आज्ञा दीजिये वह सर्व अस्त्र शस्त्र
बिद्यामें निपुण अवश्यही बिजयकरेगा तदनन्तर लक्ष्मी-
निधि महारणधीर अवश्यही राक्षस कोभंग करैंगे, तत्-
पश्चात् अञ्जनीनन्दन जो बिधिपूर्बक असुर संहार
जानते हैं, महाबीर योधा इनते परे नहींहै, २२।२४
ये कपिराज दशन नखन चरणप्रहारसे दुष्टोंका संहार
करैंगे, फिर और महाबली बानरोंको आज्ञादेव अरुफिर
सुमद सुबाहु आदि राजाओं को रजायसुदेउ कि सजिकै
जावैं २५।२६ तदनन्तर आप समस्त चतुरंगिणी सैन्य
साजिकै रथमें आरूढ़ होकर अरिनके समूहको बिजय
करो, यहिप्रकारसब समाजबिषे मंत्रिराजसुमन्तनेकहा,
सो सुनकर शत्रुघ्नजी गम्भीरबाणी बोले २७।२८हेधनु
विद्यामें निपुण पुष्करादिवीरो यहजो असुराध्यक्षससैन्य

हैं तेहिके सन्मुख रणके अर्थचढ़ो, अरुयहिके बधार्थ सचेत होकर अपने२प्रण सत्यपराक्रमसे वर्णनकरो, यह महाराज कीबाणीसुन सबबीर बोले अरुसबसेपहिले२६।३० भरतपुत्रपुष्कर चरणोंमें शिरनायबोला हेतातमेरासत्य प्रण श्रवणकरो, कि अपने बाणोंसेमार दैत्यराजके बिमानको चूर्णकरके उसकोव्याकुलकरके पृथ्वीमें डारसब के देखते जोन मारों तो कन्याकेधान्य ग्रहणका व देव निन्दाका प्रायश्चित्तलगै, जोमैंमृषाकहूं अरु जो यहमेरा बाक्य मृषाहोयतो दूसरा प्रणयहहै, किजोपातक हरि, सन्त, गुरुमें भेदकिये लगताहै सोईपातकमृषाबचनहोने पर मुझकोलगै जोमेरेमनबचसत्य श्रीरामईशहैं तो अवश्यहो प्रण पूराहोगा३१।३६ यह पुष्करकीप्रतिज्ञासुन लक्ष्मीनिधि बोले किजोमैं सन्मुखसे हटौंतो मुझको जो पातक वेदनिन्दक या उनके न बर्जनेवाले, व ब्राह्मण होकरगोरसादिके बेचनेवाले व जोब्राह्मणत्व त्यागीवजे यमन कूप अर्थात् मुसल्मानोंकेकुआंमें जलभरनेवालेसो इनसबका पातक मुझकोलगै, जनकनन्दनकी यहप्रतिज्ञा सुन हनुमान्जी श्रीरामचन्द्रके चरणोंका स्मरणकर व शत्रुघ्नजीको मस्तकनवाय बोले, किमेरे स्वामी जिनको मुनिजन अहर्निश भजन करते व योगीजन हृदयमें ध्यान करते अरु देवता, नाग आदि सबप्रेमपूर्वक चरणकमलोंमें मस्तक नवाते ऐसे रघुनाथजीको स्मरणकरके मैं कहता हूं अवश्यही सत्यहोगा ४०।४५ जो यह खल निश्चर यानयुक्त क्या है अल्पबलहै औ जो आप निदेश देहु तो

मैं अकेल इसको क्या सब देवताओं समेत सुमेराचल पूछाग्रसे तौलौं फिर समस्त समुद्रका जल श्रीसीताराम प्रताप से अभीपान करजाऊं, अरु ऐसा कौन कार्य्य भूतलमें है जो मैं नकरसकूं अरु जो यह मिथ्याहो तो प्रतिज्ञासुनौ जे द्विजहोकर दया हीनहोते व शूद्रकपिला गौका पालन अनीतिसे करैं सोई पातकमुझकोलगै जो मैंने झूठकहा हो ४६।५० अरु जे पतिजीवतको त्याग स्त्रीअन्य देवको पूजनेवाली कायेसबपातक मुझकोलगैं अरु रौरवमें बासकरूं यह कह अञ्जनीनंदन रामका-ध्यानकर मौनहो रहे, तब औरभी बीरोंने अपने २ प्रण किये यहि प्रकार सबके प्रणसुन हर्षित होकर शत्रुघ्नजी बहुत प्रशंसा करके धन्यबाददिया ५१।५२ फिर बधमें संशय अनुमान करके हृदयमें क्रोध करके आपभी प्रण किया हे बीरो मेराप्रण सुनो यह दुष्ट तुम्हारे सन्मुख चोरहै यहिको जो बिमानसे शिरखंड करके न डारों तो सुवर्ण चोर वेदनिन्दक आदिका पातक मुझको लगै यह शत्रुहन्ता रामानुजकी बाणीसुन सब राजा बोले हे स्वामिन् रामानुज तुम्हारे समान देवता नागनमें कोई नहीं तुम्हारी कीर्त्तिबिस्तार होरही है ५४। ५५ अर्थात लवणासुर अतुलितबलीसबको दुखदायकतिसकोआपने बिन प्रयास वधकिया, यह अल्पनिश्चर क्याहै जिसके लिये आप प्रतिज्ञा करते हैं इसको निश्चय मुहूर्त्त मात्रमें बिजय करोगे, यहि प्रकार कहकर सबराजा अपने २ रथनमें आरूढ़ होकर प्रणस्मरण

करके गमन किया ५६ । ६३ इतिश्रीपद्मपुराणेपाताल खण्ड शेषवात्स्यायन सम्बादेरामाश्वमेधभाषायां दैत्यके बधार्थबीरोप्रतिज्ञाकथनोनामत्रिस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

श्रीशेषजीबोले हे बात्स्यायन तबसबराजाअपने२रथों में आरूढ़ होकर युद्धस्वरूप धारण करके दैत्यराजके समीप गये १तबउसने सब कटकको सन्मुखदेखबड़े बेगसे गर्जताहुआ मेघकेसमान गम्भीर कठोरबाणीबोला २ हे बीरो तुमसब निज २ गृहको गमनकरो ब्यर्थजीव देतेहो मैंने यहप्रण कियाहै चाहेजैसा संग्रामकरो परन्तु यज्ञ तुरंगनहींछोड़ूंगा३ अरु बिद्युन्माली जगबिख्यात अतुल मेरानामहै मैं परममित्र दशकन्धकाबैर लेऊंगा ४ कहो रामचन्द्रकहांहै जिसने छलसे लंकेशको जीता अरु तिस काभाई शूरशिरोमणि शत्रुघ्नकहांहै,उसकाशिर भिन्नकर श्रोणितपानकरके दशमुखसे उऋणहोऊंगा ५।६ यहसुन रणधीर पुष्कल गम्भीरबाणी बोले हेअधमतमीचर क्यों ब्यर्थ बकताहै,जे सुभट रणधीरहोतेहैं वेदिखातेहैं बकते नहीं ७ जिन महाराजने बिनप्रयास सकलत्र रावणका नाशकिया तिनकाघोड़ा चोराय हेदुष्टात्मा कहांजायगा अभीशत्रुघ्नजी तीक्ष्णबाणोंसे तेराशिर खंडनकरेंगे८।६ तब शृगाल गृध्रादि पक्षी तेराआमिष आहारकरेंगे रेशठ मुझकोअपना कालजानिकै मत गरजै मैंरघुनाथका सेवक पुष्कलतेरा कालहूं गर्जनात्याग के समरकरु, अरु

रणधीर बिजय करके गर्जतेहैं, पहिले कायर बकतेहैं
१०।११ यह नीतियुक्त बाणी कहतेथे, तबतक कोप
करके असुरनेएक शक्ति पुष्कलकेमारी, भरतपुत्रने दारुण
दीर्घ शक्तिको आतेदेख तीक्ष्णबाणोंसे त्रयखंड करदिये
शक्तिको खंडदेख दनुजराज अत्यन्त क्रोधकरके अनल
समान तेजमय काल समान त्रिशूल प्रचारिकै प्रहार
किया, १२।१४, पुष्कलने उसकोभी बाणोंसे तिल
सदृश करदिया अरु फिर महाकोपकरकेतीक्ष्णबाणमारे
तेसबबाणजैसे भक्तजनोंके श्रीरामकायश सुननेसे सारे
अंगोंमेंसमायजातहै तैसेसर्वांगमें समाइगये, १५।१६
तब दारुणब्यथासे कराल मुद्गर लिया सो पुष्कलके
हृदयमें मारा, लगतेही भरतनन्दन कम्पितहोकर रथ
त्याग शिथिलांगसे पृथ्वीपर गिरपड़े तब तक उग्रदंत व
लक्ष्मीनिधि लड़ते भये तबतक पुष्कलसचेतहोकरसन्मु-
खआय दनुजराजसे बोले हेदनुजेश तुमने बहुतपराक्रम
किया तुम्हारे बलकोधन्यहै १७।२० अबमेराभी बिक्रम
देखो, मैंने तुम्हारे हेत प्रण कियाहै, कि सबके देखते २
तीक्ष्णबाणोंसे मारडालूंगा, परन्तु सजगहोकर समर
भूमिमें स्थिररहो, यहकहधनुष चढ़ायअग्निके समानते-
जवालेबाण प्रहारकिये तबउपायकरके बाणकाटनेलगा
तबतकवेतीखे बाण हृदय भेदकरके पृथ्वीमेंगिरपड़े तब
वहशठ मूर्च्छितहोकर बिमानत्यागकचबिथुरे घूमताहुआ
कम्पिकै पृथ्वीपरगिरपड़ा २१।२७ तब अपनेभाईको
मूर्च्छितदेख उग्रदन्तआप विमानयुक्त उसको लेजाकर

फिर गर्जताहुआ बोला हे राजपुत्रतैंने छलसे मेरेभाई का निपातकिया, अब भागना नहींरथमें सजगखड़ारह अरु जबतक मैंगर्जताहूं तबतकबिजयकी आशात्यागदे यहिप्रकार जल्पते दुष्टजबआवै तबतक पुष्कल ने दश बाणमारे तब दांतपीसि चिक्कारकरके महाक्रोधसे एक मुष्टिक पुष्कलकोमाराभरतपुत्रमुष्टिप्रहारसेकुछकम्पित नहुये अरु तीक्ष्ण बाण शीघ्रता पूर्बक हने,तबउग्रदन्त ब्याकुल होकर अग्निके समान तेजवाला तीनशिर युक्त त्रिशूलसम्हार ३८। ३५ अरु पुष्कलके हृदयमें मारा, लगतेही परमब्यथासेदेहसम्हारनरहा,अरुसमर भूमिमें मूर्च्छितहो गिरपड़े ३६। ३७तबहनुमान्‌जीने भरतपुत्र को मूर्च्छित देखकर महाक्रोधयुक्तसन्मुखआयबोलेरेबा-जिराजके चोरशठखड़ारह तुझकोतोकेवलचरणप्रहारही सेबधकरूंगायहकहमहावीरहनुमान्‌शीघ्रतापूर्बककूदिकै बिमानमें जायवहस्थान खण्डनकिया और बहुत लंगूर घुमाइकै मारे व बहुत चरणप्रहार व बाहुप्रहारसे हने, यहिप्रकारबहुतनिर्जीवहोगये व बहुतमूर्च्छित होगिरपड़े ३८।४०अरु बहुतसे यहदशादेख भागगयेबहुतोंकोमार डाला वबहुतोंको अधमराकिया,४१ फिरउसके बिमाने ध्वजापताकाबन्दनवार बिपुलकंगूरा क्षणमात्रमें भञ्जन कियेसब दैत्यगण हाहाकार करतेहुये अत्यन्त ब्याकुल भये अरु हनुमान्‌जीक्षण आकाश क्षण भूतलमें बिमान के साथही जाते आतेहैं ४२।४४जहांबिमान तहांहनु-मान अर्थात् अञ्जनीनन्दननेउस समय काम रूप धारण

करके सबशत्रुकी सैन्य को व्यथितकरदिया,४५।४६
तब अपनाकटकव्याकुलदेख रणधीर उग्रदन्त बोला हे
कपितैंने अमितपराक्रम करके मेरीसैन्य निमिषमे संहार
करदी ४७।४८ अबजो मुहूर्त्तमात्र रणमेंस्थिररहोतोनि-
र्जीव करदूं यहकह घोरत्रिशूल छोड़ा४९।५० अनलके
समान त्रिशूलको आतेदेख हनुमान्जी पकड़कर मुखसे
चबायगये अर्थात्खण्डकरदिये,फिर नखन दशन चपेटन
से उसको व्याकुल किया तब राक्षसने बिचारा कियह
मेरेप्राण लियाचाहताहै इससे संसारके दुःखदमायारची
जोपहिले रचीथी कि महाअंधेरहोकर मेघरुधिर हाड़बर-
षनेलगे व अनेक रुंड मुन्ड बरषनेलगी, हेमुनि तेहि
समय इसबिपत्तिसे सबसैन्य भागचलीतबमहाराजशत्रु-
घ्नजीतुरंगनाग बीरनको मृतक गुनिकै व सैन्यको भजते
देख रथमें आरूढ़हो रामचन्द्रजीके चरणों का ध्यान
करके चलेजायकै मोहन बाण मारा उससे हेमुने उसी
समय सब तम दूरहोगया अरु उसी मोहन बाणके
प्रतापसे सबदिशाप्रकाशित भईं ,अरु बादल जहांतहां
उड़गये दामिनी रहित आकाश निर्मलहोगया५१।६०
तबसूर्य्यनारायणकेदर्शनसे सबलोगसुखीभयेतबबिमान
से छिन्नभिन्नराक्षसकपटसे कठोरबचन बोलतेथेतबशत्रु-
घ्नजी ने धनुषचढ़ाय सुवर्ण के पक्षवाले तीक्ष्ण बाण
मारे ६१।६२ लगतेही बिमान खंड२होगया तब असुर
समूहदीनबाणीपुकारतेभागचलेतबरामानुजऔरभीबाण
मारे उसको चूर्णकर पृथ्वीमेंगिरादिया तेहिसमय बिद्यु-

न्माली धनुषबाण धारणकरके सन्मुखआया तबशत्रुघ्नजी ने बायुबाण प्रहारकिया छूटतेही आकाश व सबदिशा-ओं में प्रचण्ड बायु चलनेलगी जिससे सबदैत्योंके केश शिखा छूट२ बिमानोंसे गिरनेलगे६ ३।६६ वरणमण्डलमें भूतपिशाचोंकीभांति बिचरने लगे यह रामानुजकाबल देख बिद्युन्मालीने क्रोधकरके अतिदारुण शिवास्त्रछोंड़ा जिससे अनेक भूत प्रेत बैताल कपाल करताल लिये प्रकट भये ६७।७० वे बीरनके शिरकाट २रुधिर पान करनेलगे तेहिसमयबिषेरामादलमें त्राहि त्राहि पड़गई तब यह शत्रुकाबिक्रम देख ७१।७२ शत्रुघ्नजीने ना-रायणास्त्र छोंड़ातिससे शिवास्त्रशान्तहुआतब अपनाबल सैन्य परास्तदेख राक्षसने कोपकरके मुद्गर शूललैकर कालके समान शत्रुघ्नकेपासआयातबशीघ्रतापूर्बकरामा नुजने अर्द्धचन्द्रबाणसेमुहूर्त्तमात्रमेंदोनोंभुजा भिन्नकिये तब भुजबिहीनरुधिरश्रवतदेखदांतपीसिचिक्कारिकै वउग्र बिलोकनिदेखिकै शीशअग्रकरकठोरबचन कहताहुआधा वारेराजपुत्रकहांजायगाकौनरक्षाकरैगामारताहूं ७३।७५ यहकहताहुआ आताथा, तबतकशत्रुघ्नजी बाणसे शिर भिन्नकरके गतप्राणकरदिया, पृथ्वीपर पर्बतके समान गिरपड़ा, तबउसकी सेनादीनशब्द पुकारते भागचली तबभ्राताकाशीश पृथ्वीमेंदेख उग्रदन्त क्रुद्धितहो एकमु-ष्टिकमारा, सोसहिकै शत्रुघ्नजीने धनुष बाणलैकर उस काभी बधकिया, व तेहिसमयजे तमीचर आगेआयेसब को मारगिराया, औजेसाधु शत्रुघ्नजीकी शरणआये, ति-

नकी कृपार्णव शत्रुघ्नजीने रक्षाकी अरु तेहिसमयविषे-
बीणा शंख निशान आदिबाजाबजे व सबबीर हर्षितहो
करजयर शब्द चारोंओरसे करतेभये ७६।८१ इतिश्री
पद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमे-
धभाषायांशत्रुघ्नबिजयोनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३४॥

पैंतीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हे बात्स्यायन जब शत्रुघ्नजीअसुरा-
धिपकोमारघोड़ालायेतबपुष्कल लक्ष्मीनिधिआदिराजा
आनन्दपूर्वक शत्रुघ्नजीके समीपआय बोले,हे रामानुज
बलबुद्धिनिधान १।२ बिद्युन्मालीदैत्यको आपने सहित
सहायकोंकेबधकिया इससे वृन्दारकवृन्द दुसहदुःखको
त्यागआनन्दितहुये३।४सबसरोवर निर्मलहोगये,रबिने
देखोनिर्मलप्रकाशकियाहै वत्रिबिधिसमीरचलीहैतुम्हारे
ही बलसेअरु यहदेवतोंके दुःखदायक दैत्यका बध तु-
म्हारे बलसे आजदेखा५।६अरु रघुनाथजीने यज्ञ तुरंग
पाया जिससे हृदय आनन्दितहुआ, अबइसभांति सारे
पृथ्वीतलमेंबिजयकरोगे,सोहमतुम्हारेसंगसबदेखेंगेअब
बाजिराज छोड़ो काहेसेकि अवधिभी नियराती आतीहै
७।१०यहिप्रकार समययोग्य राजनकीबाणीसुनसबकी
प्रशंसाकरके बोले,हेराजो तुमधन्यहो ऐसाक्यों न कहो
यहघोड़ा छोड़नेका अनुशासनदिया,तबबाजिराजअमि-
त बीरोंसे रक्षित उत्तरदिशाकोचले,तिसपीछे रामानुज
सबदल लैकै चले,जहां२बाजिराज गमनकरतेहैं तहां२

सबकटक बिचरतीहै परन्तु श्रीशत्रुघ्नजीका उग्रप्रताप
सुनकोऊघोड़ा पकड़नहींसक्ताहै ११।१६ हेमुनीश अब
ध्यानलगाय महापातक नाशिनी कथासुनौ १७ यहि
प्रकारसब रेवानदीतटजो अतिपुनीत जहांअनेकन मुनिवैठे
रामभजन करतेथे, जिनके दर्शनोंसे महापातक दूरहोता
है, तहांराजमण्डलीसमेत शत्रुघ्नजी बाजिराजके पीछे
सरितानिकट आये, अरु हनुमानजीपुष्कल लक्ष्मीनिधि
सुबाहु सुकेतुआदिराजनयुक्त मुनिनको प्रणाम करतेहुये,
नदीतीर एकआश्रम पलाशपत्रोंसेरचितसुखदायकदेखा
रामानुजने मनोहर आश्रम देख सुमन्तजीको बन्दना
करकेपूछा हेमंत्रिराज यह समझायके कहो कियहस्थल
केहि मुनिराजकाहै हेविज्ञानी मुझको अपनाजानकथन
करौ, तब सुमन्त हर्षित होकर ज्ञान दृष्टिसे अवलोकन
करकेबोले, हेराजन् यह आश्रम महापापनाशन मुनि-
राज, वेदशास्त्रके ज्ञाता आरण्यकनाम तपोनिधि मुनी-
श्वरकाहै, इनके समीपचलकर प्रभुकी मनभावन कथा
पूछौ कृपाकरके कहैंगे१८।२४इनके समानरघुनाथ जी
का भक्तकोई दूसरानहींहै, यहसुनरामानुजहर्षितहोक-
र मुनि आश्रमविषे पुष्कलहनुमान्, सुमन्त, सुबाहु, सुमद
लक्ष्मीनिधि प्रतापअग्र युक्तजायपुलकितगातसे दण्डव
त् किया २५।२६ अरुहाथजोड़ शिरनाय आगेसब ख-
ड़े भये तिनसबकोदेख मुनिनायक अतिथिजानअर्घ्यपा-
द्यदिया अरुफलमूल भोजनदिये तब सन्मानकरकेबोले
कि कहां तुम्हारास्थानहै, अरु यहां केहिकारण आयेहो

तुम सब अपना वृत्तान्तकहो यहसुनसुमन्तबोले हेतपो-
निधे मैंकहताहूं क्षमाकरके सुनौ २७।२८ अयोध्या नाम
नगरीमें रघुकुलमणिश्रीरामचन्द्रजी अश्वमेधयज्ञकरतेहैं
उनकी यज्ञका यहघोड़ाहै इसीको रक्षार्थ हमसब आयेहैं
यहसुन महामुनि आनन्दपूर्बक हँसे सो दंतनकाप्रकाश
नहींकहसक्ता हे बीरो मेरो अज्ञानरूपीतम दहन बाणी
सुनो २९ । ३० श्रुति पुराण इतिहासोंमें गायाहै कि
अनेकन यज्ञकिये क्याहोताहै बिधिवत् मोहबश करतेहैं
ये यज्ञादिक अल्पपुण्यके देनेवालेहैं अरु संसारकी
मढ़तादेखो कि पुरुषोत्तम रघूत्तमके चरणकमलमूलत्या-
गिकै भवशूलदायक यज्ञादि करतेहैं कामधेनु कल्पवृक्ष
को त्याग बबूरका अनुराग करतेहैं देखोदोनों लोकके
देनेहारे परब्रह्म रामचन्द्र जिनका नाम स्मरण करनेसे
मुहूर्त्तमात्र में महापातकों के समूह क्षय होतेहैं तिनको
त्यागमतिमन्द यज्ञयोग व्रतादिमें अनुराग बढ़ातेहैं अरु
कष्ट करतेहैं व निजस्वरूपको नहीं देखते इससंसारमें
बंचकबुद्धिहै सुलभरामनाम जिसको धारणनहींकरते जो
सकाम अथवा निष्काम भजतेहैं अवश्य परमपदपातेहैं
ऐसीरघुराजकी शरणागत त्यागमूढ़तासे और क्लेश उठा-
तेहैं३१।३४ अब मैं शुभग इतिहास कहताहूं सुनो,एक
समय मेरेचित्तमें परमतत्त्व पर अत्यन्त प्रीति उत्पन्नहुई,
तेहिकारण अनेकन तीर्थ भ्रमण किये तिनकादान अप-
नेमें देख ब्याकुल फिरता था कुछमन में न आताथा,कि
कैसे परमतत्त्व का ज्ञानप्राप्तहो, तदनन्तर एकसमयबिषे

मेरे भाग्यसे मार्गविषे लोमशमुनिमिले, वे महात्मा तीर्थ करने स्वर्गसे आयेथे ३५।३७ योगीजन अमित आयु बिज्ञानी मैं तिनको कैसेकहों,तब मैं उनके निकट जाय प्रणामकरके पूंछा,हेनाथ दासको दुःखीजानि कृपाकरो, मनुष्यदेह दुर्लभ सो मैं पाय,जेहिप्रकार भवसागरपारहों सो कहिये,अर्थात् जोपरमतत्त्व जेहिको श्रुतिपुराण ब्रह्मा शिवादि शिरनातेहैं,अरु जिनकोमुनिजन ध्यानकरतेहैं,मैं यज्ञ,तप, दान, व्रत,संयमआदि कोई देवता जेहि प्रकार भवसागर पारहोऊं सोई उपदेश करिये, तुमसर्वज्ञ बेद स्मृतिके ज्ञाता,अरु हे नाथ आरतको शरणागत जानिकै सुनीति बर्णन करौ,यहसुनलोमश ब्राह्मणकी दीनबाणी सुनबोले हे बिप्रसचेतहोकर भ्रमजालत्याग सुनौ योग, यज्ञ,जप,तप,व्रत,नियम येसब केवल ब्रह्मादिकके पदको प्राप्त करतेहैं व सबकाम पूर्णहोते हैं, अबमेरा गुप्तमत सुनौ, कि भवभयगंजन सकलकामप्रद श्रीरघुनाथजीका नामहै,तातेहृदयमें धारणकरौ,अरु जेप्राणी निन्दक हरि बिमुख नास्तिकादि जे तिनसे भूलसेभी न कहना,जेसु- कृतीरामभक्तिमें लीन,मोहादिबिहीन,सादर तिनसेआ- नन्दपूर्बक कहियो अरु जप, योग यज्ञादि श्रीराम परे नहींहैं ३८।४५ यह बिचारि बिश्वास करके संशयशोक त्याग श्रीरामका ध्यान करो जिनके नामस्मरणसे मुहूर्त मात्रमें पापपयोधि सूखतेहैं अरु फिर नानाप्रकार के संसारमें सुखभोग अन्तमें स्वर्गबासी होतेहैं सब सुखप्रद प्रणकेलिये सुरतरु है४६।४७यहिसे हेब्रह्मनतुम उनको

शरण जाओ तुमको अवश्य भक्तिदेंगे, जिससे भवसागर
से पारहोगे यह मेरासत्यबचनहै देखो तस्कर अर्थात्
चोरभीजो शरण में आताहै सोभी नरकत्याग स्वर्गगामी
होताहै, जेजन बेद शास्त्राधिकारी सदैव सुधर्मनिरत
प्रभुका ध्यान करतेहैं उनकेसमान भाग्यवान् कोई नहीं
है ४८।४६ हेबिप्र यह अनुमानकरके मोह संशय त्याग
कृपार्णव भगवान् की शरणागतमें प्राप्त होओ, सिद्धदेव
रामहीहैं, मंत्रराज तिनका नामहै, उनकेमंत्र सिद्धवत् पूज
नार्थबेदशास्त्र उनकेचरित्र प्रकाशकरताहै, अरु रघुपतिके
जेबिमुख कर्म्महैं तेई भवबन्धन के दायकहैं हेद्विज अस
अनुमान सब त्याग प्रभुकेचरणों का अनुरागकरो जेहिसे
गोपदके समान असार संसार पारहोगे यहमैंमृखाउच्चार
नहींकरता, मैंनेतो तुमसे सब बेदान्तसार कहा, अब जो
मनमें आवे सोकरो, जब यहिप्रकार लोमशमुनिने कथन
किया तब मेरामन अत्यन्त हर्षित हुआ फिर मुनिचरण
में शिरनाय बोला हेतात मैं केहिप्रकारश्रीरामका सेवन
सुमिरण करूं, सो बिश्वासयुत कहिये जिससे भवपार
होऊं, तब हेबीरो मुनिराज मेराबचनसुन ध्यानकी रचना
कहनेलगे ५०।५४ हेद्विजोत्तम अपने प्रश्नका उत्तर सुनो
जेहिते रामरूप जानो निर्मल सुबर्णसे प्रकाशित ध्वजा
पताका बन्दनवारोंसे शोभित अयोध्यापुरी में जे सदैव
निवासकरतेहैं स्वयं अर्थात् आपहीआप तेजमय प्रकाश
करते सबप्रकारसे उनकीशोभा अलौकिकहै, उत्तरदिशा
में सरयूतट रघुनायक का नित्यमन्दिरहै जिसके दर्शन

से प्राणी भवपार होतेहैं ऐसी कौशलपुरी में एक उक्त मन्दिरविषे त्रिभुवन की शोभा धारण किये, शुभग अंगों से शोभित, रमानिवासी, प्रणत को अभयपददाता, कौस्तुभमणि भृगुलतासेशोभित, और सर्बाङ्गआभूषणोंसे भूषित कटिमें पीताम्बर कसे प्रणत जनके अभयदाता, ऐसेरघुकुलमणि मुनिजनोंसे सेवितबिराजतेहैं यहिप्रकार हेब्राह्मण उस रूपका ध्यानकरके सुमिरणकरौ अवश्य भवनिधि उद्धारहोगे, अरुतुलसी चन्दन गंगाजल से सेवनकियो, अरुपरमभक्तिमें करके अन्यदेवको न जानो, जोतुमने परमतत्त्वपूंछा सोमैंनेमतिअनुसार बिस्तार पूर्बक कहा, जेसंतत इस ध्यानमें सबकाम त्यागमग्न रहतेहैं उनकेसमान धन्यसंसारमें कोईनहीं ३५ । ७१

इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषबात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेध भाषायां आरण्यकोपाख्यान में लोमश करके परम तत्त्वबर्णनोनामपंचत्रिंशो ऽध्यायः॥ ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

शेषजी बोले हेवात्स्यायन लोमशमुनिके येबचनसुन आरण्यक मुनि बन्दनाकरके आनन्दपूर्बक बोले हेमुनि नायक सर्बज्ञनिधि स्वजनजानि कृपाकरो १ जे कृपालु गुरुहैं ते सेवक से कुछगुप्त नहींरखते २ अर्थात् वे कृपा निधान रामकौनहैं जिनकातुमध्यानकरतेहौ, अरु उन्हों नेकौन २ चरित्रकिये, अरु तुमनेपरब्रह्मकहाहै, सोमनुष्य तनुकैसे धारणकिया, यहसब प्रसंगकहौ जेहिसे संश-

य दूरहो३।४ शेषजीनेकहा हेवात्स्यायन सुनौ मुनिना-
यक रामचरित्र कथनकरतेहैं तब लोमश मुनि बोले हे
द्विजोत्तम सुनौ, जेहिको मुनिजन श्रुति वेदपुराण गातेहैं
सोकृपानिधान वैकुण्ठमें बिराजमान अमितजीवोंकोनर-
कमेंदेखकरुणाकरके करुणा उत्पन्नभई तबबिचार किया
किअवश्य इनका उद्धार करूंगा अरु श्रीसहित पृथ्वीम-
ण्डलमें मनुजरूप धारण करूंगा,हेद्विजेन्द्र यहिप्रकार
प्रथम प्रभुने बिचार करके फिर अंशनयुक्त चारकला से
चाररूप अर्थात् लक्ष्मण,भरत,शत्रुघ्न सहित त्रेतायुग
मेंउज्ज्वल रघुकुलमणि राजादशरथजीके यहां कौशल्या
दि रानियोंके उदरमें आयभक्तोंके सुखदेने अर्थप्रकटहुये
जगत्माताात्रिभुवनकी छबिखानि सो बिदेह राजाजनक
जीके उत्पन्न हुई, अबहेद्विजेन्द्र रामचरित्र सुनौ चारो
भ्रातारूप शील गुणोंमें बराबर बालचरित्र करने लगे,
सोदेखके मातापिता आनन्दमें मग्नदिनबितातेथे, कुछ
कालकेअनन्तरबिश्वामित्र मुनीश्वरयज्ञके रक्षार्थ रामल-
क्ष्मणकीयाचनाकी इसमिससे अरु अनुरागतो दूसराही
था तबराजाने बिकल होकर, ५।१० बहुत बिनयकरके
मुनिराजको सौंपदिया, अर्थात् मुनिका बचन निष्फल
नकरसके,तब जलपानकरके सहितसमाजरघुराज राम
लक्ष्मण रथमें आरूढ़ हुये, तब मुनिश्रेष्ठ बिश्वामित्रजी
जगत्पति पुरुषोत्तमकी छबिदेखि मग्न ह्वैकै जन्मको
सफलकरके राजाको जयजीव अर्थात् आशिष देकरचले
मुनिसंग राम लक्ष्मण धनुषबाण धारणकर पीताम्बर

कसे, शीशमें मुकुट दिये,मुनिको आनन्ददेते बनमें चले जातेथे, तब मखबिध्वंसनी ताड़कानाम राक्षसी गर्जते तर्जते आई,उसकोमुनिराजकी आज्ञासेश्रीरामचन्द्रजीने बधकिया अरु दीन जानअपनेधामको पठाया,हेद्विजऐसे कृपालुहैं कुछदूरचलकर महापातकरूप गौतमकीनारि अहल्या तिसको सनाथकिया,फिर मुनिराजकी यज्ञमें पहुंचे,सबदुराचारी सुबाहुमारीच आदिकोंको मार यज्ञ की रक्षाकीअरु सबराक्षसगणोंकोजोयज्ञ बिध्वंसकरतेथे बधकिया तबबिश्वामित्रजीने रामचन्द्रका प्रभाव देखिकै सम्पूर्ण धनुषबिद्या दोनोंभ्राताओं कोदी,फिर जनकपुर लेगये,वहांप्रभुजाकरसबनरनारिनको सुखितकरके सब राजाओंका मदगंजन कर धनुषभंजन किया,तब जनक जीने राजादशरथको बुलाय बिधिपूर्बक चारों भाइयोंके बिवाह किये, अरु उनचारोंभाइयोंको छबिनिधिदेखिकै जनकके हृदयमें प्रेमनहीं समाताथा,रामचन्द्रजी पन्द्रह वर्षके व सीताजीको षोड़श वर्षकी मनोहर जोड़ी देख जन्म सफलकिया,अरु सीताजीने रघुपति रामचन्द्रजी को बरपाय अपनेको कृतकृत्य माना, १६ अरु राजा जनकनेबहुत दायजदिया तब महाराज दशरथ आनन्द पूर्बक अयोध्याको आये,आतेहीसब नगरमें घर२मंगलाचार होनेलगा,व सबमातापुत्र बधुनको देख अत्यन्त हर्षितहुईं, यहि प्रकार बारहबर्ष सीतारामने बिहार किया,सोबिहार कथा सीतारामको जगत्केमातापिता जाननहींबर्णनकरताहूं हेब्राह्मणकुछकालके अनन्तरजब

रामचन्द्र सत्ताइस बर्षके हुयेतो दशरथ महाराज आनन्द पूर्बक युवराजपद देनेकी इच्छाकी, तब यह सुनके नीच बुद्धिसे कैकेयीने दो पहलेके मांगे हुयेबरलिये, कि एकतो भरतयुवराजहोंवरामचन्द्र चौदहवर्षबनबासकरेंलक्ष्मण सीतासहित शीशमेंजटा सब अंगोंमें बल्कल धारणकर अवश्य चौदह बर्ष कन्द मूल आहारकरें,एक यहकराल बरमांगा दूसरा मेरापुत्रभरत युवराज हो यहसुनस- म्पूर्णनगर ब्याकुलहुआ व राजादशरथ अत्यन्तब्याकुल हुये ,तब यह सुधिपाय कृपार्णव रामचन्द्रजी भ्रातापत्नी युक्त बनका प्रस्थानकिया ,तीनदिन जलपानकर चौथे दिन मूल फल भोजनकर गंगाजीको केवट सकलत्र कृतकृत्य हो उतारा , मार्गमेंसबलोग देखकर हर्षशोक करतेथे यहिप्रकार पांचदिनमें चित्रकूट पहुँचे ,वहां पर्ण कुटी बनाय बासकिया,यहां सुमन्तने बिखिलके रात्रिको नगरप्रवेश किया , तब सीताराम लक्ष्मणको बनगमन सुन राजादशरथने प्राण त्यागकिये, तबमहाशोकहुआ सबनगर बासियों राजमहलों में, तब बशिष्ठजीने भरत को ननिहालसे बुलाय बिधिपूर्वक राजाकी क्रिया करा- ई ,अरु भरतनेमाताके कुचालसे बड़ाशोचकिया , तदन- न्तर भरत पुरजनों समेत चित्रकूट पहुंचे ,तब रामचन्द्र जीने लघुभ्राता को दुःखित आयेजान अतिकरुणापूर्बक मिले, अरुराजाका मरणसुन बड़ा शोककरके अधीर होगये, तब बशिष्ठजीने ज्ञानदेकर शोक दूरकिया ,तब भरतजीने तिलककेअर्थ बहुत प्रार्थनाकिया ,तबरामच-

न्द्रने समझाय पादुका,देकर अयोध्याको पठैदिया ,हे-
द्विजोत्तम अब सीतारामका बनचरित्र श्रवणकरो, पर्णकु
टीमें बारहबर्ष बासकरके तेरहवेंबर्ष पंचबटीमें बासकर
के वहां रावणकी भगिनी शूर्पणखाके नाककानकाटे,तब
यहसुन चौदहहजार खरदूषण त्रिशिराआदिआये सब-
को मुहूर्त्तमात्रमें नाशकिया,तब दशाननने बहिनकेना-
क कान भंगदेख अत्यन्त शोचकर मारीचको संगले,
कपट बेषधारणकर आया, अर्थात् मारीचको सुबर्णका
मृगाबनाया वहमृगा सीताजीने देख प्रभुसे बिनयकिया
तबउसके अर्थ प्रभु लक्ष्मणकी रखवारीकर आपगये,
तब आरत शब्द सुनकर लक्ष्मणजीभी गये, तबराम
सहित शून्य आश्रमदेख सीताहरणेको आया,अरु बहुत
छलबल करके माघमास शुक्लपक्ष अष्टमीदिन मध्याह्न
में सीताजीको हर लेगया, चन्द्रमास रघुपतिने लीला
किया , असुररूपकर भेदकहताहूं ,पहले शुक्लपक्ष जा-
नो व दूसरे कृष्णपक्षहोताहै जैसे प्रबीणजन पत्रामेंभी
पहलेशुक्लपक्ष लिखतेहैं, तैसेरघुपति गुण बर्णनकरताहूं
छलदेख जनकजा रोदन करनेलगी,हेरघूत्तम हे कृपालु
में अत्यन्त दुःखितहूं,महाराज कहां देर कियो,ऐसेसीता
रोदनकरतेबिलखते, किहारघुबरहा प्राणप्रिय क्योंनहीं
रक्षाकिया।जैसेक्षुधितबाज बटेरकोझपट लेताहै, वैसेही
मतिमन्दरावणसीताजीको लियेजाताथा, तब गृध्रराज
रघुनाथजीकी प्राणप्रियाजान आकर समरकिया, मनक्रम
सेस्वामीकेअर्थ तबउसकोसंहारकरकेरावणलंकाकोचला

गया यहां रामचन्द्र सानुज मृगमार पंचबटीआय सीता
जीको न देख महाशोककिया, प्रियाकेबियोगसे व्याकुल
बनमेंढूढ़नेलगे, यहिप्रकार सच्चिदानन्द आनन्दकन्द म-
नुज चरित्रकिया, अरु फिर जटायुकी क्रियाकर शबरीको
सनाथ करके पम्पाशरको गये, वहां हनुमान्‌जीसे भेटहुई
वेअञ्जनीनन्दन ऋष्यमूक सुग्रीवके निकटलैजाकरमित्र-
ताकराई, तब रामचन्द्रजीने मित्रको दुःखितदेख बाली
कोमार राज्यदे उसकेपुत्र अंगदको युवराजकिया, अरु
चतुर्मास तहां रमानिवासने बासकिया, तब सुग्रीवको
बुलाय भालु कपिचारों ओरपठाये, हनुमतादि सबढूढ़ते२
समुद्रतटगये, वहां सम्पातिमिले, तब सब भयभीत हुये
तब अंगदकेबचनसे सबको सम्पातिने धैर्य्यदिया, व बन्धु
क्रियाकर सबकथा सुनाय सीताजीको दिखाया, अगहन
शुदीदशमीके दिन दशयेंमास खोजलगा तब एकादशीके
दिन हनुमान्‌जी महेन्द्रगिरिपरसे समुद्र उल्लंघन किया
लंकामें खोजते२ सीताजीको बिपिनमें देखा, द्वादशीमें
हनुमान् सीसपत्र में लुकेहुये तिसी रात्रिविषे सीताको
व्याकुलदेख मुद्रिका डालदी अरु रघुराजकेगुण बर्णन
करके बिश्वासदिया, त्रयोदशीमें अक्षयकुमारादि राक्षसों
कोमार बिपिनबाटिका भंगलंकाको भस्मकिया, फिरसी-
ताजीको प्रबोधकरके पूर्णिमाको प्रमुदित रघुनाथजीके
पास चले, पूषबदी प्रतिपदाको भालु कपिन युक्त राम
लक्ष्मणके पासचले पांचदिन मार्गमें व्यतीतकर छठयें
दिनमधुबनकेफलखाये, सप्तमीकेदिन सीताप्रसंगरघुनाथ

जीसेकहा, प्रियाकी व्याकुलतासुन प्रेमबश गद्गदगिरा होगई ३३ अष्टमीकेदिन विजयहेत प्रस्थानकिया, अरु चलती समय यह प्रतिज्ञाकिया कि शीघ्र समुद्रपारजाय शत्रुको संहार सीताकोलाऊं, यदिशिव ब्रह्माभीरक्षाकरैंगे तबभी परास्तकरूंगा, यह प्रणकर सुग्रीव, अङ्गद, हनुमान् सुखेन, जाम्बवान् आदि वीरलेकर चलते २ सप्तम दिवसमें समुद्रनिकट पहुंचे, यहांतक एकमास जानो, अरु तृतीयातक सबदल सिन्धुकेनिकट एकत्रहुआ चतुर्थीको विभीषण आये उनको दीनजान प्रभुने अभयकर राज्यतिलकदिया, पंचमीमें सबमिलिकै समुद्रतरणकामंत्रकिया तीनदिन कृपार्णवने पंथहेत प्रणकिया, चौथेदिन बाण प्रभावसे जलनिधिने बरदिया, सोसुनप्रभुनेदशमीको सेतु काप्रारम्भकिया, त्रयोदशीमें दृढ़सेतु पूर्णकिया, चौदशको सानुजसमुद्रके पारगये, एकसेद्वितीयातक सबसैन्यउतर गई, वहांसुमेरुपर सबवीरोंयुक्त विराजमानहुये, एकादशी में रावणने शुक शारणदूत पठाये, द्वादशीमें उनको भालु कपिनने सबकटक दिखायी, ४३ अरुकुहूतक मदोन्मत्त रावणने दलसाज किया, फिर माघकृष्ण प्रतिपदाको अंगदरावणकी सभामेंजाय मानबलउसकाखण्डनकिया ४४फिर निशाचर व भालुकपि परस्पर भिड़लड़नेलगे, तबनौमीतिथिमेंमेघनादने मायाकरके नागफांससेससैन्य रघुनाथजीको बांधलिया, हेतात इसमें संशय न करियो यहां मनुजवत् लीला करतेहैं, तब प्रभुको फांसमें जान वैनतेय गरुड़जी आकर बन्धन मोक्षकिया दशमीतिथिमें

एकादशी द्वादशीमें धूम्राक्षका बधकिया, अरु तेरसिसे तीनदिन पर्य्यन्त सबकटक नाशकर फिर माघशुक्लप्रति पदासे चौथिपर्य्यन्त राम रावण लड़नेलगे, तब युद्धमें श्रमितकरके रघूत्तमने भजायदिया, तब लज्जितहोपंचमी में कुम्भकर्णको जगाया, तब जागकर चारदिनतक तो भोजनकिया, फिरदशमुख दुःखितदेखपूंछा, रावणसे सब हालसुन कोपकरके चलताभया आकर उसने छःदिन अर्थात् चौदशतक युद्धकिया, तब रामचन्द्रजीने तीक्ष्ण-बाणोंसे बधकिया, अरु पूर्णिमामें महाशोक से लंकामें खरभर पड़गया, फिर फाल्गुणकेप्रतिपदासे चौथतकमेघ-वर्ण उदधि दुर्मद आदिनिशाचर नाशकिये पंचमीसे सप्तमीतक कायुकको नाशकर पुनःतीनदिनमें मकराक्ष कोहने फिरफाल्गुणकृष्ण द्वितीयाको मेघनाद छलबलसे लषणजीको शक्तिसे संग्राममें मूर्च्छितकर हर्षितहो लंकाको गया ५७ तब अंजनीनन्दन हनुमानजी रात दिनमें द्रोणाचल लाय सचेतकिया, केवल मनुजकेचरित्र करतेहैं हे द्विजोत्तम संशयनकरियो, कल्प २ में प्रभुके भिन्न २ अवतार होतेहैं, फिर पांचदिनमें त्रयोदशी तक इन्द्रजीतको लक्ष्मणजीने बधकिया, तब चतुर्दशीमें रावण यज्ञकरनेलगा, तदनन्तर पूर्णिमामेंआययुद्धकिया हेद्विजेन्द्र अब मनभावनचैत्रमासकी कथासुनो, चैत्रकृष्ण पञ्चमीपर्य्यन्त दशमुखको रणमें खेलायरब्याकुलकिया अरु षष्ठीमें सबदलनाशकिया हेमुनिनौमीतिथिमें दुरा-चारी रावणने कोपकियाक्रोधकरकेप्रचण्डशक्तिलक्ष्मण

जोकोमारी उससे लषणजी मूर्च्छितहोगये,तब रघुनाथ-जीने अत्यन्त क्रोधसे खलकोरणसे भगादिया,फिरहनु-मान्‌जी द्रोणाचललाय लक्ष्मणजीको सचेत किया तीन निशाचर दशमीमें खंडितकिये,तबएकादशीमें रघुनाथजी को बिरथदेख सुरेन्द्रने अपनारथ भेजदिया , द्वादशीसे कृष्णकी चतुर्दशी पर्य्यन्त अठारहदिन राम रावणका महाघोरद्वन्दयुद्धहुआ,फिरबरजोर रणधीर रामचन्द्रजी ने वधकिया,अब सबदिन कहतेहैं माघकृष्ण द्वितीयासे चैत्रकृष्ण चौदशतकबहत्तरदिन राम रावणका युद्धहुआ अरुरावणकी मृतकक्रिया अमावसमें भई,तबचैत्रमासकी मनभावन कथासुन मुनिने बैशाखमासकी कथापूंछी तब लोमशमुनिबोले हेद्विजेन्द्रप्रतिपदामें रामचन्द्रजी बिजय पाय प्रसन्नहोकर द्वितीयामें बिभीषणको राज्यतिलक किया तृतीयामें जनकनन्दिनी प्रभुकेनिकट आईं,तबसत्य देववाणी सुनप्रभुने पत्नीको अंगीकार किया कृपार्णव रघुनाथजी दुःखितजान अत्यन्त दयाकिया, अरु परम प्रीतियुक्त वामभागमें बैठाय लिया,हेमुने उस समयकी शोभानहीं कहसक्ता,तदनन्तर चतुर्थीको महाराज पुष्प-कयानपर आरूढ़होअवधको चले,लषणसीताभालुकपिन युक्त भरद्वाजके आश्रमको आये, बैशाखमासकी पंचमी को भरद्वाजके आश्रम में बासकर महात्मा रघुनाथजीने चौदहबर्ष पूर्णकर सबकार्य्य किये,फिर षष्ठीमें भरतको नन्दिग्राममें सुन वहांआये,सबसमाज युक्त भरत शत्रुघ्न प्रेमातुर मिलतेभये,फिरसप्तमीमें अयोध्याको जायभरत

जीने सब राजसमाज समर्पणकिया, हेबीरोमुझसे लोमश ने कहाहै कि यशस्वी धर्म्मपूर्बक दशहजारबर्षराज्यकरेंगे तदनन्तर रजक के बचनसे जनकजाको त्यागकिया, अपनी कीर्तिके त्राससे तब सीताजीने जाय बाल्मीकिके आश्रममें बासकिया, फिर रामप्रेरित लक्ष्मण सीताजीको बलालायेंगे, बयालिसबर्ष प्रियाहीन रघुनाथजी अवध में ग्यारहसहस्त्र बर्ष राज्यकरेंगे औभरत, लषण, शत्रुघ्न युक्तराज्यकरेंगे अरु गुरुबशिष्ठजीकी सेवाकरेंगेतदनन्तर एकसमय बिषे मुनिकुल तिलक तपोनिधि अगस्त्यजी सभामें आवेंगे, तिन महात्माकी आज्ञासे अश्वमेध यज्ञ करेंगे, फिर रामानुज शत्रुघ्न ससैन्य तुम्हारे आश्रममें आवेंगेसत्यमानोंइसमेंसंशयनहीं८० उनकोभेंटसबसंशय दूर करियो, यहिप्रकार हमसे लोमशमुनिने कहा, तबमैं अत्यन्तहर्षितहो उन महात्माके चरणोंमें गिरकर बोला हेकरुणाकर मुनिनायक तुम्हारीकृपासे रामचरित्रश्रवण किया व रामस्वरूपका उरमें प्रेम समझपड़ा, अब अवश्य मुझको मनभाये अभीष्ट मिलेंगे, तुम्हारीकृपासे भवनिधिसे उद्धारहूंगा, यहकह फिर मैंने दोनोंहाथ जोड़ प्रणामकिया, तब करुणाकरमुनिचलदिये, हे संतरघुनाथ जीकेही सेवनसे सबकार्य्य सिद्धहोतेहैं यह बिचारि हेराजन् रघुनाथजीके चरणोंको भजनकरो योगयज्ञादि कोंका स्वल्पफलहै, अब अपनाधाम नाम संकोच त्यागिकै कहो अरु रघुनाथजीका ध्यानकर बाजिराजकी रक्षाकरो तब रघुपतिका यश सुनके सबको यह बिस्मय हुआ कि

देखो हमअज्ञानसे प्रभुकाप्रभाव नहींजानते ९२ इतिश्री पद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायां लोमशकरकेरामचरित्रकथनोनामषड्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हेवात्स्यायन मुनि से रामचरित्रसुन सबवीर हाथजोर बोले हेस्वामिन् आज तुम्हारे दर्शन पाय हमसब सनाथभये १ अरु आपने रघुनाथजीकायश बड़ी कृपाकरके कहा, अब जो आप पूंछें सो वर्णनकरें अयोध्याबिषे घटोद्भवअगस्त्यजीकी उक्तआज्ञासे महात्मा रामचन्द्रजी अश्वमेध करतेहैं जैसा कि आपने कहाहै, तिनका घोड़ा पालिबे हेत हमसब आयेहैं, बड़ीभाग्यसे आपकेदर्शन हुये २। ३ हमसब रघुनाथजीके दासहैं दर्शनपाय मनकी आशा पूर्णहुई, तब मुनिराज सरस मोहरसबाणी सुन रोम २ हर्षितहोगये, हर्षसे बिवस लोचन श्रवतेभये गद्गदगिरा होगई, तब धैर्य्य करके तपोनिधि रामभक्त बोले कि मेरेमनोरथका तरुवर आज सफलहुआ, अरु जिसकारण माताने उत्पन्नकियासो फल आज प्राप्तहुआ, अर्थात् निष्कण्टक त्रिभुवनका राज्य पागया ५।८ अरु अनेकन जो बेदपुराण देखेथे उसकाभीफल आजपाया, अरु जो अग्निहोत्रादि किये उनको फलीभूत आजहीजाना, काहेसे कि जोरघूत्तम त्रैलोक्याधिपतिकी सबसमाज देखी, मेरेभाग्यका कोईजन वर्णन

नहीं करसक्ता, अरुआजअवधपुरजाय प्रभुपदकंज जिनका सदैव ध्यान करतारहा सो देखूंगा ९।१० अरु प्रभुसेवा में निपुण बीरत्वभूषित हनुमान्जीको भेटैंगा, मेरेसमान धन्यकोईनहीं, फिरनेहपूर्वक कपिराज मुझसेकुशल पूछैंगे, व हमारी रघुनाथजीके चरणोंमें भक्तिदेख सुखी होंगे, यहसुन पवनपुत्र हनुमान्जी हर्षपूर्वक चरणोंमें गिरपड़े अरु बोले हेस्वामिन् दीनदयालु तुम्हारासेवक हनुमान् मैंहों, हेप्रभु अज्ञानजान कृपाकरो, अरु मुझको श्रीरामभक्तोंके चरणोंकीरजजानो मैंनेजाना कितुमसमान रामभक्त कोईदूसरा नहींहै, आरण्यकमुनि यहबाणीसुन अत्यन्तप्रसन्नहुये, अरु हृदयमें हनुमान् जीकोभेंटा, दोनों भक्त परमप्रेममें मग्नहरिका ध्यानकिया, दोनों प्रेमसेसिथिल होगये, मानों दोनोंजन चित्रकेसे होगये ११।१५ तब अंजनीनन्दन धीर्यकरके परमप्रीतियुक्त प्रभुकाध्यान कर मनको आकर्षणकर मृदुलबाणी बोले, हेस्वामिन् ये रघुकुलकेमणि श्रीरामचन्द्रजीके अनुजरणधीर शत्रुघ्न नाम जोतुम्हारेचरणों में प्रणामकरतेहैं इनने पहले लवणनाम दैत्यको मधुपुरजाय बधकर वहां अपनीकीर्ति प्रकाशकी १६।१८ अरुयेभरतपुत्ररणधीर पुष्कलप्रणाम करतेहैं इन्होनेभी बड़े२ बीरोंकोजीताहै, अरु ये उक्तमंत्री श्रीरामचन्द्रके प्रणामकरतेहैं, येसचिवराज रामचन्द्रको प्राणसमप्रियहैं औसद्गुणोंकेआगारहैं, ये सुबाहुनृपप्रणामकरतेहैंपरमभक्तशत्रुरूपी तृणको अनलहैं १९।२० इनकासुयश पृथ्वीपर छारहाहै हे स्वामी येसुमदराज

व कामद पुलकितगातसे बन्दना करतेहैं इन्होंनेभक्ति का बरदान लियाहै, अरु ये सत्यवान् बन्दना करतेहैं, ये गौप्रसादसे बड़ेभाग्यवान् हुये, अबरामाश्वनिजपुर आये जान सबराजसमाजशत्रुघ्नको अर्पणकिया, यह हनुमान् जीने बर्णनकिया, २१ । २४ तब हेतबढ़ाय मुनिराजने सबसे कुशल पूंछी, अरु स्वागतकरके कन्दमूलफल भोजन दिया, तब सबोंने भोजनकर शयनकिया, फिरप्रातःकाल उठ शत्रुघ्नजी मुनिबन्दना करके रेवातट जाय बेदविधानसे प्रातक्रियाकर मुनिके निकट गयेअरु, सुभग सिविकामें मुनिनायक आरूढ़कराय बहुतसे सुखदायक गणदेकर अयोध्यापुरीको भेजदिया, रामचन्द्रके दर्शनाभिलाषसे कौशलपुरमें प्रवेशकिया, अरु उक्त सूर्यबंशिन के मन्दिरदेख पालकीसे उतर प्रणाम किया, व सीता रामके दरशकी अत्यन्त लालसा बढ़ी २५।३० अरु आतुर चरणतो धरतेहैं, परन्तुप्रेमबश पैर न पड़ताथा, मनमें महासुखकिये अनेक मनोरथकरते समीप पहुंचे नगरकी सब अलौकिक शोभा देखा मुनिनायक जेहि स्थलकोसहजमें देखलेतेथे वहीमनको खींचलेताथाहीरा मणियोंके जटित सबमहलशोभायमानहोतेथे, सबपदार्थ देखे बन उपबन बाटिका तड़ाग जिनमें ३१।३२ अनेक प्रकारके कमल शोभायमान उनमें मत्त भ्रमर गण बिहरते, मैनकादि मनोहर स्वरोंसेअलापतीथीं, सबचराचरस्वतंत्र आनन्दपूर्वक बिहारकरतेथे, अरु ऋतुनायक मूर्तिवन्त सदैव बासकरताथा कुछदूरचलकर सब दुःख

हरणो सुखकरणो सरयूजिसके जलके स्पर्शसेसबपातक दूरहोते देखी ३३।३४ अतिनिर्मल वर्णन कैसेकरूं जहां रघुनाथजी मज्जन करतेथे तहां सरयूनिकट मणिमय मण्डपमें मुनिमण्डलीमें श्रीरामचन्द्रजीको देखा दूर्बादलकेतद्वत्शुचि शरीर, अनूपमवस्त्र धारणकिये, मदनचाप के समान भृकुटी, जलजनयन, शुभगश्रवण, बिशदकपोल अधरअरुण, उरबिशाल, भृगुपदललित शोभित, तीन रेखाउदरमें शोभित, शुभग कदली खम्भकेसमान जंघा पूर्णचन्द्रद्युतिके समान, नखोंकीद्युति, मृगशृङ्ग हाथमेंलिये श्रुतिकेअनुसार यज्ञकरतेथे, बामभागमें कञ्चनकी सीता विश्वमातु रूपगुणसे भूषित शोभायमानथीं, अरु भरत लक्ष्मण दोनोंओरसे चन्द्रवत् चकोरकी भांति देखतेथे, व सबको अक्षयदान देतेथे ३५।३८फिर ब्यास, अगस्त्य आदि ऋषियोंको देखा, यहिप्रकार सब मण्डली युक्त रामचन्द्रजीको देख अत्यन्त आनन्दितहुये, अपनीआत्मा को अत्यन्त धन्यमाना, अरु पुलकितगातसे आरण्यक मुनिबोले कि मैं आज प्रभुका स्वरूप देखकर धन्यहुआ अरु जो वेदशास्त्र स्मृति पढ़नेका फलअवधमें आय पुरुषोत्तमके दर्शनपाय पाया, जिनको योगेश्वर भजनकरते व ब्रह्मा शिवादि ध्यानकरते, तेऊनहीं इसरूपकी छटाको पायसक्ते तेपुरुषोत्तमको सीता लक्ष्मण भरतयुक्तमैं देख्यों इसकारण महाधन्यहुआ, यहिप्रकार मुनिनायक कहते२ ३९।४१ प्रेमवश होगये अरु शिथिलसे दृगोंसे जल बहनेलगा, तब मुनिराज तपोमूर्तिको देख रामचन्द्र

आतुर मखकार्य छोंड़चले, अरु ब्रह्मण्यरघुनाथजी भव-
भंजनके पारकर्ता मुनिके चरणनबिषे गिरे ४२तब प्रभु
को चरणोंमें देख मुनिराज आपभी दण्डकीभांति पृथ्वी
में गिरपड़े,हे वात्स्यायन जिनके चरणोंकाध्यान सुरनर
मुनि करतेहैं सो मुनिचरणोंमें गिरे, तब आतुरतापूर्वक
रघुनाथजीने मुनिको उठाय बरबश मणिमय सिंहासन
लाय बैठायकर शुचिजलसे चरणोदकलिया,सो चरणा-
मृतलैग्रहणकरके सबभवन सिंचनकराया,तदनन्तरभानु
कुलमणि बोले हेमुनिराज मैं आपकेदर्शनपाय सकलत्र
पवित्रहुआ,फिर चन्दनादिसे मुनिको चर्चित किया,फिर
कमलस्वरूपी हाथजोड़कर रघुनाथजी बोले हेस्वामिन्
हमने यह यज्ञ प्रारम्भकियाहै सो आज निर्मल होगया
अरु तुम्हारे चरणोंको स्पर्शकरके आजहमारे सबकार्य
पूर्णहुये अरु हे मुनिनायक तुम्हारे चरणोंके प्रभावसे
हमारा बिप्रबध पातकदूरहुआ४३।४५ यहिप्रकारप्रभुके
बचनसुनमुनिराज हंसिकैबोले हेस्वामिन् बालकस्वल्पहै
तुम्हारे गुण उदधिहैं जो आपने हमारापूजनकिया यह
ब्रह्मण्यपद आपने प्रकाशकियाहै अरु वेदधर्म्मके रक्ष-
णार्थ प्रकट होकर जगशिक्षा करतेहो, अरुजो गौ ब्राह्म-
णका पूजन भक्तिपूर्वक करतेहो यह मर्यादा बांधतेहोजो
यह आपने कहाकि बिप्रबधके शमनार्थ अश्वमेध करते
हैं यह सुनकर अतिहास्य होतीहै कि तुम्हारानाम एक
बार स्मरण करके मूढ़जन महाघोर पातकोंसे छूटपरम
धामको प्राप्तहोतेहैं यह श्रुति पुराण समस्त इतिहास

बर्णनकरतेहैं ४६।५० कि पापरूपी सघन अचल बनको तुम्हारानाम प्रचण्डाग्निहै तुम्हारेप्रेम हास्यप्रदबचनों से हर्षहुआ ५१ ब्रह्महत्यादि पातकजबतक गर्जतेहैं, तब तक प्रेमपूर्बक तुम्हारानाम रसनामें नहीं लियाजाता, महाकलुष, कुंजर को तुम्हारानाम शूलहै, तेहिते यहप्र-कटहै कि ब्रह्मबधादि पातक नहीं लगसक्ता कि ५२।५३ तुम्हारापुण्यप्रद दरश ब्रह्माण्डको पावनकारी है अरु मैं पूर्ब कृतयुगमें गंगातट मुनिवृन्दमें जो सुनाथा सो कहताहूं कि तबतक जीवमें पातक बसतेहैं जबतकजीव रामनामका जप नहीं करता औ इस तुम्हारेअभीष्टफल दाता नामके बराबर योग, जप, यज्ञ, दान, तप कुछ नहींहैं, तुम्हारा नाम सब कामोंका दाताहै, जो प्रभाव प्रथम मुझको लोमश मुनिने सुनायाथा सोईफल आज मुझको सत्यमिला, अरु धन्यहुआ ५४।५८ जो तुम्हारे दर्शनका प्रभाव जगदुर्लभ वेदने गायाहै सो मैं बिनुप्रयास पाया व बिषम भवनिधिकीत्रास मिटगई यहि प्रकार आरण्यकमुनि रघुनाथजीसे बर्णनकिया, ५६।६० तब सबमुनीश हर्षितहो बिनीतबचनबोले, कि हे आरण्यकमुनि परमसाधु सत्य२कथन किया, शेषजी बोले हे बात्स्यायन उससमय सभामें बड़ाआश्चर्य प्रकट हुआ, कि आरण्यकमुनि रामछबिमें आनन्द होकर दोनों भुजाउठाय बोले मेरेतद्वत् भाग्यबर न कोईहुआनहोगा कि जिसको ६१।६२ रामचन्द्र निजहाथसे स्वागतकर चरणधोय चरणामृत लिया, जिनके चरणोंकी रजकी

श्रुति बन्दनाकरतेहैं तिन महाराजने मेरा चरणजलपान किया, अरु अपनागृह पवित्र किया ६३।६४ मैं अपने भाग्यको कैसे बर्णनकरूं यहिप्रकार आरण्यक मुनिकहके ब्रह्माण्डफोड़ प्राण योगयुक्तिसे निकलकर मुक्तहुये जो मुक्ति योगिनको दुर्लभहै ६५ सो सायुज्यको प्राप्तहुये तेहिसमय आकाशमें देवतोंने दुंदुभीबजायी, अरु मुनिपर फूलबर्षाये, मुनिगण बिस्मय पूर्वकप्रशंसाकरनेलगेऋषि धन्यथे जो सायुज्य मुक्तिपायी ६६ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषबात्स्यायनसंवादे रामाश्वमेधभाषायां मुनेःसायुज्यमुक्तिबर्णनोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अड़तीसवां अध्याय॥

श्रीब्यासजीबोले कि हेसूत यह कथासुन धीमान् वात्स्यायन आनन्दपूर्वक हाथजोड़ शेषजीसे बोलेहेनाथ तुम्हारे कमलस्वरूपी मुखारविन्दसे अमृत तद्वत् कथा पानकरतृप्तिनहींहोती फिर आपश्रीरामचन्द्रजीकासुयश भक्तोंके हितार्थ बिस्तारपूर्वककहिये २ अरुश्रुतिमें निपुण आरण्यक धन्यहै जिननेरामस्वरूप हृदयमेंधारणकरदेह त्यागकिया ३ हे शेषजीअबआपकहिये किवहमुनिआश्रम त्याग हयराजकहांगया अरुकिस बरजोरनेबांधा उसका घोरसमर कहिये वहां रामयश कैसेहुआ अर्थात् केहि प्रकार वाजिराजमिला हे सर्बज्ञ सबसमुझायके कहोतुम रघुनाथजीके रूपहीहौ ४।५ हे सूत वात्स्यायनके ऐसे वचनसुन अहिनायक शेषजी आनन्दपूर्बक रामचरित्र

वर्णन करनेलगे ६ हेमुने साधुको प्रसन्नकरके तदनन्तर
अश्वराज उस आश्रमको त्याग सरितानिकट वेगमें वायु
को लज्जितकरते चला जहां हजारों मुनिगण बसतेथे वे
छवि देख२मुदितहोतेथे तिसपीछे सबकटक चलाजहां२
बाजिराज जाते तहां २ समस्त कटकभी चलीजातीथी
तेहि समयबिषे रेवानदीके अगाधजलमें घोड़ासमायगया
सबबीर बिस्मितहुये वह उछरतेनहीं परस्पर सब कहते
कि कैसे बाजिराज मखफलदाता निकलै अरु ऐसा कौन
बीरहै जो अगाध जलमें भेदनकर रघुनाथजीका अश्व
बिनाबाधाके लावै यहिप्रकार सब अनुमानकरते थकित
अंगहोगये तबतक कोटिन भटनयुक्त भानुकुलकेतु शत्रुघ्न
जी प्राप्तहुये तबसब सेवकोंने प्रणाम दण्डवत् कियाउनको
व्याकुलगात देख मेघसमान गम्भीरबचन बोले ७।१४
तुम सबबीर क्योंखड़ेहो व घोड़ा नहींदेखपड़ता सोकहां
गया कि इसशरमें प्रबेश करगया कि कोई कुटिलराजा
ने पकड़लियाहै सो कारण व्याकुलताका कहो कि क्यों
व्याकुलहो यहसुन सबबीर बोले हे स्वामिन् दोदण्डभये
कि बाजिराजने जलमेंप्रबेशकिया हम नहींजानते उसमें
किसीनेधराहै याकुछकरताहै हमक्याकरें जो आपप्रथम
चलैंतो अनुगामीभी प्रतिपाल आज्ञाकरके चलें यहबीर-
नकी बाणीसुन शत्रुघ्नजीने अत्यन्त दुःखकरके सुमन्त
से पूंछा हेमंत्रिबर शीघ्रउपाय बताओ जेहिसे अश्वपति
निकलै फिर ऐसा कौन बीरहै जो अगाधजल भेदनकरै
तबसुमन्त अवसरकेयोग्यनीतियुक्तबाणीबोले हेस्वामिन्

तुम्हारे बीरोंके अत्यन्त बिक्रमहै व सब थलमें गतागत होसक्ताहै आकाश पाताल जलथल सबकेकार्यकरसक्तेहैं अब आप मारुतसुत हनुमान् व भरतपुत्र पुष्कल युक्त श्रीरामका ध्यानकर आनन्दपूर्बक जलप्रबेशकरौअवश्य मखबाजि लाओगे व सबका संशय दूरकरौगे १५। २५ हे मुनिसुमन्तकेबचनसुन लवणारि आनन्दितहोकरभरत पुत्रहनुमान्समेतअगाधजलमें प्रबेशकियातबजलमध्यमें एकअनूपमनगर देखा जोशोभासे जगमगात अति द्युतिमान् २६ अरु सुमनबाटिका अनेकन रंगनकेबिहंगबिहार करते तहां एकमंदिरबिषे मणिमय खम्भबिषे घोड़ा बंधा था अरु वहीं मणिमय पर्यङ्कमें एक छबिसे भूषितनारि उत्तमवस्त्र धारणकिये बिराजमानथी परमप्रसन्नितदामिनिके समानद्युति प्रकाशित अरु सहस्रन मनोहर स्त्री चमर व्यजनलिये सेवाकरतीथीं २७। २८ सोतीनोंबीरोंको आतेदेख बोलींहे स्वामिनि तुम्हारे स्थलबिषे तीनबीर छबिवाले आतेहैं इनकाश्रोणित पक्कफलके समानहोगा अरु इनकेमांसमें अत्यन्त स्वादहोगा २९। ३० येबिगत त्रास कालबलीके घेरे यहां आयेहैं, हेमुने यहसुन वह कामिनि मृदुमुसक्यायकै इन्दुबदनी भृकुटि नचायकै देखनेलगी, तबतक तीनोंबीर त्रियनके निकट पहुंचगये, अरु जोबाम पर्य्यंकमें पड़ीथी उसको पुंड्रादिक चिन्हों सेचिन्हितसीतारामकी दासीजानप्रणामकिया, अरु त्रिय समूहदेखि अति बिस्मय किया, फिर परस्पर देखिकै कहनेलगे कि क्या आश्चर्य्य हमने देखा, तब उक्त स्त्री

बोली,हेबीर जो तुम अस्त्र शस्त्र धारणकिये मेरेगृहआये
सोतुमकोहो व तुह्मारागृहकहांहै,यहहमाराप्रेमबिमोहन
लोकदेवताओंकोदुर्लभहै,जेजनयहांआतेहैंवेफिरजानहीं
सक्के,अरुयह चमरछत्रसुबर्णपत्रयुक्त केहिराजाकाघोड़ाहै
अरु कनकपत्र क्योंबंधाहै समस्तहाल कहो,यहमनोहर
बचनसुनअंजनीनन्दनबिगतत्रासबिहंसिकेबोले३।१४०
देवशिरोमणि अवधेश श्रीरामचन्द्रके हमसब मनक्रम
से किङ्करहैं,उनके सिवाय हमको दूसरेकी आशानहीं
जेप्रभु अश्वमेध यज्ञ करतेहैं उनका यहघोड़ाहै,सो तुम
ने क्यों बांधाहै शीघ्रछोड़ो देरनकरो,अरु हमसब अस्त्र
शस्त्रमें निपुण,रणअजीत, रघुनाथजीके प्रतापसे हम
अशंकितहैं४२इससे बिनाबिचारेहीघोड़ाछोड़दो,यदिजो
नहीं छोड़ोगी तो शीघ्रही परास्त करके लैलेंगे,तब यहि
प्रकार अशंकित हनुमान्‌जीके बचनसुन वहबाला हंसिके
बोली,कि हमने बिगत संदेह तुह्माराअश्व बांधाहै जो
हजारोंबर्ष संग्राम करौ तौभीनहीं जीतसक्के हौ,हमयह
सत्यकहतीहैं यद्यपि हैं नारिही,अबमनलाय मेराबल
सुनौ,कि राजशिरोमणिरघुकुलतिलक श्रीरामचन्द्रजीकी
हम मनबचसे दासीहैं,इसकारण हम अश्वपति देतीहैं
कि स्वामीका यज्ञ कौन भंग करसक्ताहै,अरु मेरीबिनय
भक्तबत्सल दीनदयालुरघुनाथजीसे करियो,सबअपराध
क्षमाकरें संततके बिना यहगुण अन्यमें नहीं होता
४३।४८ तुमसब सीतारामके चरणानुरागी, परमभा-
गवत,यहां आकर बड़ेकष्टको प्राप्तभये सो हम प्रणाम

करतीहैं सब क्षमाकरियो,हेसुजान रणधीरो,अबसंकोच त्याग मनभावन बरदान मांगो,तब अंजनीनन्दनहनुमानूने यह बिनीत सरलबचन सुन हृदयसे आनन्द होकर बोले कि हमसब श्रीरघुनाथजीके प्रतापसे पूर्णकामहैं, यदि एकबर याचना करतेहैं कि जब२देह संसारमें धारणकरूं,तब २ त्रयतापनाशक श्रीरामही स्वामीमिलें अरु उन्हींके चरणोंका अनुरागरहै,यहसुन वहस्त्री हंसते व प्रशंसा ४६।५२ करतेहुये बोली,कियहबर देवतों को दुर्लभहै तुम्हारीमति शुभहै श्रीरघुनाथजीके प्रभाव से सिद्धहीहोगा,अर्थात् जन्म २ विषे श्रीरामही स्वामी मिलें अरु एक औरबरदान प्रमुदित ह्वैदेतीहूं, तुमको आगे राजाअग्र बीरमणि बड़ाबलवान् मिलेगा जिसकी रक्षागणनयुक्त सदाशिवजी करतेहैं, सो बल गर्बित तुम्हाराअश्व बांधैगा,उसके जीतनेके वास्ते एक तेजमय बाण देतीहूं५३।५४हेरिपुसूदन जबतुमसे संग्रामकरै तब उसीबाणके प्रतापसे बिजय पाओगे, औरउसीबाण से प्रतापअग्र युद्धमें व्याकुल होगा,तब रामस्वरूप जान करके बाजिराज समर्पण करेगा,अरुतुमको प्रणामकरेगा सबप्रमादको त्यागकरके व सर्बस्व समर्पण करेगा श्रुतिकेअर्थ शत्रुसंहार अस्त्रमेरा धारणकरो,यहसुन रिपुसूदन शुद्धआचमनकर उत्तरदिशाको मुखकरके योगिनि बाणलिया,हेसूत तेहिसमय बिषे शत्रुघ्नजीके अपूर्वतेज प्रकाशित हुआ सन्मुख कोई देखिनसके अरुशत्रुका मद तो देखतेई देखते क्षयहोगा तदनन्तर उन कामिनी ने

बिनयपूर्बकदराडवत् करके घोड़ा छोड़दिया, तब रामानुज पुष्कल हनुमान्युक्त शिरनाय हयसमेत जल बिलगाते हुये रेवातीर आगये, तब सबसैन्यघोड़ादेख प्रसन्न होकर कहनेलगे कि महाराज धन्यहै धन्यहै तुम्हारेबिना यह दुर्द्धर्ष कर्मको करै ५०।६१ तब हनुमान् जीने हर्षित होकर जेहिप्रकार बरप्राप्तहुआ व घोड़ा मिला, वह सब प्रसंग बर्णनकिया, जिसको सुनकर सबसैन्य अत्यानन्दित हुई ६२।६३ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषबात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेधभाषायां जलमध्यहय प्रवेशोनाम अष्टत्रिंशोऽध्यायः॥ ३८॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हेबात्स्यायन तेहिसमय शत्रुघ्न जीकी सैन्यमें बिजयपाय नगारा, भेरी मृदंग आदि बाजन बाजतेभये १ तदनन्तर रामानुजने बाजिराज को छोड़ा तबबायुके समानबेगवाले अश्वपति चलिकै राजा बीरमणिके ग्रामबिषे प्राप्तहुआ, जो देवरचित देवपुरनाम नगरथा, परम रम्य छबि देनेवाली रचनासे सुशोभित, बिन्ध्याचलके लजावनहारे सबमन्दिरद्युतिसे प्रकाशित होरहेथे २।३ अरु उत्तमोत्तम मणिरचित गोपुरथा हेमुनि अरुगृहबिषे एक २ सुशीला पतिव्रता पद्मिनीशोभायमान होतीथी, पुनः उनको दीप्तिरतिसेभी मनोहरथी अरु बिशद नीलमणिके रचितमन्दिर, सजल मेघसे देखकर मोरआदि पक्षी आनन्दपूर्बक कंगूरोंपर

नृत्य करतेथे, अरु नगरकेसमीप सदाशिवजीका रमणीय मनोहर स्थान शोभायमानथा, तेहिबिषे सब समाजयुक्त सदा शिवजी बास करतेथे, जेहि चन्द्रमौलिके बाससे वहां सदैव शुक्लपक्षही बिद्यमान रहताथा ५। ८ उसमें राजावीरमणि धर्मयुक्त राज्य करकेप्रजाकापालनकरतेथे, तिसकापुत्र रुक्माङ्गदनामरणधीर युवावस्थामें प्राप्त, स्त्रियोंको साथले जहां शशिशेषर सदाशिवका बास था, वहां कामके प्रकाशसे बनविहारको गया, वहां नूपुर कंकण किंकिणि की ध्वनिसे चारोंओर मनोज छारहाथा, अरु वहां सदाशिवजीकी कृपासे षट्ऋतु विद्यमान थे, जिससे अलि, पिक, कोकिलादि पक्षी मुदितहोकर मनोहर शब्द बोलतेथे, अरु उस उक्त बनमें मल्लिका, जुही, कर्णिका, कदम्ब, कदली, आदिक वृक्ष प्रस्फुरित होरहेथे तेहि बनमध्य राजकिशोरके पास कौतुकके अर्थ अनेकन शिवजीकेगण बैताल पिशाच आदिक आकर कोईतो दोनों हाथ पकड़ नाचते कोई करताल बजाते अर्थात् कामबिवश होकर सब निश्शङ्कथे कोई अपने साजबाज केसाथ बनमालाओंके आभूषणही बनातेथे, इसप्रकार राजपुत्र सबगणोंसे सेवित क्रीड़ा कररहाथा उसीसमय श्रीरघुनाथजीका बाजिराज चमर छत्र कनक पत्र से शोभित उसी स्थलबिषे आया, तब बिचित्रअश्व देख स्त्रियोंनेबिस्मयमान, चखचञ्चल चपलकरके पतिसे सुहावन बाणी बोलीं, हेस्वामिन् यहजो कनकपत्रसे शोभित गंगा जलके समाननिर्मल द्युतिमान् आपसबलहोकर इसको

पकड़ो,हेमुने तेहि समय स्त्री वशसे अपनाज्ञानबिस्मरण करके कामातुरतासे कामिनियोंके मुख देखकरशीघ्रता पूर्वक पकड़लिया, अरु अबलाओंके बीचमें कनकपत्र बांचकरके बिहंसिकै बोला यह आश्चर्य देखोमें कैसेकहूं कि मेरेपिताके समान कोईबल ऐश्वर्य्य युक्त इस समय में कोईनहीं,देखो तिनके बिद्यमान रामचन्द्रने निडरहो-करयज्ञाश्वछोंड़ाहै, अच्छाहुआ,हमारे पिताजीहीयज्ञकरेंगे अर्थात् उनसे बिजयपाय कौन घोड़ालेसकाहै,जिनकी रक्षा सदैव अहर्निशि गणनयुक्त शूलपाणि करतेहैं अरु देव दानव आदिउनको मस्तक नवातेहैं,तिनके सिवाय और कौन यज्ञ करेगा यहसंयोग आज अच्छापड़ाहै,हे बीरो घोड़ालेकर अश्वशालामें बांधोजाय यहराजकुमार केवचनसुन सबस्त्रियां अतीव रणकर्त्ता जानतीभईं,तदनन्तर उसी समयबिषे सबसमाजयुक्त राजपुत्र रुक्मांगद घोड़ालैकर नगरको आताभया,आकरआनन्दपूर्वकपिता भवनको जाय बन्दना करके बोला,हेतात एकरामचन्द्र अश्वमेधयज्ञ करतेहैं, सो यह स्वेच्छाचारी घोड़ा आया था तेहिकोमें आपके यज्ञ करबेअर्थ पकड़ लायाहूं, तेहि पीछेशत्रुघ्न बहुतदल लिये घोड़ादेखते आतेहैं,तब पुत्रके बचन सुनिकै राजामनमें दुःखितहो आंखें तरेरि बोला कि बिनाबिचारे यह क्या किया कि चोरीसे घोड़ाबांधि रे शठ घर भागआया, तुझको बारबार अपनेगुण कहते लज्जा नहीं आती,यहिप्रकार राजाने बारम्बार कहा, अरु जेहि बनमें सदाशिवजीथे, वहां बिकल होकरराजा

वीरमणि गये तहां उच्चासनविषे मस्तक में भस्म व चन्द्रमा धारणकिये,बामभागमें गिरिजा बिराजमान, सब अंगमें भुजंगशोभित ऐसेकृपालु सदाशिवजीकेनिकट जाय बन्दनाकी तब शिवजीने पूंछा कि क्योंब्याकुलहौ तबराजाने समस्तकथा कही सदाशिवजीने आरतबाणी सुन सेवक अनुमान करके बोले हे भूपमणि तुमने यह कठिनकर्म कियाहै कि महात्मा श्रीरामचन्द्र मेरे स्वामी जिनमहाराजने लीलामात्रसे रावणकाबधकिया, अर्थात् उनका ऐश्वर्य सबपृथ्वीतलमें प्रकाशित होरहाहै तिनका अश्वपकड़ा महाबिकट संयोग पड़गयाहै, देव दनुजमोहन अर्थात् अब यहां घोरसंग्रामहोगा अरु कोटिनवीरोंसमेत शत्रुघ्न घोड़ाकीराह देखतेचलेआतेहैं, तिनके ज्येष्ठभ्राता हमारे प्रभु जिनकाहम अहर्निशि ध्यानकरतेहैं तिनका यज्ञतुरंग तुम्हारापुत्र लेआया, महापातक किया, यद्यपि हे राजा इसरणविषे परमलाभहोगा, कि परमपददायक अपने चरणकमल महाराज दरशावैंगे, तब मैं तुमसमेत चरणों में शिरनाय सबपातक क्षमाकराय, तुरंगराजको देंगे, अब सजग ह्वैके घोड़ाको रक्षाकरो, जेहिसे शत्रु देख न सकै, हेमुने यहिप्रकार सदाशिवजीने बर्णनकिया, सो सुनकर राजादोनोंहाथजोड़बोला, हे नाथक्षत्रिनका धर्म्म अत्यन्त कठिनहै, केहिप्रकारसे यज्ञाश्व पकड़ाहै हृदय में दारुण सन्देह होताहै, देखोउनके बलबिभवके प्रतापसे सबराजा भेंटलेकै मिलतेहैं ५२ सो उनकाघोड़ा पुत्रने पकड़लिया, अब कोईउपाय नहीं अनुमानमेंआता, अरु

रामचन्द्र जब समरमें क्रुद्धितहोंगे तब हे महेश तुमको कुछ अवलम्ब न होगा, अरु भयभीत होकर चरण शरण में प्राप्तहोंगे, तब रिपुगण हमारी हास्यकरेंगे, औ मैंमन बचसे तुम्हारा दासहूं मुझको कादर अधमकहतेहैं, सोमैं भयबश कादरतासे मनतो गिरताजाता वसबांग शिथिल होताजाताहै, हे मुनि राजाके बचनसुन उमानाथ वृषकेतु भविष्य हेतु देखिकै हर्षपूर्वक बोले हे राजन् हृदय से ब्याकुलता त्यागकर घोड़ा पकड़कर संग्रामकरो, मैं सब प्रकारसे तुम्हारीरक्षा करूंगा, यह मेरी सत्यबाणी मानों, जब रघुपति समरबिषे आवैंगे, तबमैं चरणोंमें प्राप्त होकर तुमको सन्मुख करके सबपातक क्षमाकराऊंगा, यद्यपि रामानुज शत्रुघ्नजो भी हमारे पूजनीय स्वामी हैं, उनसेभी संग्रामकरना अनुचितहै, यद्यपि तुम्हारेअर्थ घोरयुद्धकरूंगा, औरबीर शत्रुघ्नके सिवाय सब तृणवत् हैंतिनसे तुमजाय संगरकरौ अरु मुझको अपना रक्षक जानियो, मैं जबतक श्रीरघुनाथजी न आवैंगे, तबतक त्रैलोक्य चढ़ने परभी अश्वपति न पावैंगे, तेहि समयबिषे सदाशिवजीके ये प्रियबचनसुन भयत्याग आनन्दपूर्वक समरहेत उत्साहका अनुमानकिया ५६ इतिश्रीपद्मपुरा-णेपातालखण्डेशेषबात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेध भाषा-यांबीरमणिहयग्रहणंनामएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले कि हे द्विजोत्तम तब रामादलमें सब

बाजिरक्षकबीर अश्वपतिको न देखकरपरस्परकहनेलगे किबाजिराज कहांगये१कोऐसाहै जिसने चुरालिया,देख नहींपड़ता, यमपुर गमनका साज किसने किया, व लघुमतिसे प्राणगवांये, यहिप्रकार परस्पर कहतेहुये व्याकुलगातसे चारोंओर ढूंढ़तेथे २१३ तब रघूत्तमशत्रुघ्न जी सबदल युक्तआगये, अरुसेवकोंको बिस्मितदेखमेघ के तद्वत् गम्भीर बाणीबोले,कि स्वर्णपत्र शोभित घोड़ा नहींदेखपड़ता कहांगया,तबअनुचरोंनेउत्तरदिया,हेनाथ इस बिकटबनमें बाजिराजने प्रवेशकियाथातिससेनिकल ते नहींदेखा,तब सब मार्गोंको अन्वेषण अर्थात्‌ढूंढ़ाभी नहीं मिलता महाराज अबआप संशोधन करके उपाय करियेजेहिसे रघुनाथजीको यज्ञतुरंग बिनुप्रयास मिलै ४।६तब राज शिरोमणि रघुकुलतिलक यहसुनमंत्रिराज सुमन्तसे बोले हे मंत्रिबर मुझसेकहो कि इस रमणीय नगरीमें कौन राजारहताहै अरु उसकेपास कितनीसैन्य है फिर यज्ञाश्व कैसे उससे छूटै,यह सुन सुमन्त मनोहर नीति युक्तबाणी बोले,महाराज इसनगरका देवपुरनाम प्रसिद्धहै उसमेंरणधीरप्रतापनिधि भीमकर्म्म करनेवाले बीरमणि श्रुतिके अनुसार प्रजा पालन करतेहैं अरु उन महात्मा कीरक्षा अजीत प्रलय कालवाले महारुद्र भक्ति बश ह्वैकै सदैव ७।८ करतेहैं यद्यपिजो इसने तुम्हारा तुरंग धराहोगा,तोमहाघोररणहोगा रणमण्डलमें अनेक सुभट शिरोमणि गिरैंगे हे राजन् इससे संशय दूर करके सचेतहो,अर्थात् बुद्धिबल युक्त व्यूहरचिकैसेनाकी

रक्षाकरो १०।११ यहसुन रघूत्तम सैन्यब्यूह रचिके खड़े
हुये तेहिअवसरबिषे रणकौतुक देखनेके अर्थकलह प्रिय
नारदमुनि आये, शत्रुघ्नजीनतपोमूर्त्ति मुनिराजको आते
देख आतुर आगे चलकर चरणोंमें मस्तक नवाय अर्घ
पाद्य देकर बेदानुसार स्वागत किया१३।१६ अरु फिर
मुनिकी बन्दनाकरके हाथजोड़ बोलेहे द्विजोत्तमयहकहौ
मेराघोड़ा केहिओरगया औ किसनेपकड़ाहै अरु यहबड़ा
सन्देहहै कि पंथगतिमें निपुण दूतोंनेभीन देखा १७।१८
हे मुने जेहिप्रकार यज्ञतुरंग प्राप्तहो वहउपाय वर्णनकरौ
यहसुन नारदरामगुणगातेहुयेरणदेखनेकी आकांक्षाकिये
बोले यह जो सन्मुख नगर है इस राजा का पुत्र सहित
स्त्रियोंकेबनबिहारको गयाथा उसीने तुम्हारा घोड़ापक-
ड़ाहै अबवही पितायुक्त चतुरंगदललिये रणकेअर्थ आता
है हे रामानुज यहां महाघोर १६।२० संग्राम होगा जि-
समेंकोटिनसुभटमणिप्राणत्यागेंगे तेहिसेआपयत्न बिचा-
रिकै रणमें सैन्य सम्हारि खड़ेहोअरु अगमब्यूहकोरच-
नाकरौ जिसमें शत्रु भेदन न करसकै तुम संशयको दूर
करौतीनलोकमें ऐसाकौनहै जोरघुनायकरामचन्द्रजीसे
बिजय करे, अरु यहशत्रु कठिनतासे बशहोगा २१।२३
यहकहिकै मुनिअन्तर्द्धान हुये, बीणाको बजातेहुये दारु-
णयुद्धदेखने की लालसासे आकाशमें स्थिरहुये, देवा-
सुर संग्रामके समान जानिकै तपोनिधि समरमें रुचिब-
ढ़ाई, २४ इहां राजाबीरमणि शिवजीको हृदयमें धारण
किये घरआय अपने सैन्येश को निकटबुलाय, जलदके

समान गम्भीरबाणीबोले हेसैन्येश पुरमें पणव निशान
सेसबको सूचितकरो किजहां शत्रुघ्नजीकी सैन्यहै सब
जन सजि २ वहांचलैं यहसुन गजऊपर ढोल अर्थात्
नगारा धरिकै पुरमें पुकारनेलगा हेक्षत्रियो राजाकी
उक्त आज्ञा सुनो,जेबीर रणधीर पुरबिषे बसतेहैं ते सब
अपने २ साजबाजसे पयानकरो,चतुरंगिणी सेनासाजि
शत्रुघ्नआयेहैं,तिनपर राजाबीरमणि तुमलोगोंके युक्त
संग्रामके अर्थ आनन्दपूर्बक जानाचाहते हैं,यदि कोई
उक्तराजाकी आज्ञा न मानेगा तो चाहे पुत्रहो, याभाई
अथवा सुभटहो उसकाकालरिपुकेसमान राजाहीहोंगे
यहराजाका बचन सुनिकै शीघ्रताएूर्बक पयानकरो,
अर्थात् यहबिचारकर आनन्दपूर्बक शत्रुघ्नसे युद्धकरो,
यहिप्रकारकहतेहुये सबनगरमें राजाकीआज्ञाप्रकाशि-
तकर राजाके निकट गया,तबसब बीर राजाकीआज्ञा
सुनकर हर्षितहोकर अस्त्र शस्त्र व शीशमें त्राण अंगमें
सन्नाह साजनेलगे,वउत्तम सुबर्णमय रथोंमें आरूढ़हो-
कर वमत्तमतंग वतुरंग बरूथअर्थात् हाथी घोड़ोंकीअ-
वली,अरुपैदलोंके यूथप ऐसे २ सौकिरोड़ बीर सिमि-
टिकै राजाके द्वारमें जातेभये २५ । ३६ तेहिसमय रु-
क्मांगद नाम राजपुत्र समरके हेतु क्रोधकरके सुबर्णम-
य कवच शिरत्राण बायुके बेगवाला उत्तमरथमें आरूढ़
अस्त्र शस्त्रसे भूषितहोकर भूपतिकेद्वार आया ३७ ते-
हिका अनुज महारणधीर शस्त्रबिद्यामें निपुण शुभांगद
नाम,वहभी कवचटोप शस्त्रादिक साजिकै रथहांक राज

द्वार आया ३८ अरुराजा बीरमणिके छोटेभाई बीरसिन्धु बलनिधान समरके अर्थ वहभी राजद्वार आये, अरु बीरसिन्धुका पुत्र बलमित्रनाम रणधीर युद्धकेसाजसाजि राजद्वारआया व रणकर्त्तादेख सबके मनभाया, तदनन्तर सेनाध्यक्षने सबचतुरंगिणी सेना तैयार देख चार अनीबनया ३९। ४२ राजाके निकटजाय कहाकिसब सैन्य तैयारहै, यहसुन राजा बीरमणि आपभी अस्त्रशस्त्रलैकर उत्तमरथ मणिमय जटित उसमें आरूढ़ होकर आज्ञादी कि जुझाऊबाजा बजाओ ४३।४४ तब बीरोंने गोमुख, बीणा, दुंदुभी आदि रणमत्त बाजाबजाये, रणधीरों ने जुझाऊ बाजासुनकर अत्यन्त आनन्दित बीर रसमें प्राप्तहोगये वकादरजन शंकबशहोकर धैर्य्यत्यागदिया ४५ तब राजा आनंदपूर्बक सिन्धुके समान दललैकर सब बीर अस्त्रशस्त्रसे भ्राजित, बन्दीजन यश गानकरते, व मत्त हाथी गर्जते, घोड़े हींसते, रथसमूह तर्जते, सुभटगण गर्जते, व रणमत्तबाजा बाजते चले, हे मुने सो शब्द आकाशमें पूरितहोरहा, अरु रेणुकेउड़नेसे सूर्य्यनारायण आच्छादित होगये ४६। ४७यहिप्रकार रणउत्साह से चतुरंगिणी सेना युक्त राजा बीरमणि आये, जैसे प्रलयसमयमें मेघ क्रोप उमगते संसारडुबाने आतेहैं४८तबशत्रुघ्नजीने सन्मुख रिपुकाकटकदेखसुमंतसेबोले हेमंत्रिराज राजाबीरमणि जिसनेहमाराघोड़ा बांधाहै, वह चतुरंगदललिये महाघोरसंग्रामको आताहै तिससे किसप्रकार संग्राम करनाचाहिये, मेरी सैन्यमें

प्रथम रणकर्त्ताओंके नाम बर्णनकरो जिनसे बिनुप्रयास जयतिपत्र मिलै सुमन्त बोले हे धीरमणि,जो यह बीरमणि आनन्दपूर्बक चतुरंगदललिये रणके अर्थ आयाहै तिससे प्रथम रणधीर पुष्कल रणकरैं,तदनन्तर और सुभटमणि पठाओ जो शत्रुनसे युद्धकरैं, अरु तुम शिवजीसे अथवा बीरमणिसे युद्धकरो,द्वन्द्वयुद्ध आनन्दपूर्बक करियो अवश्यकरके तुम्हारी बिजयहोगी,अब सब सैन्यको आज्ञादीजिये कि यथायोग्यसंग्रामकरैं,अवश्य करके रघुराजके प्रतापसे जयहोगी४६ । ५४ हेवात्स्यायन शत्रुघ्नजीने यह सुनकर गम्भीरबाणी बोले हे सब रणधीरो हर्षितहोकर युद्धकरो जेहिसे हमारी बिजयहो यहसुन सबबीर जुझाऊबाजा बजातेहुये आनन्दपूर्वक युद्धको चलतेभये ५५।५७॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपाताल खण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायांबीरमणियुद्धनिश्चयोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हेवात्स्यायन तदनन्तर रामदलके रणधीरबीर, बीरमणिकी सैन्यमें प्रवेश करके घोरयुद्ध करनेलगे१ जिससे अनेकन घोड़ा,हाथी,रथ,पैदलप्राण त्यागिकै पृथ्वीमेंगिरगये,तब बीरमणिके बीर घोरयुद्धसे त्राहि२करते हुये भागनेलगे२ यहसुन रुक्माङ्गद नाम राजपुत्रमहाक्रोधकरकेउत्तमरथमें सवारहोकर अशंकित धनुषबाण व अक्षयत्रोण उभयत्रधारणकिये,महाक्रोधसे

अरुणनेत्र होकर, श्रवणपर्य्यन्त धनुषखैंचकर बाण छो-
ड़े३।४ जिनके दारुणबाणोंके लगनेसे रामादल त्राहि २
करकेभगा, तब सैन्यको भगायके राजपुत्र गर्बित होकर
गर्जताभया, किशत्रुघ्न, वपुष्कलयेसबकहांहैंक्योंनहींसन्मु
खआते, उसीसमयभरतपुत्र पुष्कलनिजसैन्य परास्तदेख
शीघ्रतापूर्वक सन्मुखआये, देखतेही राजपुत्रबोलापुष्कल
भलेआये, मैंतुमको रणधीरजाना, अबमुझसेयुद्धकरोबिना
मेरेजीते बिजय नपावोगे, यह सुनतेहुये बिहंसिकै पुष्कल
शरासनतानि तीक्ष्णबाण प्रहारकिये, तबबाणोंको आते
देखतेही तिलकेसमानखण्डकरदिये, अरुतीषेबाण पुष्क-
लके हृदयमें मारे, वे बाणसहकर भरतपुत्रने दारुणबाण
फिर प्रहारकिये, यहिप्रकार दोनोंबीर परस्पर युद्धकरने
लगे, जैसे पूर्वमेंस्वामिकार्त्तिक व तारकसेहुआथा, तबभर-
तपुत्रनेदशबाणत्यागकरकेरुक्मांगदकोबिरथकिया ५-८
अर्थात् चारबाणोंसे चारोघोड़े, द्वैबाणोंसेरथ, एकसे ध्वजा
९-१० द्वैसे सारथी, एकबाण हृदयमेंमार यहिप्रकाररणम
ण्डलमें बिरथकिया, दोनों सेनाओंकेबीरपुष्कलका बिक्रम
देख प्रशंसा करनेलगे, ११।१२ अरु रुक्मांगद रथ सार-
थीसेभंगहोकर अत्यन्त क्रोधकरके अपररथमें आरूढ़हो-
कर १३।१४ सन्मुखआय बोला, हेपुष्कल तुमने अतीव
विक्रमकिया अब कहांजाओगे मेराभीविक्रमदेखो, अर्थात्
मेरेबलसे गगनपंथको रथसमेतजाओ, यह कहकर भ्राम-
कबाण निकाल मंत्रपढ़िकै धनुषमेंचढ़ाय प्रचारिकै छोड़ा
१५।१८ वहबाण पुष्कलके रथमें लगतेही रथयुक्त उड़िकै

गगनमें भ्रमनेलगा एकयोजन के ऊपर, तब बड़ेकष्ट से सुजान सारथीने उतारा १९।२० तब सन्मुखआय रामानुज बोले हेराजपुत्र अब सुरपुर जाय देवतोंसेपूजितहो, क्योंकि तुमऐसे सुकृती पृथ्वीतलके योग्य नहींहो, यह विचार तहां भोगकरौ, बेद पुराण कहतेहैं किसौयज्ञकिये स्वर्गहोताहैं, सोपद मैं तुमको सदेह देताहूं, यह कह प्रचण्ड भ्रामक बाणका प्रयोगकरके धनुषमेंधारणकरके प्रहारकिया वहबाण लगतेही रथयुक्त नभको उड़चला अर्थात् रथ सारथी अश्वन सहित तृणकेसमान उड़ते २ सबलोक भ्रमणकर सूर्यके निकटगया तबसूर्यकीज्वाला अर्थात्तेजसे रथसारथीयुक्तभस्महोगया तबसदाशिवजी कास्मरणकरके महाव्याकुलहो पृथ्वीमेंगिरपड़ा २१।२७ हेमुने तब प्रतापी राजपुत्रको मूर्च्छितमें अत्यन्त पीड़ा हुई, तिसको सबसैन्यने अत्यन्त व्याकुल देख आरत शब्द पुकारते भागचली, पाछेकोईनहीं देखसक्तेथे हाहाकारकरते भागेजातेथे, तबपुष्कलको बिजयसेरामचन्द्रकी सैन्यपरमानन्दितहुई, वहां बीरमणिने दग्धगात सेमूर्च्छित पुत्रकोदेख, हृदयमें दारुणक्रोधकरके पुष्कल पर चढ़ाईकी, सेनक्यामानों समुद्रउमंगेहैं, अरु सुभटमणिके चित्तमें अतीवहर्षहुई, तेहिसमय पृथ्वी, बन, पर्वत सब व्याकुलता से कम्पायमान हुये, अरु राजा बीरमणिप्रचंड बाणधनुषमें धारे शत्रुघ्न व पुष्कल, रिपुकहां हैं यहकहतेहुये पुष्कलपै, आये २८। ३३ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेशेषबात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभा-

षायांपुष्कलविजयोनामएकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय॥

हेवात्स्यायनतब सिन्धुके समान गम्भीर दलपुष्कल पै आतेदेख, अंजनी नन्दन हनुमान् जो शीघ्रतापूर्वक भरतपुत्रके सहायके अर्थ आगये १ अरु अरुणनयन क्रोधसेपूरितगर्जते तर्जते वीरमणिकेओरगये २तबपुष्कल हनुमान्जीको रिपुकेऊपर क्रोधकिये जातेदेख बोले ३ हेसुभटमणि तुमयुद्धकरने क्योंआये, यहअल्पसैन्य काहीके निकटजानो, अरु यह बलविहीन राजातुम्हारे देखतेही देखते मारौंगा ४।५ अरु जो तुमपरतीनलोकभी एकत्र होकर चढ़ैं तबभी तुम निमिष मात्रमें जीतसक्ते हो, ये स्वल्पसैन्य जो सन्मुखहै इसकी क्या बातहै, हेतात तुम्हाराआगमबहुतहै अबतुमशत्रुघ्नजीके निकट गमनकरो, श्रीरघुनाथजी के प्रतापसे रणसमुद्र से सब सैन्यको मुहूर्त्त मात्रमें पारउतारूंगा जैसे कि प्रथम में तुम्हारीकृपासे दनुजबंश रणसमुद्रके पार हुआथा, यह विचार आपसन्देह दूरकरो प्रभुका सुमिरणकरके मैं जीतौंगा जिनके नाम स्मरणसे नर भवसागर पारहोते हैं,यहतो लघुसमर अल्पसैन्य बिनुप्रयास जीतौंगा, हे तात अब हर्षितहोकर शंकाको दूरकर महाराज रामानुज निकटजाओ, तबधीर गम्भीर, निडरबचन सुनकर हनुमान्जी बोले हेपुत्र यहराजा बड़ा बलवान्है व एक गुण इसमें और है कि जो इसकी शरणागत आताहै

तिसको प्राणोंके समान रक्षाकरताहै,तेहिसे तुम हठ न करो इसकेसंग युद्ध परिहरौ अर्थात् त्यागकरौ अरु तुम बालक सुकुमारहौ, यहराजा प्रबलधनुर्द्ध रहै अरु शत्रुन की अवली अर्थात् पांती समूहजीतेहैं, फिर सदाशिव गणनयुक्त पुरसमीप बासकिये इसकी सदैव रक्षाकरतेहैं, तब पुष्कल बोले हेतात तुमने यहकहाहै कि भक्ति वश पुरसमीप शिवजी रहतेहैं यह हृदयमें प्रकाश नहीं तेहिते यह राजा अबलहै, तात्पर्य्य इसका यहहै कि मेरे हृदयमें सदैव धनुष बाण धारणकिये अखिललोकपति बसतेहैं, जिनसेपरे शिव ब्रह्मा कोईनहींहैं १७॥ और जहां रामचंद्रहैं वहींसब स्थावर जंगम जीवहैं तेहि से हेतात मैं शंकाबिगत राजा बीरमणिसे जयतिपत्र लेऊंगा,अब तुम मेरीचिंता छोंड़ बीरसिन्धु से युद्धकरो, यह अशंकित बचन सुन हनुमान्जी आतुरता से बीरसिन्धुपर पहुंचे, व युद्धकरनेलगे, फिर लक्ष्मीनिधि शुभांगदसे भिड़तेभये व बलमित्र से सुमद भूप घोरयुद्ध में आरूढ़ हो तीक्ष्णबाण छोड़नेलगे, तब भरतपुत्रने राजाबीरमणि को भस्म त्रिपुंड मस्तकमें व अक्षमाल धारे लोचन अरुण महाक्रुद्धित डमरू त्रिशूल ध्वजा उत्तमरथमें आरूढ़, घोड़े बायुको लजातेहुये आते देख सुभट शिरोमणि भरतपुत्र आतुर रथचलाय आनन्दपर्वक राजाके सन्मुख पहुंचा,तब बालक देख राजा बोला रेबालकरणमें क्योंआया, जल्द भागिके प्राणोंकी रक्षा करनहींतो प्राण लोपहोगा,अरु जोमें तेरेसाथ युद्धकरूं

तो मेरीकीर्त्ति भंगहोगी,तुझको बालकदेख दयाआतीहै,
इसकारण रणसे भागजा, जब तक मैंने देखा न था तब
तक तो क्रोधथा यदि तैंने पुत्रको भी मूच्छित किया है
परन्तु मैंने तुझको देखकर दयासे सब अघक्षमा किया
अब रणत्याग आंखों से बाहर हो नहीं तो फिर क्रोध
उत्पन्न होगा यहिप्रकार राजाकी निर्भय बाणीसुन
बलनिधान भरतपुत्र बोले हे राजन् जो यह तुम बर्णन
कियो कि तुम बालक हमवृद्धहैं सो यहरीति क्षत्रिनके
नहीं है अन्यबर्णों में है १ औ रणकोबिद अर्थात् रण-
बिशारद वृद्ध माननीय जो आप अपने मुखसे तुमने
बड़ाई बर्णनकी सो अज्ञानहै,मैंने तुम्हारे पुत्रका अघ
देख बिधिपूर्बक फलदेकर मूच्छित किया अब तुम्हारा
धर्म्म यहहै कि मुझको प्रचण्डबाणोंसे पृथ्वीमेंगिराइये
अबयत्नशोधिकै यह बिचारकर सजगहो सैन्यसम्हारि
युद्धकरो,मैं श्रीरामचन्द्रजी का अनुगामीहूं मुझकोसुरेन्द्र
का भी भयनहींहै,तब सगर्बपुष्कल की बाणीसुनबालक
जानसुभटमणिहंसे तदनन्तरक्षत्रिधर्म्मकास्मरणकरफिर
क्रोधकरकेप्रचारिकै बाणप्रहार कियेतब राजाको सरोष
देखपुष्कलभी तूणीरसे जाज्वल्यमानदीप्तिवालेबाणशी-
घ्रतापूर्बक राजाके उरमें प्रहारकिये, ३ ३ राजाने बाणों
को आते देख अपने तीक्ष्णशरोंसे खण्डन करदिया,तब
बाणव्यर्थदेख भरतपुत्रमहारोषसे औरतीनबाणसन्धाने
ते आतुरबाण राजाकेलिलाटमें भेदनकर अतीव पीड़ित
किया तेहिसमय राजाबीरमणि व्यथितहोगये,फिरबल

सम्हारि नौबाण सर्पके समान तीव्रगामी प्रहारकिये, तेबाण पुष्कलकेशरीरमें भेदनकर शोणितकीधारा प्रकटातेभये,तब रणधीर भरतपुत्रने आतुरतापूर्बक सौबाणप्रहारकरके राजाको छिन्न भिन्न करडाला अर्थात् शीशत्राण, सनाह, रथ, सारथी, धनुष सब काटकरके राजाकेहृदयमें रुधिरधार बहादिया,उस समय राजाके व्यथातो अत्यन्त प्रकटभई परन्तु मन कुछभी न मोरा, फिर अपररथमें आरूढ़होकर चण्डको दंडमें बाणचढ़ाय पुष्कलसेकहा हेरामचन्द्रके चरणानुरागी तुमने मुझको बिरथकरके अपनाबिक्रम प्रकटकियो तातेतुम धन्यहो, अब सचेतहोकर मुझकोकालरूप अनुमान करके धनुष बाण दृढ़तापूर्बक धारणकरो, यह कह असंख्यन बाण छोड़े तिनसे दिशा बिदिशा सब पूरित होगई अरु सब पृथ्वी शरमयी सूझनेलगी, व कोटिन बीर जूझनेलगे, मतवारेहाथी व घोड़ोंकेसमूह निर्जीवहोकर पछारखाइ२ के ४१।४२गिरतेभये, व रथयुक्त सारथी भी असंख्यन खण्डित भये, अरु अगाध रुधिरनदी भी बहनेलगी, तिसमें मत्तमतंग पर्बतोंके समान,व बीरों के कच अर्थात् बार सेवार के समान व बीरोंके मुंड कच्छप के समान, शोभायमान होतेथे,व गृध्रआदि पक्षी आनन्दपूर्बकमांस भक्षण करते थे व बीर प्राणछोड़के टूटेवृक्षके समान गिरतेथे हे वात्स्यायन ऐसी घोरनदी तेहिसमय महा संग्रामसे बहतीभई ४३।५० तिसका घोरशब्द सुनिकै कादरजन अत्यन्त ब्याकुलहुये तेहिसमय मनुज कपाल

लियेअसंख्यनयोगिनी पुष्कलकीसैन्यमें अर्थात्रामादल
मेंप्रकटहोकररुधिरमांस भक्षणकर नृत्यकरनेलगींतदन-
न्तर पिशाचभीप्रकटहोकरमृतकहाथीकेमंजीराबजातेहुये
मांसभक्षणकरके प्रमुदितहुये, अरुगीध, शृगालआदिमांस
भक्षोजीव आनन्दपूर्वक शब्दकरतेभये यहदेखकादरजन
अशरणहोकरहाथियोंके उदरमेंछिपतेभये, हे सूत योगिनी
करतारी बजातेहुये उदरसे आंतें निकाल रुधिर पीजाती
थीं तब भरतपुत्रने अपनी सैन्यको क्षीण व्याकुल देख
अनन्त बिकरालबाणमारे, जिनसे अनेकनबीरशीशत्याग
पृथ्वीमेंगिरे, व अनेकनरथ हाथीघोड़ेभी गतप्राणहुये५६
रणमें रुधिर नदी ऐसी बिकरालबही, मानों ताम्र प-
र्णी नदी रणकौतुक देखने आईहै अरु पुष्कलके बाणल
गतेही अनेकनबीर प्राणत्याग सुरपुरको प्राप्तहुये, हेमु-
ने तेहिसमय भरतपुत्रके बिक्रमसेराजा बीरमणिकी सै-
न्यमें ऐसाकोई न बचा जिसके शरोंसेखण्डहोकर रुधिर
नबहताहो, सब बीररुधिर श्रवतकिंशुककेसमान शोभित
रणकीइच्छात्यागदी तेहिसमय पुष्कलबड़े बेगवालेदश
बाण राजाके हृदयमें मारे वे तीक्ष्णशर कवचको भेदन
कर अंगमें प्रवेशकरगये, तबराजाके हृदयमेंअतीवपीड़ा
हुई, व पुष्कलको महाबलवान् सूचितकिया, अरुमहा-
क्रोधकरके कोटिनतीक्ष्ण बाणोंसे शरपंजरछायदिया, जि-
ससे भरतपुत्रकारथ आच्छादित होगया, तबपुष्कलके
अत्यन्त पीड़ाब्याप्तहुई व बिकलहोगये अरुसब सैन्यमें
खल भल पड़गया किसीको संग्रामक्या धनुष सम्हारने

तकका सावकाश नहींमिलता तब श्रीरामचंद्र के चरणों का स्मरण करकेपुष्कलने धनुषचढ़ाय रिपुनाशन बाण प्रहारकरके उसशरजालको क्षयकरकेजयशंख बजातेहुये बोले हेराजा वीरमणि कौतुककरके हमको तुमने ग्रसन किया, सोतुम गुणधाम वृद्ध मोकोसंग्राममें पूजनीयहो, अबमेराभी बिक्रम देखो, क्योंकि तुमभी रणकर्त्ता कहातेहो व वीरमणि तुम्हारा नामहै यह कह हंसिकै महा कराल तीनबाण निकालकरकहाकि जोइन बाणों से तुमको मूर्च्छित न करों तो यह सत्य प्रतिज्ञा सुनौ जेजन सुरसरिता जगत् को पावन करनेवाली गंगा के निकट जाय आलस्यसे मज्जन नहीं करते तिनका पातक मुझको प्राप्तहो, जो मूर्च्छित नकरों ५७। ६६ असविचार सचेतहो,यहसुन राजावीरमणिमहारोषकर-के अनेकन बाणछोंड़े ,तेबाण पुष्कलकोउर विदारि पार हो पृथ्वीमेंगिरे, जैसे हरिविमुख अधोमुख होकर पश्चि-तायकै नरकमें गिरताहै, तब सुभटमणि भरत कुमार एक प्रज्वलित बाण छोंड़ा तब पावकते प्रचण्डबाण आतेदेख राजाने शीघ्रता पूर्वक बाणसे व्यर्थकिया,तब बाणव्यर्थ देखभरत पुत्रने अत्यन्त क्रोधकरके माताकी सेवायुक्त दूसरा बाण संधान किया,उसकोभी राजाने खण्डितकिया,द्वितीय शरकोभी खण्डितदेख शोचकरके रघुनाथ जीका स्मरण कर तृतीय बाण छोंड़ा सोमहा दारुणबाण राजाके हृदयमें लगा, लगतेही वीरमणि मूर्च्छितहोकर मुरझाय अचेतहोकर पृथ्वीमें गिरगया

राजाको विकलदेख सबसुभट हाहाकार करते सशोक भागतेभये,तबरणधीर भरतपुत्रनेविजयपाय जयशंखबजाया७०।७७इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्वादे रामाश्वमेध भाषायां पुष्कल विजयोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

तेतालीसवां अध्याय॥

शेषजी बोले हे वात्स्यायन तेहिसमयमारुतसुत हनुमानूजी बीरसिन्धुके निकटजायबोले,हे अभिमानी राजा मुझको शत्रुसमजान सचेतहो,१ व भागन जानामें अभी तुझको ससैन्य परास्तकरताहूं, यह पवनपुत्रकी निर्भय बाणीसुनबीरसिन्धु धनुषचढ़ाय मेघकासाटंकोरकरकेशर समूह जैसे अषाढ़में घनबर्षतेहैं,वैसेही बाण बर्षनेलगा सो शायकजब कपिराजके अंगमेंलगे,तबतो मानोंसरोष सर्पोंने डसा महाक्रोध उत्पन्न करके कटकटाय एक मुष्टिकराजाके हृदयमेंमारा,सो बज्रवत् मुष्टिकेलगनेसे राजामहाव्यथासे व्याकुलहोकर गिरपड़ा,तब जनक बन्धु अर्थात्चचाको मूर्च्छितदेख शुभांगदने कोपकिया व उसी समय रुक्मांगदकीभीमूर्च्छाजगी,दोनोंभाई कोप करके धनुषचढ़ाय मेघके समान बाणबर्षते बहुतसासैन्य वधकरके हनुमानूजीके समीपआये, तिनको आतेदेख हनुमानूजीने सरोष सन्मुखजाय लंगूरमेंदोनोंरथलपेटि घुमायके पटकदिये हे मुने तेहिसमय दोनोंभाई रुधिर बहतेहुये मूर्च्छितहोगये,तबतक सुमद नरेशनेभी घोर

युद्धकरके कलमित्रकोभी मूर्च्छितकिया, और शेषसैन्य इधर उधर जो बचीखुचीथी सोपुष्कलने सुरपुर भेजदी हे वात्स्यायन तेहि अवसरमें सबरामादल बिजयपाय संग्राममें बिजयके नगारा बजाते भये, व बिजय पाय महाराज रघुकुलमणि शत्रुघ्नजी अत्यन्त आनन्दितहुये वहां सदाशिवजीने अपने भक्तको परास्त सुनकर भक्त-वत्सल शिवजी दिव्यरथमें, दिव्यपिनाक, धारण कर दोनोंओर द्वै त्रोण,व त्रिशूल धारे, अत्यन्त क्रोधसे नेत्र अरुण कालके समान घोररूप,जटाजूटमें,सुरसरीबिरा-जमान, मस्तकमें चन्द्रमा प्रकाशित, मुण्डोंकी माल पहिरे, सर्वांगमें व्यालभूषितकिये, सन्मुख बीरभद्रनंदी भैरव भृङ्गी, आदि प्रबलगण भूतपिशाच बिकटरूप अनेक प्रकारके बाहनोंमें अनेक अस्त्रधारे हर्षपूर्वक यहि प्रकारसे बीरमणिके रक्षणार्थ वृषकेतु महाक्रोधकरके चले,तब पृथ्वी,पर्बत,सिन्धु दिशा बिदिशा सबकम्पित हुये मार्गमेंजाते शिवजी कैसे शोभितहोतेथे, जैसेपूर्बमें त्रिपुर परचढ़ाई करके त्रिपुरारी हुयेथे, अरुसंगमें भूत प्रेत बैताल योगिनी कुलाहलकरतेथे,तबशम्भुको आते देख रामानुज शत्रुघ्नजी बायुके समान बेगवालेरथमेंस-वारहोकरधनुषमें बाणधारे महाक्रोधसे अरुण नेत्रकिये, आपभी युद्धकोचले,शिवजीनेरिपुसूदनको देखप्रचण्डबा-णचढ़ाय कहा,कहाँ पुष्कल कहांहै, जिसने मेरेभक्तको ससैन्य परास्तकियाहै,मैंने जानाहै कि सो सीतारामका सेवकहै उसके समान बीर त्रैलोक्यमें नहींहै,तिसदुष्ट

को आजमैं संहारकरके हृदयसे आनन्दित होऊंगा, मेरा परमप्रिय राजाबीरमणि तिसको मेरे देखते २ परास्त किया, हे मुने यहकह शिवजीने बीरभद्रकी ओरदेखकर बोले हे तात तुम पुष्कलसे युद्धकरो, व नन्दीगणको हनुमान्जीसे युद्धकी आज्ञादी अरु प्रचण्ड से कहाकि तुम लक्ष्मीनिधिको बिजयकरौ, भृङ्गको सुभुजसे कहा व चण्डनाम गणको सुमद परपठाया यहि प्रकारशिव जीने सबगणोंको यथायोग्य आज्ञादेदी सब अनुशासन पाय लड़नेलगे तब बीरभद्रको आतेदेख भरतपुत्र आतुर तासे रणोत्साहसे सन्मुखआय हृदयमें, पांचबाण मारे ते बाण हृदयमें भेदनकर ब्यथाको जगाय रुधिरबहादिया तब बीरभद्र क्रोधकरके त्रिशूललैकरधायेबीचहीमें त्रिशूलको पुष्कलने खण्ड करदिया तब त्रिशूलको ब्यर्थदेख महाकोपकरके प्रचण्डखड्गलैकरशीघ्रतापूर्वक पुष्कलके शिरमेंमारी खड्गके घावसेमुहूर्त्त मात्र मूच्छित होकर फिर क्रोधसे उठे व तीव्र बाणोंसेखड्गकेभी खण्डकिये तबबीरभद्रने खड्गब्यर्थ देखअत्यन्त कोपकरके शीघ्रता पूर्वकजायके पुष्कलकारथ सारथीसब चूर्णकरदिया, तब पुष्कलहृदयमें क्रोधज्वालकोप्रज्ज्वलित करकेबीरभद्रकी ओर चले मल्लयुद्धकरनेलगे, जातेहीजाते पुष्कलने एकमुष्टिक बज्रवत्मारा तबशिवगणनेभी वैसाहीमाराअर्थात् दोनोंबीरपरस्पर तुमुल युद्धकरने लगे, दोनोंबीर रणमें अशंकित भुजोंसे भुजा, जंघोंसेजंघा भिड़ायेरोषपगेद्वन्द्व-युद्धकरतेथे, जिस घोरयुद्धकोदेखदेवताभी बिस्मितहोतेथे,

छुटिरताल्लबजाय रनखघातकरके शोणित प्रकटाते यहि प्रकारचार रातदिन महायुद्धकरते बीतगये, तबभीदोनों रणधीरप्रचारिरकै भिड़तेहैं, हारिनहींमानतेथे, तबपांचवें दिन महादारुण, बीरभद्रने उरमेंक्रोध प्रज्ज्वलित करके पुष्कलकेदोनोंभुजा पकड़ आकाशकोउड़गये, वहां जाय दोनोंबलधाम बीरोंने सुरमोहन संग्रामकिया, अर्थात् मुष्टिप्रहार चरणप्रहारकरते, कभी उरभुजशीश जोड़के युद्धकरते, कभी दशननखनसे प्रहारकरके लड़ते, कभी छूटजाते कभीफिरबड़ेबेगकेसाथयुद्धकरने लगतेथे, हेमुने तबपुष्कलने अत्यन्त क्रोधबढ़ाय बरवश खींचपकड़ बीरभद्रकोपृथ्वीमें पटकदिया, वसिंहनाद करके फिर निकट आया, बीरभद्रविपुलपीड़ासे अधीरहोगये, अर्थात् तेहि समयधैर्य्यजातारहा, फिरसचेतहोकर बीरभद्रक्रोधज्वालप्रज्ज्वलितकरके शीघ्रतापूर्वक पुष्कलको पैरपकड़ बारम्बारभ्रमायपृथ्वीपर पटकदिया, हेमुनिजबतकसमर भूमिमेंपुष्कल उठनेलगे तबतकक्रोधसेआतुरतापूर्वकबीरभद्रनेत्रिशूलसे भरतपुत्र पुष्कल का शिर काटडाला, कुण्डल मालयुक्त चन्द्रवत् प्रकाशित शिर पृथ्वीमें देख अर्थात् पुष्कलका बधदेख शिवरूप बीरभद्र सिंहनादसे गर्जतेभये, अरु रामादल के सबबीर धैर्य्य छोड़ कांपते हुये महाशोक सेव्याकुल भागचले, व हाहाकार करते महामोह मेंप्राप्त जहां रामानुज शत्रुघ्नजी संग्राम करतेथे, उनकेसमीप जाय व्याकुलगातसे विह्वलहोकेकहा हेनाथ यहिसमय रणमेंभरत पुत्रपुष्कल कोबीरभद्रनेब-

धकरडाला, येवज्रवत् वचन सुनिकै शत्रुघ्नजीका धैर्य्य चलदिया, वसबशरीरकम्पित आंखोंसे जल बहनेलगा अनुज पुत्रकेबार २ गुण चरित्र स्मरणकरके रोदनकिया, अरु चित्त कोधैर्य्यतोकिसीप्रकारसेनहोताथा, वहघोरदुःख कौनवर्णनकरसक्ताहै, तब राजकुमारमहाराजशत्रुघ्नकोमोहित देख शिवजीबोले हेराजन्, शोचमोहनकरो, पुष्कलबीर शोचने योग्यनहींथा, और सन्मुख रणमें प्राणत्यागकियेहैं, तुम क्यों शोक करतेहो नीति विचारधैर्य्य करो अरु पुष्कल सुभटमणि धन्यहै जिसने बीरभद्रसे आकाशमें भीरण किया, देखो जिसकोमैं अग्रज अर्थात् आगे करिकै प्रलयकालमें जगत्संहार करताहूं तिससे घोर युद्ध किया, उसके समान कोईबीरनहींहै नहोगा, हेराजन् अब वीरभद्रका पराक्रम सुनौ, देखो दक्षप्रजापति ने मेरा पातक कियाथा जिसका गर्व बीरभद्रने मुहूर्त्त मात्रमें भंगकिया, औ त्रिपुरासुर की अमितसैन्य क्षणमात्रमें नाशकरदी, तेहि बलनिधिसे जिसने ऐसा समर किया उसकेसमान बलागार कोईनहीं, हेभूप मणि यह जान शोक ग्लानि त्यागकरो, अरुयत्न पूर्बक मुझसेयुद्ध करो, यहसुन रामानुज क्रोधसे विषम बाणमारे, अत्यन्त तीक्ष्णबाण त्यागकरके शम्भुकी देहसे छिन्नभिन्न होकर रुधिरधार बहनेलगी, अरुअसंख्यन बाण रामानुजने मारेतिनको आतेदेख उमापति बिस्मित होगये, वसरोष होकर आपभी तीक्ष्णबाण छोंड़े दोनों बीरोंके बाण गगनमें महाकराल युद्धकरतेभये, जेहिसे महादारुण

अग्निप्रकटभई जिससे सब भूतल पर्य्यन्त बाणहीअ-
ग्निमय देखपड़तेथे, बिश्वभर प्रलयकालके समान बा-
णतेज देखिकै भयभीतहुआ, वदेवतादिक विमानोंमें चढ़े
परस्पर बिस्मित बार्त्ता करतेथे, कि यह महाबिकराल
युद्ध हुआहै, ऐसायुद्ध न देखानसुनाहै देखैं अबको जय
पाताहै इधरतो रामानुज लोक बेदके सुयश प्रकाशक
शत्रुघ्नजी, उधर सदाशिव प्रलयकर्त्ता येदोनोंबीर युद्ध
करतेहैं अहोईश अबक्या होगा अर्थात् बिश्वकैसे बचे-
गा, नहीं जानते बिजय किसकीहोगी, औरको समरसे
पराभव होगा, इसमें बुद्धि भ्रमिरहीहै, यहिप्रकार सब
नारदादिक देवताकहतेथे, वमहास्त्र देखिकै इधरसेउधर
उधरसे इधरहुआकरतेथेअरु अनन्तबीरदोनोंदलमेंकाल
बश हुयेवपृथ्वी ऐसी कम्पायमान होतीहै जैसेलघुनौका
मतवारेहाथीके चढ़नेसे डगमगातीहै, यहिप्रकारमहायुद्ध
ग्यारह दिनरातिहुआ, और भयावनी शोणितनदी बही
जिसकोदेख बीरोंकभी धैर्य्यन रहताथा, हेमुने बारहवें
दिन रामानुजने क्रोध करके जाज्वल्यमान ब्रह्मास्त्र
शम्भुके बधार्थ प्रहारकिया पिताका अस्त्र शम्भुने
आतेदेख बिहंसिकै मुहंबगार पीगये, अर्थात् चबाय
गये, यह घोर कर्म्म देख रामानुज अत्यन्त शंकित हुये
व विचार करनेलगे किअब केहिप्रकार युद्ध करना चा-
हिये, यहविचार करतेहोथे तबतक शिवजीने एकमहा-
कराल घोरअग्निके समान प्रज्ज्वलित बाण छोड़ा
वह बाण रामानुजकेकाल रूपहोकर समायगया, तब

रण भूमि में रामानुज शत्रुघ्नजी अचेतहोकररथमेंगिर-
गये,तब सेना त्राहि २ पुकारते भयवश भागने लगी
वहभी अपर राजाओंको शिवगणोंनेभी परास्त कर-
दिया,तेहि समयअंजनीनन्दन हनुमान्जी प्रभुकाकटक
परास्त देख पुष्करको रथमें पौढ़ाय बहुत वीरोंसे
रक्षाकरते सीतारामका हृदयमें स्मरणकर महाक्रोधसे
प्रज्ज्वलित होकर गर्जते तर्जते कटकटाते कनक भूधरा-
कार शरीर प्रकटकर शिवजीके सन्मुख आये ६२ इति
श्री पद्मपुराणेपातालखंडेशषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्व-
मेध भाषायांशिवकरके रामादलबिचलनोनामत्रिचत्वा-
रिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हेवात्स्यायनशिवकेसम्मुखआयपरम
धर्म्ममय हर्षसेनिडरबचन हनुमान्जोबोले १ रेश्रुति
पन्थके बिरोधक अपनेस्वामीसे विमुख महेश तूने परम
भागवतश्रीरामके प्राणोंसेप्यारा भरतपुत्रतेहिको समर
मेंबधकरादिया अरुअपनाधर्म्म नाशकिया,कहांसुकुमार
बालकपुष्कल,कहां तेरोप्रबल कराल गणतेहिसे अध-
र्म्मयुद्धकराया तूसबप्रकार प्रभुसेविमुखहै अबमैंतोको
शीक्षादेकैतेरासबगर्बदूरकरताहूं,जैसे रघुनाथके विमुख
कीगतिहोतीहै उसीगतिको मैंअभी समरमें तुमकोप्राप्त
करताहूं २।३ अरुमैंनेश्रेष्ठ मुनियोंमें व वेदोंमेंजोसुनाथा
किरुद्रश्रीरामके चरणकमलोंका ध्यानकरतेहैं सोश्रुतिन

कीवाक्यमृषा होगई, सब प्रकारसे तुमको पूजनीय रामानुज तिनकोतुमने व्याकुलकिया, अरु भरतपुत्र को वधकरायाव सियाबन्धुलक्ष्मीनिधितेहिकोभी हराया, तुम्हाराज्ञानबुद्धि, इष्ट, विचार इससमरमें सब नाशहोगया अबयत्न विचारके खड़ेहो वरबशसेभीनहीं पकड़ौंगा, रघुपतिसे४।५ विमुख आजसे मैंनेजाना, यह मारुत नन्दन बारम्बार कहतेहैं हेमुनेयेवचन सुनकरशिवजीसकुचिकै बोले हेकपितुमधन्यहो तुमने सत्य२बाणीकही अरुसुरासुरोंसेसेवित श्रीरामचन्द्र सत्यकरिकै हमारे स्वामीहैं यह हमजानतेहैं किअयोध्यामें श्रीरामचन्द्रजो अश्वमेधयज्ञकरतेहैं तिनके अश्वरक्षणार्थ बलवान् शत्रुघ्नजी आयेहैं, सोघोड़ा राजपुत्रने पकड़ातदनन्तर पितासहित दललैकर संग्रामकोचढ़ातबतुम्हारेबीरोनेउसकोमूर्च्छित करदिया, सोवीरमणि मनसाबाचासे मेरासेवकहै उसने सबप्रकारसे मुझको अपने बशमेंकियाहै, हेकपिराजयहमैं मृषानहींकहताहूं, इसकारणमैं दारुणक्षोभ भक्तकेअर्थकरिकैसबप्रकारसे अनुचित युद्धकिया यहिपातकसे महत् प्रायश्चित्तहोगा, देखोइष्टदेव रघुकुलमणि जिनकोदेवदनुज मस्तकनवातेहैं तिनकेभाईको मूर्च्छितकिया, फिर उनकेपरमप्रिय पुष्कलको बधकराया, अरु जगत्माता जानकीजोकेभ्राताकोभीपरास्तकिया, यहिते परेपापऔर नहींहै तुमनेभी कुछ झूठनहींकहाहै, मैंराजाकी सेवा बश होकर मेरासब ज्ञानभ्रष्टहोगया, अर्थात् भक्तको व्याकुल देखयुद्धकरनेलगा, सोवेकृपालु राज राजेन्द्र भक्तके अघ

कभीनहीं देखते कृपाकरतेही रहतेहैं अर्थात् वात्सल्य-
गुणनिधि श्रुतिसेतुहैं यद्यपिमैंने महापापकियेहैं तदपि
कृपालुक्षमाही करैंगे,अरु अपना जन जान अपनी ओर
देखभक्तकी मदमायाको दूरकरके कृपाकरतेहैं ८।९ हे
वात्स्यायन यहमहेशके कहतेहुये हनुमान्‌जीने क्रोधित
होकर शीघ्रतापूर्वक एकशिलारथमें प्रहारकिया,जिससे
ध्वजा, पताका, स्यन्दन,सारथी सबचूर्णहोगया देवता
गण मारुत नन्दनका बिक्रमदेख प्रशंसा करनेलगे,कि
हे कपीश धन्यहौ तुमनेमहत् कर्मकिया,शिवको बिरथ
देख नन्दीगणने शीघ्रतासे निकटजाय कहा हेस्वामिन्
मोपर आरूढ होकर युद्ध बिलास करो १०।११
जब शंकर नन्दीगणमें आरूढ़हुये तो हनुमान्‌जीनेअती-
व क्रोधकरके बिशालशैल उखाड़कर शिवके हृदयमेंमा-
री,बज्रवत् शैलके लगनेसे सदाशिवकी भी क्रोधाग्नि
प्रज्वलितहुई अरुकराल अग्निकेसमान जाज्वल्ययमान
तीक्ष्ण त्रिशूल संहारके अर्थ प्रहारकिया,हनुमान्‌जीने
आते देख रघुनाथजी का स्मरणकरके लीला करतेहुये
हाथसों पकड़कर चूर्णकिया,तब त्रिशूल भंगदेख सदा
शिवजीने अत्यन्त क्रोधकरके यमदण्डके समान चण्ड
एक शक्ति सर्वधातु बिरचितमारी,उससे हनुमान्‌जीमुहू-
र्त्तमात्र मूर्च्छितहुये,फिरि उठकर कराल क्रोधकरकेएक
बज्र बिशाल लैकरधाये,व शिवको प्रचारा कि अबजीत
ताहूं सचेतहोओ,हे मुने उस समय हनुमान्‌जीके चलते
भयेपृथ्वी पर्वतबन,समुद्र,सबकम्पितहुये,अरुबज्रकीशा-

खा जब हनुमान्‌जीने सम्हारिकैमारीतबउस समययह कौतुकहुआ, कि बज्रवत् शिलाके लगनेसेशिवजी व्याकुलहोगये, तब सब आभूषण सर्प विच्छू आदिगातोके विह्वल होनेसे पातालको भगचले, तब शिवजी नग्न होगये तबअपनेको नग्नदेखमहारोष बढ़ायदण्ड मूशल लैकर हनुमान्‌से बोले रेशठकीश जो जीवन चाहताहो तो समरसे भागजा, नहींतो इस मूशलसेतत्कालतेरेप्राण हरताहूं १२।२० यहकहकरप्रहारकिया तब हनुमान्‌जी उसको छूटते देखकरके रघुकुलमणिका स्मरणकरइधर से उधर कूदगये, तबवह मूशल पृथ्वी भेदनकर रसातलको पहुंचा, हनुमान्‌जी बचगये, तब गर्जिकै एक शैल फिरशिवके हृदयमेंमारा उसके खण्डनार्थ जब तक शिव उपायकरैं तबतक एकवृक्षभीमारा, सोदोनों प्रहारसहिकै मनमें बिस्मय करतेभये कि इस बानरसे कैसे युद्ध करैं ऐसे जबतकउपायकरैं तबतक हनुमान्‌जी शीघ्रता पूर्वक अनेकनवृक्ष शिलाशृंगोंसेआच्छादित करदिया तब शिवको व्याकुलदेख हनुमान्‌ने आतुरतासे निकट जायशिवको सगुन लंगूरमें लपट बिपुलबार भ्रमायपृथ्वीपर पटकदिया कबहूंशिला शृंग वृक्षअगणित बरषे कभीनखौं से गातबिदारैं कभी शीघ्रतासे पूछमें लपेट भ्रमाते कभी रिसाइकै अनेकनवृक्ष प्रहारकरके गातही तोड़ते, यहि प्रकारहनुमान्‌जीने घोर संग्रामकरके शिवको व्याकुलकिया, अरु अत्यन्त व्यथासे नन्दीगणभी भाग गये व सब सर्पगण आदि व्याकुलहोकर भागखड़े भये

व शिवजीभी गर्बत्याग बिह्वलहोकर रणकीआशछोंड़ दोनशब्दपुकारनें लगेअरु जिसचन्द्रमौलिके चन्द्रमासे अमृत श्रवतहैउससे रुधिरपंकयुक्त श्रवताभया,अरुसब जटाबिथरगये गंगाजीभी इधर उधर वहचलीं२१। ३० अरु कपितो क्षण२ बिषे वृक्षशिलाशृंगप्रहारकरताहीथा हे बात्स्यायन मैं शिवजीको कहांतक बर्णनकरूं संग्राम से अत्यन्त बिह्वल होगये,तब उमानाथ मारुतनन्दन से बोले हे कीश धन्यहौतुम्हारे सदृश रामभक्त दूसरा नहींहै तुमने आज महत् पराक्रम करके हमको प्रसन्न किया अरु अब तक मुझको मुनि,देव, मनुष्योंनेअनेकन दान ब्रततप यज्ञादिकोंसे संतुष्टकियाहै ऐसा संतुष्टमैं किसीसे नहींहुआ,जैसेतुम्हारे युद्धसेहुआ अब मैंने सब बैरभाव दूरकियाबरदान मांगोशिवजी कीयहबाणीसुन निडर हनुमान् बिहँसिकै बोलेहेमहेश हम रघुनाथजीके प्रसादसे पूर्णहैं तथापिजो आपरणमें प्रसन्नभयेहो तो यहबरदेउ कि भरतपुत्रके शरीरकीरक्षाकरो अरु संग्राम में जोरामानुजमूर्च्छितपड़ेहैं उनकीभी रक्षाकरो अरुजो लक्ष्मीनिधि आदिक राजाजो रघुनाथजीके परमप्रियहैं तिनसबकी रक्षाकरोजिससे तुम्हारे भूत प्रेत बैताल शृगाल आदि आमिषभक्षीजीव अंग भंग न करैं अर्थात् त्राससे निकट न आवेंजबतकमैं रणकर्म्मसे इन्द्रपद संहारके द्रोणाचल या औषधो लैकर न आऊं फिरमैं आकर श्रीरघुनाथजीके प्रसादसे सबको जिआऊंगा तब तक तुम ससैन्य सबदलकीरक्षाकरो ३१।४०कपिराजके

ये बचनसुनआनन्दपूर्बकशिवजीने कहा कि हेतातशीघ्र
जाकरऔषधीलाओ मैं सबकी रक्षाकरौंगाकिसीको त्रास
मतमानियो,तबहर्षितहोकर हनुमानजीनेद्रोणागिरिलेने
वास्ते पयानकिया अरु हृदयमें सीता रामकाध्यानकिये
बेगमें वायुकोनिंदते सब दीपलांघते क्षीरसिंधुके समीप
पहुंचे इहांवृषकेतुसचेत होकर सबगणनयुक्त रक्षाकरतेथे
वहांहनुमानजीने महाउत्तंगद्रोणाचलजिसमें सजीवनके
वृन्दथेवऔर वृक्षआनन्दकन्दअनेकनथेतबअंजनीनंदनने
अनुमान करके प्रभुका ध्यानकर लंगूरबढ़ाय द्रोणाचल
को गेंदके समान बांधलिया अरु अपनो समरभूमिको
चलदिये चलतेही मेरुके कम्पसें उसकेरक्षकदेवतामहा
त्रासित होकरहाहाकार करतेभये व परस्पर कहनेलगे
हे भाइयो क्या बिपरीत होताहै पर्बत स्थिर क्योंनहीं
होता औरजो कहैंकि कोई उठाताहोगा तो ऐसा कोई
बलोन्मत नहीं उत्पन्नहुआ जोपर्बतराजकोउठासकै सब
देवराजयहबिचारकरतेढूंढ़ते ढांढ़ते हनुमानजीके निकट
पहुंचे तब कपिको देख बोले हे मर्कट मंदजल्दगिरिको
छोड़नहींतोअभीकालबशहोताहैयहकहकरएकहीबारको-
टिनआयुध सब देवताओंनेप्रहारकिये तबसबदेवताओंको
अनेकनअस्त्रछोंड़तेदेखहनुमानकेभीक्रोधाग्नि प्रज्वलित
हुईहेसूततबमारुतनन्दन बिनुप्रयाससुरोंको संहारनेलगे
जैसेदेवेन्द्र असुरदलमें बज्रप्रहारसेदैत्योंकासंहारकरतेहैं
तैसेही कपिराज वृन्दोंके वृन्दमर्दतेचलेजातेथे बहुततो
चरणप्रहार मुष्टिप्रहारादिसे बध किये वबहुतोंकोपूंछमें

लयेटअमाय २ पटकदिया,इसप्रकार निमिष मात्रमें अनेक देवतासंहारकिये,बहुतेपरेहुये रुधिरवहतेकराहतेहैं,कोई २भयभीत होकर भाजिकैमहेन्द्रगिरिपर इन्द्रके समीपगये,तिनको छिन्नभिन्न रुधिरबहते व्याकुलदेख अत्यन्त सन्देहबढ़ाय सुरेन्द्रबोलेहेदेवतोके हिहेतुअतीव विह्वलरुधिरबहतेआयेऐसाकौनबरजोरदैत्यहुवाजिसने तुमको इसदशामेंप्राप्तकिया सबयथार्थकहौअभीतुम्हारे शत्रुकोबधकरें,इन्द्रकी यहवाणीसुन देवताबन्दना करके कहनेलगे,हेनाथ हमनेकुछमर्म नहींजाना कोईए कबीर कपिरूपमेंआयाहै सोवहदोणाचलको अपनीपूंछमेंलपेट लयेजाताथा तबहमसब आयबर्जा,सोउ सनेकिसीतरह नहींमाना,अरु गर्वितभोहै,बलमें अतुलितहै,तबहम सबों नेनानाअस्त्रशस्त्र बर्षाये तदनन्तर उसने क्रोधित होकर मुहूर्तमात्रमें सबकोपरास्त करदिया अरु बहुतसे देवता रुधिरबहतेहुये व्याकुलपडेहैंतिनसेहमभी महापुण्यसेउ सयुद्धसेसजीव रुधिरबहते महापीड़ितबचे५९ आरतवाणीसुन इन्द्रनेशोचसे शोककरके अत्यन्तक्रोधयुक्त अपने वीरोंकोबुलाय कहाहेवीरो युद्धकेवास्ते तैयारहोकरद्रोणाचलमेंजाय एकमर्कट बलवान् आकर बहुतसे देवतोंका संहारकिया उसकोपकड़लाओ,येसहनैन केबचन सुनि अतुलितबलीबीर युद्धकेलिये जहांकपिराजथे वहांपहुंचे रोशबढ़ाय सब अमरगण एकहीबारअस्त्रघात करनेलगे ६०।६१तब हनुमान्नेभी कटकटायके बहुतोंकोमुष्टिकसे वनखोसे दलिमलिडाला जेबचे बचायेथे उनकोशिला

शृंगवृक्षादिके घातोंसे परास्तकिया निदानसबको पृथ्वी मेंगिरादिया,कुछदो एकअधमरेफिर इन्द्रपुरीमें पहुचसब वृत्तांतकहा तबतो देवाधिपतिने ढूंढ़िरकेबड़ेरबीर अनेकन पठये,उनको आतेदेख निडरहनुमान्बोले किक्यों मूढ़ता सेप्राणव्यर्थगंवातेहो,अभी भुजोंकेबलसेतुमकोभीपरास्त करूंगा इससे अपनेरघरजाओ, यहसुन देवता क्रुद्धित होकर प्रचारिरलगेअस्त्रछोड़ने कोईशुलकोईफरशाकोई मुद्गरकोई खड्गकोई मूशलकोईशक्तितोमरकोई गदा कोईपरिघकोईकूतूलऐसे सबदेवताओंनेनानाप्रकारकेअस्त्र शस्त्र पवनकुमारपर छोड़े तबहनुमानूजीने यहअधर्मयुद्ध देखअतीवक्रोध युक्तमेघकेसमान गर्जिकै अनेकनशिला शृङ्गवृक्षोंकी बर्षाकी,जिससे सबदेवता पृथ्वीपर लोटगये वकुछवचेहुये इन्द्रकेपास जाय,कपिका सबबल विभवब र्णनकिया सुनिकै सुरेश अत्यन्त भय भीत होकर ब्याकु लहुआ,अरुअनुमान करकेकांम्पतगातसेगुरूके ६५।७५ मन्दिर जाय दण्डवत् करके मलिन चित्तसे बोलेहे गुरू जी वह कौन कोशहै जिसने अनेकन देवता संहारकिये तब बृहस्पति बोलेहे सुरेन्द्र जिन यशस्वीने रावण कुम्भकर्ण आदि और भी तुम्हारे शत्रु संहार किये उन का सेवक वह कीश हनुमानहै जिसने मुहूर्तमात्र में लंकाको भस्मकर अक्षयकुमारको बधकिया वही बीर-मणि हनुमान् तुम्हारे बीरोंको बधकिया, अयोध्यामें रामचन्द्र उक्त अश्वमेध यज्ञ करतेहैं उनके यज्ञकाघोड़ा शिवभक्त राजाबीरमणिने पकड़कर शिवजीको लेकर

युद्ध किया तहां सब रामादल व्याकुल पड़ाहै जिनके जियावनहेतु हनुमान् नाम बानर द्रोणाचललेने आया है यदि तुम युद्धकरोगे तो सैकड़ोंवर्ष में भी हनुमान् से जयनहीं पासक्के इस कारण अभिमान अनीतिछोड़ चरणों में जायपड़ो अरु सजीवनी देकर रघुपतिका कार्य्य गुनिकै जन्म सफल करलो ७२। ८०॥
इतिश्री पद्मपुराणे पातालखंडे शेषवात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेधभाषायां देवयुद्धवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

इतनी कथा सुनाय अहिपतिबोले हे द्विजेन्द्र तब बृहस्पति के वचन सुन इन्द्रनेजाना कि प्रभुके कार्य्यार्थ अंजनीनन्दन हनुमान् आये हैं १ यह गुनिकै हृदय से त्रास रोष विहाय हर्षपूर्वक बोले हे स्वामिन् जब उक्त हनुमान् जी द्रोणाचल को समर विषे लै जायंगे तो कैसे सब देवताजी सकैंगे २। ३ अब आप ऐसाबिचार करैं जेहिसे हनुमान्जी कृपाकरैं जासे प्रभुका कार्य्य व देवताओं का प्रियहो ऐसा संयोग आप करैं हम सब अमरगण तुम्हारी शरण हैं यह सुन द्विजोत्तम बृहस्पति के अत्यन्त करुणा उत्पन्न हुई तब बृन्दा रक बृन्द देवता इन्द्र को आगेकर चलते भये जहां गिरिसमीप निडर हनुमान् कराल रूपसे गर्जतेथे, तब इन्द्रने हनुमान्को क्रोधयुक्त देख बृहस्पतिको आगेकर

लिया तब इन्द्रसमेत देवताओंने दंडवत् किया व इन्द्र प्रेरित वृहस्पति स्तुति करनेलगे,हेकपिराज बिनाजाने देवतोंने पातक किया,अरु तुम्हारा बल बिक्रमभी नहीं जानते फिर रजोगुणसे शुद्धज्ञान नहींहै,तुम परम भागवत रघुपतिके सेवक यहां केहिकारण आगमन कियोहै सो हम सब करैं अरु अब रोषत्याग कृपाकरिकै व्याकुल इन्द्रको सुखीकरो, औ तुमतो उदार बल बुद्धिनिधान दुष्टोंके नाशकारक अपनीओर देख बिकल देवताओंको सुखीकरो, यह सुरगुरुकी बाणीसुन बीरत्वभूषित हनुमान् बोले हेदेवगुरु श्रीरामचन्द्रजी अश्वमेधयज्ञ करते हैं तिनने ससैन्य घोड़ा छोड़ा वह बाजि अनेकन देश जीति वीरमणि के यहां गया, उसके पुत्रने घोड़ा बांधा अरु सदल बीरमणि आकर युद्धारूढ़हुआ तिसको पुष्कर ने बिनुप्रयास जीतलिया वह राजा शिवभक्तथा शिवने राजाको पराजित सुनिकै आप कराल युद्धकिया जिससे सब रामादल समरमें गिरपड़ा, मैं सैन्यके जियावन हेतु यहां द्रोणाचललेने आयाहूं सो अवश्य लैजाउंगो याकै बल संजीवनीहींदोजिससे देवतागणभी सुखीरहैं ४।१५ यह सुन सब देवता मुदित होकर प्रणाम करके स्तुति करनेलगे व शीघ्रतासे द्रोणाचल में जाय संजीवनी का समूह शिरनाय हनुमान्कोदिया अरु सब त्रास दूरकर के हनुमान्का प्रणाम करके अपने २ लोकोंको सब देवता गये, तब हनुमान्जीने संजीवनीपाय शीघ्रतापूर्वक अपने दलमें आगये तब औषधी युक्त हनुमान्को आते

देख शिवगण विस्मयवश प्रशंशा करनेलगे कि हेकपि-
राज धन्यहो तुमने अत्यंत बिक्रम कियो तुम्हारे समान
और कोई बीर नहींहै क्यों न करो तुम्हारे हृदयमें सदैव
रघुकुलमणि बसतेहैं तब हनुमान्जी पहले बिगतप्राण
भरतपुत्र रणधीर पुष्करके निकटगये जहां शूलपाणि
रक्षा करतेथे तब मंत्रिराज सुमन्तको बुलाय कहा अब
प्रभुप्रताप देखो मैं सब बीरोंको अभी सजीव करताहूं
यह कह सचिवको सानन्दकरके प्रभुपदका स्मरणकर
पुष्करके हृदयमें संजीवनी रखकर धरसेशीशजोड़ बोले
जो मैंने मनक्रमसे स्वामी रामचन्द्रकी सेनाकीहो तो हे
भरतकुमार सब व्यथाछोंड़ जागो, अरु हनुमान्ने शिव
को देख अनन्य भक्ति दरशायो ऐसे कहतेहुये पुष्करउठ
खड़ेभये अरुण नयन मानो सोवतेसे उठेहैं तब रदसों
रद मर्दते ओष्ठ फरकते धनुषचढ़ाय बोले बीरभद्र कहां
भागिगया अभी निपातकरूंगा वहशठ मुझको मूर्च्छित
करके अब प्राणबचाना चाहताहै यह बाणी सुन हनुमान्
जी बोले हेतात धन्यहो तुम्हारे समानबीर द्वितीय नहीं
है तुम्हारे बिना ऐसा कौन कहै, अरु इससमय बीरभद्र
ने तुमको बध कियाथा १६। २५ इससमय सीताराम
प्रतापसे प्राणपायोहै अरु प्रभुपद स्मरण करके सजग
हो और शत्रुघ्नको देखाचही कि उनकोभी मूर्च्छितहुये
एक याम बीतगया यह कह हनुमान् जहां बीरमणि श-
त्रुघ्नजी पड़ेथे वहांगये,अरु संजीवनीहृदयमें धरकरबोले
हेस्वामिन् मनुष्यकेसे चरित्रछोंड़ उठो तुम बिक्रमधाम

बलनिधि शत्रुक्षय कारी रामानुज तुमको देव अदेव शत्रुनाशनमें भजतेहैं अरु तुम्हारे अनन्तगुणहैं शिवकी शोभाके अर्थ मूर्च्छित हवैगयो और दूसरा कारण नहीं है अब मेरी बिनती अंगीकार करके उठो तौ सबजानैंगे कि अत्यन्त कृपा करतेहैं अरु जो मैंने मनसा वाचासे ब्रह्मचर्य्य अबतक कियाहो तो यहिसमय सब व्याकुलता छोंड़ रिपुसूदन आनन्दपूर्बकउठैं, यह कहतेहुये तबतक महाबलवान् शत्रुघ्नजीजागे अधरफरकते लोचनअरुण मुखतेजसे प्रकाशित, यातो बीररस अपना रूपधारण कियाहै या सरोष सिंहकेसमान कहतेहुये कि शिवकहां गया अभी निपातकरूं रणसे भागते उस शठको लाज भी नहीं आई तब हनुमान्जीने प्रणाम किया, तदनन्तर लक्ष्मीनिधि आदि राजाओं को जियाते भये, तब शिव जीने रामदल आतेदेख क्रोधकरके अपने गण युद्धार्थ भेजतेभये २६। ३४ फिरभी पुष्कर बीरभद्र दोनों रण कर्त्ताबीर रणमें आरूढ़हुये व लक्ष्मीनिधि और चंडगण ए दोनों युद्धकरनेलगे, हनुमान् व नंदीभी महाक्रोधित होकर भिड़े यहिप्रकार सबबीर परस्पर घोरयुद्ध करने लगे, रामानुज शत्रुघ्नजीने शिवको स्थिरदेख तिष्ठ तिष्ठ कहिकै धनुषमें कठिन बाण चढ़ाय शीघ्रतापूर्बक निकट होकर प्रहार करनेलगे शिवजीनेभी अपनेभक्त बीरभद्र को सदल सजीव करके युद्धकी आज्ञादी, तब राजाने शत्रुघ्नको देख अत्यन्त क्रोधकरके बिशालरथमें आरूढ़ होकर रामानुज शत्रुघ्नजीसे युद्ध करनेगये तिनका घोर

युद्धदेख देवतागण बिस्मयको प्राप्तभये तब शीघ्रतापूर्वक बीरमणिने कठिन बाणोंसे रामानुजकारथ चूर्णकिया शत्रुघ्नजीने आपभीदेख महाक्रोधसे प्रज्वलितहोकर महादारुण अग्निके समान बाण जिस्से शत्रुकी कटकमें हाथी, घोड़े, बीर, रथआदि भस्महोनेलगे तब राजाने अपनीसैन्यके चारोंओर अग्निप्रज्वलितदेख क्रोधकरके वरुणबाणछोड़ा तिन बाणोंमें मुशलधार बर्षकरके अग्निकोबुताय रामादलको बोरनेलगे तब अपनेदलको बिकलदेख शत्रुघ्नजीने शीघ्रतापूर्बकवायुबाणछोड़ा ३५।४२ जिससे घनघमंड नाशहोगयाआकाश प्रकाशितहोगया देवता सुखपूर्बक युद्ध देखनेलगे अरु वही पौन वीरमणिकी सैन्यमें प्रचण्डहो बहनेलगे जिससे ध्वजा पताका रथ कोई स्थिर न रहते थे, हाथी, घोड़े, असवार, उड़२के सब एकएक पर गिरते थे इसप्रकार सब सैन्य रण की आशाको छोड़दिया तब बीरमणिने अपनीसैन्य को व्याकुल देख पर्बतास्त्र प्रहार करके अपनी को चारो ओर कोट रचदिया जिसमें वायुप्रवेशही नहीं करसक्ती थी अरुरामादलमें पर्बतोंकी वर्षाकी जिससे सबरणधीर अत्यन्त त्रसितहुये तब अपने सुभटों को व्याकुल देख रामानुज शत्रुघ्नजीने श्रवणपर्य्यंत धनुषचढ़ाय वज्रअस्त्रप्रहार करके सब पर्बतों को बिन प्रयास चूर्णकर दिया शेषजी बोले हे द्विजेन्द्र तिस समय विषे दोनों ओर रुधिर बहतेहुये बीर कैसेशोभित होतेथे जैसे बसन्तऋतु में किंशुक प्रफुल्लितहोताहै व अनेक रुंडमुंडोंसे

शोभित रुधिर की नदी भी बहनेलगी यहिप्रकार अपने दलको खण्डते देख बीरमणिने महादारुण ब्रह्मास्त्रबाण प्रहारकिया ४३-४८ तब महादारुण बाणको आतेदेख शत्रुघ्न शीघ्रता पूर्वक योगिनिबाण छोड़ा जिसबाणने ब्रह्मास्त्रको परास्त करके यमदण्ड के समान राजाके हृदयमें लगा तब राजा अचेतहोकर पृथ्वीमें गिरपड़ा अरु उसी योगिनिबाण से बहुतबाण प्रकटहोकर बीर भद्र आदि गणोंको मूर्च्छित किया अर्थात् सबसैन्यको अचेत करके शिवजीके चरणोंमें गिरा तब शिवजीने अपना दल व्याकुलदेख रथमें आरूढ़ होकर अस्त्र शस्त्र युक्त युद्ध करनेको चले शिवजीको आतेदेख शत्रुघ्नजीने भीपयान किया हे मुने प्रलयकारी शिवजीने व रामा नुज शत्रुघ्नजीने रणमें अत्यन्त घोर युद्धकिया अरु अ- अत्यन्त महाघोर बाणछोड़े दिशों बिदिशोंमें सबबाणही देख पड़तेथे ऐसो शीघ्रता पूर्वक दोनों बीरबाण छोड़ते थे कि निकालते धरते कोई नहीं देखता था जैसे युद्ध पूर्वमें देवता और दैत्यों से हुआथा उससेभी उससमय अधिकहुआ तब शत्रुघ्नजीने अनुमान किया कि ये प्रल य कारी शिवसे अनेकनवर्ष युद्धकिये जयकी आशानहीं अरु रघुनाथजी की यज्ञकी अवधिभी कमहै किसप्रकार पूर्णहोगी यहि प्रकार बिचार करके व्यकुल होकर श्री रामचन्द्रजीकास्मरण किया कि हेकरुणानिधियहि युद्ध विषे बड़ा असमंजसहै कि प्रलयकारी शम्भु युद्ध किये से बध नहीं होसके जैसे तुम्हारा यज्ञ पूर्ण हो सो करो

यहि प्रकार अनुमानकरके रघुनाथजीके गुणानुवाद गा-नेलगे तबतक उसी समय परमकृपालु बिरदसम्भारी श्रीरामचन्द्र जिनकेरूपको देख कोटिनमनोजवलज्जित होतेहैं ते भक्तहितकारी कुंडल मुकुट पीताम्बर शंखचक्र गदा पद्म धारण किये दीनदयाल रामचन्द्र जी ऐसे भेषसे रण मंडल में प्रकटहुये तिनको देख शत्रुघ्नजी बिस्मय युक्त हर्षितहुये ४६। ६० इति श्रीपद्मपुराणे पातालखंडे शेषवात्स्यायन सम्वादेरामाश्वमेधभाषा यांरामसमागमोनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

हेद्विजोत्तम प्रणतारत भंजन रघुनाथजीको देखएलकि तगातसेदण्डवत् प्रणामकिया,सब त्रासदूर होकर अत्य-न्तआनन्दित हुये१ तबतक अंजनीनन्दन हनुमान्ने भी प्रभुको देख आश्चर्य्यकरके दोनों चरणोंमें गिर त्रयताप दूरकिया अरु पुष्कल आदि सब रणधीर आकर दण्डव त् किया,२। ३ तबहनुमान् जीने दोनों हाथजोड़ मृदुल बचनबोले हेनाथ तुमने पूर्वविषे वर्णनकियाथा कि भक्त रक्षकहैं सोप्रण आज मैंने देखा कृपालुने आकरहमसब की बिपत्तिदूरकी व हमसब धन्यहुये ऐसे हनुमान्जी क-हतेहीथे,तबतक शिवजीनेभी जेहि परमात्मा योगेश्वरभी नहीं देख सक्के ऐसा स्वरूप देख अपनेको धन्यमान च-रणोंमें गिरे अरुहाथ जोड़ बिनीति बाणीबोले,हेअबिना शी,परब्रह्म,प्राकृतगुणोंसे रहित, सर्वकलायुक्त४। ७ तु-

म्हारी कीर्त्ति सदैव वेद गाते हैं अरु अपनी इच्छासे संसारकीउत्पत्ति पालन संहार करतेहो,ताते तुम्हारेनमस्कारहै अरुतुम्हारे गुण अनन्तहैं मैं कैसे वर्णनकरौं,जैसे शेषजो सहस मुखसे कथन करतेहैं उन्हींको मैं स्मरण करताहूं हेनाथ मेरी विनय को अंगीकारकरके सब अपराध क्षमाकरो जो दोषमान यह यज्ञ करतेहो सोजगत् उपदेशकेअर्थहै तुमतो सदैव शुद्धहो अरु तुम्हारे चरण कमलोंसे जोगंगा प्रकट हुईहैं उनको मैं शीशमें धारण करके सब दम्भादिक नाशकरता हूं ताते तुमको कैसे द्विजदोष लगसक्ताहै केवल यज्ञ करके संसारको उपदेशकिया है ८। १२ हे नाथ मैंने यह महापातक किया जोतुम्हारी सैन्यको त्रसितकिया सो अपराध क्षमाकरो मैं स्तुतिकैसे करों मैंतो तुम्हारा सदैवकाकिंङ्करहूं आप भक्तों के सुखदायक प्रकटहुये हौ, यदि मैंने अपराध तो कियेहीहैं तौभी निजजनजान क्षमाकरोमैं महीशके बश होकर बिबेक छोड़दिया १३। १५ प्रथम इस राजा ने उज्जयिनि नगरीमें कालीके मन्दिर के समीप अतिउग्र तपकिया तबमैं जाकर बरम्ब्रूहि कहा,तब राजाने राज्य की याचना की तो मैंने कहदिया कि देवपुर नगर की राज्यकरोजबतक रामचन्द्र को बाजिराज न आवेगा तब तक मैंभी तुम्हारी रक्षाकरूंगा यहिप्रकार मैंने पूर्व बरदिया था उससे कुछ सम्भार न रहा आपकृपालुहो क्षमाकरो अरु इसराजाको सहित राज्यके तुमको समर्पण करताहूं कृपाकरो ऐसे शंकरके बचन सुन अतीव मुदित

होकर कृपादृष्टि से देख गम्भीर वाणी बोले हे परम
भक्त महासाधु जैसा वेद कहते हैं कि शरणागत रक्षित
है वैसा आपने किया बहुत अच्छाकिया हे सदाशिव
अब मैं तुमसे परमगुप्त मत बर्णनकरताहूं सुनो १६।२२
जे मेरे सेवक मनसा बाचासे अनन्य गतिसे मेराध्यान
करतेहैं सो मेरे हृदय में सदैव बसते हैं, व तुमतो भक्त
शिरोमणि परमप्रिय सदैव मेरे हृदय में बासकरतेहौ
जे यह बोध नहींकरते वे व्यर्थ संसार में विरोध करते
हैं अर्थात् हम तुममें भेद जानते हैं वे कल्पपर्य्यन्त
नरकमें बास करतेहैं, यह बिचार भक्तजन बैरभावत्याग
परमपदको प्राप्त होतेहैं रघुनाथजी के ये बचनसुन शिव
अत्यन्त प्रसन्न हुये, अरु मूर्च्छित बीरमणिको स्पर्शक-
रके सचेतकिया व सब गणोंको भी सजीवकिया तब
शिव प्रेरित बीरमणि सकलत्र रामचरणों में गिरतेभये,
हे मुने बीरमणि धन्यहै जिसने करुणाकर को दृष्टिभर
देखा जिनको योगीजन बड़े कष्ट से पाते हैं सो दर्शन
पाय कृतार्थ हुआ अरु प्रभुकी शरणागत पाय ब्रह्मादि
कोंसे पूजित हुआ राजाका भाग्योदय कोई नहीं वर्णन
करसक्ता, तब शत्रुघ्न हनुमान्, पुष्कल सबको सप्रेम
राजा मिलकरके बैरभाव त्याग राज्यकोष अश्वपति
सब समर्पण किया, तब रघुकुलमणि ने सब बस्तुको
अंगीकार करके राजाको देखा अतीव प्रशंसाकिया तब
सबको सबप्रकार से संतोष करके आप अन्तर्द्धानहुये
२३।३० हे सूत तब दोनोंदल विस्मित बोले हम रघु-

नाथजी को मनुष्य करके जानते थे, आज प्रभुकीमहिमा जानी,स्वामीको अद्भुत रचना देख सब ऐसे वर्णनकरतेथे, शिवजीनेभी बीरमणिको रघुकुलमणिकी शरणागत करके आप कैलाशको गये,तब शत्रुघ्नजीने रघुनाथ जीके प्रभाव से विजय पाय अत्यन्त हर्षितहुये, व सब बाजा बजवाते भये,तब रामानुज राजाको बुलाय मणि मय स्यन्दन में आरूढ़ होकर चलनेका बिचारकिया, तब बीरमणि ने सब सैन्य साजिकै शत्रुघ्न के पासगये रघुपतिका सेवकजान सन्मान किया हेमुनि राजाकी भाग्यको को वर्णन करसक्ताहै तब शत्रुघ्नजीकी आज्ञा पाय यज्ञ तुरंग को छोड़तेभये तिसपीछे सबबीर अस्त्र शस्त्र लैकर घोड़े को देखतेहुये चले हेमुने जो नर नारि यह रामचरित्र प्रेमयुक्त सुनैगे उनको असार संसारकी ब्याधि नहीं ब्यापैगी ३१।३८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषबात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायांहयप्रस्थंनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हेद्विजोत्तम तब बाजिराज विचरतेहुये भरतखण्डके अन्तहिमगिरि में पहुंचे १ वहपर्वत हजार योजन का ऊंचाथा तेहिके समीप उत्तम पुष्प बाटिकामें नानाप्रकार के सुगन्धित वृक्षलगेथे २ तिनमें अनेकन

पक्षी मनोहर शब्द करतेथे अरु नानाप्रकार के पुष्पोंमें भ्रमर कलोल के साथ गुंजार करतेथे ३ तेहि महाघोर बन में अश्वपति हेमपत्रयुक्त प्रवेश करगये, तिनकेपीछे ससैन्य रघुकुलमणि चलेजाते थे ४ हे वात्स्यायन तेहि समय विषे एक बड़ा आश्चर्य्य हुआ, कि अकस्मात् घोड़ा ऐसा थकित होगया कि पैगभर भी नहीं चलसका अर्थात् मेरुके समान अचल होगया, तब रक्षकोंने बहुत उपायकिया परन्तु घोड़ा गातभी न डुलासका ५।६ तब सब सेवक व्याकुल होकर शत्रुघ्नजीके निकट जायकहा हे स्वामिन् यहि आश्चर्य्य का मर्म नहीं सूचितहोता कि घोड़ा बायु के समान बेगसे चलाजाताथा अकस्मात् ऐसा अचल होगया टलताही नहीं अब आपको जैसा मुनासिब समझपड़ै वैसा करो, तब शत्रुघ्न ससैन्यविस्मित होकर घोड़ाके निकटजाय देखा अरु उसीसमय भरतपुत्र पुष्कल ने भुजोंसे पकड़ बलसम्हारि उठाया, परन्तु ऐसाअचलहुआ कि तिलसमान न उठा, तदनन्तर जाम्बवन्त अङ्गदआदि रणधीरोंने उठाया लेकिनकुछभी न टला, यह कौतुकदेखअंजनीनन्दन हनुमान् निकटजाय पूंछसे लपेट बलसम्हारि उठाया उनसेभी घोड़ाने तिल भरपैर न उठाया, तब हनुमान्जीने विस्मितहो सकुचिकै बोले हेराजन् मैंने कईबार द्रोणाचलको गेंदके समान पूंछसे उठालिया, और शिला शृंगोंकी क्या गिनती है अरु नन्दीगणसमेत शिव को बहुतबार भ्रमायाहै और यह अल्पबाजी क्याहै परन्तु मैंने यहि समय बड़ाआ-

श्चर्य्य देखा अरु औरभी सब बीरोंने उठाया किसी का बल न पूर्ण हुआ बड़े आश्चर्यकी बात है, हनुमान् जीकी यह बाणीसुन रामानुज मंत्रिराज सुमन्तसे बोले हे मंत्रिन् केहिकारण घोड़ाको पृथ्वीने ग्रसिलिया, अरु केहि प्रकारसे घोड़ाचलै यह सब कारण समुझाय कहौ ७। २२ तब सुमन्तबोले हे स्वामिन् कोई त्रिकालग्य मुनिको अन्वेषण करौ, वह मुनिनकीमतिगति विचक्षण होतीहै वे यह सब संशय दूर करैंगे अरु जो सम्प्रदाय जगत् अर्थात् तुम्हारे देशमें है, वह हम प्रकाशितकर-तेहैं, औरतो नहीं जानते २३ तब रामानुजने यहसुन सुभट बुलाय कहा कि काम क्रोध त्याग इस विपिनि में तपोनिधि मुनिवर ढूंढ़ौ, अनुशासन पाय सुभट चले गये तब आपभी सहितसमाज मुनिराज के अर्थ घूमने लगे, विपिनके बीच नदिनके तटमें कन्दरादिकोंमें दूतों ने ढूंढ़ा परन्तु कहीं दर्शन न हुये, हेमुने एकदूत ढूंढ़ते२ एक योजन पूर्वदिशामेंजाय गंगानिकट एक अतिपुनीत आश्रम देखा जहां मुनिप्रतापसे पक्षी आदिजीव विगत वैरसे वास करतेथे व अनेकन मुनि तपोनिधि वासकरते थे जैसे जीवके वीचमें उत्तमता पूर्वक ब्रह्म रहताहै, कोई मुनितो अग्निहोत्र कोई ध्यानावस्थित कोई अधोमुखसे धूमपान करतेथे यहिप्रकार सब मुनिवर विगत मान मदसे तप करतेथे जेहि अग्निहोत्रकी भस्मके स्पर्श क-रनेसे घोरपातकभी छूटजाते हैं २४। २६ उस पुनीत आश्रममें शौनकमुनि सीतारामके ध्यानमें मग्न बिराज

मानथे, उनका नाम रामदूतने बूझि रामानुजसे जाकहा, तब श्रुतिपथानुरागी सुमन्त, भरतपुत्र, हनुमान्, लक्ष्मीनिधि, इन सबको साथलैकै रामानुज जाय विस्मय पूर्वक निवेदन किया, तब निकटजाय शत्रुघ्न ने अपना नाम कहकर समाजयुत दण्डवत् किया, तब तपोनिधि मुनिराजने अतिथिजान स्वागतकर आसनदेकर बोले हे राजन् केहिकारण आगमन किया तुम्हारा पर्यटन दुस्तरहै राजालोगोंका सहसा करके विचरना अच्छा नहीं, जो तुम इसप्रकार विचरोगे तो जगत में दुष्टजन अदंडतासे दुष्कर्म करनेलगैंगे, अरु कुछ विचरनाभी तुम्हारा धर्महै जिससे मुनिजन दुःखित न हों, अब तुम निदान अपना अर्थ कहो मुनिराजकी यहबाणीसुन सब रामादलकेबीर आनन्दित होगये तब रामानुज पुलकितगात गद्गद् गिरासे बोले ३०। ३७ हे मुनिराज एक विस्मय सुनौ तुम्हारे आश्रमके निकट कानन में रामचन्द्रजीके यज्ञका घोड़ा बायुके समान चलनेवाला अकस्मात् थकितहोकर मेरुके समान अचल होगया जिसको महारणधीर हनुमान् पुष्कलआदि बलकरके उठाया उन सबसे तिलभरभी न उठा हे मुने उसीसे हम दुःख सागर में बूड़तेहैं जेहिप्रकार हमारा उद्धारहो वह उपाय आप वर्णनकरौ ३८। ४१ यहि प्रकार रामानुज की बिनीतबाणी सुन शौनकमुनि मुहूर्तमात्र ध्यानावस्थितहोकर ज्ञानदृष्टि से सब पूर्व चरित्र देखकर नयन उघारि बोले हेराजन् ४३ जेहि प्रकार अश्व अचलभयो

है वह कारण सुनौ उसके सुनने से अवश्य तुम्हाराभ्रम दूर होजायगा ४४ गौड़देशमें काबेरी नदीके तीरसात्विकनाम ब्राह्मण ने उग्रतप किया अर्थात् प्रथम दिन निराहार दूसरेदिन वायुपान किया व तीसरे दिन उज्ज्वलनीर पानकरके ऐसे बहुत बितीतहोनेपर एकमणिगणोंसे रचित विमान अप्सराओंसे सेवित निकटदेख द्विजोत्तम हर्षित होकर आरूढ़ हुये व कंचनगिरिके शिखरमें जाय बिहार करने लगे, वहां जम्बूनाम वृक्ष भी विद्यमान था,जेहिसे जाम्बवती नाम नदी उत्पन्नभई,उस के निकट महामुनि वृन्द देवता कोऊ त्रिकाल सन्ध्या कोऊवेद विहित कर्म्म अपने २ धर्मकेअनुसार करते थे, वहीं सात्विकभी नानाप्रकार की मनभावन अप्सरालिये बिहार करतेथे,एक समय कामबश होकर हृदय से ज्ञान छोड़दिया अरु अपना ऐश्वर्य्य देखि कै मदोन्मत्त ४५। ४६ होकर उन तपोनिधि मुनियों से गात स्पर्श करके हांसी किया करतेथे, एकदिन मुनिराज ने ध्यान से यह कुत्सितकर्म देख शापदिया कि रेशठ राक्षस हो तब सात्विक शाप सुन व्याकुलहो बारबार चरणोंमेंगिरकर कहा हे कृपालु मैं खल पापरूपहो हैं। मेरे ऊपर कृपा करो, तब मुनिनाथ क्रोध त्याग करके बोले जब श्रीराम के यज्ञका घोड़ा आवै तब उस को ग्रसि लीजो पुनः रामचरित्र श्रवण करके तब मेराशाप मोक्ष होगा व श्री रघुनाथजी के प्रभाव से मुक्तहोगे सोई सात्विक नाम ब्राह्मण यहिप्रकार घोरनिशाचर हुआ है उसीने

तुम्हारा घोड़ा ग्रसा है श्रीरामचरित्र वर्णनकरौ अवश्य छूटैगा ५० ५५ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्वादेरा-
माश्वमेधभाषायांसात्विकमुनिशापकीर्त्तनोनामसप्त
चत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

हे वात्स्यायन शौनक मुनिके मुखसे ये वचन सुन लवणान्तक शत्रुघ्नजी चरणबन्दिबिस्मय युक्त बोले १ हे नाथ कर्म्मगति अत्यन्त बलवान् है देखो तपोनिधि सात्विक देवांगनों के साथ बिहारकरते प्रथमपुण्यनाश करके कैसेनरकमें पड़े अरुनर कौनपापकरके किसनरक को जातेहैं, सो जैसे श्रुति कहतेहैं वह आप वर्णन करौ २। ३ तब शौनक हर्षितहोकर बोले हेरघुश्रेष्ठ रामानुज तुम धन्यहौ यद्यपि तुम्हारीमति सदैव शुद्ध मोददायीहै तदपि उदार बुद्धिसे दीननके हितार्थ पूंछतेहौ सोसुनौ जगकी विचित्रगतो नानाप्रकार की कहते हैं जिनके सुननेसे अवश्यमोक्ष प्राप्तहोताहै ४। ५ जेनर परधन परतिय परसुत हरण करतेहैं, तिनको यमदूत कालपाससे फांसकर ताड़ित करके अन्ध तामिश्र नरक में डालतेहैं उसमेंहजारवर्ष भोगकरकेफिर शूकरयोनिमें जन्मपातेहैं, तहांभीनानाप्रकारकेदुःखसहिके तबमनुष्य जन्मपातेहैं तिसमेंभी दुष्टरोग संयुक्तदेहसे अयश करते

हैं६।८अरु जे जन भूतद्रोह करके केवल अपने कुटुम्बही कापोषण करतेहैं वे उनको यमदूत नानाप्रकारके क्लेश देकर अन्ध नरकमें डालतेहैं, अरु जेजन वृथाजीव बधकरतेहैं ते रौरव नरकको प्राप्तहोतेहैं, अरु जे अजितेन्द्रिय स्वादहेतु जीव बधकरके आमिष भक्षण करते हैं तिन को धर्मराजकी आज्ञासे यमदूत नानाप्रकारसे ताड़ित करके महारौरव नरकमें डालते हैं, अरु जे पितु बिरोधी द्विज सन्त के अपमान कर्त्ता तिनको भी यमकिंकर अनेक दुःख देकर जो कालसूत्र नाम घोर नरक हजार योजनका गहिरा तिसमें डालदेते हैं अरु धेनुके विरोधी अर्थात् क्लेशदायी भी इसी नरकको प्राप्त होतेहैं औ गौ के रोमप्रमाण वर्ष उसमें बासकरते हैं,६।१३ अरु जे राजा दुष्टस्वभाववाले नीति धर्मकोनहींजानतेबिनापाप ब्राह्मणोंको दण्ड देतेहैं वे शूकर मुख नरक में कोलमुखी यमदूत उसमें तिनको छोड़तेहैं, तिसमें अयुतवर्ष भोग करके मन्दयोनि में उत्पन्न होतेहैं, अरु जे विप्रवृत्ति में दुष्टता करतेहैं बंधनहित गौओंको क्लेशित करतेहैं ते दुष्टात्मा अन्धकूपमें अधोमुख पड़ते हैं और हे रामानुज जेजन वेदमार्ग छोड़ अपने स्वादके अर्थ मधुरबस्तु भोजनकरते हैं तिनको यमदूत नानाप्रकार के ताड़नादेकै कृमिभक्ष निरय में डाल के कीड़ों से भक्षणकराते हैं १४।१६ अरु जेजन बिना बिपत्ति के सुवर्ण चुरालेतेहैं, व ब्रह्मस्व हरलेतेहैं तिनको यमदूत देशनाम नरक जो महाप्रचण्ड तिसमें डालतेहैं२० अरु जेजन अपने सुखको

स्त्रीरूप बनाय परस्त्रीन में गमन करतेहैं तिनको यम दूत कुम्भीपाक नाम नरक जिसमें दारुण तप्ततेल भराहै उसीमें अधोमुख करके छोड़ते हैं, अरु जे मनुष्य बरबश श्रुतिमार्ग खंडन करके स्त्रियोंकी मतिमें चलते हैं वे नर बैतरणीनदी में रुधिर मांस भक्षण करते हैं, और जे कामीपुरुष वेदका प्रमाण न माननेवाले निन्दक वे सकलत्रासप्रद वैसानस नाम नरक जिसमें हलाहल अशन मिलताहै अरु बिश्रामतो उसमें स्वप्नमेंभी नहीं मिलता, जेशठ अधम बामानुरागी कुलीनस्त्री गमन करतेहैं,ते शठ रेतकुंडमें निवास करतेहैं २१।२५ तहां उनको अत्यन्त क्षुधा पीड़ित करताहै तब वहां तप्त रेत पान करतेहैं अरु हेरामानुज शत्रुघ्न जे जगमें चोर लंपट आग लगाय देतेहैं, औ बिश्वासघात करके विष देतेहैं अरु परहित पातकी जे डाकाजनी करतेहैं, तिनको प्रेतपति यमदूत नानाप्रकारसे ताड़ितकरिकै सारमेयनाम नरकमें छोड़तेहैं, अरु जेशठ झूठीगवाही देतेहैं व परधन हरतेहैं ते नर सूचीखदन नाम नरकमें पड़कर उनको भेड़िया भक्षण करतेहैं फिर मन्दयोनिमें रोगयुत उत्पन्न होतेहैं, अरु जे नर स्वादके हेतु सुरापानका अनुराग करतेहैं २६।२६ तिनको यमदूत तिनकेतमान लोह तप्तकरके पानकरातेहैं अरु जेमूढ़ गुरूका अपमान करतेहैं व अपनी बिद्या व आचारका बिस्मरण करदेते हैं तिनको यमदूत क्लेशित करके छारनाम नरकमें खंड करके छोड़तेहैं, तिसमें जब क्षण क्षणमें शरीर खंडित

होता जाताहै तब दुसह दुःख सहिकै अपने पापों को स्मरण करके अधीरतासे रोदन करतेहैं अरु जेशठ बिश्वासघात करतेहैं व बेदमार्ग को नहीं चलते तिनको अग्निकी लपटैं छूटनेवाली शूली मिलतीहै, अरु जे सन्तत पिशुन करतेहैं तिनकोगति सुनौ, एक दुन्दसूक नाम बिख्यात नरक सबसे कठिन तिसमें पड़तेहैं उन को उसमें बिषधर सर्प डसतेहैं हेरामानुज यहिप्रकार अनेकन नरकहैं मैं तुमसे सब कैसे बर्णनकरौं जे जगमें जैसा पातक करतेहैं ते तैसे नरकको प्राप्तहोकर दुःख पातेहैं, इसमें कुछ शक नहीं जिनने रघुपति यश नहीं सुना न परोपकार हृदयसे किया ३० । ३४ तेई नर महा दुःखजालमें पड़तेहैं व यमदूतभी बहुत ताड़ना देते हैं उस दुःखसे किसीकाल में छूटते नहीं, जेनर इहां आनन्द बिलासीहैं उन्हींको सुरपुरबासी जानो औ जे रोगी क्रूरकर्म्मी हैं उन्हींको पातकी जानो, हेबात्स्यायन यहसुनकर शत्रुघ्नजी क्षणक्षणमेंकांपनेलगे३५।३६ फिर दोनोंहाथ जोड़ लोकहितार्थ संशय रससानी बाणी बोले हे मुनिनाथ त्रिकालज्ञ जगके सुखदेनेवाले यह आप बिस्तार पूर्वक बर्णनकरो कि केहिपातकसे कौने चिह्नमें प्राणी संसारमें उत्पन्न होतेहैं, यहसुन शौनक हर्षित होकर बोले सुनौ मैं बर्णन करताहूं ३७ । ३८ सुरापानवाले जब दुःख भोगनेके उपरान्त श्यामदशन करके उत्पन्न होतेहैं, अरु जे अभक्ष्य भक्ष्यके ग्रहण करनेवाले अपयशी गुल्मरोग करके अर्थात् उदरव्याधि

से उत्पन्न होतेहैं, अरु जेनर अबिबेकी निदान ऋतुवन्ती स्त्री जान रमण करतेहैं तिनके उदरमें कीड़ा पड़ते हैं ३९।४० अरु जे अधमस्त्रीका बनायाभोजन पानकरते अर्थात् उसमें दुर्गन्ध आतीहो, अरु जे सुपाक बनाय बिना हरिकेअर्पण किये आहार करतेहैं तिनके पेटमें घोररोगहोताहै औ महाव्याधिहोसे उनका जन्मव्यतीत होताहै अरु जे अन्यके भोजन करते कुदृष्टि से देखतेहैं उनकी जठराग्नि मन्द होजातीहै वे कभीभी सुखपूर्वक भोजन नहीं करते, अरु जे किसीको बिष देतेहैं उनके छर्दिरोग होताहै औ जे मार्गनाश करतेहैं उनके सदैव चरणरोग होताहै ४१।४३ अरु जे पराई हांसी करते हैं, उनके कासश्वास होताहै, जे जगबंचक कपटनिधान जनहैं वे अपस्मार रोगसे ग्रसित रहतेहैं, जे संसारमें प्राणियोंको दुःख देतेहैं तिनके गातमें सदैव शूल हुआ करताहै, अरु जे दुष्टात्मा आगलगा देतेहैं उनके गुदा मार्गसे सदा रुधिर गिरताहै अर्थात् रक्तातीसारहोताहै वे चिन्तामें लीनहृदय सदैव पीड़ितही रहतेहैं ४४।४५ जे ताम्र चुरातेहैं उनके गातमें थाली होतीहै औ जेकांस चुरातेहैं, वे शीत शरीरसे उत्पन्न होतेहैं, औ जे पीतर चुरातेहैं तिनके शिरकेबार अरुण होतेहैं ४६ जे परशीश हरतेहैं उनके शीशरोगही रहताहै, जे लोभबश पराया घी चुरातेहैं उनकी आंखोंमें मन्दरोग होताहै, जे मधु चुरातेहैं उनके शरीरमें दुर्गन्ध आतीहै लोह चुराने वालोंके तनमें बनरफ होताहै, तेल चुरानेवालोंकेसर्वांग

में पीड़ाहुआ करतीहै, जिन्होंने चोरी करके खायाहै वे दशनहीन होतेहैं, अरु जे स्वादहेतु पक्वान्न बनाय घरमें चुरायके खातेहैं उनकी जिह्वा रोगी रहतीहै जिससे वे सुखपूर्वक भोजन कभीनहीं पाते, जे अज्ञानी मातुगमन करतेहैं वे लिङ्गविहीन जन्मतेहैं ४७। ५४ अरु जेगुरु तिय रमण करतेहैं उनको मूत्रमें अत्यन्त क्लेश मिलता है, जे अपनी कन्या भोगकरते उनके रक्तकुष्ठ होताहै, जिन्होंने अपनी भगिनी ग्रहण कियाहै उनके पीतकुष्ठ होताहै औ जिन्होंने स्वामीकी स्त्रीका अनुराग कियाहै उनके दाद होतीहै, औ हेरघूत्तम जे अपनाघर किसीको सौंपतेहैं उसकी स्त्री से जो रति करतेहैं, वे जबजब शरीर धरतेहैं तब तब तिनके दहिने अंगमें कीड़ा पड़ा करतेहैं जे यमका भय न करके मामीका ग्रहण करतेहैं उनके बाईंओर कीड़ा पड़तेहैं, जे जनकबन्धुतिय अर्थात् काकी को ग्रहण करतेहैं, तिन अपयशियोंके कंठमें कुष्ठ होता है, अरु जे मित्रस्त्रीको ग्रहण करतेहैं, व जे कामलालसा से बहुत बिवाह करते उसमेंभी स्त्री न जिये उससेव्याकुल रहते, व जे अपने गोत्रकीस्त्रीका ग्रहण करते, तिन शठोंके दुःखआगार भगन्दर रोग होताहै, औ जेनर तपस्विनी सुशीलास्त्री भोग करतेहैं उनके प्रमेह होताहै ५५।६० अरु जेजन पूजनीय माननीय स्त्रीसे रमण करतेहैं तिनके नाणव्रण होतेहैं, जिन्होंने संसारको दीक्षादीहै उसकी स्त्रीसे जो बिहार करतेहैं, उनके सदैव रोग चुआकरता है, औ जे स्वजातिमें बिहार करतेहैं उनके हृदयमेंकीड़ा

पड़तेहैं, जे कुलीन स्त्री से रति करतेहैं उनके मस्तकमें कीड़ा पड़तेहैं, जे पशुरमण करतेहैं उनके मूत्रमें धातु जातीहै, हेराजन् यहि प्रकार अनेकन चिह्नहैं मैं कहां तक वर्णनकरूं ६१।६३ ऐसेही जब प्राणी नरक भोग आताहै, ऐसेही चिह्न स्त्रियों मेंभी जानो नानाप्रकारके पातकहैं नानाप्रकारके चिह्नहैं अपने अपने पापानुसार चिह्नयुक्त सब उत्पन्न होतेहैं, दान, पुण्य, जप, तप, मख व्रत, तीर्थ, देवता इनके ध्यानकिये व रामचरित्रकास्मरण किये क्षणमें पापसमूह नाशहोताहै यह सत्य सत्य पुनः सत्य वेद स्मृति यह गातेहैं कि पुनीत रामचरित्र सब पातकोंका नाशनेवालाहै चाहे कोटिन उपाय करै यह बिना कलुष अमूल नहीं होते अरु कलुष पुंज कुंजरको रामचरित्र सिंहवत्है, औ महापाप जग समुद्रको राम चरित्र अगस्त्य के तुल्यहै, मनसंभव पातक जो तिमिर रूपहैं तिनको रामचरित्र दिनेशके तुल्यहै, अरु मनसा वाचासे अर्थात् जान अजानसे जितनेपाप होतेहैं उनको रघुपति यश कृशानु रूपहै, अरु जे शठ रघुनाथजीका यश सुन उपहास्य करतेहैं ते नरकमें पड़कर कल्पांतर पर्य्यंत नहीं उबरते, औ हे शत्रुघ्न सहितसमाज जावो शोचको त्यागकरो सबकाज शुभहोंगे, अरु सीताराम चरित्र घोड़ाको श्रवण करावो अवश्य मुक्तहोगा यह मेरा सत्य वचनहै, यहिप्रकार शौनक मुनिने कहा, सुन कर शत्रुघ्नजीने हाथजोड़ पुलकितगातसे मस्तकनवाय नानाप्रकारसे बिनय करके सब समाज युक्त प्रदक्षिणा

करके सब मुनियोंको प्रणामकर रामानुज शत्रुघ्नजी अपनी कटकको चले ६६।७० हेमुने तब यहसुन अंजनी नन्दन हनुमान् शीघ्रता पूर्बक घोड़ाके पासजाय क्रमसों रामचरित्र बर्णन किया, फिर कहा हे द्विजेन्द्र क्यों देर करतेहो मुक्तहो, श्रीरामचरित्रके प्रतापसे बिमानमें चढ़ कर मुनिशाप छोड़ो, व परम आनन्द पूर्बक परमपदको प्राप्तहो जहां नित्य मुक्तिसुख लेतेथे, यहिप्रकार हनुमान् ने कहा तबतक शत्रुघ्नजी भी आगये, तबतक वह द्विज मन्दयोनि त्याग बिमानमें आरूढ़हो सन्मुखजाय हाथ जोड़ शिरनाय बोला, हेशत्रुघ्न हनुमान् तुम्हारे प्रताप से व रघुनाथजीके प्रभावसे मैं सब प्रकारसे पावनह्वैकै सबपाप नाशि परमपदको जाता हूं ७१।७४ यहकह बन्दना करिकै वहब्राह्मण बैकुंठको चलागया यहचरित्र देख सब सुभट बिस्मित होगये, तेहि समय यहिप्रकार यज्ञ तुरंग छूटताभया व घोड़ाको बिचरतेदेख सब राजा हर्षित होगये ७५।७६ इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखंडे शेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायां हयमोचनो नामअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

श्री शेषजी बोले हेमुने उस गह्वर बिपिन भ्रमण करते सब राजाओं युक्त बाजिराजको व्यतीत हुये अरु श्रीशत्रुघ्नके प्रतापसेकोई पकड़ नहीं सके १ भरतखंड से हिमालयतक के देश सब भ्रमण किये, सीतापतिको

प्रताप सुनिकै सब मिलनेके सिवाय कोई घोड़ा न पकड़ सके २। ३ अरु कलिंगदेश व अंगबंगदेश अनेकनग्राम शैलबन स्वेच्छाचारी बाजिराज रणधीरोंके युक्त मझाते भये फिर सुरथ के कुंडलपुरनाम नगरमें गये जिसमें भवनकी शोभा अनूपमथो एक समय दितिके कुण्डल हर्ष भय दायक यहां गिरेथे इसीसे इसका कुण्डलपुर नाम हुआ ४। ५ अरु तिस नगरमें सदा धर्म आचरण होतेथे व सब नर नारि प्रेमसहित रामभजन करतेथे ६ औ जहां वृक्षराज तुलसिकाके वृन्दोंकी पूजा करतेथे व सब नर नारि रघुनाथजोके सेवकथे ७ अरु मणिगणयुक्त जहां सीतारामके स्थानबनेथे उसमें सीताराम गणनयुक्त धनुष बाण धारणकिये बिराजमानथे तिनको पूजन सब लोग कामादिक छोड़ करतेथे अरु सबजीव सदा कलह को छोंड़ सीताराम का स्मरण करतेथे अरु मोक्ष आदि की याचना छोंड़ सब नर नारि शुद्धचित्त होकर एकदेव रघुनाथजोकी मान पूजन करतेथे ८। ६ अरु सब जन प्राकृत व्यसनसे परमानंदित रहतेथे, हेमुने वे चातृक के समान रघुपतिके अनन्य भक्तथे प्राकृत दोषोंको छोड़ भजन करते थे सब आलस निद्रा छोंड़ जिसकी पूजा ऐसी धर्मरत थी तहां मैं सूरथका बर्णन क्याकरूं १० ते हिसमय नगरकेनिकट सुरथकेबीरोंने कनकपत्र शोभित देखातब बांचतेही बिस्मयमान रघुनाथजीका अश्वजान परमानन्दित होकर राजाके निकट जाय प्रणामकर रजायसु पाय बोले हे नाथ अयोध्यापुरी के नायक श्री

पति जिनको जड़ जंगम भजतेहैं तिन्होंने यज्ञकरके भ्रमण के अर्थ घोड़ा छोड़ाहै वह यज्ञाश्व अनेक सूरोंसे रक्षित तुम्हारे नगरके निकट आयाहै तिसको आनन्द पूर्वक ग्रहणकरो ११।१७ यह सुन पुलकितगातहवै के लोचन श्रवत बोले हे दूतो हम धन्यहुये हमारे को सीतारामने अतुलित कृपा करीहै अरु मैं सहितसमाज विगतसन्देह रामचन्द्रका दर्शनकरोंगो अरु कोटिनभट रक्षक वाजिराजको बरजोरीसे धरिहैं। जब जब श्रीराम चन्द्रजी आवैंगे तव चरणोंमें मस्तकधरि यज्ञाश्वदेहैं, मैंनेवहुतदिनसे जो ध्यानकियाहै अवश्य महाराजदर्शन देंगे यह कह सुरथने नगर निकट से घोड़ा मंगालिया १८।२० तव रघुनाथजी का घोड़ादेख कहा हे सभा सदो इसका प्रभावसुनौ जे रामचन्द्रके पद ब्रह्मा शिवादिक देवताओंको दुर्लभहैं ते चरणकमल इसीसे अवलोकन करोंगो, अरु वे पशु पक्षी चराचर आदिजीव जे रामचन्द्रजी की शरणागतहैं वे धन्यहैं यह बिचार यज्ञाश्व अच्छी तरह से धरो, यह राजाका बचन सुन सेवकोंने हयशालामें उत्तम स्थलमें बांधदिया व रघुनाथजीके दर्शनोंकी सब के अभिलाषा बढ़ी २१।२४ राजासुरथ रामचन्द्र स्वामी का यज्ञाश्वपाय परमानन्द को प्राप्तहुये, हे वात्स्यायन राजा नित्य सभामें प्रजा को इसप्रकार शिक्षादेतेथे कि कोई परत्रियरत न हो न विषयकी मार्गको देखो, न परधन का लोभकरो, औ जीवद्वार रघुपति गुणग्राम तिनका स्मरणकरो,एकनारि

वृत परअपवाद छोड़ धारणकरो, व श्रुतिपन्थ छोड़कोई न चलो, विधि पूर्वक विष्णु चक्र दरशाय बाहुमूल में धारणकरो रामभक्ति नित्य धामकी खानि मानमदत्याग करो, अरु जे शठ मोरे नगरमें शंखचक्रहीन प्रभु की शरण बिहीनवृद्ध तरुण शिशुनरनारि जोहों उनकाकाल मुझको जानो हे सभासदो कपटबिहाय कहता हूं यही कहीहुई मार्गमें सब निरत होवो यहि प्रकार राजा सुरथ नितप्रति सभामें शिक्षाकरतेथे २५। ३२ हे मुने तिनके नगरमें कोई स्वप्न में भी पाप नहीं करता सब प्रजालोग यह राजाकी शिक्षामान रघुपतिका ध्यानकरतेथे, जे जन तेहिनगर में शरीर छोड़ मुक्तिपदको प्राप्त होतेथे, हे सूत कराल यमराजभट तिस धर्म्मात्माके नगरमें कभीभी प्रवेश न करते थे यह विचार धर्म्मराज एक समयमें मुनितनु धारणकरके ३३।३५ जटा बल्कलधारे मानो अभी समाधिहीसे आतेथे श्रीयुत तुलसी माला हृदय में धारे सीताराम जपते हुये सीताराम चरित्र उपदेश करते सभा में प्रवेश किया, तब सुरथ ने तपोमूर्त्ति मुनिनाथ को देख सादर उठि प्रणामकर अर्घ्यपाद्य दै पूजन करके आसनदिया, तब वेदज्ञाता मुनिको आनन्दित आसीन देख मुनि प्रति राजासुरथ शुद्ध बचनबोले ३६।३६ हेनाथ तुम्हारे आगमनसे मैं वंशसमेत पवित्रहुआ अरु सब राज समाज युक्त आज मैं धन्यहुआ, अब आप पाप समूह नाशने वाले रामचरित्र वर्णनकरौ ४० यह राजाको वाणीसुन मुनि स-

भामध्य दांत उघारि दोनोंहाथोंसे तारी बजाय२ हँसने लगे, तब बिस्मित ह्वै राजा कहनेलगे हे मुनिनाथ केहिकारण मुझको हँसे, सब यथार्थ अपनाप्रसाद बर्णन करो यह सुनि मुनिनेकहा हेराजा मैं हास्यहेत कहता हूं जो तुमने पहलेकहा हरिगुण कथनकरो सोहरिकौन व गुण कहांहै यह केवल अज्ञानहै, कर्म प्रधानसे सब संसार आदि अन्त मध्यमें भ्रमताहै, अरु कर्म से स्वर्ग पाताहै व कर्महीसे नरकमें जाताहै, पुत्र पौत्रादिक परिवार सुख सम्पति सबकर्मप्रभाव से इनका भी बिस्तार होताहै, सुखदुख पापपुण्य सबकर्महो से प्राप्त होते हैं, देखो सौ यज्ञकरके इन्द्र ने अमरावती पाई औ कर्मही से ब्रह्मा संसार की रचना करतेहैं जिनकी कीर्त्ति बिख्यात है ४१ । ४६ अरु शिवजीभी कर्महीसे कैलास बास करके अन्तमें बिश्वनाश करतेहैं, सूर्य्य, चन्द्र, और ऋक्ष, नर, नाग, सिद्ध, पितर, सब कर्मप्रभाव से भोग करते हैं प्रकट पालन के हरन सब कर्म संयोगसे करते हैं, इससे हे राजन् यज्ञ आदिक करके देवार्चन सब भ्रमछोड़ करो, इसीसे तुम्हारी बिमलकीर्त्ति प्रकाशहोगी, यह हमारी सत्यबाणी जानो, हेमुने यह सुनकर राजाने महाक्रोध करके कहा हे मुनिवर कर्मकथात्याग करो यह सब दुःखदायकहैं ४७।४८ शीघ्र मेरेनगर से पधारो मैं हरिपद बिमुखका स्पर्श दर्शनभी नहींकरता, तुम्हारी संगतिसे मेरे पुरबासी भी अपना धर्म बिनाश करेंगे, पहले मैंने साधुजानकर प्रणाम कियाथा, अब

जाना कि पाप समूह तुम्हींहौ अर्थात् हरि बिरोधीहौ तुमने कर्मफल तुच्छ क्या बर्णनकिया, मैं कहताहूं अब श्रवणकरौ, श्रुति वाक्यहै कि सौ हजार वर्ष भोगकरके इन्द्रादिक अमरपुरसे पतितहोतेहैं, औ देखो श्रीरामचन्द्रजी का प्रभाव सबको बिदित होरहाहै ४६।५० प्रथम ध्रुवको देखो अबिचलधाम प्राप्तहुआ,पुनः प्रह्लाद चरित्र लोकमें प्रसिद्धही है,बिभीषण ने बिनु प्रयास अचलराज्य लंकाको पाया, जिनको देख अमर सेवक कभी भी तृप्त नहीं होते ५१।५२ जे खलनिन्दक अवगुणी तिनको यमकिंकर पांश से बांधि बरबश बिना बिचारे नरकमें डालदेतेहैं५३ हेअधर्म्मी तुझको ब्राह्मणजान दण्ड नहीं देताहूं चलाजा नहीं तो ताड़नकिया जायगा ५४ यह राजाकी सरोषबाणीसुन अनेकनअनुचर उठिके मुनिके भुजापकड़ उठाया ५५ तब धर्मराज अपना लोकबन्दित स्वरूप प्रकट करके बोले हेराजन् तुम्हारीभक्ति देख हम संतुष्टहुये बरदानमांगो ५६मैंने बहुत कर्मलोभ कहा तदि तुम धैर्य से चलायमान न हुये, तब राजा धर्मराजको देख प्रणामकरकहा हे नाथ जो प्रसन्न हो तो यह बरदो कि जबतक बंशसमेत श्री रामका दर्शन न करूं तबतक शरीर न छूटै, धर्म्मराज बोले हे राजन् तुम्हारे मन कामना श्रीरामके प्रभावसे सब सफल होंगे, सभामध्य यह बरदैके धर्मराज अन्तर्द्धानहुये ५७।६१ हे मुने सोईसुरथ रघुपतिअश्वपकड़ आनन्द पूर्वक अपने बीरोंसे कहा हे बीरो मैंने श्रीराम

चन्द्रजीका यज्ञाश्व बांधाहै तुम सब रणकी आकांक्षासे साज साजो, यह सुन सब वीर अपने २ दलसाजिसभा विषे उपस्थित होनेलगे, जो राजाके दशपुत्र बलवान् थे उनके नाम सुनो, चम्पक, मोहक, रिपुंजय, भूरिदेव सहदेव, बलमोदक, हरिपक्ष, सुतापन, प्रतापी, दुर्बारि ये सब रणगतिमें निपुणसजि आये ६२।६६ अनेकन रथ मणिमय युक्त सारथिन साजे, उन्मत्त हाथी भी सजायेगये, वायुके लजानेवाले बाजिराजोंके समूह साजेदल सजिकै चारोंओरसेआनेलगे चारोंओर फौजही देख पड़तीहै, हे मुने सब यूथप सजि सजिकै राजा को प्रणामकर सभामें उपस्थितहुये ६७।६८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायां सुरथहयग्रहणंनामएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हे वात्स्यायन इतशत्रुघ्नजीने अपने बाजिरक्षकों से पूछा कि घोड़ा कहांगया १ तब अनुचर बोले महाराज हम क्याकहैं कुछ मर्म नहींजानते इस नगर से कई एक रणधीर आय हमारे बलको परास्त करिकै बरबश यज्ञाश्व पकड़ लेगये, अब आपको जो रुचै सो करो २।३ यह सुन रामानुज दारुणरोष बढ़ाये अधर फरकते दांतपीसते गम्भीर बाणी बोले हे बीरो जिसने मेरा यज्ञाश्व धराहै उसको पुरजनयुक्त संहार

करौ यह कह फिर वृद्ध मंत्रीसुमंत्र को बुलाय पूंछा हे मंत्रिन् यह किसराजाका नगर है जिसने मेराघोड़ा पकड़ाहै ४।६ हेमुने मंत्रीने क्रोधयुक्तदेख नीतिरस सानो वाणी प्रकाशित की ७ हे महाराज जो तुम्हारे सम्मुख यह नगर है इसका कुण्डलपुर नाम है और सुरथनाम राजा धर्म्मनिरत पालन करताहै, अरु रघुपति के चरणों को सबकाम छोड़ भजन करता है, तन मन बच से रामपदलीन हनुमान्‌जीके समान अनन्य भक्त है, यहि के धर्म्मचरित्र सुनिकै संसार के अमंगल दूरहोते हैं, संगमें चतुरंग कटकहै औ परिवार युक्त आपभी रणकर्म में प्रवीणहै, यहां घोरयुद्ध होगा जिसमें बहुतभट अचेत होंगे, जो राजासुरथ ने घोड़ा धराहोगा तबतो महारण होगा सुरथ महाबली है यह मेरा सत्य २ बचन मानो ८।९१ मंत्रीके ऐसेबचनसुन रामानुजने कहा फिर शोचो कि केहिप्रकार यज्ञाश्व आवै अरु हमको निदान क्या करना चाहिये सो आप शोच बर्णन करौ १२।१३ तब सुमंत ने नीतिकेअनुसार बाणी बोले हे राजन् प्रथमतो एक चतुरदूत सुरथके नगर पठाओ राजाके पासजाकर वहां सबनीति प्रकाशकरैं जो यहिउपायसे यज्ञाश्व प्राप्त हो तो रणरंग क्यों करोगे अगर जो हठकरके प्रमाद से पकड़ा हो तो युद्धही करना उचितहै १४।१५ सचिवकी बाणीसुन शत्रुघ्नजी अंगदसेविनीतवचन बोलतेभये, हे तात तुम बलबुद्धि के निधान सुरथकी सभा को गमनकरो, वहां जाकर सुरथसेकहो कि तुमने यज्ञाश्व

क्यों धराहै यातो हृदय में बिनाजाने पापसाजान आप मिलौ या युद्धकरौ, जैसे तुमने प्रथम लंका में जाकर रघुनाथजीका कार्य कियाथा उसीप्रकार हे बुद्धिनिधान सुरथके यहां बशीठी करौ१८।१९ हेमुने यह सुन बालि तनय प्रभुप्रसाद कहिकै हर्षित होकर इत उत मत्तसिंहकी नाईं देखते हुये चले, नगरकी शोभा देखते हर्ष-पूर्वक सभामें जातेभये,तहां बीरमण्डली में अंगदने सुरथकौ पुनीत तुलसी प्रभुप्रसाद शीश में धारण किये और शंख चक्र उत्तम बसन धारे देखा अरु अपनेहीमुख से रामगुणग्राम सब को सुनाते जाताथा। २०।२१ तब राजाने अंगदको देख शत्रुघ्न का दूतजान बोले हेकपिराज यहां केहिकार्य्य को आयेहो अपनाकारण बर्णन करौ फिरमैंअपना कामकरूं,अंगदने भक्तिकीआधिक्यतादेख विस्मय युक्त बोले हेराजन् मैं बालितनय अंगद मेरा नामहै,रामानुज नृपतिशिरोमणि अतुलितबली शत्रुघ्न तुम्हारे समीप यह संदेश देकर पठायाहै, कि तुम्हारा कोई दूत यज्ञाश्व धरिलाया है तिसको राजा ने बिनाजाने पकड़ाहो तो मानछोंड़ सब राजसमाज युक्त घोड़ा लैकै चरणोंमें परौ सब क्षमाकरैंगे २२।२७ यदि मानबश न मिलोगे तो शत्रुघ्नजी क्रोधकरके सैन्य समेत तुमको परास्त करैंगे,जिन्होंने लंकेशरावण मुहूर्त्त मात्र में बधकिया तिनके घोड़ा पकड़े बचाव नहीं है २८।२९ अंगद के ऐसेबचन सुन सुरथ बोले हे अंगद तुमने मृषा नहींकहा तदपि यहिसमय हमारे बचन

सुनौ ३० मैं सत्य कहताहूं मैंने रघुनाथजी का घोड़ा
जान पकड़ा है अरु जो तुमने रिपुसूदन की भय सुनाई
तिसको भी सुनकर मैं न छोड़ूंगा, जब रघुकुलमणि मेरे
सदन आय दर्शन देहैं, तब मैं चरणों में मस्तक नवाय
यज्ञाश्व देकर सब राजसमाज अर्पण करूंगा, हम क्षत्री
धर्म्म सम्हारि निशंक ह्वैकै विरोध किया है, सो श्रीर-
घुनाथजी अवश्य दर्शन देंगे, क्योंकि वेदमें कहा है कि
स्वधर्म्मी को अभीष्ट प्राप्त होताहै, शत्रुघ्न आदिक वीरों
को जीतकर बन्धन करके दुर्गम गढ़में राखैंगो, बिना
रघुपतिके आये न छोड़ैंगा यह सत्य२ कहताहूं३ १।३५
तब सुरथके निशंक बचन सुनिकै रणधीर अंगद बिहं-
सिकै बोले हे राजन् तुम मोहवशसे ज्ञान भुलाय वृथा
बकतेहौ, अतुलितबली गुणनिधि जिनकीकीर्त्ति त्रिभु-
वनमें प्रकाशित होरहीहै जिनको ज्ञानभ्रष्टहोकर अल्प
कहते हौ जिन्होंने लवणासुरको मुहूर्तमात्र में खण्डन
करदिया है अरु जगतप्रतापी विद्युमाली तिसकोस-
हितविमान संहार किया है तिन को तुमने बांधने को
कहा, इससे हम तुमको मतिहीन जानतेहैं ३६।३९ और
भरतपुत्र पुष्कल बलनिधान अस्त्र शस्त्रोंके ज्ञाता जि-
न्होंने समर में शिवगण बीरभद्रको ब्याकुल किया है,
तिनका पराक्रम सब जगत्में विदित है, और मारुत
पुत्र हनुमान् जिनको संसार जानता है कि दुर्गमगढ़
लंकामें जाकर रावणके पुत्र अक्षयकुमारको मार उस-
कापुरभस्मकरदिया, अरुद्रोणागिरिको देवतोंसमेत पूंछ

में बांधलिया, तब देवताओंसे संजीवनी लैकर सब कटक को सजीवकिया, और रामचन्द्रजी के चरणकमलों का भ्रमर, व शत्रुगण विपिन को कृशानुहै सोई रण दुर्मद सदैव शत्रुघ्न के संग रहता है ४०।४५ अरु सुग्रीवादि कपीन्द्र पृथ्वीके ग्रसन करनेवाले ये सब शत्रुघ्नकी सेवा करते हैं, अरु नीलरत्न, लक्ष्मीनिधि रिपुतापन, सुमद, सुबाहु, प्रतापअग्र रणधीर बीरमणि, सत्यवान् आदि ये सब राजा अस्त्र शस्त्र बिद्या में निपुण शत्रुघ्न की सेवा करतेहैं पुनः हठवश कालसे भी संग्राम करसक्तेहैं इन केसंग क्षीरसिन्धुके अनुहार चतुरंगिणी सैन्यहै४६।४८ हेराजा तुम मसाके समान छोटेहोकर तिनकापार चाहतेहो, नीतिछोड़ वृथा मोहसे बकतेहो, अब मेरोशिक्षा से मान त्यागकर यज्ञाश्व लैकर शत्रुघ्न के चरणों में प्राप्तहो, वे रामानुज अत्यन्त कृपालुहैं, कृपाकरेंगे, फिर अवधपुरी में जाय श्रीरामचन्द्रकी मुखछबि देखि सहित समाज कृतार्थ होगे, हमने तुम्हारे हितकी बात बताई है ४६।५० हेमुने अंगद के ऐसे बचन सुन निडर राजा सुरथ बोला हे कपीन्द्र जो तुमने अपने कटकका बर्णन किया तिन सबका बिक्रम आजु समरबिषे अवलोकन करूंगा, तुमने परमभक्त हनुमान्को कहा जिन्होंने निदान प्रभुके चरणकमल छोड़ यहां हयपास आये, हे अंगद तुम्हारी सबसैन्य बलबिहीन है, मैं तुमसे बुझाय के कहताहूं ५१।५२ जो मैं मनसा बाचासे रामभजन करताहूं तो जबतक स्वामी रघुनाथ जीको न देखोंगो,

तबतक यज्ञाश्व नहीं त्याग करूंगा अरु प्रभु के प्रताप से हनुमदादि बीरोंको बन्धन करूंगा,ऐसा बीरकौन है जो बरबश घोड़ा लैले, हे कपीश जाय मोरमंत्र शत्रुघ्न से प्रकाशकरौ कि समरके अर्थ सैन्य तैयार करैं ५३।५५ मैंभी ससैन्य सजिकै आताहूं, अब जो नीक लागै सो करैं घोड़ा न छोड़ौंगा रणकरूंगा,सुरथ को सत्यबाणी सुन अंगदने अनुमान करके रामानुजके समीपजाय सब बर्णन करदिया ५६।५७ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषवात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेध भाषायां अंगदबसीठी नामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

हे वात्स्यायन अंगद के बचन सुन रामानुज ने भी अपनी चतुरंगिनी सेना संग्राम के अर्थ तैयार की १ और सब रणधीर आनन्दपूर्वक अपने २ रथोंमें आरूढ़ गर्जनेलगे,भेरी,प्रणवआदि निशान बाजतेभये,उनका शोर व रथके चक्रोंका शोर व हाथी घोड़ों के शोरसे आकाश परित होगया व पृथ्वीतक कुछ सुझाई न देताथा कादरों को वह शब्द सुनतेही हृदय विदीर्ण हुआ जाताथा, अत्यन्त उत्साह युक्त सब बीर गर्जते तर्जतेथे २।४ यह कुलाहल सुन सुरथ अपना कटक लैकर सचेत समर को आये बहुत रथ,गज,पदचर घोड़ा,हाथी, आदिकों से पृथ्वी परिपूरित होगई,प्रलय के समुद्रसे देख धूरिआ-

काश तक ब्यापिगई ५।६ हेमुने कहांतक बर्णन करूं चारों ओर सैन्यही देखपड़तीथी, शंखनाद पूरित होरहा है व बीर जय २ शब्द करते हैं, यहां रघुनाथजी की चतुरंगिनी सेना युद्धकीआकांक्षा से हर्षित दोनोंदल आस पास होगये, तब शत्रुघ्नजी ने दोनों दल देख सुमंत से कहा देखो सुरथ दलसाजि आयाहै, हृदय से बिचार मेरे कर्त्तव्य बर्णन करो ७।८ सुमन्त बोले हे राजन् तुम्हारे दलमें बड़े २ रणकर्त्ता हैं युद्धकरो, प्रथम पुष्कलादिकों को निदेशदो कि युद्धारम्भ करें, फिर हनुमान् जी सुरथसे युद्धकरें हे मुने सुमन्त इस प्रकार शत्रुघ्नजी से कहतेहीथे तबतक सुरथ पुत्र रण में सुयश पानेवाले धनुष चढ़ाये आगये ६।११ तिनको समर में आयेदेख पुष्कलादि बीर शीघ्रतापूर्वक धावतेभये अरु अस्त्र शस्त्र धारे स्यन्दन से स्यन्दन भिड़गये, सुरथपुत्र चम्पक व पुष्कल दोनों बराबर के रणधीर थे घोर युद्धारम्भकिया सुरथ ने भीयुद्धका आरम्भ किया, मोहक सों लक्ष्मीनिधि दुर्बारि से सुबाहु, प्रताप अग्र प्रतापीसे, बलमोदक, अंगद से, हरियक्ष नील रत्नसे, सत्यवान सहदेवसे, बीरमणि भूरिदेवसे, सुतापन उग्रासससे, इसीप्रकार सब बीर जुरि कै द्वन्द्व युद्ध करनेलगे, इस प्रकार सब युद्ध बिशारद नाना अस्त्र शस्त्रों से दुरथ युद्धकिया १२।१७ सुरथपुत्र चम्पक व भरत पुत्र पुष्कल दोनोंबीर थिरह्वैकै घोर युद्ध करतेभये पुनः पुष्कल ने कहा हे पुत्र चम्पक राजकुमार धन्य हो जो हमसे रण करने को उद्यतहुये, अब

अपना नाम कहकर तब मेरे आगे तिष्ठौ यहपुष्कलकी बाणीसुन चम्पकबोले जो तुम समरमें नाम बंश पूछते हौ बड़े अबूझहौ,तद्यपि हम कहतेहैं,मेरी माता नारियों कीमणि सीताजी हैं व पिता मेरे रघुनाथजीहैं,फिर मेरा बन्धु सुजन परिवार सर्वस रामही को जानो १८।२३ माता जानकी पिता रघुनाथजी के सिवाय स्वप्न में भी दूसरेकी आशानहीं रखता, अबमेरा लौकिक नामसुनो जो जगमें प्रसिद्ध होरहा है, सुरथनाम मेरापिता है व बीरमती नाम मेरी माता है २४।२५ तुमभी चतुरशिरोमणि कहाते हौ मेरानाम सुनौ, स्वर्ण के समान निर्मल मेरानाम जिसको पक्षी मधुको छोड़ रमतेहैं ऐसा चम्पक मेरा नामहै अरु मोसे युद्धमें बिश्व में कोईनहीं जीतसक्ता,प्रथम मैंने यह बखान किया,करुणाकर रघुनाथजी सब पारकरैंगे,तुम प्रथम अपना विक्रम प्रकट करौ,पश्चात्मेराभी देखौ २६।२८जबइसप्रकार चम्पक ने कहा तब पुष्कल ने सुनकर मनमें अजीत अनुमान करके धनुष चढ़ाय रोषबढ़ाय एकहीबार कोटिनबाण छोड़नेलगे,तब चम्पक नेभी महा कोपयुत शीघ्रता पूर्वक तीक्ष्णबाण प्रहारकिये,हेमपक्षयुक्त रिपु के नाशनेवाले बाण आतेदेख भरतपुत्र पुष्कल ने बिनुप्रयास खण्डन किये २६।३२ अरु अनेकन बाणचलाय दिशा बिदिशा परिपूरित करदीं,तब चम्पक अपने बाण खण्डित देख बोला अब रणसे भाग कहांजासकेहो, खड़े हो, यहकह दशबाण हृदयमें मारे जिनके लगने से पुष्कल के अत्य

न्तव्यथा रुधिर धार उत्पन्नहुई ३३।३४ तब पुष्कल ने महादारुण पन्द्रह बाण प्रहारकिये अरु चम्पक ने भी बाणछोड़े दोनोंबाण आकाश में भिड़तेभये तब पुष्कल ने तीक्ष्णबाणों से उनकोभी खण्डितकिया, तब चम्पक ने सर्पवत् तीक्ष्णबाण छोड़े उनकोभी पुष्कलनेखण्डन करदिया, निदान चम्पक के सबबाण भरतपुत्र ने शत२ खण्ड करदिये, तब अपने शायक खण्डित देख सुरथपुत्र हृदय से क्रोध करके श्रवण पर्य्यन्त शरासन चढ़ाय एक हीबार हजारबाण मारे, उनको भी भरतपुत्रने रामास्त्रसे शीघ्रतापूर्वक काटडाला, तब अद्भुत विक्रमदेख सुरथपुत्र हर्षित हो धन्य २ कहिकै तदनन्तर अपर बाण प्रहार किये ३५।४२ तिनकोदेख पुष्कल नेभी साधु २ कहकर प्रशंसाकिया अरु चम्पक को महावीरजान, धनुषचढ़ाय ब्रह्मास्त्र प्रहारकिया जिससे महाकराल ज्वाला प्रकट हुई अपर बाण सबभस्म होगये, औ प्रलयाग्निकेसमान प्रकाशित देख सबके खरभर परिगयो, तब रणकोविद सुरथपुत्र चम्पक ने घोर बाण आतेदेख शीघ्रतापूर्वक सोई देवास्त्र उसनेभी छोंड़ा आकाश के मध्य में दोनों ब्रह्मशर भिड़गये तिनकी महादारुण ज्वाला उत्पन्न हुई जिस से दोनों दल विस्मित होगये ४३।४५ ते दोनों प्रलयकारी बाण महायुद्धसे त्रिभुवनको पीड़ित देख शान्तहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े, वह अद्भुत विक्रम पुष्कलका देख चम्पकने गम्भीर वचनकहे हे पुष्कल अबशान्तहोकर समरमें तिष्ठ२ अर्थात् खड़ाहो ४६।४७

यह कहकर धनुष चढ़ाय रामास्त्रमारा, जिस को आते
देख पुष्कल ने खण्डनका अनुमान किया, तबतकहृदय
में प्रवेशकरगया, तब पुष्कलको रामास्त्रसे मूच्छितदेख
सुरथपुत्र चम्पक निकट जाय पुष्कल को उठाय रथ में
पौढ़ाय अपने नगर पहुंचाने के अर्थ अनुमान किया, तब
पुष्कल का बन्धनदेख सबसैन्य त्राहिकरते रुधिरबहते
भागचली तबशत्रुघ्न ने सैन्यभगीदेख अवसरयोग बीर
रससे हनुमान्जीसे कहा हे पवनज को ऐसा बीरहैजि-
सने मेरीसैन्य को परास्तकिया ४८।५२ शत्रुघ्नजी के
यह कहतेहुये वे बीर निकट आय चरणों में शिरनाय
बोलेहेनाथ सुरथपुत्र चम्पकपुष्कलको बांध लेगया, यह
सुन महाक्रोधकरके अरिमदहारी शत्रुघ्न बोले हे पव-
नज शीघ्रतापूर्वक जायसुरथ पुत्रको परास्तकरौ औअब
केहि कारण यहि समय बिलम्ब करते हो शीघ्रतापूर्वक
जाय प्राणप्रिय पुष्कलको लेआओ५३।५४ यहसुन अं-
जनी नन्दन हनुमान् चरणोंमें शिरनाय बिशाल रूप
कालके समान चलतेभये ५६ वहां हनुमान्जीकोआते
देख चम्पक ने मन में अनुमान किया कि ये पवनज
निदान पुष्कलको लेनेही आतेहैं, तब शीघ्रता पूर्वकध-
नुष चढ़ाय कोटिनबाण प्रहार किये तिन को हनुमान्
जीने बिनुप्रयास दलिमलिकै तिलसमान करदिया, तब
अपनेबाण निष्फल देख सुरथपुत्र चम्पक ने महादारुण
बाणमारे तिनको भी मुहूर्त मात्रमें कपीन्द्रने चूर्णकिया
५७।५८ अरु एक बिशाल द्रुम प्रहारा, तिसको चम्पक

ने निष्फल कर दिया, द्रुम को खण्डित देख एक गज उठायमारा,उसको तीक्ष्णबाणोंसे चम्पक ने चूर्णकिया, तब अंजनीनन्दनने एकहीबार अनेकन शिलाद्रुम प्रहार किये तिनकोभी चम्पकने तिलसमान करडाला, अरु सर्पवत् तीक्षबाण छोंड़ शरपंजर रचिकै हनुमान्‌जीको व्याकुल किया ६०।६३ तब हनुमान्‌जी महाक्रोधकर के कटकटाय गर्जतेहुये चम्पकके निकटजाय दोनोंभुजा पकड़ आकाश को उड़कर वहां दोनों बीरोंने वायु युद्ध किया परस्पर कोईहारि नहींमानते, अरुअपना२बिक्रम सम्हारि प्रचारि २ दोनों घात करतेहैं, तदनन्तर हनुमान्‌जीने राजपुत्रचम्पकको भ्रमाय पृथ्वीपरपटकदिया, तब शीघ्रतापूर्वक राजपुत्र उठकर हनुमानको भी पृथ्वी में पछारा तब बल सम्हारि हनुमान्‌ने बरबश फिर भी पटका तब रामजीका स्मरणकरके पूंछपकड़ हनुमानको भी घुमाया, अपना भुजबल रणमें प्रकट किया, राज पुत्र के घुमातेही घुमाते हनुमान्‌ने उसका चरण पकड़ उसका सतगुना भ्रमाया, तब चम्पक समरमें मूर्च्छित होकर गिरपड़े, तब सुरथ सैन्य हाहाकार करते भाग चली, तब हनुमान् ने समर में पुष्कलको मोचन किया अर्थात् छुड़ातेभये ६४।७० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषवात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेध भाषायां हनुमानकरकेपुष्कलमोच नोनामएकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

——*——

बावनवां अध्याय॥

शेषजी बोले हे वात्स्यायन अपने पुत्र चम्पक को मूर्च्छासे पतित देख पुत्रशोकसे बारम्बार उसांस लेता हुआ रणके अर्थ महारोष बढ़ाये कपीन्द्र को प्रचारता भया १।२ तब अंजनीनन्दनने राजाको आतेदेख युद्धार्थशीघ्रता से चले, तब सुरथ हनुमान् को आते देख गम्भीर बाणीबोले ३।४ हे पवनज बल निधान तुम धन्यहो, तुमने रामकाज लंकामें दूतहोकर कियाहै मन क्रमसे प्रभुपद अनुरागी जीवन्मुक्तहो, मेरापुत्र चम्पक तिसको तुमने युद्धमें व्याकुलकरके बरबश बन्धन कर समर से पतितकिया, यह विचार सब प्रकारसे सचेत होकर समरमें युद्धकरो यह हमने सत्यसत्य बाणी कही है ५।८ यहसुनकर हनुमान्बोले हेसुरथ मैं जानता हूं तुम रामभक्त अनन्यहो औ मैंभी सीतारामके चरणोंका दासहूं, तुम मुझको हर्षपूर्वक बांधलो, हमारे करुणाकरस्वामी सामर्थ्य उद्धार करेंगे, वे करुणानिधि कभी दासका दुःख नहीं देखसक्ते, अरु वेद स्मृति यहकहते हैं कि जेजन भगवान् का स्मरण करतेहैं वे दुःखकेसमुद्रसे भी पारहोतेहैं, यह बिचारमैं निडरहूं, हे राजन् तुम अपने बचन सत्यकरो यह कहकर हनुमान्जीमौन होगये ६।१० तब सुरथने बड़ी प्रशंसा किया हे साधु रामभक्त अनन्यहो, यह कहकर धनुष चढ़ाय हजारन तीक्ष्णबाण मारे ते बाणलगकर शरीरसे शोणितप्रकट

हुआ, तब हनुमान्‌ने गर्जि तर्जि के राजाका धनुष बाण खंड २ करडाला व बहुत बीरोंके उदर नखसे बिदारे ११।१३ तब ते चाप खगड देख दूसरा धनुष चढ़ाया उसकोभी पवनज ने निष्फलकिया, तब क्रोधितहोराजा ने तीसरा धनुष चढ़ाया उसकोभी खंडनकिया तब महाक्रोधसे पूरित सुरथने चौथाधनुष चढ़ाया उसको भी पवनज ने खंडन किया, निदान कपिराजने सब धनुष भंगकिये, अरु क्षण २ विषे घोर प्रहार करके गर्जते थे तब सुरथने महाक्रोध करके घोर शक्ति चलाई जिस के लगनेसे कपिराज मुहूर्त्त मात्र मूर्च्छित होगये १४।१८ फिर उठकर महारोषसे राजाका रथ पकड़ महावेग से आकाश को उड़े, तब सुरथने रथ उठातेदेख महाप्रचण्ड परिघ चलाया जिसका प्रहारभी तनमें प्रवेश करगया १६।२० अरु हनुमान् ने झकझोर करके रथ को छोड़दिया, पृथ्वीमें गिरतेही सारथी युक्तघोड़ारथ चूर्ण होगया, तब शीघ्रता पूर्वक सुरथ द्वितीय रथ में प्रवेश करके सम्मुख आये, तिसकोभी कपिराजने पूंछसेलपेट पटकदिया, सो रथ कैसे भानहुआ जैसे दारुण कुंजर सुमनको दलिमलि डालताहै, सुरथने अपना रथ बिनु प्रयास संहार देख चौथे रथमें आरूढ़हो सम्मुख आय कोदंड सगुन करने लगा तब तक हनुमान् ने उस को भी चूर्णवत् करडाला, हे मुने सुरथके उनचास रथ कपीन्द्र हनुमान् ने शीघ्रतापूर्वक निष्फल किये, कपिराज कायह बिक्रमदेख सुरथमहाबिस्मयकोप्राप्तहुये २१।२५

तेहि समय दोनों सैन्यमें विस्मययुक्त धन्य धन्य पुकारने लगे, तब सुरथबोले हे पवनात्मज तुम महाशूर बुद्धिबर तुम्हारे समान विश्वमें किसीने ऐसा युद्ध नहीं किया, अरु हे सत्यवान मेरा बचन श्रवणकरो कि क्षणमात्र समरमें खड़ेहो जबतक मैं धनुष चढ़ाताहूं, श्रीरामचन्द्रके चरणकमलोंमें तुमको मत्तभ्रमर करताहूं २६।२७ फिर धनुष चढ़ाय शिवबाण छोड़ा जिसके प्रकटतेही भूत पिशाच योगिनी बन्धनदेख त्रासित करने लगे, उस समय बीरोंनेभी हाहाकार पुकारा, तब हनुमाननेहृदयसे सीतारामका स्मरण करके गलितदामके समानतोड़ डाला पुनः स्वतंत्रतासे कटकटाय दौड़े, राजाने आतेदेख दारुण ब्रह्मास्त्र छोड़ा २८।३२ जिसकी ज्वाला चारों ओरसे आनेलगी, तिसज्वालाको पवनपुत्रने बिनुप्रयास पान करलिया, सो देखकर सुरथ महाबिस्मयको प्राप्त हुये, व सब रणधीरभी महावीर जानतेभये तब राजाने प्रभुका स्मरणकर रामबाण धनुषमें धारण किया, तब कहा हेपवनात्मज अब तुमको बांधताहूं, यहिप्रकारराजा कहताहुआ तब बचन बिवश हनुमान होगये कि स्वामी का बाण मृषा नहो, और राजासेभी कहा कि स्वा[illegible] बाण से मुझको [illegible] धारते हो, प्राकृत बाण चढ़ाया, ज[illegible] राम बाण न छोड़ते तो तुम्हारा बल सूचित करते, अब मुझको बन्धन करके अपने नगर पठावो, जाते तुम्हारो बाक्य सत्य हो, करुणानिधि श्रीरामचन्द्र निश्चयआकर छुड़ावेंगे, ३३।३६ यह कह हनुमान्‌जी चुप होगये,

तबतक भरतपुत्र पुष्करने पवनात्मज बन्धनदेख सुरथ के ऊपर धावतेभये, राजाने आतेदेख शीघ्रही आठबाण मारे, तब पुष्करनेभी अनेकनबाण मारे, तिनको सुरथ ने निष्फलकिया, फिर सरोषह्वै दोनोंबीरोंने बाणबर्षाय सब बिश्वपरि पूरित करदिया, अरु जड़जंगममें सबकैसे पूरित होगये जैसे अंतर्यामी रघुपति रहतेहैं तिस महा युद्धकोदेख आकाशमें देवताभी बिमोहसे बिकलहोगये, तहां मनुष्योंकी क्या गिनतीहै, ३७। ४१ हेमुने तहां महायुत सहस्रों अस्त्र चले, और मल्लयुद्धकी शोभा नहीं बरणी जाती सुभट कुभट सब ब्याकुल होगये ४२ तब महाक्रोधकरके सुरथने बिकराल बाणमारा तिसको पुष्करने खण्डन करके अनलबाण मारा, तब एक जाज्वल्यबाण सुरथने छोड़ा, तिसको भरतपुत्र खण्डन न करसके वह बाण हृदयमें प्रवेश करगया, तब मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़े, तब पुष्करको मूर्च्छितदेख शत्रुघ्न हृदयमें क्रोधयुक्त सन्मुख आय गम्भीर बचन कहतेहुये हे राजन् तुम महापराक्रम कियो कि महाबीर हनुमान् को बन्धनकिया ४३। ४६ अरु पुष्करकोभी मूर्च्छित समझ, और मेरी सैन्यभी संहार करके रणमण्डल भयाप्त करदिया, अब सजगहो धनुष लैकर खड़ेहो भाग कहां सक्तेहो, प्रचण्डबाणछोड़ तुमको अभी पतित करता हूं यह सुन सुरथ श्रीरामको स्मरणकरकेबोले हनुमादि बीरोंको मैं ने अपने बलसे जीताहै, अभी तुमकोभीघोर बाणोंसेपतितकरताहूं, जब रघुकुलमणि आवैंगे तब सब

को छोड़ूंगा, यह मेरी सत्यबाक्यहै नहींतो हेराजाशत्रुघ्न सबको बन्धन करूंगा ४७।५१ यह कहिकै हजारन बाण प्रहारकिये, जिस्से शरपंजर छागया तब शत्रुघ्न ने अनलबाण त्यागकरके सब शरपंजर भस्म करदिया, तदनन्तर सुरथने बरुणबाणसे अग्निबुताय जलबरषाया हेमुने तब सरोष ह्वै रामानुजने योगिनी निकाला, तिस को देख सुरथने हंसिकैकहा यहबाण प्राकृतमनुष्योंको मोहनेवालाहै, मैं सीतारामकादास मुझको यह त्रशित नहीं करसक्ता५२।५६ यद्यपि सुरथने ऐसा कहा तद्यपि रामानुजने चलाया तब वह बाण खण्ड खण्डह्वै गिर गया कुछभी न चलसका, योगिन्यास्त्र निष्फलदेख श-त्रुघ्न आश्चर्य्यमान लवनासुर संहारीबाण धनुषमें धा-रणकिया, जिसकातेज प्रलयाग्निके समानथा, ५७।६० सुरथने तिसको देख गम्भीर बचन कहे, कि यह असुर बिनाशन बाण जे रघुपतिसे बिमुखहैं उनपर चलताहै, यह कहतेही कहते वह बाण लगा लगतेही महाब्यथा से पीड़ित होकर रथमें मूर्च्छितहो गिरपड़े६१।६२ पुनः मुहूर्त्तमात्रमें उठिकै महाक्रोधसेबोले हेरामानुज संग्राम मे स्थिरह्वैकै अब मेरी एक प्रहार अंगीकार करो, यह कह जाज्वल्यबाण धनुषमें चढ़ाय राममंत्रसे मंत्रितकरके छोड़ा, सो महाबेगयुक्त हृदयमेंलगा तिसको देख सब दल अधीर्य्य होगया, रामानुज मूर्च्छितह्वै रथमेंगिरपड़े तब घायलकटक त्राहि २ करते भागचला, रणमण्डलमें सुरथने श्रीरामचन्द्रके कृपासे बिजयपाई अर्थात् रघुपति

भक्तिबल दरशातेभये, हेमुने अंगदादि राजाओंको सुरथ पुत्र जीतलेताभया, ६३।६७ इतिश्रीपद्मपुराणेपाताल खण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायांसुरथविजयोनामद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हेमुने तबकपिराज सुग्रीवने रामादल संहार व रामानुजको मूर्च्छित देख कटकटाय धाय १ लोचन रक्त किये सन्मुख जायबोले, हेराजन् तुमभी शूर बीर कहातेहौ मोसे युद्ध करौ, यह कह एक वृक्ष उपारि सुरथके शीशपर प्रहार किया, २।३ तिसको आते देख सुरथने बाणोंसे खण्डन किया, तब सुग्रीव महाक्रोधसे अनेकन शिलाशिखर बरषाये,तदनन्तर सुरथनेरामबाण छोड़ सुग्रीवको भी बांधलिया,४।७ जैसे महाबलवान् गज अंकुश के वश होजाताहै, हे मुने सुरथ सीताराम प्रभुके प्रतापसे सब रामादलको परास्तकर समरमें महाबिजय पाई, तब शत्रुघ्न आदि राजा व हनुमदादि कपि यूथ सबको रथोंमें धरि धरि सुतन समेत हर्षित हो अपने नगरको दुन्दुभी देतेगये ८।६ सभा सदन में जाय हनुमदादिकों से कहा श्री करुणाकर भक्तों के रक्षक रामचन्द्रको सुमिरणकरौ, जो आकर तुम सबकों छुटावैं,अर्थात्जेहिप्रकार बन्धनसे मोक्षहोसोईकरौ,नहीं तो हज़ारबर्ष भी हेपवनात्मज नहीं छोड़ैंगा,१०।११ जब यह भयरसंसानी बानी सुरथकी हनुमान्ने सुनी,

तब सबको बंधन बश देख व्याकुल हुये, अपनेकोभी पर बश देख हृदयमें शोक बढ़ा तब आंखें शोक जलयुक्त प्रभुको सम्हारि बोले,हे सूत सो मैं कहताहूं १२। १३ हेरघुकुलभूषण,दुष्टबिदूषण,सीतापति,भगवान्,तुम्हारेचरणकमल भवभयके मोचनीय,पुनःतुम्हारे उदारचरित्र दिव्यगुणों से भूषितहैं,अरु यहराजा समरमें सबको बन्धन करलिया,हमतुम्हारे सेवकपरमदुःखीहैं शरणागतकीरक्षाकरो हानाथ कृपालु परमदयालु,हासीतापति त्रिभुवनपति,हाआरत भंजन जनमनरंजन,सदैवकृपालु ने सन्तनके हितार्थ अवतारलैकर उनका उद्धारकियाहै हे मन्मथछबिहारी तनद्युतिकारी हमारो सर्व भय मोंचनकरो अरु प्रथम तुमने निश्चरोंके समूह नाश करके देवताओं को उद्धार कियोहै, फिर ग्राहको मार गजको वचाया पुनः द्रुपदसुताको चीर बढ़ाया, अरु प्रहलादके दुःखनिवारे नरहरिरूपसे, फिर पांडुपुत्रोंकी रक्षा हृदय में कियो, अब मुनियों के वृन्दमें यज्ञ करते हो निदान धर्म्म बिचार मोचनकरो,सुरथने अपनेपाशसे प्रणकरके बांधा है, हे प्रणतपाल कि अपने भक्त जान प्रतिपाल करके छुड़ाओ, हे रघुबंश जो उद्धार न करोगे तो संसार में सबजीव तुम्हारी हास्यकरैंगे १४। १७ प्रभुसर्वज्ञ पवनात्मज की वाणी सुन प्रणतपाल के अर्थ पुष्पक यान में सवारहो दोनों ओर भरत लक्ष्मण विराजित व्यासादिक मुनि हाथजोड़े हुये उतावलपयान कियाक्षणमें जाय प्राप्त हुये, प्रथम हनुमान् जीने छबिनिधान

कोटिन काम लजानेवाले श्रीरामचन्द्रजीको सहित समाज देख हर्षपूर्वक राजासुरथ से बोले देखो, राजन् रघुबंशमणि सहितसमाज भक्तोंके हितार्थ आये प्रथम अनेकदीन उद्धार किये लोक वेदमें गुण बिदितहैं, अब तुम्हारीपाश भंजि हमको शीघ्र छुड़ाने आयेहैं १८।२२ यहिप्रकार हनुमान् के कहतेहुये तबतक बिमान निकट पहुंचा, देखतेही सुरथ ने पुलक गातसे प्रणाम किया आंखों से प्रेमजल बहनेलगा, तब रघुनन्दनने बिमान से उतर चतुर्भुजरूप धारणकरके भुजा मिलाय सुरथ से मिलकर बोले हे सुरथभक्त तुमधन्यहो,तुमने रणमंडल में महत्पराक्रम करके हनुमदादि बीरों को बांध लिया २३।२४ ऐसे कहतेहुये भक्तबत्सलने कुछ पाप नहीं माना, पुनः शीघ्रतापूर्वक हनुमान् को २५पाशसे मुक्त करके शत्रुघ्नआदि बीरोंको अपने हाथसे छुड़ाय सुधा दृष्टिसे सबको जिआयाते सब वीर उठि २ प्रभुका प्रणाम करके दुर्लभ दरश पाये सबश्रम से विगतहोगये, प्रभु सब कुशल पूछते भये परम कृतज्ञमान भी कुछ न किया सब राजा महानन्दित होगये २६।२७ रामचन्द्र को मनोहर छबि देखि सुरथ ने कहा हे नाथनिर हेत जान मोपर कृपा कियो, सबप्रकार से अपने को कृतार्थमान सब भंडार राजसमाज मंगाय दोनों हाथजोड़ मस्तकनाय कहा हे नाथ पुत्र पौत्र सब परिवार आदि सबअपनाजान मुझको अपनासेवकजानो२८।२९ यह सुन रामचन्द्रजी बोले हेराजन् तुम धन्यहो, सब

प्रकारसे तुमने साधुकर्म्म करके अपनाधर्म्म प्रतिपाल किया, क्षत्रीका धर्म्म श्रुतिनेभी कहाहै कि सेवक स्वामी के साथ युद्ध करै, जो तुमने शत्रुघ्नके साथ युद्ध किया सो कुछ अनुचित नहीं प्रभुके ऐसे बचन सुन राजासुरथ पुलक गात होगये, अरु श्रीरामने फिर राज्य सुरथको दिया सुरथनेजीतियुक्त रामप्रसादसे ग्रहणकिया ३०।३२ तहां रघुनाथ भक्तहितार्थ तीनदिन रहकर फिर अवध में यज्ञप्रवेशकिया, हेमुने सब रामादल आश्चर्यसा मान अत्यानन्दित होगये, तब सुरथने चम्पक को देकर आप शत्रुघ्नजी के साथ चले, रामानुज यज्ञतुरंग पाय हर्षितहो शंख भेरी प्रणव आदिबाजा बजवातेभये, फिर यज्ञतुरंग छोड़ आपभी ससैन्य रथोंमें आरूढ़हो पीछे चले क्षीरसिन्धुके समान सैन्य युक्त बाजिराज अनेकन देश भ्रमणकरतेहुये श्रीगंगाजीके निकटपहुंचे, जहां मतिमान् तपोनिधि बाल्मीकिमुनि गणोंयुक्त रहतेथे३३।३६

इतिश्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषवात्स्यायन सम्बादे रामाश्वमेधभाषायां रघुनाथसमागमोनाम त्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

हेमुने तहां मुनिके प्रात कृत्यके अर्थ जनकसुता सुत लव पुष्प लेनेगयेथे तिनकेसाथ मुनियोंके अनेकनबालक थे अरु लवकास्वरूप कैसेकहूं श्याम मृदुल रघुनाथजी हीके समानथे १।२ अरु लघुबयस धनुष बाण धारण

कियेहुये यज्ञ तुरंग कनकपत्र युक्तदेख मुनिपुत्रोंसे बोले ३
यह घोड़ा दैवयोगसे मेरे अर्थ आश्रममें आयाहै,तुमसब
मेरे साथचलौ तो निकटचलकर देखैं यह मुनिपुत्र युक्त
लव धनुष बाण धारे घोड़ाके निकट शोभित हुये ४। ५
अरु कनकपत्र बांचने लगे कि सूर्य्यबंशमें अनेकन राजा
ओंके अनन्तर धनुषबिद्यामें बिशारद दशरथनाम राजा
हुये जिनको सुरासुर मस्तक नवातेथे तिनके पुत्र राम
नाम सब बिद्याओंकी राशि शूरशिरोमणि अरिके मद
खण्डनहारे भक्त मुनि ब्राह्मण सुखदेनेवाले, कोशलराजा
की कन्या कौशल्या नाम रामचन्द्रकी माता है ६। ८
जिसने रत्नप्रसवमें रत्नवत् रामचन्द्रको उत्पन्नकिया,
उसके समान भाग्यवान् कोईनहीं हेबलार्णव रामचन्द्र
रावणबध करालमान अगस्त्यकी शिक्षासे अश्वमेधयज्ञ
करतेहैं तेहि बिजयके हेतु यह श्यामकर्ण घोड़ा छोड़ाहै
जिसके साथ रणधीर कोटिनबीर अर्थात् लवणान्तक
शत्रुघ्नआदि चतुरंगसैन्ययुक्त उसकी रक्षाकरतेहैं ६। १३
जे क्षत्री अपनेको उत्तम जान अपने समान दूसरा नहीं
मानते शूर धनुर्द्धर अपनेहीको जानतेहैं ते सजगहो मेरा
वल बिभव बांचकर घोड़ा पकड़ैं,तिनको रामानुज समर
से परास्तकर घोड़ालेंगे,हेक्षत्रियो.एकबात और लिखता
हूं, जे क्षत्री अपनेको कुलीन जानतेहैं ते हठकर घोड़ा
पकड़ संग्राम करो, जो यहिसे बिपरीतहै सो राज्यकोश
धनधाम समेत बिनीतहो शत्रुघ्न को आय मिलो, लव
यहिप्रकार पत्रबांचि क्रोधितहो गद्गद गिरासे मुनिपुत्रों

प्रतिकहा देखो क्षत्रियोंका अभिमान १४। १८ फिर यह अल्प सैन्यही क्याहै देखो रामतो उत्तम क्षत्रियोंमें हैं और हम कुलीनही नहीं हैं अपना बलविभव देखो इस पत्रमें कितना लिखाहै, राम कोटसमान क्याहैं बिचारा शत्रुघ्न निदान दीनही है संसार में बीरप्रसूती केवल कौशल्याहीहै कुशमाता जानकी बीरप्रसूतीनहीं, संसार में रामही रत्नहै कुश कुछ भी नहीं १६। २२ जैसा उन्होंने लिखाहै तैसा कोई क्षत्री उनको नहीं मिला, आजमैं रण मंडलमें तिनका बिक्रम देखोंगा, मैं सब प्रकारसे घोड़ाबांधताहूं जोक्षत्रीहो उबारकरै, यदि शत्रुघ्न हाथजोड़ कुशके चरणोंमें आनपड़ैं, तोयहिसमय घोड़ा छोंड़दें नहीं तो अभी क्षणमें शत्रुघ्न को ससैन्य शून्य करैंगे२३।२४यह कह घोड़ाबांधकर शत्रुको तृण समान जान धनुषबाण धारण करके युद्धके अर्थ लव कटकको देखनेलगे, तिनसे मुनिपुत्र श्रीरामका स्मरण करके बोले अयोध्यामें श्रीरामचन्द्र अतुलबली जिन्होंने रावणका बधकिया, जिनके समान त्रैलोक्य में देव दनुजनाग नर कोई नहीं है, तुम बालक कोमलगात तिनका घोड़ा न बांधो हितजान बचनमानों भूलसेऐसा साहस न करो, इन्द्रभी जिनका घोड़ा नहीं पकड़सका फिर संसारमें कौन ऐसा बीरहै, यहसुन लव बोले तुम क्षत्रियोंका बल नहीं जानते तुम मुनिपुत्र भोजनमें प्रबीण युद्धबिद्यासे बिगतहो अरु क्षत्री शूरतामेंही प्रसिद्ध हैं २५। २८ तुम जल्दी जाओ माताने भोजन बनाया

होगा आनन्दहो भोजनकरो, नहींतो निरस होजायगा, यहकह चुपहोगये तब मुनिपुत्र छोंड़ चलेगये २६।३० तब तक हयके अनुचर आगये, घोड़ा बांधा देख बोले मोहबश होकर किसने घोड़ा बांधाहै यमराज केहिपर क्रोधित हुयेहैं, शत्रुघ्नके बाणोंके प्रहारकी व्यथा कौन सहैगा, तब लव क्रोधितहो कहा हमने तुम्हारा घोड़ा बांधाहै, यहि समय घोड़ा कौनछुड़ावैगा ३१।३५ यह सुनकर शत्रुघ्नके किंकर बालकजान छोरनेलगे, लवने देख तीक्ष्णबाणोंसे कर भंग करदिये भागकरके शत्रुघ्न के पास जायकहा लवने कर खंडनकरदिये व घोड़ाबांध लिया३६।३७इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायां लवहयबन्धनोनामचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५४

पचपनवां अध्याय॥

वेदव्यासबोले हेसूत लवकीकथा लवयुत सुनौ कि इतनी कथासुन वात्स्यायन शेषजीके चरणोंमें शिरनाय कहा १ हेनागराज जो मैं पूछताहूं सो क्षमाकरके यहि समय वर्णन करौ, प्रथम आप वर्णन करचुके हैं कि रामचन्द्रजीने रजक के कहने से यद्यपि सीता शुद्धथीं तदपि लोक कलंकसे बनमें अकेली छोंड़दिया, सो नाथ तिन जगज्जननीके कुश लव दोपुत्र केहिप्रकार उत्पन्न होकर ऐसी धनुषविद्या कैसे प्राप्तकी, जिन्होंने धनुष बाण चढ़ाय रघुनाथजीका यज्ञाश्व बांधा २।३ हेसूत

ऐसी वात्स्यायनकी बाणी सुन नागराज बोले हेमुने रघुनाथजीकी लीला अद्भुत है उसको श्रवण करो, कि बहुत प्रभुने अयोध्याबिषे भाइयों समेत राज्यकर सब पृथ्वी नवखंड सातद्वीपमें प्रजाको पुत्र इव पालनकर अखंड राज्यकिया, तदनन्तर सीताने रामचन्द्रजीका तेज धारण किया, जिससे महाद्युतिमान् गर्भ प्रकट हुये, पांचमास जब व्यतीतहुये तब एकसमय प्रभुने जनकजा को भवनमें अकेलीदेख परम स्नेह युक्त मनोहरबाणी बोले ४।६ हेप्रिये जो तुम्हारे मनभावै सो बरदानमांगो मैं तुमसे प्रसन्न हूं सब प्रकार से, पतिकी स्नेह युत बाणी सुनतेहि अवसर सीता सकुचिकै गद्गद गिरासे हाथजोड़ बोली हे प्राणपति ७।८ तुम्हारी कृपाकटाक्ष से मैं सब भोग भोगकिये, अब यह कहो जेहिसे बिश्वमें बियोग हुआ, तुम ब्रह्मादि देवताओंके स्वामी तुम्हारा बिभव वेद पुराण गातेहैं, सो तुम बरके अनुकूल काम धनुष करके मणिवत् सुरतरु फूलताहुआ, मुझको संसार में दुर्लभ कुछ नहीं बांछा तो कुछ स्वप्नमें भी नहींहै, तदपि तुम्हारा बचनमान हे कौशल्याध्यक्ष निदेश मांगतीहू, ६।११ प्रथम जबमैं तुम्हारे संग बिपिनको गईथी तहां लोपा मुद्रादिक मुनिपत्नी मिलींथीं तिनको स्वागतकरि पटभूषण दियेथे, तिन्हींके आशिषसे क्षेम कुशलसे आय आनन्दपूर्बक अवतक राज्य किया, जब जोतुम मुझको आयसुदेउ तो बिपिनमेंजाय नानाप्रकार के पटभूषण भोजनादिकोंसे मुनियोंको तथा मुनिपत्नियों

सबभोग भोगकरो सो हेनाथ यह केवल रघुनाथजीका प्रभावहै, उन्हींका प्रसाद जान बास करो निज स्त्रीकी स्नेहयुक्त बाणीसुन कन्तबोला हेप्रिये तुमसब सत्यकहा यह बिभव प्रभुके प्रसादहीसेहै यहगुण रामदूत सुनिकै चलागया, दूसरी जगह जाय एकदूत प्रभुका यश सुननेलगा ४२। ४७ एकसुशीलास्त्री उत्तमपर्यंक रचिकै तिसमें पतिको बैठाय आप बीणालेकर रामचन्द्र गुण गानेलगी पतिको मन बचसे रिझाने लगी, हेनाथ मैं सबप्रकार से धन्यहौं, कि जिससे यहि नगरमें जन्म पाया जिसकेपति रघुनाथ पुत्रवत् प्रजापालतेहैं जिन्हों ने समुद्रमें सेतुबांध ससैन्य उतर सदल रावणको संहार कर जानकीबुलाय लंकाराज्य बिभीषणको दैदिया ऐसा कौन सुखदायकप्रभुहै श्रीरामचन्द्रके समान४८। ५१ निज स्त्री के मधुर बचन सुन पतिनेकहा हे प्रिये तुमने रघूत्तम रामचन्द्रजी का प्रभाव नहीं जाना, देखो ज-लार्णव में सेतुबांधि रावणको मार लीलाकिया, केवल मनुज श्रीरामचन्द्रजी नहींहैं, पारब्रह्म ब्रह्मादिकोंके मा-ननीय जिनको वेद यशगाते हैं ५२। ५३ जब ब्रह्मादि देवता व्याकुलहो क्षीरसिंधुके निकटजाय आरतशब्दोंसे प्रार्थना करते हैं तब प्रभु मनुजरूप धार उनका दुःख नाशकर अपनीलीला भक्तोंके सुखार्थ करतेहैं, हे प्रिये तुम धन्यहो कि तुमने रामचन्द्रके दर्शन साक्षात् किये, जिनको शिवादिक दुर्लभमानते हैं पहलेके पुण्यप्रभाव से दर्शनपाये, यहि प्रकार रामयश कहतेहुये ५४।५७

दूतसुनिकै दूसरीओर जातेभये, हेमुने तब तक पांचवां दूत एक गृह ढिगजाय रामयश सुननेलगा, एक उत्तम रंगमहल में स्त्री पुरुष दोनों चौपर खेलते हुये, स्त्री पति से बोली, हे नाथ जो मैं जीतों तो तुम्हाराधन भण्डार सब लै लेऊंगी, अरु जो तुम जीतना तो अपने मन भावन काम करना ५८। ६० यहि प्रकार कामिनी के वचन सुन पतिबोला हे प्रिये जे रामचन्द्रके चरणोंका सेवन करतेहैं तिनको अयशनहीं मिलता ६१ जैसे प्रथम देवतोंने प्रभुकी कृपासे दैत्योंका बधकिया, तैसेही तेरामनोहर निश्चरसा मैं अवश्यही परास्तकर विजय पाऊंगा, यह कह पांसा चलाय दांवपाया, तब त्रियासे हर्षितहो कहा देखो जे संतत रामस्मरण करतेहैं उनकी पराजय कभी नहींहोती, यह स्नेह बढ़ाय प्रभुकीलीला गानकिया, यहि प्रकार पांचो दूत यश सुनिके हृदयमें हर्षितहो अपने २ घरको गये ६२। ६५ हे मुने अब छठये दूतकी कथा कहताहूं, छठा दूत प्रभुयश सुनबे अर्थ रजक के गृह निकटजाय सुननेलगा, तहां रजक क्रोधितहोकर निज स्त्रीसे गालीदेकर कहा कि तोको धिक्कारहै तू रात्रिमें परायेघर गई यहकह बिनादोष ताड़ना देनेलगा, मेरेघरसेजा जहां रात्रिको रहीहै वहींजा ६६। ६६ यह सुन उसकी महतारीने कहा हे पुत्र क्यों छोड़तेहो इसने कुछदोष नहीं किया, तुम्हारा क्रोध निवारणार्थ दिनको दूसरेघर चलीगई थी, क्रोध से अपनी स्त्री न छोड़ो ७० तब रजक रिसाय बोला

हे माता मैं रामनहींहूं जिन्होंने परघर बसी स्त्री लैली अरु राजा जो ऊंच नीच करते हैं उसको प्रजा नीतिही मानतेहैं, इसने परघर बासकिया है अवश्य इसकोछोड़दूंगा, देखो रावणके यहां जनक जा रही ७ तिनको स्नेह युक्त घरमें लै आये ७१।७३ यहि प्रकार रजक की बाणी सुन रामदूत अत्यन्त क्रोधकरके शिरकेखंडनार्थ खड्गनिकाली, लेकिन रामबचन स्मरणकर सकुचगये, यदि महाक्रोधसे अरुणनयन किये पांचोदूतोंके निकट जाय पुलकगात से यही कथा सुनायी, सब दुःखित होकर उसके निकटजाय कहा हे शठ ऐसेबचन कभी भूलसे भी न कहना, यहि प्रकार मंत्रगुनिकै सब अपने २ घर चलेगये रामजीका यश स्मरणकर निद्रितहुये ७४।७६ इतिश्रीपद्मपुराणेपातलखंडे शेषवात्स्यायनसम्वादेरामाश्वमेधभाषायांनिरीक्षणंनामपंचशत्तमोऽध्यायः॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय॥

हे मुने प्रातःकाल उठ वेद विधान से प्रातकृत्यकर ब्राह्मणोंको बुलाय सुवर्णदान किया, तदनन्तर सभामें आय राज्यसिंहासनमें सुशोभितहुये १ पुरजन परिजन समीप देख मुदितहुये, रामकी अतुलछबि देख सबोंने प्रणाम किया, तिनको रघूत्तम रामचन्द्र पुत्रवत् पालन करते हैं, हे द्विजेन्द्र जेहिप्रकार रामचन्द्र सभामें विराजमानथे वह केहि प्रकार वर्णन होसकै लक्ष्मण म-

स्तकमें छत्र लगाये, भरत शत्रुघ्न चमर ढुरातेथे ३।३ अरु बशिष्ठआदि ज्ञान निधान मुदित ह्वै सुमिरण करतेथे, आदि मंत्री सुमन्त अपना २ काम करनेलगे ४ तेहिसमय छठोदूत सन्मुख आय प्रणामकर निशिचरित्र कहनेके हेतु खड़े हुये ५ तिनको देख रामचन्द्रजी सिंहासन छोड़ मणिमय चौकीमें बैठ दूतोंको बुलाया, यहां प्रभुके भ्राताओंने समय देख अपनेगृह गये, वहां भानुकुलके सूर्य्य रामचन्द्रने दूतोंसेबोले, हेदूतो निशिचरित्र लाज भय त्याग यथार्थ कहौ, प्रजालोग हमारे राज्यको क्या कहते हैं, फिर हमारी स्त्री व भाई मंत्री इनको क्या कहते हैं, सब यथार्थ लाज भय त्याग वर्णनकरो ६।६ प्रभुके बचनसुन दूत बोले हे नाथ सुयश घर २ प्रति सब नरनारि गानकरते हैं, जो हम अपने कानोंसे सुना वह वर्णनकिया, भानुबंश में प्रकटित राजाओंको तुमने निर्मलकिया, सगरआदि राजा कीर्त्ति वाले तुम्हारे सुयश से मुक्तिपायी, हे कौशलाध्यक्ष तुमने प्रजाको कृतार्थ करदिया, अल्पमृत्यु आदि रोग किसीको नहीं व्याप्तहोते जैसे त्रिभुवनमें चन्द्रमा व गंगाजीका यश पूरित होरहाहै तैसेही आपका भी सुयश प्रकाशहै १०।१३ हे नाथ तुम्हारे अयश हीन चरित्र सुनिकै तृप्ति नहीं होती, तुम्हारे चरित्र त्रिभुवनको पावन करनेवालेहैं, हम सब दूत आपके दर्शनकर धन्यहैं, ऐसी वाणी पांचदूतोंके मुखसे सुनतेभये १४। १६ हे मुने तब रामचंद्रने छठे दूतको निकट बुलाय

मलिन देख कहा हे बुद्धिवर सत्य२ वर्णनकरो, जो अन्र्थकहोगे तो घोरपातक लगैगा, जेहिप्रकारसे तुमने सुनाहो उसीप्रकार आनन्दितहो वर्णनकरो ऐसे प्रभुबार बार पूछतेहैं तेहिपर भी वह कुछ न बोला तब अपनी शपथदिवाय रघुनाथजी पूछतेभये हे दूत सत्य यथार्थ सब प्रसग संकोचत्याग कहो १७। २५ तब श्रीर मचंद्रजीकी आयसुपाय दूत कहनेलगा हे नाथ तुम्हारासुयश त्रिभुवनमें प्रकाशहोरहाहै अरु हे स्वामिन् एककुमार्गी रजक तिसने अपनीस्त्रीको कछु कटुक बचनकहे, तेबाक्य कहनेयोग्य नहीं यदिआपकीआज्ञासे कहताहूं एक रजककी स्त्री कलहबशसे दूसरेघरमें दिनभर रही रातको अपनेघरपर गई तब उसके पतिने बहुतदण्डदेकर कहा इसको मैं नहीं ग्रहणकरूंगा, तब उसकी मातानेकहा इसअपराधसे त्यागने योग्य नहींहै, तब वहशठ महाक्रोधकर बोला सुन माता मैं रामचंद्र नहीं हूं जो शठकेगृह रहीजानकी लेआये, राजन् के कर्म अकर्म सब सामान्यहैं बार २ शठ यही कहताथा कि मैं राजाराम नहींहूं मैं अवश्य छोड़दूंगा २१। २६ हे प्रभु मैं इसप्रकार सुनकर महाक्रोधकरके खड्गनिकाल मारनाचाहा लेकिन आपकेवचनसे न मारा शठ अन्नतबाक्य बकताहै, अबनाथ मुझको आज्ञादीजियेतिसको मारलेआऊं, हे नाथ यद्यपि यह प्रसंग अकथ है तदपि मंत्रियोंको बुलाय बिचारो, तब यह कुलिशकेसमान बाक्यसुन मूर्च्छितहुये, रामको दुःखित देख दूत

अतीव क्रोधित होगये २७।३० वस्त्रकी बायुकरके हैद
यडमें प्रभुको सचेतकिया, तब प्रभु सचेतहोकर गद्गद
कण्ठसेकहा हे दूतो अब मेरेपास शीघ्र भरतको बुला-
लाओ,तेदूत महादुःखितह्वै शीघ्रभरतकेगृहजाय प्रणा
मकर संदेशकहा भरत सुनकर संशययुक्त सभाको जाय
बुद्धिमान् भरतबोले हे प्रतिहारो कृपार्णव मेरेभाई राम
चंद्र केहिभवनमें उपस्थितहैं, तब दूतोंने वह गृह बता
दिया, शीघ्र तहां जाय प्रभुको दुःखित देख अनुमानकि
या प्रभुने केहिपर ऐसा क्रोध कर ३१।३४ शोककि-
याहै, तब प्रभुको उसांसलेतेहुये तिनसे भरतनेकहा,हे
स्वामिन् तुम तो सर्वदा आनन्दकन्दहौ मनमलीनअश्रु
पातसे क्यों रोषित ह्वैरहेहौ, सब यथार्थ कथा मुझसे
कहौ, हे नाथ शोकछोड़ ग्लानित्यागकरौ, तुम सदासु
खखानिहौ गदगदकण्ठसे भरतने यह कहा तब रामचंद्र
बोले हे तात मेरेदुःखका हेतु सुन तिसको प्रातःकाल
भंजनकरो ३५।३८ सूर्य्यवंशके सब राजा मुझसेकलं
कितहुये ३९ अरु पूर्व राजाओंकी कीर्त्ति में मेरोअकीर्त्ति
मिलकर जैसे गंगाजीमें यमुनाजल मिलकर जलनीला
होगया वैसेही उनकी कीर्त्ति मैंने मलिनकरदिया ४०
४१ और हे तात जिसको संसारमें अयशरूपी सर्पने
काटाहै उसीको नरकबासहोताहै, वेद स्मृति यहीकहते
हैं, अरु हे तात मेरी गंगाजीकेसमान उज्वलकीर्त्ति में
जो रजकनेकहा कि जनकसुताने शत्रुकेघरमें वासकिया
है, उसको अब मैं क्या करूं हे बन्धुबर उचित शिक्षा

दीजिये, अपनेप्राण त्यागकरूं कि सीताको त्यागकरूं दोनोंमें क्या कर्त्तव्यहै सो कहो ४२।४८ नयनोंसेआंशूढरते गद्गदगिरासे जब ऐसे बचन कारुणिक कहिकै धर्मात्मा रामचन्द्रजीमूर्च्छितहोगये, भरतने बन्धुकोकरुणा दशामेंदेख भरतकेहृदयमें महादारुणदुःख उत्पन्न हुआ, अरु धीरे २ बसनकी बायुकरके धर्मात्मा रामचन्द्र हृदयसे दुःखी उठिबैठे तब भरत दुःखके निवारणार्थ बाणीबोले ४६।५१ हे नाथ रजक क्याहै जो सीताजीको दुर्बचन कहेगा, अर्थात् कहेहैं तो अभी उसकी रसना छेदनकरैंगे ५२ तब रामचन्द्रने यह सुनकर सब रजकप्रसंग जो दूतोंसे सुनाथा यथार्थसुनाया ५३ सो सुनिकै शोकनाशनेअर्थ महात्मा भरतने कहा हे नाथ संसारमेंबिख्यातहै कि सीताअनलकरके शुद्धहुईहैंफिर ब्रह्मादिकोंने भी आकर सीताको शुद्धकहाहै फिर बीराधिपति हमारे पिताने भी यही कहाहै ५४।५५ हे नाथ तुम्हारा यश ब्रह्मादिक देवता गानकरते हैं आप नीचरजकके बचनोंसे क्या ग्लानिकरतेहो यह बिचार शोक त्यागकरो जनकजा सबकालमें शुद्धहोहैं, तिनको अन्तरपत्नीबनाय राज्यकरो औ तुम क्यों शरीर त्याग करोगे सीता सदैव निष्कलंक हैं हे भगवन् तुम्हारे बिकलहोतेही हम सब निर्जीवहोजातेहैं, अरु हे नाथ तुम्हारे बिना सीता निमिषमें शरीर त्यागकरदेंगी और सबकोई जानतेहैं कि सीताके चित्तमें सदा पतिदेवताहीका ध्यानरहता है यहिप्रकार भरतके बचन सुनिकै

महात्मा श्रीरामचन्द्रजी बोले ५६। ६० हे तात तुमने धर्म्मयुक्तवचन कहे उनको मैंने सुना लेकिन अब मेरा आयसु सुनो, यह प्रसिद्धहै कि जानकी अनलकरकेशुद्ध हैं, तदपि लोकापवादसे वह बिचारछोड़ यातो सीता को बनमेंछोड़आओ, या खड्गलैकर मेराशीश भिन्नकरो यह रामकी वाणीसुन भरतकांपतेहुये महाव्याकुल होकर मूर्च्छासे पृथ्वीपर गिरपड़े ६१। ६४ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेध भाषायांरघुनाथशोकनिवारणार्थभरतबाक्यनाम षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

हे सूत यह रामचरित सुनिकै वात्स्यायन शेषजीसे मस्तकनवाय बोले हे नागराज सीताको कीर्त्ति तौ त्रिभुवनको निर्मलकरनेवालीहै तिनको रघुनाथजीने कैसे दोषदिया १ हे स्वामिन् तुम्हारेकमलवत् मुखारबिन्द से अमृतरूपो वाणीसुन श्रवण तृप्ति नहीं होते, जेहि प्रकार मेरेको सुखहो कृपाकर वहीकरो अर्थात् भवभयगंजन रामचरित्र वर्णनकरो२ यह सुन नाग बोले हे द्विजोत्तम वात्स्यायन परमरम्य जनकपुरनाम नगरहै जहांकेराजा जनकनाम राजाहैं पुत्रवत् प्रजाका पालन करतेहैं, एकबार वहां घोरअबर्षणपड़ा जिससेसबप्रजा अत्यन्त पीड़ितहुई तब राजाने अकालदेख प्रजाशोक दुःखनासने अर्थ अपनेहाथसे हलचलाया,उसकेचलाते

हुये शोतमें एक कन्यारूप शीलउजागरी प्रकटहुई तब राजा सब समाजयुक्त आनन्दितहो सोतमें प्रकटो कन्याका सीतानाम धरा सोई लक्ष्मी संसारके मोहने वाली प्रकटानी, पालनि, संहारिनि, उमा ब्रह्माणीशची जिसकी सेवाकरतीहैं ३।५ सोसीता एकबारपिताके बाग में सखिन साथ गईथी, तहां एक शुकशुकी चलेजातेहुये शुक कामविबश परस्पर कहिकै अनूपमबाग देख दोनों बिहारकरनेउतरकरपरस्पर मनोहरशब्दकहनेलगे६।८ हे प्रिये संसारमें अत्र गुणाकर रामचन्द्र होंगे तिनकी स्त्री सुन्दरी सीता होगी, सीता समेत अयोध्या में श्रुति पथ से राज्य करैंगे, रामसीता धन्यहैं जो नानाप्रकार के भोग बिलास करैंगे, यहि प्रकार शुकशुकी मुदितह्वै वर्णनकिया ९।११ दैवयोगसे तेहिवृक्षके नीचेजानकी यह कथा अच्छीतरह से सुनकर बिस्मय युक्त तिनको देवता जानती भईं, औ ऊपरदेखा तो वृक्षपर शुक शुकी को देखा, तब अनुमान किया कि देखो ये मेरी कथा कहतेहैं किसी तरह से जो ये मेरेहाथ आते तो सबकथा विधिपूर्वक सुनलेती १२।१३ यह बिचार एक सखी बुलाय तिनको पकड़वालिया ते दोनों शुक शुकी सीता को मनोहर शब्दों से निवेदनकिया, तब परितोष कर सीताबोली भय त्यागकर अब अपना नाम ग्राम कहो जिससे मेरा संशय दूरहो अरु यह भी कहो कि को सीता कौन राम कहां अवतार लेंगे जिनको तुम कथा कहतेहो १४।१७ यह सबकथा वर्णनकरो तब वे बोले

वाल्मीकिजी के आश्रममें मेराबासहै तहां मुनिवर धर्म प्रकाशक्रिया करतेहैं हे सुन्दरि हम तहांसे आतेथे यह मनोहर बाग देख उतरपड़े १८। १९ अरु हे सुन्दरि तपोनिधि वाल्मीकि मुनि भविष्य रामायण बनाया है सो अपने शिष्यगणोंको पढ़ातेहैं सोई हम तुमसे वर्णन किया, ते मुनि शिष्य बार बार रामध्यान में लीन गाते हैं तिनके मुखसे हम सुनतेरहेहैं २०। २२ कि शृङ्गी ऋषि पुत्रार्थ यज्ञ करैंगे तब बिष्णु भगवान् अयोध्यामें चाररूपसे उत्पन्न होंगे, अरु जगज्जननी लक्ष्मी बिदेह राजाजनक के यहां प्रकटैंगी फिर राम लक्ष्मण बिश्वामित्र के साथ जनकपुरजाय सबको प्रसन्नकर भुजों के बलसेशिवदण्ड भञ्जनकर राजाओं का मद भंगकिया, और सीता ब्याहकर अयोध्या में आय सुखपूर्बक अमित काल राज्यकरैंगे, हे सुन्दरि हम जैसासुनाहै वहवर्णन किया अब हमको छोड़दो बनभ्रमणकरैं २३। २६ यह बचन सुन सीता दोनोंको हाथ में लेकर कहा राम किसके घरमें किसके पुत्रहोंगे यह मनोहर कथा हमसे कहो फिर जो तुम कहोगे सो करैंगी, २७।२८ यह सुनशुक शुकी कामातुरहो निदानकथा कहनेलगे, सूर्य्य बंश में सूर्य्यवत् दशरथ महाप्रतापी जिन्होंने अपनेबलसे दैत्योंको मार देवताओंकी रक्षाकिया ३० जिनके शचीके समान तीन स्त्री कौशल्या, सुमित्रा कैकेयी इनके उदरबिषे चारअंशों से उत्पन्नहुये, जेठ कौशल्यासुत राम तिनसे छोटे भरत कैकेयीपुत्र ३१।३२

तिनमे छोटे लषण सुमित्रापुत्र तिनसे छोटे रिपुसूदन शत्रुघ्नजो जगत्में विख्यातहैं तिनमें छविनिधान राम जिनके अनन्तगुण बिशदहैं ३३।३५ जिनका कमलके तद्वत् विशालदृग चारुकपोल महामंजुल बचन कहतेहैं अरु नानाप्रकारके बसन भूषण श्यामलगातोंमें धारण किये कटिमें तूणीर धनुष धारणकिये महावीरहैं हे सुन्दरि यह मनोहरवेष पुरुषोत्तम धारण करतेहैं जिसका मैं केहिप्रकार बर्णन करूं उनका यश अतुलितबल शेषजोभी कहि नहींसक्के ३६।४० अरु जनकजाभीधन्य है जिसके रूप गुणको त्रिभुवन में कोई न होगा, जो रामचन्द्रके आनन्दपूर्बक भोगकरैंगी हेसुन्दरि तुमको हौ जो मुदितहवै रामायण सुनतीहो ४१।४२ यहसुन जानकी बोली हेपक्षियुग सुनौ जो तुमनेजनककुमारी कही सोतो मैं प्रकट हुईहों, जब मोंको दशरथपुत्र रामचन्द्र मिलैंगे तव संशय रहित तुमको छोड़ौंगी, तब तक तुमको स्वर्णके पिंजरों में सब प्रकारसे पालन करूंगी ४३।४५ यहसुनकर दोनोंपक्षी भयभीत होकर बोले हेसीते हम बिपिनविहारी पक्षी हमको बनभ्रमण सेही आनन्द मिलताहै, पिंजरामें किसी तरहसे हमको आनन्द नहीं मिलता, यह बिचार छोड़दो हमने सब सत्य बर्णन कियाहै, देखो यह गर्भवती शुकी है अरु प्रसूतिकालभी नियरायाहै अपनेस्थल जाय पुत्रप्रकट कर फिर यहां आवेंगे ४६।५१ यहबिचार छोड़दो हेमुने तबभी न छोंड़ा तब शुकने फिर कहा हेमिथिलेशकुमारी

हमको तुम केहिकारण नहीं छोड़ती, यह गर्भिणीदुःख केयोग नहींहै परिहरौ पुत्रप्रकटकर अवश्य आवैंगे यह सुन सीताने शुकको छोड़ कहा तुम जाओ शुकीको न छोड़ौंगी इसका प्रतिपालनकर जब रामचन्द्र मिलैंगे तब छोड़ौंगी ५२।५५ तब शुक अत्यन्त दुःखितहो सीतासे कहा हेसीते योगीजन मृषा नहींकहते न बुध-जन मृषा कहतेहैं कि कभी किसीसे कुछ भूलसेभी न कहना चाहिये,सत्य सत्य फिर सत्य मौन होनाचाहिये कहेगा तो हमारी तरहसे दुःखजाल को प्राप्तहोगा,कि वृक्षके ऊपर कहकर बन्धनमें पड़गये,जोकथा न कहते तो क्यों बन्धनमें पड़ते,तेहिसे मौन होना चाहिये, यह कह फिर व्याकुलहो कहा हेत्रिया मैं बिना शुकीकेनहीं जीसक्ता यहबिचार छोड़दो यहिप्रकार शुकने बारबार कहा, तदपि सीताने न छोड़ा ५६।५८ तब शुकी क्रो-धितहो सीताको शाप दिया,कि जैसे तुम मेरे पतिसे मुझको बियोग करतीहो, तैसेही तुमकोभी सगर्भ राम-चन्द्रजी त्याग करैंगे, बारम्बार यह कह रामचन्द्रका स्मरणकर पतिबियोगमें शरीर त्याग दिया, तब उत्तम बिमान पाय सुरपुरको प्राप्त हुई, तब शुकने शुकीको मृतकदेख महारोदनकर ५६।६२ गंगातटजाय महा-क्रोधकर यहअनुमान किया कि मेराजन्म अयोध्यामेंहो अरु मेरेही वचनकरके राम सीताको त्याग करैं, यह बिचार तनत्याग गंगामें गिरपड़ा,हेमुने जो शुकनेक्रोध कर प्राण छोड़े व सीताने अपमान किया तेहिसे अवध

में आय रजकहोने का यही कारण है, जो जन अन्तमें जो अनुमान शरीर त्यागताहै सो करुणाकर अवश्य पूर्ण करतेहैं अर्थात् शुककी बाक्य से व रजक के कहने से सीताको त्यागकिया, जेहि प्रकार तुमने प्रश्नकिया सो हमने कथा कही, अब प्रथम कथा श्रवणकरो ६३।६७ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायांरजकोक्तनामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७

अट्ठावनवां अध्याय॥

हेमुने तब रामचन्द्रजीने भरतको मूर्च्छितदेख द्वारपालसे कहा कि शत्रुघ्नको लावो १ यहसुन प्रतिहार शीघ्र शत्रुघ्नको लैआये शत्रुघ्नने भरतको मूर्च्छित व रामचन्द्रजीको ब्याकुलदेख प्रणामकरबोले हेनाथ केहिकारण इतनादुःख छायरहाहै, तब रघुनाथजीने शत्रुघ्नसे चरबर के मुखको मलिनबाणीसुनाय गद्गद गिरा से अधोमुख करके कहा हेभाई हमारे वचन सुन शोक नाशनार्थ उपाय करो, जिससे बिमलयश होकर अयश दूरहो औ सीताको जो रजकने कहा है वह सब संसार में प्रकाशित होगईहै २।८ इस कारण मैं प्राण त्याग करूंगा, या जानकीको त्यागकरो यह सुन शत्रुघ्नभी मूर्च्छित होकर गिरपड़े, दोदंड पर्य्यन्त अचेत होकर फिर सचेतहो उठकर नयनों से जलश्रवत महाब्याकुल रघुनाथजीसे कहा हेनाथ दुष्टबचन सत्यकरके जगज्जननीको क्यों दोष देतेहौ, जेनर दुष्ट पापी ते स्त्रीधर्म्मसे

नरकनिशानी समझ श्रुति पुराणको दूषणदेतेहैं, तैसेही अन्त्यज बैदेही सीताजीको दोषताहै, जगत्में निर्मल सबपातकों के नाशनेवाली गंगाजी जिनकेस्पर्शसे सब पातक दूरहोतेहैं तिनकोभी कोईदुष्टात्मा दोषदेतेहोंगे, अरु देखो सूर्य्यनारायण सब लोकोंके सुखदायक प्रकाश करनेवाले सो उलूकको अरुचि होतेहैं ७। १२ हेतात यह बिचार परम पुनीत सीताको त्याग न करो यह बर मुझको कृपाकरके नेहयुक्त सीताको ग्रहणकरो यह अनुजकी बिनीत बाणीसुन रघुनाथजी बोले,हेतात यातो जानकीको परित्याग करो, या मेराशिर भंग करो १३। १५ यहसुन शत्रुघ्न महादुःख से महामूर्च्छा को प्राप्तहुये अर्थात् मानो शोक समुद्रमें पड़गये, तब भरत शत्रुघ्नको श्रीरघुनाथजीने मूर्च्छितदेख दूतसेकहा शीघ्र लक्ष्मणको लेआवो, किंकर शीघ्रतापूर्वकजाय लषणको साथही लैआये, तब लषणने भरत शत्रुघ्नको मूर्च्छित व पुरुषोत्तमको ब्याकुलदेख महाबिकलहवै बोले हेनाथ यह दुःखार्णव केहिकारण लहलहा रहाहै व सब भ्रातृगण दारुण दुःखसे ब्याकुलहैं १६। १६ यह सुन नयनों से जल श्रवत गद्गदगिरासे श्रीराम बोले, हेतात दुःखका कारण सुनो जो सीता रावणके घर रहीं तिससे रजकने महाकलंकित बचनकहे तिससे मैं सीताका त्याग किया चाहताहूं, ये भाई मेरादुःख न टालसके अरु आप महामूर्च्छाको इसीसे प्राप्तहैं, तुम ऐसा उपाय करो जिससे मेरा घोरपातक दूरहो,सीता

का त्यागसुन लक्ष्मणभी अत्यन्त थकितहोगये२०।२३
बारबार सांस लेतेहुये लक्ष्मण भी महाशोक को प्राप्त हुये, व सबशरीर थर २ कांपनेलगा, मुखसे बचन कुछ न कहिसके हृदयमें महादारुण शोक छाइगयो, तब रघूत्तम रामचन्द्र बिलखिकै बोले हे तात इससमय मुझको क्या कर्त्तव्यहै मैं कलंकसे महाशंकितहूं मोको क्याकोई नहीं उबारसक्ता अब अवश्यकरके मुझको शरीर छोड़ना चाहिये,इसके और उपायनहींहै दुसह शोक अबक्यों सहताहूं जे भाई लक्ष्मण सदैवके आज्ञाकारी तेभी आज प्रतिकूल नहीं होते अर्थात् सबप्रकारसे मुझको बिस्मरण करदिया, क्याकरूं कहांजाऊं मुझको तो यह सुनकर सब राजा हास्यकरैंगे, यहिकुलबिषे बड़े गुणाधिप राजाहुये जिन्हों की कीर्त्ति अबतक प्रकाशितहोरहीहै, लेकिन मेरे समान कोई न हुआहोगा,यहिप्रकार गद्गदगिरा से श्रीरामचन्द्र कहते थे तब लक्ष्मण बोलेहे स्वामिन् २४। २८ रजकको निकट बुलाय सब हाल तिससे पूछाजावे कि तूने कैसे सीता को दूषणदिया हे नाथ सबसंशय शोक त्यागकरो जनकजा त्यागने योग्य नहीं है अरु हे तात तुम्हारे राज्यमें कोई बरिआई कर नहीं सक्ता, अपरंच उससे यथार्थपूछिकै वह करैंगे, अरु पतिव्रता पतिदेवता के माननेवाली सीता एक अंक से भी त्यागने योग्य नहींहै, अबमोपर पूर्णकृपा करकेसीताको ग्रहणकरो, यह लक्ष्मणको बाणीसुन शोक ग्रसित सीतापति बोले २६। ३४ धर्म्म समेत प्रबोध

न हुआ अरु सीतात्याग हृदयमें निर्माण होगया, यह बारम्बार क्यों कहतेहो कि सीता त्यागने योग्यनहींहैं, सन्तत निर्मल पातकों से विगत सबलोग जानतेहैं, अरु मैं जानताहूं कि सीतात्याग मृषानहीं है मैंभी जानताहूं सीताशुद्धहै परंतु लोकापवादसे यहि समयअवश्य त्याग करूंगा ३५ अरु अब मैं अपने यशके अर्थ तुम समेत तीनों भ्राता राज्य कोश पुत्रकुटुम्ब पुरजन परिजन सब त्यागकरूंगा एक सीता क्या है मोको यश अयश के सिवाय और कुछ प्यारानहीं है, अब रजक से कुछ न बूझो सबलोगजानैंगे व निकट के बोलानेसे सबलोग लोगायी हास्यकरैंगे अरु महाघोरपातक रोग में तो औषध न मिलै वह कालहोगये पर मिली तो ब्यर्थ है, अब बनजाय सीताको छोड़आओ फिर रजकबुलायपूंछैं-गे, यह न करो तो खड्गलेकर मेराशिरभंगकरो ३६।४१ रामचन्द्रजी की बाणी सुन लक्ष्मण महाब्याकुलहो मन में अनुमान किया कि देखो परशुरामजीने पिताकी आ-ज्ञामान माताका शिर तिलसमान काटडाला, तेहिसे राजाकी गुरूकी आज्ञा बिना बिचारेही करनाचाहिये, अबमैं रघुनाथजीकी आज्ञा मान सीताकोअवश्य बनमें त्यागकरिआऊंगा, यह अनुमानकर दोनोंहाथ जोड़ श्री रामचन्द्रजीसे कहा हे स्वामिन् यह मुझको तो करना उचितनहींहै, लेकिन आपकी आज्ञा प्रतिपालन करूं-गा ४२। ४५ यह सुन रामचन्द्र ने कहा हे भाई तुम महासाधु महासाधुहो तुमकोविदा मुझको सन्तोषदियो

हे तात अब सीता त्यागने का अर्थ कहता हूं सीता के मुनिपत्नी पूजनेकी आकांक्षा थी उसका उपाय यह है यही मिससे रथचढ़ाय सीताको मुनिपत्नियों में छोड़ आओ यही मेरी आज्ञाहै, यह सुनकरकण्ठसूखता हुआ लोचन श्रवत मलिनमुख से रोदनकरते हुये अधीर्य्य होकर पुनः अपना धर्म्म सम्हार अपनेघरजाय सुमन्त से कहा मेरा तीव्र रथ साजलाओ ४८ । ४६ तब मंत्रिबर सुमन्त रथ तयार करलाये तब महादुःख में प्राप्त बरवश नयनजलरोंकि सीताभवनमेंजाय प्रणाम कर उसांसलेतेहुये कहाहेस्वामिनि तुम्हारे मुनिपत्नियों के पूजनार्थ जानेको रघुनाथजीने उत्तमरथ पठवाहै, लक्ष्मणके वचनसुन सीता महाप्रीतियुक्त सरल निश्चल बाणी बोलीं ५० । ५४ मैं रघुपतिकी किंकरी धन्यहौं कि मेरे अर्थ प्रातःकाल होतेही देखो लषण सहित रथ को भेजाहै, अब अवश्यजाय मुदित होकर मुनिपत्नियों का पूजन प्रणामकर बस्त्र बिभूषण मणिजटित पहिराय सबप्रकारसे कृतार्थ होंगी ५५।५६ तब मणिनजटित नानाप्रकारके उत्तमभूषण वभोजनादिक चन्दनसंचर्चित कर्पूरगन्धयुक्तमंगाये दासियोंसे बस्त्रादिकलैकर लक्ष्मणके साथ द्वारपर आय सीतानेकहा हेतात जो स्यन्दन रघुनाथजीने भेजाहै सो कहांहै तब लषण सुमन्तसेकहा रथ सीताजीके निकट लेआवो यह कह महाशोकमेंफिर मौन ह्वै रहे ५७। ६१ तब सुमन्त रथ हांकतेभये परंतु चारोघोड़े आंखोंसे जल छोंड़तेहुये कुछभी न चल सके

जब हांकते तब शोकित पृथ्वीपर गिरपड़ते व महाशोक से हींसतेथे, तब सचिवने ताजन प्रहारकिया तब शोकग्रस्त होकर कुछ न चले, तब निरुपाय होकर सुमन्तने लक्ष्मणसे कहा हेनाथ किसी प्रकारसे नहीं चलते मैं सब प्रकारसे चलाय हारगया, कारण मुझको नहीं सूचित होता गद्गदगिरासे लषणनेकहा किसीप्रकार से ताड़ितकरके यहांतक लेआओ तब फिर ताड़न किया तबभी रथ न चला सचिवने कहा रथ नहीं चलता इसमें बिस्मयहै, जब किसीप्रकार से रथ निकट न जासका तब जगज्जननी सीता वहीं रथमें आरूढ़ हुईं तब सीता का दक्षिण भुजा फरकने लगा, व शुभपक्षी बामभाग से निकलने लगे, यह अशकुनदेख सीताजी अकुलाय देवर लक्ष्मणजीसे कहा ६२।६७ हेतात मैं मुनिपत्नी पूजने जातीहूं इसमें पै अशकुन मिलतेहैं हे देवतो श्रीरघुनाथजी भ्राताओं युक्त कुशलरहैं परिजन पुरजन भी आनन्दितरहैं, अरु मार्ग भयानक लगतीहै इसका कारण नहीं समझ पड़ता,सीताके बिनीत बचनसुनकर लषणने उत्तर कुछ नदिया व गद्गद गिराहोकर शोकग्रस्त होगये ६८।७० फिर सीताने मृगोंका समूह बाईंओर देखा अरु अनेकन अशकुनभये जिनसे मनुष्य बिपत्ति पातेहैं, तब जानकी अकुलाय भक्ति करुणासे पूरितह्वै कहा हेतात देखो दक्षिणभाग छोड़ मृगसमूह बामभागसे आये मैं रघुनाथजीके चरणकमल छोड़ मुनि त्रिय पूजन जातीहूं, तेहिसे ये सब अश-

कुन होते हैं अवश्य होनाचाहिये, देखो स्त्रीको परम धर्म पतिकी सेवाहै वही उसको जप, तप, व्रत, संयम नेम, धर्महै, सो मैं यह महापातक कियेहै जो होय वह थोराहै, जैसाकरो उसीका फल होताहै यह बेद स्मृति कवि कोबिद कहतेहैं इस प्रकार बिचार व्याकुल होती भईं, तब मुनि वृन्दों से सेबितपातकहारिणी गंगाजीको देखा ७१।७३जाके जलस्पर्शसे महापातक मुहूर्त मात्र में नाशहोतेहैं तिनकेसमीप रथपहुंच गया, तब धीरधारि गद्गद कंठसेलक्ष्मणने कहा हे माता देखो गंगा निकट आगईं रथको त्यागकरो ७४।७७ इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायां सीतायाः गंगादर्शनोनाम अष्टपंचाशत्तमोऽध्याय ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हे द्विजेन्द्रतब जानकीकोरथसेउतार महादुःखसे बिपिन प्रवेशकरतेभये १ जहां महाबिकटपंथ घोरकंटकपड़े तिनमेंचलते सीताने महादारुण दुःखपाया कंटक चरणकमलों में लगतेही सीता पद पद परगिरपड़तीथीं लषण महाव्याकुल नयनोंसे जलढारते देखते न थे तिहि बनमें घोरदाहसे कुछ वृक्ष भस्म होगये, बिकट बबूल, खैर, चिंचनि आदि नानाप्रकारकेवृक्ष तिनकी खोहमें महाव्याल बोलतेथे २।४ अरु महाबिकटबनमें सिंह, व्याघ्र, वृक, मत्तनाग, शूकर आदि जीव महाशब्द

करतेथे, अरु उलूक भयावन शब्द व शृगाल रोदन करते थे, और जन्तु मनुष्यके मनुजअहारी तिनको सीता राह में देखतीभईं भयवशसे व कंटकोंके क्लेशसे सीताजीके ज्वर पूरित ह्वै आया तब महादुःखितहो लक्ष्मणसेबोलीं ५।८ हेतात मुनि आश्रम कहांहै जहां मुनितिय बास करतीहैं, जिनकेहेतु मैं महावनमें आई ते आश्रम नहीं देख पड़ते, अरु तुमको लोचनश्रवत देख व अशकुन पग पग पर देखकरके मोर जिय महाउद्वेगहै, हेतात यह सब कारण मोको शीघ्रकहौ यामोको दुष्टजान रघुनाथजीने त्यागतो नहीं करदिया ६।११ यह सुनकर लक्ष्मणने कुछ उत्तर न दिया व कंठरुकिकै चषजल गिरने लगा, यहिप्रकार महादुःखसे गात प्रस्फुरित पगभो न धर सक्तेथे १२।१३ लक्ष्मणको महादुःखितदेख सीता जी बारबार पूंछतीथीं तेहिपरभी लक्ष्मण कुछ उत्तर न देतेथे हेमुने उससमयका दुःख कोई कबि कोविद नहीं कहता, यहिप्रकार मृदुलचरणोंमें कंटकलगते ब्याकुल चलेजातेथे १४।१५ तब आगेकर सीताजीको लक्ष्मण गद्गद गिरासे कंठरुद्ध होकर कहा हेमाता रजककी कुवाक्यसे रघुनाथजीने तुमको त्याग कियाहै तब यह बज्रवत् बचन सुनिकै जनकजा पृथ्वीमें पतितहुईं जैसे वृक्षकीजड़ काटनेसे वह वृक्ष पतित होताहै १६।१७ हेमुने सीताको पृथ्वीने भी ग्रहण न किया यद्यपि है तो उन्हींको कन्या अरु बिगतदोषसे रघुनाथजीने त्याग कियाहै यहिसे भयभीतहै १८ सीताको लषणने मूर्च्छित

देख नवपल्लवकी बयारि से सीताको सचेत किया तब जनकजा गद्गद गिरासे बोलीं हेप्राणप्रिय देवर यह हास्य छोड़दो मैं सबभांतिसे शुद्ध निष्कलंकहूं सब संसार जानताहै,मुझको कृपानिधि कैसेत्यागकरेंगे १९। २० इसप्रकार बियोग दुःखसे बारम्बार बिलपतीथीं, तब लक्ष्मणभी अत्यन्त ब्याकुल हुये तब सीताने प्रभु का त्याग सत्यजान मूर्च्छितहवै पृथ्वीपर बिह्वलगात से गिरपड़ीं, ऐसी महाबिपत्तिमें युगदंड ब्यतीतहुये तब सीता बिषाद प्रबाहमें बिहाल होकर रघुपति के चरण कमलोंका स्मरणकर लोचन श्रवतबोलीं २१।२२ बुद्धि बर धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्र निदानमुझको इसमहादुःखद वनमें छोंड़तेहैं २३ तो मेरे अर्थ तुम समेत कपिसैन्य लैकर समुद्रबांध पारजाय सकलत्र रावणको मार लै आये, हा तेप्रभु मुझको क्यों परित्यागकिया पोचरजक के बचनसे छोंड़ दिया तो मेरा क्या बशहै इसप्रकार सीताने नानाप्रकारसे बिलापकर मुरझाय धरतीपर गिरगईं ,तब लक्ष्मणने महाब्याकुलदेख अधीर २४।२५ होकर उच्चस्वरसे रोदन करनेलगे, तब जनककुमारी ब्याकुलहो लक्ष्मणसे कहा हेतात अब ग्लानि त्याग मेरेबचन सुनौ कि अब यशस्वी धर्म्मात्मा रघुनाथजीके निकट गमनकरो अरु जहां रघूत्तम सभासदनमें बिराज मानहों तहां हेसुजान देवर मेरासंदेश कहियो २६।२७ जो बिना अपराध मुझको त्याग किया सो यह अपने कुलकी रीत्यानुसार किया कि शास्त्रमें कहीं ऐसीआज्ञा

देखीहै अरु मैं तुम्हारे चरणोंकी दासी तुम्हारे उच्छिष्ट भोजनके करनेवाली तिसकोभी त्यागकरदिया सो प्रारब्धहै सन्तत तुम्हारे सब प्रकारसे कल्याण मंगलहों तुम्हारेसिवाय बिश्वमुझको तृणकेसमानहै अरुजबजहां जन्मोंगी तहां तुम्हारेहीचरणोंकी दासीहोंगी २८। ३० अरु जिनके चरणकमलोंका ध्यानकरके सदाशिवपुनीत हैं ते चरणोंका मैं अहर्निशिस्मरणकरके मृगगणों युक्त बिपिनबास करौंगी, अबमुझको सगर्भ त्यागकरके संसार में यशलिया है हे सौमित्र मेरी बाक्य मानों रघुपति सुमंगलनिधि होंगे अरु हेतात मैं अभी प्राण छोंड़देती लेकिन प्रभुका तेज मेरी रक्षा करताहै ३१। ३३ अरु तुम श्रीरामचन्द्रजीके सेवक पराधीन बिषादछोंड़ सुमंगल ग्रहणकरके समीपजाओ तुमको मार्गमें मंगलप्राप्त हो, कभी कभी अपनी कृपाकरके मेरा स्मरण करते रहियो ३४। ३५ यह कहिकै जनककुमारी फिर महा मूर्च्छाको प्राप्तभई सीताको ब्याकुलदशामेंदेख लक्ष्मण भी महादुःखसे अपने बस्त्रकी बायु करके सचेत करके सीताके परितोष हेत मधुर बचन कहे, हेमाता यहांसे तपोनिधि बाल्मीकिमुनिका आश्रम निकटहीहै तहांजाय तुम निवासकरो मैं रामचन्द्रजीके निकटजाताहूं, तुम्हारा संदेश श्रीरामचन्द्रजीसे मुनिमंडलमें अवश्यकहैंगे ३६। ३७ यह कह शोकग्रसित लक्ष्मण परिक्रमाकर दंडवत् करके आखोंसे जल त्यागते अर्थात् महाअधीरहो रोदन करतेचले लक्ष्मण अधीर्य्य होकर शोकदुःखके समुद्रमें

पड़गये और लोचन वहते शिथिलशरीर पग डगमगाते हुये हृदय शोकसेपूरित यहिप्रकार मार्गमेंचले३८।३६ लक्ष्मणको जातेदेख मनमें बिचारकिया कियें मेरे देवर सौमित्र किसी कारण से हास्य करते हैं मैं रघुपति के परमप्यारी पापरहित मुझको क्यों त्याग करैंगे अपने मनमें ऐसे मनोरथ करते इकटक दृष्टि देखती रहीं जब लक्ष्मण नावसे गंगाकेपार उतरगये तब निश्चयत्याग हृदयमें जान पृथ्वीमें घोरमूर्च्छासे ग्रसित होकर पतित हुईं हेमुने उससमयका दुःखबर्णन नहींहोसक्ता४०।४२ तब सीताको मूर्च्छित देख हंसोंके समूह अपने २ पखनों जललाय सिंचन किया, अरु मयूर अर्थात् मुरैलन के यूथप आय सीताके ऊपर छायाकिया बहुतोंने मन्द २ वायुकी तब बिपुल सुगंध प्रकट हुआ जिससे सबों के जन्मसफलहुये,अरु मत्तमतंग अपने शुण्डोंमें जललाय सीताको लोटतीहुई देख मज्जन करवाया अरु नाना प्रकारके पक्षिगण सब आतेभये बिस्मययुत सब चकित होकर सीताको ब्याकुल देख बिना बसन्तही के सब कानन कुसुमित होगये ४३।४५ हेमुने तब जनकजा महादारुण मूर्च्छासे बिलखतीहुई उठिबैठीं हा रघुकुल मणि कृपालुराय,हाःदीनबन्धु करुणाकर केहि अपराध मुझको त्यागदिया मैं कुछ इसका कारण नहींजानती, यहि प्रकार सीता बिलाप करते घोर सन्ताप को प्राप्त होकर बार बार मूर्च्छित होजाती थीं हे द्विजेन्द्र तेहि समय का दुःख अबहमसे वर्णन नहीं होसक्ता ४६।४८

हे सूत तेहिसमय में तपोमूर्ति वाल्मीकि मुनि शिष्यन सहित आयेथे उन्होंने ऊंचेस्वरसे दीनवत् रोदन सुन शिष्यन से कहा इसमहाघोरबनमें कौन कारुणिक रोदन करताहै तब शिष्य शिरनाय सीताके पासगये तहां सीता महाशोकसे रोदन कररही थीं बारम्बार राम २ पुकारते धैर्य न होताथा यह देख मुनिशिष्य आतुरजाय कहा हे स्वामिन् एक स्त्री राम २ कहते महाशोक से रोदन करतीहै यह सुन बाल्मीकि मुनि शीघ्र निकट गये तब मिथिलेश कुमारी पतिव्रता तपोनिधि मुनिकै कहा हेमुने वेदमूर्ति तुम्हारे अर्थ प्रणामहै यह सुनतपोनिधिने अशीषदिया कि पतिसमेत चिरजीबि तुम्हारे पुत्र हों ४६। ५४ तुमकेहिकारण यहां आय घोर रोदन करती हो यह सब कारण हमसे धैर्य करके कहो जिससे तुम इस दुःखको प्राप्तहुई ५५ तबसीताकारुणा पूर्वक कम्पित गातसे उसांस लेती हुई नयनश्रवतदीन वचन बोलीं हे मुने सब शोकका कारण तुमसे कहती हूं, राजशिरोमणि श्रीरामचन्द्रकी मैं दासीहूं मोकोपाप रहित छोड़दिया मैं कारण रंचकमात्र भी नहीं जानती, रामचन्द्रको आयसु पाय लक्ष्मण मुझको छोड़गये५६। ५७ यह कह सीता महाब्याकुल होगयी व बदनद्युति मन्द पड़गयी ५८ तब मुनिने कहा हे दीनोद्धारिणी भूमिसुता तुम अब मेरा आश्रम निर्मलकरो बाल्मीकि की बाणी सुन सीता कुछ सचेतहुई तब मुनिनाथ दोनों हाथजोड़ बोले हे माता मुझको बाल्मीकि जानों हम

तुम्हारे पिताके गुरू हैं अब मेरे आश्रम चलो तुमको भिन्न कुटी रहनेको बतादेंया कहो तुम्हारे पिताकेयहां जनकपुर पहुंचा दें ५९।६१ ऐसे चरित्र देख मेरेमनमें भी बिस्मय होताहै यहि प्रकार मुनिवर की बाणीसुन सीता को कुछ धैर्यहुआ, तब बाल्मीकि मुनि सीता को लिवाचले जहां मुनिवृन्द बिराजमान थे बाल्मीकिमुनि तहां नक्षत्रोंमें चन्द्रमा के समान प्रकाशितथे मुनि पीछे सीतारामका स्मरण करते चरणधारते चलीजातीहुई जानकी शिष्यों समेत बाल्मीकि मुनि अपने आश्रमकोपहुंचे तहां मुनिसमूह बिराजित थे, तब जनकजाने मुनि पत्नियों को देख भिन्न भिन्न प्रणाम किया तब सब परस्पर कुशल पूंछि मिलतीभईं ६२।६६ बाल्मीकिने शिष्यों को आज्ञादी कि सीताके बासकरनेको पर्णकुटी निर्मितकरे शिष्योंने शीघ्रता पूर्वक पर्णशाला रचिदिया तिसमें जगज्जननी पतिव्रता जानकीजीने रामचन्द्रका स्मरणकर बास करती भईं, बाल्मीकि मुनि के यहां परिचर्य्या कर्म्म करके कन्दमूल भोजनपाय समय व्यतीत करनेलगीं ६७।७० तदनन्तर समयपाय जनकीके द्वै पुत्र रामचन्द्र के तद्वत् मनोहर प्रकट हये ७१ यह सुन बाल्मीकि मुनि अनन्दित होकर सुखयुत कुश दूर्वा मंगाय देशकाल कुल धर्मके अनुसार पुत्रोंके कर्म किये तेहिसे मुनिवर ने संशोधन करके कुश लव नाम रक्खा, यहि प्रकार महामुनि ने हर्षपूर्वक जातकर्मकिया अरु मनोहर पुत्र देखि कै सब मुनिसमूह महा आनन्दित

होते थे ७२। ७४ हे मुने तेहि दिन लवणासुरको संहारकर शत्रुघ्न ससैन्य मुनिस्थानमेंजाय चरणोंमेंशिर नाय प्रणामकर बिनयकिया, तब बाल्मीकिने कहा हे रिपुसूदन आज महामंगलदायी मनोहर द्वैपुत्र सीताके उत्पन्न हुयेहैं, श्रीरामचंद्रको तुम न सुनाना कोई अव-सर पाय हम बर्णन करेंगे, यह सुन महा प्रफुल्लितहो रामानुज प्रभातहोते चलदिये, अरु सीताकेपुत्र कन्द मूल फल भोजनकरके अत्यन्त पुष्टहुये ७५। ७७ थो-ड़ेहीकालमें शुक्लपक्षके चन्द्रमाकेसमान दीप्तिवान् बढ़ नेलगे, तब सबप्रकारसे चतुरदेख मुनिनाथने वेदानु-सार उनके यज्ञोपवीत किये, अरु धनुषबाण में निपुण करके अपनाकृत रामायण पढ़ाया ७८। ७९ अरु छो टे २ सुवर्णकेधनुष मंगादिये, जो विद्या अभेद शत्रु के संहारकरनेवाली तिसमें दोनोंको निपुणकिया, अरु अक्षयतूणीर धर्म्म अभेद्यआदि अस्त्र शस्त्र सबदिये, तब धनुषबाणधरि दोनोंपुत्र बिचरनेलगे, तिनकीछविदेखि जनककुमारी मुदितह्वै पीछे का दुःख बिस्मरणकरदि या, हे मुनि कुशलवका जन्म तुमसे हमने बर्णनकिया, अब प्रथम कथा सुनौ जैसे रणधीरबीर आये ८०। ८४

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्बादेरा माश्वमेधभाषायांलवकुशोत्पत्तिबर्णनोनाम एकोनषष्ठित मोऽध्यायः ५९ ॥

———*———

साठवां अध्याय॥

श्रीशेषजीबोले हेमुने तब शत्रुघ्नजीने अपनेबीरोंको भुजाहीन अंगभंगदेख महाक्रोधितहो अधर चबातेहुये महाक्रोधितहवैकहा १ हे दूतो ऐसा कौन बलीहै जिस ने तुम्हारी भुजा भंगकरके यज्ञाश्वबांधा २ क्यारघुनाथ जीका प्रतापमूढ़ नहीं जानता,यद्यपि देवतादिक भी जो उसकी रक्षाकरें तौ भी उसको रणमंडलमें कौतुकखेला वैंगे जिसने ख्यालबोय कालबश होना चाहताहै ३।४ दुःखित महाबिस्मितहवै बीरोंनेकहा हे स्वामिन् एक बालक रामचन्द्रके अनुहारहै उसीने यज्ञाश्वपकड़ाहै५ यह सुनशत्रुघ्न अरुणनयन करके बोले देखो बालकने मेरा घोड़ाबांधाहै अवश्य कालबश होनाचाहताहै ६ हे कालजीत आदिक सेनाध्यक्षो मेराआयसुमान सबसैन्य साज अगमव्यूह निर्माणकरके बालकके निकट हर्षित हो संग्रामकरो, अरु हम भी महारणधीरोंसे युक्त पीछे आतेहैं जहां वह रणकर्त्ता बालकहै ७ क्या इन्द्रनेबा-ल शरीर धारणकरके घोड़ा बांधाहै अथवा त्रिपुरारि शिवजी क्रोधसे क्या आयेहैं ८ इनके सिवाय औरकोई महाबीर यज्ञाश्व नहीं पकड़सक्ता अरु यहां महायुद्ध होगा जिसमें बहुतबीर कालबशहोंगे देखो चन्द्रमा के समान स्वच्छन्द निडर बनमें घूमरहाहै अरु रणधीर भो देखपड़ताहै तिससे हे सेनाध्यक्ष तुमजाकर संयुग युद्धकरो, पीछेसे ससैन्य हम आतेहैं, यह रामानुज की

आयसुषाय कालजित दुर्गमव्यूह निर्माणकर युद्धार्थ चले ९। १० हे द्विजेन्द्र तब चतुरंगिणी सैन्यके चलते पृथ्वी कम्पितहुई समुद्र खरभरातेहुये, अरु गज रथके शब्दोंसे आकाशपूर्णहवैगयो व सैन्यकीरजसे सूर्य्यना रायण आच्छादित होगये ११। १२ तब सेनानी कालजित हयके समीपगये जहां लवखड़े थे, रामकेसमान बालकदेख सेनानीने कहा, हे बालक रामतुरंगछोड़दो उन्होंने महाबली शत्रुओंकोपरास्तकियाहै अरुमैं उन्हीं का सेनाध्यक्ष कालजीत मेरानाम मैंने कालको जीत लियाहै तेरा रामकेसमान स्वरूप देख मुझको दयाल गतीहै १३। १५ नहीं तो मेरे घोरक्रोधसे तेराउबार किसीतरह नहीं होसक्ता जनकसुतासुत यह बाणीसुन बिहंसिकै बोले तुम जाकर रामचन्द्रसे कहो मैंने उनका यज्ञाश्व निडरह्वै बांधाहै, यह अपनीनीति अपनेहृदय में राखौ तुम्हारे समान कोटिनबीर मैं तृणवत् समझ ताहूं, अभी माताके प्रसादसे तूलके समान भस्मकरदूं गा, अरु यह कालजीत नाम तुम्हारी माताने प्यारसे रखदियाहै बिम्बाफलके समान तुम्हारा नाम बिक्रम हीन है, जो बल बिक्रमहो तो समरमें प्रकाशितकरो मैं तुम्हारा काल तिसको जीतौ तौ तुम्हारा नाम सत्यहै, लवके वज्रवत् ये बचनसुनिकै सेनाध्यक्ष महाक्रोध से बोले १६। २१ हे बालक तुम्हारानाम ग्राम ज्ञाति व र्ण न जानकर तुम पैदर हम रथारूढ़ कैसे युद्धकरें, तब लवबोले तुझको नाम ग्राम बूझते रणलज्जा नहींआती

मेरा नाम बड़ाछोटा लव औ तेरा यह महादल तिसको तुमसमान अभी मुहूर्त मात्रमें भंजन करताहूं, स्यन्दन भंजनकरके अभी तुमको भी अपनेसमान करताहूं २२। २५ यह कह लव धनुषचढ़ाय प्रचंडटंकोर किया सो सुनिकै शत्रुगणोंने बिजय आश त्यागकरदी, तब लवने धनुषचढ़ाय प्रथम बाल्मीकिमुनि को शीशनाय फिर माताके चरणोंका स्मरणकर तूणीरसे शीघ्र प्राणहर बाणनिकाल प्रहारकिये, देखतेही कालजितने भी करा लबाण त्यागकिये २६।२७ तब लवने महादारुणबाणछोड़ कालजीत का रथ सारथी भंजनकरदिया, तब कालजीतने महाक्रोधसे द्विरदमत्तमें सवारहुये जिसमत्तके मदगिरताजाताथा, तब तिसको गजारूढ़देख लव ने तीव्र दश २ बाणछोड़े २८।३० बाण प्रहार देख कालजितने गदाप्रहारकिया जो महाबेगयुक्त यमदंडके समान दारुण अष्टधाती हजारनागोंके समान गम्भीर तिसको आतेदेख लवने तीव्रबाण त्याग गरुई गदाके तीनखंड करदिया, गदाभंग देख सेनाध्यक्षने प्राणहारी परिघमारी ३१।३३ उसको भी कुशानुजने भग्न किया, अरु शत्रुको गजारूढ़ देख महाक्रोधितहो खड्गले कर शुण्डादंड मत्तकी चूर्णकरके मुकुटके भी शतखंडकिये व कवच भी खंडितकर ३४।३६ केशपकड़ पृथ्वी पर पछारदिया, तब सेनाध्यक्षने क्रोधितहोकर एकबज्रवत् मुष्टिकमारा, तब धनुषचढ़ाय लवने फिर बाणवृष्टि करी तब लवने खड्ग सम्हार दशन मरदते लाल नेत्र

किये आतेदेख लवने अर्द्धचन्द्रशर छोड़ भुजोंसहित खड्ग खंडितकरदी, तब खड्गसमेत भुजाहीन देख सेनाध्यक्षने महाकोपकर बायेंहाथसे गदालैकर धाये वा तब लवने उसको भी खंडितकिया तब भी वहमहाबीर न मरा जैसे उन्मत्त हाथीके शुंडमें बाण लगनेसे कुछ शोक प्राप्त न हो फिर अपनाभाल अर्थात् मस्तकसन्मुखकर दौड़ताभया, तब लव तिसको महाबीरजान प्रशंसा किया अरु अनलज्वालकेसमान जाज्वल्यमानखड्ग लैकर महामुकुटसमेत शिर भिन्नकिया तब प्राणत्याग पृथ्वीपर पतितहुआ, तिसके गिरतेही हाहाकारहोगया ३७।४७हे द्विजेन्द्र बह सेनाध्यक्ष शरीरत्याग बैकुण्ठ को प्राप्तहुआ तब सैन्य सेनाध्यक्षको निष्प्राण देख हाहा कार करते भागचली, हेसूत तब सीतापुत्र ने बाणजाल रचिकै कितने बीरोंको परास्तकरके सब सैन्यको छिन्न भिन्न कर भगादिया जैसे महासिन्धु को प्रलय में विष्णु भगवान् ने बाराह रूप धारणकरके मंथनकिया था वैसेही लव ने सब सैन्यको मथदिया ४८।५०जिसमें मत्तमतङ्गों के यूथ युद्धमें गिरिकै कैसे शोभितहोते थे जैसे पृथ्वीको भूधर घेरलेतेहैं, अरु सुवर्णके साजसाजे घोड़ा रुधिर बहते गिरे, अरु रथी धनुष बाण लिये भौंहें चढ़ाये ओष्ठचबाते सुवर्णमय रथोंमें प्राणत्यागे पड़े हैं, जैसे देव अपनेलोकको जातेहैं, यहिप्रकार अनेकनरथ गज, तुरंग, रथी समरमेंगिरे अरु महादारुण रुधिरनदी भ्रमरलेते बहचली, जिसमें अनेकन चर्म्म कच्छपसेउत-

रानेलगे,सुभटोंके भुज सर्पवत् अरु हाथियोंके शुंडमीन वत्, अरु तुरंग मगरसे बचेबचाये बहनेलगे, तदनन्तर लवने कादरोंको फिर भी भुजा शिर खंडनकर सबको अंगभंगकरदिया, हे मुने सेनाध्यक्षसमेत सब सैन्य को लवने परास्तकर महाबिजय किया,उससमय कोई भी न बचा कोई २ भाग्यबश रुधिरबहते अंगभंग बचिकै शत्रुघ्नकेपास जाय जैसे कालजीत ससैन्य जाय प्राण त्याग समरमेंगिरे सो सब कथा कम्पितगातसे रामानुजसे कही, यह सुनकर रामानुज बिस्मयमान महारोष कर ५१ । ६० ओष्ठचाबतेहुये महाकुञ्चित शत्रुघ्नगम्भीरबचनबोले हे बीरो छलभयो कि मतिभ्रमहोगया, कि कोई प्रबलग्रहकी दशाआईहै देखो जिस महारणधीरने यमराजको जीतलिया तिसका मरण बालकसे सुनकर मेरेहृदयमें निश्चय नहीं होता, यह सुन सुभट बोले हे स्वामिन् हम सत्य कहतेहैं ६१ । ६३ कि न हम सब मदोन्मत्तथे, न मतिभ्रमहुआ, न छलबलहुआ, न कोई प्रबलग्रह देखपड़ताहै, जातेही कालजीतको लवनेसदल संहारकिया ६४ जो अब शोधिकै कियाचहोसोकरो अरु तिसको केवल एकमहाबली जानकर अवश्य साहस करो यह सत्य २ मानो, यह लवका बिक्रमसुन रामानुज आश्चर्य्यमान मंत्रिवर सुमंतको बुलाय रण कारण संशय युक्त बर्णनकिया ६५ । ६६ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायांकालजितसेनानीमरणोनामषष्ठितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय॥

हे सूत शत्रुघ्नबोले हे मंत्रिन् यह बालक कौन है जिसने मेराघोड़ा बांध मेरी चतुरंगिणी सेनायुक्त सेनाध्यक्षको बिनुप्रयास संहारकिया १ तब सुमंत बोले हे रामानुज यह बाल्मीकि मुनिका आश्रमहै, यहां मुनिवर तपोबली सब रहतेहैं कोई क्षत्री तो हैही नहीं २ मति के अनुसारसे यह सूचितहोताहै कि इन्द्रने यज्ञाश्वहरा है ३ या फिर शम्भुने छलकिया, इनके सिवाय चौदह भुवनमें कोई नहीं पकड़सक्ता ४ देखो जिस अतुलबली ने कालजीतको संहारकिया, तिससे अब पुष्करादिबीरोंसमेत संग्रामकर उसको बांध ५ श्रीरामचन्द्रको दिखाना चाहिये अपनी मति अनुसार हमने मंत्र दिया, अब जो रुचै सो करो ६ यहसुन रामानुज सबसैन्यको निदेश देतेभये कि हे राजो तुम सब चलकर हर्षितहो युद्धकरो मैंभी पीछे से आताहूं, सब सैन्ययुक्त संयुग युद्धकरो, यहिबिधि रामानुज की आज्ञापाय सब राजा ससैन्य अपने अस्त्र शस्त्रों से भूषितहोकर जहां लव बिद्यमान थे तहां सब पहुंचगये अरु अनेकन बीर धनुष बाण धारणकिये गर्जतेथे ७। ८ तब लवने महाभयानक दल आतेदेख तृणवत् समझकर धनुषचढ़ाय गर्जनेलगा ९ अरु निकट आते देख अत्रुहन्ता बाण छोड़ने लगा तिससे सबबीर घायलहुये, तब सब बीरोंने बालकको अजय देख महाक्रोध से धनुषचढ़ाय २ हजारों

बीरोंने बाण वर्षातेहुये लवको घेरलिया, तब शीघ्रता पूर्वक शरबर्षाय सबको क्षणमें संहार किया, फिर सब बीरोंने एकत्र होकर लवको घेर चापचढ़ाय बाणबर्षाने लगे,पहले तो हजार बीर घेरेथे फिर तिनका बधदेख, दूसरी आवृत्तिमें दशहजार बीर तीसरी आवृत्तिमें दोह जार चौथी आवृत्तिमें पांच हजार, पांचवीं आवृत्तिमें एकलक्ष, छठी आवृत्ति में अयुताधिक लक्ष, सातवींआ वृत्तिमें दोलक्ष बीर कुण्डलके आकारसे लवको समरमें घेरेहुये पांचलक्ष नौहजार बीरों ने युद्धकिया, तिनके सियासुत कालरूप होकर सब को नाशकियो अरु चित्त में रंचक भी सन्देह न था अनलकेसमान जाज्वल्यमान बिचरता था किसीको गदा किसीको परिघ किसीको कुन्तल यहिप्रकार सातवींबार बिनुप्रयास सबको संहा- रकर समर खेतमें चन्द्रमाके समान लव प्रकाशितहु- आ १०।१७ अरु सब पृथ्वी रुण्डमुण्डोंसे पूरितहोगई अनेकन जड़ाऊरथ चूर्ण चूर्ण होकर पड़ेहैं बहुतसे बीर युद्धसे पीड़ित होकर रुधिरनदी भयावनी देख भाग- चले यहिप्रकार रामादलको व्याकुल देख पुष्कल १८।२० उत्तम जड़ाऊरथमें सवारहो दारुणरोष से अरुण नयन किये अधर चबातेहुये कहा २१ हे बालक बिजयकी आश त्याग संग्राम भूमिमें अस्थिरहो मैं म- नोहर रथ देताहूं तिस में आरूढ़ होकर मुझसे संयुग युद्ध कुरु, तुम बिना यान मैं रथारूढ़ इस दशामें युद्ध करनेसे मुझको पातक लगैगा २२।२४ पुष्कलके बचन

सुनकर लवने कहा जो मैं तुम्हारे रथमें सवारहो युद्ध करूंतो सुयश नशाय मुझको महापातक लागै हे बीर हम विप्र नहीं हैं जो दानलेवें हम क्षत्री दानमें निपुण अभी तुम्हारारथ भंजन करते हैं तुमभी पदचर होकर हमारेसाथ युद्धकरो यहकहलव अतुलितबलीमौनह्वैगये तब यह सुनकर पुष्कलने धनुष चढ़ाया, देखतेही लवने भी २५।२८ बाण त्याग पुष्कलका धनुष भंगकिया, जब तकभरतपुत्र द्वितीय धनुषलिया जबतकरथ सारथीभंजन कर पृथ्वीपर गिराय बिनारथ देखभरतपुत्रको लवहराते भये २६।३० अपनारथ भंगदेख पुष्कलने महाबली जान फिर स्यन्दन में न सवारहुये, अरु इत पुष्कल उत लव धनुष चढ़ाय दोनों बीरोंने दिशाविदिशा सबबाणों से पूरित करदीं, उनके शीघ्रता पूर्वक निकालते धरते खींचते कोई न देखताथा दोनों बीरोंने क्रुद्ध बिरुद्ध ह्वै महाघोर युद्ध किया अरु दोनोंके शरीरोंसे रुधिर धारा बहनेलगीं, अरु अपनी अपनी जयके अर्थ दोनों बीर क्षण क्षण में घोर प्रहार करतेथे, दोनोंने दोनोंके सर त्राण कवच अनेकनबार भंगकिये, जैसे प्रथम इन्द्र सुत स्वामिकार्त्तिक से व त्रिपुर शिवजीसे परस्पर युद्धहुआ था, तैसेही पुष्कल लवसेपरस्पर घोरयुद्ध हुआ३१।३४ तब पुष्कल लव से गम्भीर बचन बोले हे बालक शूर-शिरोमणि तेरे समान महाबली मैंने नहींदेखा सो अब तीव्रबाणों से हतन करताहूं, इस कारण प्राणोंकीरक्षा चाहते हो तो रण से भागजाओ, यह कह पुष्कल ने

को दंडचढ़ाय ऐसा शर पंजर रचदिया जिससे दिशा बिदिशा आकाश धरती सब पूरित होगये ३५। ३७ जिस शरपंजर में बायु भी प्रवेश न करसक्केथे शरपंजर में ग्रसित लव बोले हे राजपुत्र तुमने महत्कर्म करके मुझको शरपंजर से ग्रसिलिया यह कह तीव्रबाण छोड़ क्षणमें शरपंजर नाशकरके प्रकटहोकर बोले अब समर छोड़ कहां भागोगे मेरे घोरबाणों का प्रहार अंगीकार करो, अभी तुमको रुधिरबहते पतित करताहूं ३८।४० यह कह शर चाप चढ़ाय पुष्कल के बाणदेख और भी क्रोधकर दोनों रामरूप वीर परस्पर युद्ध करनेलगे, हे मुने तन्दनतर लवने एक शत्रुनाशक बाण छोड़ा, जिसके तेजसे आंखें भी खुलसक्कीथीं तिस तीव्रशरको आतेदेख पुष्कलने शीघ्रता पूर्वक उसको खंडन करदिया, तिसको निष्फल देख महाक्रोध से एक सर्पवत् बाण कान पर्य्यन्त धनुषचढ़ाय छोड़ा, सो पुष्कलके हृदयमें लगा तब भरतकुमार मूर्च्छितहो गिरपड़े, तिनको मूर्च्छा में देख पवनपुत्र शीघ्र आय अंकमें लेकर शत्रुघ्नके निकटले गये, भरत पुत्रको मूर्च्छितदेख शोकवश हुये, फिर हनुमान्‌जीसे बोले हेपवनात्मज शीघ्रजाय उस बालकको बधकरो ४१।४८ रामानुजकी आज्ञापाय महाक्रोध करके अंजनीनन्दन महावृक्ष हाथमेंलेकर लवकेनिकट जाय वृक्षप्रहारकिया, तिस वृक्षकोलवने खंडितकिया, तब वृक्षखण्ड देख हनुमान्‌ने क्रुद्धतहो एक मूल से वृक्ष उखारि पूंछ उठाये अट्टाट्टहास करते छोड़ा तिसको

भी लवने उसीप्रकार खंडितकिया फिर हनुमान्‌ने महाक्रोध करके एक महाभूधरके समान पत्थर शिरमें प्रहारकिया, उसको भी लवने उसीप्रकार खंडकिये हे वात्स्यायन यहि प्रकार हनुमान् क्षण २ में अनेकन शिला शृङ्ग बर्षाये, तिनको रामपुत्र लवने बिनुप्रयास चूर्णवत् करतेगये ४६। ५४ तब हनुमान्‌जी ने सब प्रहार व्यर्थदेख महाक्रोधानल में प्रवृत्त होकर गर्जते तर्जते निकट जाय बरबश लवको पूंछमें लपेट आकाश कोउड़े, तब लवने अपनाको बंधेदेख माताके चरणोंका स्मरणकर एक बज्रवत् मुष्टिक हनुमान्‌के हृदयमें मारा व अनेकन मुष्टिक पूंछमें मारतेभये, तब मुष्टिक प्रहार से पवनात्मजने व्याकुल होकर लवको छोड़दिया, तब सियापुत्रने स्वतंत्रहोकर धनुषचढ़ाय बाण बर्षाये जैसे मेघ जलबर्षातेहैं तैसेही लवने सर्पवत्‌बाण हनुमान् के ऊपर बर्षातेभये, अरु शिर भुज पूंछमें व गातोंमें बाण प्रवेशकरगये व रुधिर बहनेलगा ५५। ५६ तब हनुमान् महाव्याकुल हो बिचारनेलगे कि इस अजीतबालकसे मेराकुछ बिक्रम नहींचलता मैं सबप्रकारसे व्याकुलहूं अब रणसे कैसे उबारकरूं भागों तो प्रभुके निकट लज्ज्या आवेगी, सब बीर यही कहेंगे कि हनुमान्‌बालककी त्रास से भागआये, अरु फिर मोको ब्रह्माजीने बरभी दिया है कि तेरामरण न होगा, क्याकरूं अब दुसह बाण सहे नहींजाते, फिर यह बिचार किया कि अब बिना कपटमूर्च्छा के उबार न होगा, जब तक

रामानुज संग्रामकरैं तब तक मूर्च्छितरहैं, यह बिचार करके लवके बाणोंसे पृथ्वीपर मुरझाय गिरपड़े, इनको मूर्च्छित देख लवने और बाण बर्षाय सबको संहार किया ६० । ६३ ॥ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायांपुष्कल हनुमत्पतितनामएकषष्ठितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

हेवात्स्यायन हनुमान्‌को मूर्च्छित देख रामानुज शत्रुघ्न शोकबश होकर शोचनेलगे कि क्या उपाय करनाचाही यह कोई बालक महाबलवान्है जिसने महावीर हनुमान्‌को मूर्च्छितकिया, अबमैंभी तिसको समर में देखौं १ यह बिचार सुवर्णके जड़ाऊ रथमें सवारहो चले तिनकेसाथ सुरथआदि रथी चलतेभये, यहिप्रकार शत्रुघ्न चतुरंगिणी सैन्यलिये पहुंचगये २ धनुषबाण धारणकिये रामकेतद्वत् बिम्ब लवकोदेखा, अरु तनकी रुचिरतादेख नयन थकित भये, हृदयमें बिचार किया कि ३ रामस्वरूप नीलकंजके समान श्यामतन अनूपम बालक यह कौनहै अरु मेरेहृदयमें तो ऐसी प्रतीतिहोती है कि ये४ सीताजीके पुत्रहीहैं, यह हमको अवश्य जीतैगा इसमें कुछ संशयनहींहै जैसे सिंह मृगाको देखतेही परास्त करताहै औ हमको इससे बिजयकीभी आशा नहीं ५ जगज्जननी मंगलकारी परमशक्ति तिसको बिनअपराध रामचन्द्रने त्यागकरदिया तेहिकारण सब

बीर शक्ति बिहीन कैसे बिजय पासक्तेहैं ६ यह बिचार
रामानुजने कहा हे बालक तुमने हमारे बीरोंको केहि-
कारण संहारकियो रामचन्द्रका प्रताप तुमने क्यानहीं
सुना अबभी अश्व छोड़दो तुम्हारा अपराध हम क्षमा
करेंगे, अब अपने माता पिताके नाम कहो जिसने ऐसे
छबिधाम पुत्र पायेहैं ते महाभाग्यवान्हैं तुझको देख
मेरे दयाआतीहै ७। ८ अरु अपना नाम कहो तुमबड़े
जुझार बीरहो, तुमकोहम अयोध्यामें रघुनाथजीकेनिकट
ले चलैंगे वहां उनसे मिलाय तुमको बहुतबस्तु दिला-
वैंगे ९। १० यहिप्रकार रामानुजकी बाणीसुन लवने
समयानुसार कहा, जो तुमने मेरे पिता माताका नाम
बूझा सो समरमें यह अबूझहै जो रण भयभीत हुयेहो
तो यह उपायकरो कि मेरा जेष्ठभाई बीरबरकुश तिनके
चरणोंमें शिरधरो तो यज्ञाश्व दैदेवैंगे, जो तुम रामानुज
अपने समान दूसरेको बली नहींमानते व अपनेमेंशक्ति
मानतेहो तो मुझको समरमेंजीत अपनाअश्वछुड़ाओ ११।
१२ यह कह धनुष चढ़ाय बाणछोंड़े ते बाण शिर भुज
हृदयमें प्रवेश करनेलगे, तब रामानुजनेभी धनुषलेकर
धनुटंकार अनेकन बाण छोंड़े तिनका लवने खंडितकिया
तब बहुत बाण छोंड़ दिशा बिदिशा भूमि आकाश छाइ
दिया, हेमुने तेहि समयके शरपंजर से सूर्य्य छिपगये
पृथ्वीमें कुछ न देख पड़ताथा तिसमें बायुतक प्रवेश न
करसक्ताथा तिसमें मनुष्यकी क्या गिनतीथी, व सब
बीरोंने अपने प्राणोंकीभी शंका मानी अरु व्यतीपातके

दानके समान लवके बाण क्षयभी न होतेथे १४। १७
सो देख शत्रुघ्न बिस्मयपाय महाक्रोध करके हजारन
बाण छोंड़ सब शरपंजर नाशकिया, तब कुशानुजने शर
भंग देख महाक्रोधितहो तीव्रबाण चलाय रामानुजको
जड़ाऊधनुष भंगकिया, तब शत्रुघ्नने द्वितीय धनुषचढ़ाय
बाण बर्षाये, तब तक शीघ्रता पूर्बक लवने बाण खंडन
कर तीव्र बाणोंसे रथ सारथी सब चूर्णकिया अरुद्वितीय
धनुषभी निष्फल किया, तब लवका यह बिक्रम देख
शत्रुघ्नने महाप्रशंसाकर द्वितीयरथमें सवारहुये१८।२४
तब रामानुजको रथारूढ़देख लव क्रोधातुरह्वैकै धनुष
चढ़ाय अनेकन तीक्ष्णबाण बर्षाय शरीर बेधित किया,
तब सर्बाङ्गसे रुधिर बहनेलगा, रुधिर बहते रामानुज
प्रफुल्लित किंशुकके समान शोभित होतेथे, फिर लवने
मंडलीक धनुषकरके बाण प्रहार मुकुट खंडनकिया, तब
शत्रुघ्नने क्रोधितहो सर्पके समाज तेजवाले दशबाण
छोंड़े तिनको आते देख लवने शीघ्र खंडित करदिया
अरु प्राणहन्ता आठबाण प्रहारकिये, रामानुजके हृदय
में लगतेही महादारुण ब्यथा प्रकटहुई तब लवको
महाबीर २५।२६ अनुमानकर धनुषचढ़ाय तीक्ष्णबाण
छोंड़े उनकोभी लवने तिल समान करदिया, अरु एक
महाजाज्वलित बाण कर्णपर्य्यंत धनुषचढ़ाय शत्रुघ्नके
हृदयमें मारा, तिसके लगतेही रामानुज महाबिकलहो
रथमें गिरपड़े, तब हाथमें धनुषलिये ओंष्ठ चबाते हुये
रघुराजको मूर्च्छितदेख ३०।३२ सुरथ, सुबाहु, सुमद

बीरमणि, रिपुतापन, उग्रासु, प्रतापअग्र आदि राजा व अंगद, सुग्रीव आदि कपियूथ महाक्रोधकरके सब एक हीबार लवको घेरकर प्रचार प्रचार प्रहार करनेलगे, अर्थात् कोई मुशल कोई मुदगर कोई बाण कोई वृक्ष कोई कुन्तल कोई परशु यहिप्रकार सब सबको मारते देख अधर्म्म युद्धदेख लवने महाक्रुद्धितहो शीघ्र तीक्ष्ण बाणवृन्दचलाय सबके अस्त्रशस्त्र दले अरु दशदशबाण सब बीरोंके हृदयमें मारे फिर धनुष चढ़ाय औरभी बाण बर्षाये तब कोईतो भयभीतहो भागचले ३३। ३६ कोई समरमें मोहितहो गिरपड़े, हेमुने उससमय किसीने धीर्य्य न धरा जैसे प्रबल बायुसे मेघ स्थिर नहीं रहते तैसेही सब सैन्यभी उस समय स्थिर न रहसकी ३७ उसीसमय रणमंडल में मूर्च्छात्याग रामानुज शत्रुघ्न सचेतहो धनुष चढ़ाय लवके निकट आय कहा हे रिपु कुलघालक बालक धन्यहो, तुम बालक नहींहो कोई देवअंश मुझको जानपड़तेहो निदान ऐसा संहारकर मुझको किसीने मूर्च्छित नहीं किया ३८। ४० हेबाल अब मोरा बिक्रम देखो अभी तुमको निपात करताहूं हेबाल अब मेरे बाण सहो संग्रामसे कहीं भागनजाना यहकह सबल धनुष दृढ़करके चढ़ाय जेहिशरसे लवणासुरका बध कियाथा वहीबाण धनुषमें चढ़ायछोड़ा तब उसका प्रकाश दोनों सेनाओंमें पूरित होगया, तब शत्रुघ्नका महाबिकटबाण देख लव मनमें अनुमान करने लगे कि यह शर महाबिकटहै यहि समयपर मेरेभ्राता

कुशहोते तो शत्रुगणोंको परास्त करते अरु महाबीर कुशजो यहिसमय मेरेपास होते तो रामानुज बाणकी मुझे क्या शंकाहोती तब तक शत्रुघ्नने बाण छोंड़दिया महाबेगयुक्त हृदयमें प्रलयाग्निके समानलगा तब दारुण व्यथा प्रकटहुई तिससे लव मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरपड़े, यद्यपि शूर शिरोमणि थे तदपि बाण प्रतापसे गिरनाही पड़ा ४१। ४७ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडे शेषबात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेधभाषायां लवमूर्च्छनं नामद्विषष्ठितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठिवां अध्याय ॥

हे मुने महाबली रिपुगणोंको कृशानुरूप लव तिसको मूर्च्छितदेख रामानुज विजयपाय १ हर्षित होकर एक रथमें लवको धरलिया जो लव शीशत्रान कवचादिक साजे श्यामगात मदनरूपके लजानेवाले ऐसेलव कोलैकर शत्रुघ्नने मुदित ह्वै अयोध्या चलनेके अर्थ विचारकिया २ हेमुने तब सब मुनिपुत्र लवकीदशादेख महादुःखितहो अपने प्यारे मित्रको रिपुपाश में देख शीघ्र जनकसुतासे जाय लवके कृतकर्म सुनातेभये ३ हे माता जानकी एक राजा चतुरंगिणीसेन लिये आया तिसकेयज्ञकाघोड़ालवने बांधलिया तब अश्वरक्षकआये उनकोभी परास्तकिया विजयपाय मुदित ह्वै खड़ेथे तब तक वह राजा अनेक राजाओंसे सेवितआयातिससे भी तुम्हारे पुत्रने बिजयकिया, तब वहराजा दारुण मूर्च्छा

छोंड़ धनुषचढ़ाय बाण प्रहार से मूच्छितकर रथमें धर कर अपने पुरको गया,हेमाता पहले हमनेबरजाथा कि राजाओंका घोड़ा न पकड़ो, लेकिन अभिमानी लवने न माना ५।८ यहिप्रकार मुनिपुत्रोंसेसुन सीताब्याकुल हो रोदन करते पृथ्वीपर गिरपड़ीं ९ अरु फिर उसांस लैकरबोलीं यह कैसा खल राजाहै जिसके दया नआई बालक संग युद्ध करते वह अधर्म्मी पापात्मा मेरेपुत्रको संग्राममें पतितकिया १० हेसुकुमारलव तुम यहिसमय कहांहो तुमने कठिन राजाका यज्ञाश्व क्यों पकड़ा अब मेरामन महाबिस्मित होताहै देखो तुम पदचर बालक वहरथी अस्त्रशस्त्रोंमें निपुणराजा तिससे तुमकैसेजीतो, मैं यहि काननमें कैसे धीर्य्यकरूं मुझको कौन समझावै अब तुमको देखकर कुछ रामत्यागदुःख बिस्मरणहुआ था, सो हेतात अब इस महाबनमें तुम्हारे बिना चारों ओरसे महाबिपत्ति घेरीहै, हेतात अब दुष्टात्माराजाका यज्ञाश्वछोंड़ शीघ्र आओ बेर होतीहै अपना घोड़ा पाय राजातुमको छोंड़देगा,तुमबालक मेरादुःख नहीं जानते हो मैं क्यहिसे बर्णनकरूं हेतात यह बिचार शीघ्रआकर मेरादुःख दूरकरो अरु शूरशिरोमणि कुशभी यहिसमय पास नहीं है, अब मैं क्या करूं दैवने मुझको निदान विपत्तिदीहो है ११।१६ यहिप्रकार सीता महाबिलाप करते महाशोकित पायँके अंगुठासे पृथ्वी लिखते नयन जल गिरतेहुये मुनिपुत्रोंसे बोलीं हेपुत्रो वहराजा लव को बांध कौनदिशाको गया, यहकह महाबिकल होगईं

तबतक कुशभी आगये १७। १६ उज्ज्यिनि नगरीमें महाकालका ध्यानकरके माघकृष्ण चौदशके दिन कुश ने पूजनकरके अस्त्रशस्त्रबिद्या सब प्राप्तकिया, यह सुन कोई संशय न करो देवोंको बड़ाई दीहै २० तेहिसमय कुशने माताको शोकबश दीनवत् जलगिरते देख बोले तबतक जानकीके शुभशकुन अंग फरकनेलगे, हेमाता मेरे होतेहुये तुम ऐसे दुःखसे दुःखित क्योंहौ मेरेजीवत आंशू न छांड़ो सब त्राशछोंड़ दुःखका कारणकहौ अरु मेराभाई जुझारा लव यहिसमय कहांहै जो मेरेही आते हर्षितहो मिलताथा २१। २५ अरु लव नहीं देखपड़ता सो कहां क्रीड़ा करताहै, या मुझको मुनिपुत्रों के साथ देखने गयाहै, हेमाता सत्यकहौ मेरा अनुज कहांहै अरु तुम केहिकारण रोदन करतीहौ यह सब कारण मुझसे सत्य सत्य कहो २६।२७ ऐसे पुत्रके बचनसुन जनक नंदिनी सीताने कहा हेपुत्र एक राजाने यज्ञार्थ घोड़ा छोंड़ाथा, उसको काननके मध्यमें लवने बांधलिया अरु उसके रक्षकोंको मारभगाया, तबराजा महाकटकबीरों युक्त साथलिये आया, औ मेराकोमलपुत्र एक तिसको राजाने मूर्च्छितकर पाशसे बांध रथमेंधर अपने पुरको चलागया, तब मुनिपुत्रोंने यहवृत्तांत मुझसे आकरकहा उसीसे महाशोकमें प्राप्तहूं, अबतुम तिसदुष्टात्मा राजा को जीत अपनेभाई लवको छुड़ालाओ, अब शीघ्रजाओ देर नकरो लव महादुःखितहोगा २८।३१ माताकेबचन सुनकुश रोषबशसे लोचन अरुणहवैगये अरु दशनमर्दि

ओष्ठ चबाते महाक्रोधसे कुश बोले ३२ हेमाता अभी राजाकी सैन्य प्रचंडबाणोंसे परास्तकर लवको पांशसे छुड़ाकर बुलायेलाताहूं, हेमाता जो शिव आदि देवता उसीओर होकर चढ़ैं तौभी उस राजाको जीतकर अभी अपने भ्राताको लिये आताहूं, अरु हेमाता बीरको शोभा समरमेंगिरनेहीकीहै प्राणप्रियजान भागनेवालों की नहीं, उनको संसारमें अयशहोकर नर्कनिवास मिलताहै, अरु लव सन्मुख मूर्च्छितहुये तुम शोकितक्यों होतीहौ ३३। ३५ अब मुझको दिव्य कवच शीशत्राण धनुषबाण शीघ्रदेउ अभी राजाका संहारकर मूर्च्छित अनुजको लेआऊं अब सब बिकलाई त्याग करो जोपि शोकनहीं त्याग करती हौ तो मेरा सत्यप्रणसुनौ तुम्हारे चरणों से बिमुख होऊं, यहिसे अधिक पापकोई नहीं यहसुन सीताजीने हर्षितहो सबअस्त्रशस्त्रला दिये, अरु यह आशिषदिया कि हे पुत्र रणजीत अपने मूर्च्छित भाईको शीघ्र ले आओ ३६। ३६ यह सुन कुश युद्धके अर्थ कवच शीशत्रान सुन्दर कुण्डल श्यामगातमें शोभित कठिन चापलिये दोनों ओर अक्षय तूण पूरित अतुलित बली सादर माताके चरणों का प्रणाम कर सिंह की भांति गर्जतेतर्जते चलतेभये, शीघ्रआय संग्राम भूमि देखी जहां हजारों मृतक पड़े थे, कछुक दूरिजाय लवकृत कर्म देख मुदित हुये, उहां कुश को आते देख रामादल बिस्मितहुआ, मानों प्रलयरुद्र महाक्रोधकिये बिश्वसंहारकरनेआयेहैं फिर महाबली लवने भ्राताकु-

शको देख महाहर्षितहो दृढ़ पांश भंजि रथ से कूदपड़े, जैसे पावक प्रचंड बायुपाय प्रस्फुरित होतीहै उसीभांति लवको देख सब सैन्य ब्याकुल होगये, हे मुने पूर्ब से कुश पश्चिमसे लव दोनों अग्निकी भांति भस्म करने लगे लवकुशके बाण सैन्यमें चलने लगे जैसे समुद्र में लहरें उठती हैं ऐसेही सब बाण वृष्टिसे उछलते हुये ब्याकुलहुई ४०।४८ हेमुने कुशलवने बाणवृष्टिकरब्या कुलकर अनेकनरथी गिराये, फिररथी पदादियोंने रणकी आशछोड़दी उससमय रथारूढ़ ह्वै कोईयुद्धनकरसका अर्थात् दोनोंबीरोंको क्रुद्धितदेख रामादल ब्याकुल हो गया, ४६।५० तब रिपुकुलघालक शत्रुघ्न राजाओं युक्त जड़ाऊरथ में आरूढ़ होकर लवके सदृशकुश कोभी देखा, हर्ष बिस्मययुक्त रोषितह्वैबोले तुमएकही स्वरूप वालेदोनों श्यामलगात से धनुष धारेकौनहो, औतुम्हारे मातापिताका क्यानामहै, अरु तेजप्रकाशी उत्तमनरबन में क्योंफिरतेहो, यहहमारी शंकादूरकरो तबहम तुमसे युद्धकरें, ५१।५२ यहसुन कुशगम्भीर बचनबोले तुम को युद्धमें यहबूझना योग्य नहीं, तद्यपि सुनो, हमारी माता पतिव्रता का जानकी नामहै अरु उनके सिवाय पिताकानाम नहींजानते अरुइसीआश्रममें रहकर तपो निधिवाल्मीकि मुनिकी सेवाकरतेहैं अरु माताकी सेवा में प्रवृत्त रहतेहैं औकुशलव नाम सबसमरबिद्या जानते हैं हेराजा मैंनेअपना वृत्तान्त कहाअब तुमअपनी कथा कहो, तुमने केहिहेतु घोड़ाछोड़ सैन्यसाज रणोत्साह से

जहांक्षत्रियोंसे युद्धकिया जो तुमरणधीर वीरहोतो मेरे संगयुद्धकरो, अभीतीब्र बाणों से हननकर तुम्हारा मद भंजन करताहूं ५३।५८ यहसुनकर शत्रुघ्नने निदान यहजानाकि येईसीताके पुत्रहैं, बिस्मयकरफिर सकोप ह्वै धनुष चढ़ाया, कुशने राजा को धनुष चढ़ाये देख रोषित ह्वै आपभी धनुष टंकारकिया, तबतक रामानुज ने दारुणबाण त्याग शरजालकर दिया कुशने देखतेही तिलवत् करडाले, फिरदोनों ओर से सहस्रन लक्षबाण छूटेते त्रिभुवन पूरित होगये, सबसंसार बिस्मित हुआ तबकुशने यहकौतुकदेख अग्न्यास्त्रछोड़ सबशरपंजर को भस्म करदिया, तबउस प्रचण्ड अग्नि को रामानुज ने वरुणास्त्र से शान्तकिया तब कुशने मारुतास्त्र छोड़ सब जलको शांतकर पर्बतास्त्र प्रहारकर रामादलपर मेरु शिखरबरषाये उनको रामानुज ने बज्रबाण से सब चूर्णकर डाले५९।६४ तबमहामंत्रवित् नारायणअस्त्र लवनेछोड़ा सो जाज्वल्यबाण क्षणमें सारे संसारको भस्म करसक्ता है सोईबाण रामानुजको कुछत्रास न देसका, यहदेख कुशनेबिस्मयपाय क्रोधबढ़ाय कहा हेराजा हमजानते हैं तुम बड़ेपराक्रमीहो बिश्वमें तुमएकहीबीरहो लक्ष्मीपति नारायणास्त्र सो तुम को संहार न करसका ६५।६६ अबतुमको बाणों से हतनकर पृथ्वीपर गिराये देताहूं जो समरमें न पतितकरूं तो प्रणसुनो, जो मनुष्य जन्म पाय ईश्वरका भजन नहींकरते उनकादोष मुझको प्राप्त हो जो तुमको पृथ्वीपर न गिराऊं, हेराजा अबसावधान

हो मैं तुमको पतित करताहूं, यहकह प्रलयाग्नि के समान बाणछोड़ा, रिपुसूदनने क्रोधातुर सर्प के समान जाज्वल्य बाणको आतेदेख रघुराजके चरणोंका स्मरण कर बाणचलाय कुश शरभंगकरदिया, तब निज शरभंग देख महाक्रोधकरके कुशने और बधके अर्थ प्रहारकिया, उसकोभी लवनान्तक बाणचलाय हाथहीसे खण्डितकर दिया ६७। ७३ तब माताके चरणों का स्मरण कर तीसरा बाणलिया, उसकेभी खण्डनार्थ शत्रुघ्नने बाण निकाले तबतक दारुण सर्पकेसमान हृदयमेंलगा तिस से घोरव्यथाप्रकट होकर पृथ्वीपर पतितहुये, रामानुज को पृथ्वीमें पतितदेख सबकटक त्राहि २ करनेलगे व महाव्याकुलहुये ७४। ७६ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डे शेषवात्स्यायनसम्वादेरामाश्वमेधभाषायांरामानुज मूर्च्छितकुशबिजयोनाम त्रिषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

चौंसठिवां अध्याय ॥

शेषजी बोलेहे वात्स्यायन तदनन्तर सुरथादि राजाओंने महाराज रघुबंशमणि शत्रुघ्नजीको मूर्च्छित देख रोषितह्वै अपने २ जड़ाऊ रथोंमें सवारह्वैकै लवकुश पैचलतेभये १ अरुउसी समय भरतपुत्र पुष्कल मूर्च्छासे उठकर अपने मनमें यहअनुमान कियाकि पहिले मुझ को लवने मूर्च्छित कियाहैअब उसीसे संयुग युद्ध करना चाहिये, यहमंत्र दृढ़ाय लवके सन्मुखजाय दोनोंबीरोंने

नानाप्रकारसेसंग्रामकिया२ अरुयहांकुशने सुरथकोधनुष
चढ़ाके आतेदेख शीघ्रता पूर्वक तीव्रबाणों से बिरथकर
पृथ्वीपर गिरादिया, अरु धनुषभी भंग करदिया, यहि
प्रकार नानाप्रकारके अस्त्रशस्त्र छोड़लवकुशसे सबराजा-
ओंने महाघोरयुद्धकिया,वहांलव पुष्कलसेपररुपरतुमुल
युद्धरोमहर्षण संग्राम होताभया ३।४ सुरथ भूपक्षण २
बिषे भयानक युद्धकरतेथे, तबलवकुशने बिचार किया
कि येराजा महाप्रबलहैं क्या उपाय करना चाहिये ५
यहबिचारांशकर सुरथके हृदयमें प्रचंडबाण प्रलयाग्नि
के समान जाज्वल्यमान छोड़ा,सुरथखंडनार्थ शोचा तब
तक वहतीव्रशर हृदयमें भेदित होगया, अरु मूर्च्छितह्वै
गिरपड़े,तब सारथी रथरणसे शीघ्रलैजाताभया६।८तब
कुशने सुरथकोरणसे परास्त देख रामादलको अत्यन्त
ब्याकुलकरतेभये तबअपने दलको ब्याकुलदेख अंजनी
नन्दन महाक्रुद्धित हो सन्मुख चले, तब महाबलवान्
हनुमान्को आतेदेख कुशहंसिकै बोलेरेकपि मेरेसन्मुख
क्यों आताहै प्राणोंकी रक्षाचाहता है तो यहांसे भागजा
नहींतो शीघ्रबाणोंसे हननकर यमपुरीपठाओंगा ९।११
यहसुन हनुमान्जीने श्यामल गातदेख रामचन्द्र जीके
पुत्रमहाबली अजित युद्धमें अयोग अनुमान किया, फिर
अपना सेवक धर्म्म बिचार स्वामी के कार्यार्थ एकमूल
समेत कालद्रुम शत शाखायुक्तमहावेगसे कुशपरप्रहार
किया, तबकुशने शीघ्रता पूर्वक अर्द्धचन्द्रशर छोड़उस
महावृक्षको चूर्णकर डाला १२।१४ तबपवनात्मज ने

एकशालद्रुम हृदय में मार दशनमर्दि महाबिक्रमकिया, लेकिन लवके मनमें रंचक मलीनता नहुई अरुमहाबीर कहिकै प्रशंसाकी १५। १६ अरुसंहार अस्त्रलेकर मंत्र युक्तचढ़ाय वह कालरूप बाणछोड़ा, तब पवनात्मज ने महाबाण आतेदेख अपनेस्वामी रघुबंश मणिकास्मरण कियावहप्रेरित मंत्रबाण अभंग आकरहृदयमें समागया लगतेही महाव्यथा में मूर्च्छित होगये, हेमुनेजब हनुमानजी युद्धमें मूर्च्छाको प्राप्तहुये तबकुशने अमितबाण छोड़ सबसैन्यको ब्याकुल कियाजैसे गजयूथमें एकमृग राजब्याकुल करताहै हेद्विजेन्द्र उससमय रामादल रुधिर बहतेहुये कुशसे परास्तहो भागताभया अर्थात् किसीके धीर्य्य न हुआ१७। २३ तब सुग्रीवने रामादल बिचलतेदेख एकशिला शृङ्गउखाड़ कुशके ऊपरबलयुक्त चलाभी तबकुशने शिलाको लीलाकरके चूर्ण करदिया, तबकपीशने एकबिशालवृक्षचलाया, तिसकोभी तिलवत् करडाला अरु अगणित बाण कपीश के गात में मारते भये, तबगातोंकी बिह्वलतासे ब्याकुलहो एकमहा भूधरलेकर कुशमस्तक पर चलाया २४। २६ तिस को आतेदेखकुशने तीव्रशरोंसे उसकोभी निपातकर बिशाल स्वरूप प्रकटकरके कपीशको बिह्वलकिया, तबकपीश ब्याकुलह्वै रणकी आशत्याग समरबिलासी सुग्रीवने लंगूर भ्रमाय धायकै अनेकन कुधर वृक्ष बरषाते भये, तिनकोभीलवनेतिलके समानकरकेकपीशके गातमेंतीव्र बाणमारे, तब बाणोंकी घोरब्यथासे ब्याकुलहोबिशाल

द्रुम प्रहारकिया, तब कुशने कोपकरके द्रुम खंडनकर बारुणास्त्र प्रहारकिया कपिराजको पाशसे बांधलिया, तबसैन्यने कपीश को व्याकुल देख सबसैन्य भागी व कुशने महाबिजय प्राप्तकी, तबतकवहांलवने पुष्करादि बीरोंको व अंगदादि यूथपोंको परास्तकर बिजय पायी प्रतापअग्र आदि महाबीरोंको अर्थात् दोनोंबीर लव कुशने सब रामादलको विनाशकिया एक सुमन्त मंत्रीको ब्राह्मणजान छोड़ बाकी सबकोपरास्त करदिया, हेमुने यहयुद्ध मैंने संक्षेपसे कहा इसमें अनेकन रथी महारथी रणधीर परास्तहुये, यहिप्रकार सबसैन्य को जीतकर दोनोंभाई येकत्रहुये, तब लव हाथ जोड़ चरणों में शिर नाय कहा हे तात तुम्हारे प्रताप से इस महासैन्य से बिजय पायी, अब कटकशोध जहां जो रुचिहो सो हर्षित हो लेनाचाहिये ३०।३६ यह बिचार दोनों बीरबर सीता पुत्रोंने मृतकराजाओंके निकटजाय. रामानुज शत्रुघ्नका हेममय जड़ाऊमुकुटसो द्युतिमान् देख कुशने अपनेमस्तकपर धारणकिया, अरु पुष्करकामुकुट लवने लेलिया, फिर जो शन बजुल्ला रामानुजके उतार आप ग्रहणकरलिये, तब श्यामलगात बर्याकशोर बस्त्र आभूषणधारणकर कोटिनकामके लजावनवाले शोभितहुये ३७।३८ तब व्याकुल हनुमान् व सुग्रीवके निकटजाय कुशनेपूंछ पकड़ उठालिया, तब लवने अंजनीनन्दन हनुमान् को उठालिया, देखो महाबली कपीन्द्र कुछ न करसके, तब लव बोले हे भ्राता माताके देखानेका व मुनिपुत्रोंकेखे-

लनेको मेरे कौतुकसे इनको लेतेचलो, यह सुन कुशबो-
ले यह बड़ा बलवन्त बानरहै इसको हम लियेचलतेहैं
उसको तुम लियेचलो, यह कह दोनोंमर्कटों युक्त यज्ञा
श्वलैकर आश्रमकोचले ३६।४३ तब कम्पितगातोंसे
भयभीत विह्वलदशासे हनुमान्‌जीने सुग्रीव से कहा हे
स्वामिन् ये रामचन्द्रके पुत्र लव कुश लियेजातेहैं ४४
देखो प्रथम हमने लंकामेंजाय सीताजीको बड़ा बिक्रम
दिखाय बनउजार रावणपुत्र मार पुरभस्मकर सीताके
आगे गयेथे, उसीसमयके प्रसादसे हमने अभीतक जय
पाईहै बिमुखका यहफल देखो कि बालक बांधेलियेजा-
तेहैं, सोई सीता जब मुझको बन्धनमें देखेंगी तब गात
पीड़ितहोकर अवश्य प्राण त्यागकरेंगे हे स्वामिन् यह
दुःख न सहाजायगा, अब देखो श्रीरामचन्द्र इस समर
में क्याकरतेहैं ४५।४८ तब सुग्रीवने कहा हे पवनज
यहिसमय हम तुमसे दुःखितहैं हे द्विजेन्द्र इसप्रकार
दोनोंवीर व्याकुलहुये, अर्थात् प्राणत्यागमें कुछ संदेह
नहीं, यहिप्रकार कांपतेहुये भयभीत दोनों कपीन्द्र पर-
स्पर वाक्‌बिबाद करते तबतक हर्षसे कुश लव निजआ-
श्रमको माताकेनिकट प्राप्तभये ४६।५० सीताजीने
विशद बिभूषणों से भूषित पुत्रोंको देख मोहितहोकर
पाछिलशोक बिहाय शीघ्रजाय दोनोंपुत्रोंको अंकलगा-
या, तब हाथोंमें पूंछदेख फिर पवनात्मज व कपीन्द्रको
पहिचानतीभई, तब सुतकरके पासबन्धित देख हंसिकै
जनकजाबोलीं, हे तात इन दोनों मर्कटोंको शीघ्रछोड़ो

जो मुझको ये देखेंगे तो शरीर त्यागकरदेंगे, ये बीरवर हनुमान् इन्हीं रणधीरने रावण नगर लंका दहनकिया था, ये सुग्रीव अठारहपद्म यूथपोंकेराजा इनको कैसेधरकर यह अपराधकिया, यह कहो तुमने इनको कहांपायाहै जिसमें मेरा संशय दूरहो ५१। ५६ यहिप्रकार माताके बचनसुन हाथजोड़ शिरनाय लव बिनीत बचन बोले, हे माता एक दशरथ नाम राजा अयोध्यापुरीमें तिनके पुत्र श्रीरामचन्द्र अपने को महाबलवान् जान अश्वमेधकरके उसका घोड़ा छोड़ाहै औ घोड़ाकेशीशमें कनकपत्रविषे यह लिखाहै कि मेरी बीरप्रसूती माताके सदृश संसारमें नहीं है, जे क्षत्री अपने को क्षत्रिधर्म्ममें प्राप्त युद्धगति जानतेहों, ते सचेतहो मेराअश्वपकड़ युद्ध करो, जो इहिसे बिपरीतहो सो मेरे भाई शत्रुघ्नके चरणोंकी पूजनकरो ५७। ५६ तब बांचकर अनुमानकिया कि देखो राजारामका अभिमान क्या हम क्षत्री नहीं हैं या हमारीमाता बीरप्रसूती नहीं है यह बिचार माता मैंने घोड़ा पकड़लिया तबतक कुश भ्राता भी आगये तब राजाओंयुक्त तिसकी सबसैन्य भंजनकरके शत्रुघ्न का मुकुट लैकर देखो ज्येष्ठभ्राता कुश दिये हैं व दूसरे पुष्कलनाम बीरका मुकुट मैं दियेहूं, अरु नानाप्रकारके हेमरत्नोंसे भूषित घोड़ा यह कुशके चढ़नेको लाये हैं, अरु इन दोनों कपीश्वरोंने बड़ायुद्ध कियाहै, इनको कौतुक हेतु तुम्हारे निकट लायेहैं सब कथा जो रहै सो हमने बर्णनकिया ६०।६५यह पुत्रोंको बाणीसुन सीता

बोलीं हे तात इनको शीघ्र छोड़ो, तुम्हारे पिताने अ-श्वमेध करके यह घोड़ा ससैन्य लघुभ्राता शत्रुघ्न से रक्षित छोड़ाहै सो तुम बंशसंहारकरके कपिनयुक्त घोड़ा-लायेहौ हापुत्र तुमने यह महाकुत्सित कर्म्मकियाहै, अब दोनों कपियोंयुक्त घोड़ालैकर अपने पितुभ्राता शत्रुघ्न के चरणोंमें शिरनाय यह अपना अपराध क्षमाकराओ, माताके बचनसुन दोनोंभाई शिरनाय बोले ६६। ६६ हे माता हमने क्षत्रिधर्म्म के अनुकूल युद्धकर बिजय किया, हमको दोष क्यों देतीहौ क्षत्रिधर्म में यही उचित है ७० अरु हमको वाल्मीकि मुनिने पढ़तेहुये यहकथा कहीथी कि पूर्ब राजाभरतने अपने दुःकृत पुत्रसे युद्ध किया, अरु स्वामी सेवक से जैसे परशुरामजो भीष्मसे युद्धकिया, इसीप्रकार पितापुत्र गुरुशिष्य भाईसे भाई मित्रसेमित्र युद्धकरते आयेहैं, माता हमको कुछदोष न देउ यह क्षत्रिनका धर्म्महीहै ७१।७३ जो यहि आश्रम में घोड़ा न आता तो क्यों हम रणकरते, अब तुम्हारी आज्ञापाय दोनोंकपियुक्त घोड़ादेदेंगे ७४ यहकह अं-जनीनन्दन हनुमान् व सुग्रीवको छोड़दिया, फिर माता की आज्ञामान् यज्ञाश्वभी छोड़दिया, तब दोनों पुत्रों को लैकर जानकी शत्रुघ्नके समीपरणमंडलमें जाय ७५ पतिब्रता जानकी रघुनाथजीके चरणोंका स्मरण कर सूर्य्यको साक्षीदैकर सरल बाणी बोलीं जो मैंने मन बचसे रघुनाथजीका स्मरण छल छिद्र हीन कियाहै व स्वामीके सिवाय दूसरेको नहींजाना तो हेदेवरशत्रुघ्न

व पुत्र पुष्कलयुक्त सब कटक जो समर में ब्याकुल पड़ीहै सो तत्काल जीउठै यहिप्रकार जानकीके कहते हुये उसी समय सब सैन्य प्राणपाय २ हर्षित होतेभये तब जानकी सबको जिआय फिर दोनोंपुत्रन युक्तअपने आश्रमको चलीगयी, यहमर्म्म किसीको ज्ञात न हुआ ७६। ७६ इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेशेषबात्स्यायन सम्बादेरामाश्वमेधभाषायां सीताकरकेसैन्यजीवनंनाम चतुःषष्ठितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठिवां अध्याय॥

श्री शेषजीबोले हे बात्स्यायन तब रामानुज शत्रुघ्न दलसमेत मूर्च्छा से बिगतहोकर आगे १ यज्ञाश्वदेखते भये, अरु अपने शिरत्राण मुकुट रहितदेख व सबसैन्य की जीवनदेख हृदयमें अतीव बिस्मयमाना२ तब मंत्रि-वर ज्ञाता सुमन्तबोले हेराजन् वे दोनों बालकोंने यज्ञ के पूर्णको कृपाकरके घोड़ा देकर अपने आश्रमको गये हैं अब अयोध्यापुरीको चलो हयमग महात्मा रघु-राज देखते होंगे ३। ४ यह सुन शत्रुघ्न जड़ाऊ रथमें आरूढ़ हो कटकसमेत भयभीत हो भेरी शंख गोमुखा-दिकोंके शब्द कोई बीर लव कुशके भयसे न करसके यहिप्रकार सबसैन्य बिह्वल हो कम्पित गातसे आ-श्रमसे दूर निकलगये अरु सैन्यके चारोअंग समान थे जिनका वर्णन नहीं होसक्ता, हेमुने बिशाल सैन्यसे क्षण २ शेषजीकाशीश लचकताथा ५। ६ यहिप्रकार

सब गंगाजीके निकटआय उतरगये, अरु पुष्कल सुरथ आदि राजा रथोंमें सवार होकर रामानुजकेसाथ रत्न मालाओंसे शोभित यज्ञाश्वको आगेकर चलतेभये ७।८ अर्थात् वाजिराजके श्वेतछत्र शीशमें शोभित इधर उधर अनुचर चमर व्यजन करते कोटिनरथी महारथी जुझार पीछेसे व उन्मत्त हाथी, बायुके लजानेवाले घोड़े तिनपर महारथीसवार व अनेकन पदचर तिसके पीछे रामानुज सबराजाओं युक्त अरु कपिराजकेसाथ महाबिकट सैन्य मर्कटोंकी किलकिला शब्द करतेहुये सैन्यमें भेरी गोमुखादि नाना प्रकारके बाजा बजते हुये व सैन्यकी रजसे दिवाकर आच्छादित होगये, अरु बारम्बार नागराजकाशिर लचक २ रहजाताथा, यहि प्रकार क्रम पूर्बकजाय अयोध्यापुरी देखते भये १० जहां द्वार २ विषे मुक्ताहलके ध्वजा पताका बन्दनवार सुशोभित होरहेथे, व सूर्य्यबंशिन के अनेकन महल ध्वजा पताकाओंसे शोभित होरहेथे ११ हे सूत तहां महात्मा रघुवंशमणि रामचन्द्रजीने यज्ञतुरंग अनुज शत्रुघ्न पुष्कल समेत अपारदल साथलिये आये सुना, तब अत्यन्त हर्षित हो लघुभ्राता लक्ष्मण को लेने अर्थ पठाया १२। १३तब शत्रुघ्नजीने चतुरंगिणी सैन्यसाज मंगलाकारसे लघुभ्राताको मिलने चले, वहां शत्रुघ्नने लक्ष्मणजीको देखा व लक्ष्मणने शत्रुघ्नको देख दोनोंने रथत्याग परस्परपुलकितगातसे मिलतेभये, अरु कुशल पूंछ मुदितबार्ता कर फिर पुष्करादि वीरोंको भेटतेभये,

फिर शत्रुघ्नसमेत एकरथमें लक्ष्मण सवारहुये तब एक रथमें दोनोंबीरोंकोदेख सबराजा अत्यन्तमुदितहुये अरु दोनोंभाई रथारूढ़ होकर अवधमें प्रवेश किया, तब कुछदूरचल त्रैलोक्यकी पावनकारी सरयूदेखो १४।१६ तहां नानाप्रकारके पक्षी मनोहरशब्द करतेथे व सरयू निकट रघुनाथजीने भिन्न मन्दिर रचवायेथे उनमें महा मुनि बेदपाठ करतेथे उनके समीप क्षत्री धनुषबाणधारे उनकी रक्षा कररहेथे जिनके धनुषकी टंकारका शब्द पूरित होरहाथा १७। २१ अरु तहां मुनियोंके अर्थ सुवारोंने घृत शर्करा युक्त हिमकरके समान उज्ज्वल पाक अर्थात् मालपुवा व रुचिकारी शष्कुली कचौरी शुचिफेनिका थारोंमें भरी यहिप्रकार मधुरपदार्थ सुधा के लजानेवाले जिनकोदेखतेही मन लुभाय जाताथा व दधिमिश्री युक्त चावल अर्थात् मूरनि भात जो कान्य- कुब्जोंके यहां अबभी बरातोंमें परोसाजाताहै, अरु बहुत उत्तम बरा सरा दधिमें भोगतेथे, अरु चतुरस्वादक बता- तेजाताथा सुवारजन बनातेजातेथे, यहिप्रकार सब कन्द मूल फलोंकेपाक अर्थात् छप्पनप्रकारके उत्तम भोज्य मुनियोंके अर्थ रघुनाथजीने तैयार करायेथे, बनबासी सहस्त्रनमुनि जेंवनेबैठे तिनके आगे सुवारोंने कंचनके थार सब भोज्यसे भरकर धरनेलगे, व सरयूका निर्मल जल झारियोंमें धरदिया २२। ३३ हे मुने तब सब बनबासी मुनियोंने अपने २ थारन में पायस अर्थात् निर्मल खीर देख बिस्मययुक्त परस्पर तर्कबार्ता करने

लगे, कि यह क्या सुधाकर अन्धकारके भयसे थारमें आयकै छिपाहै, या मृत्युदहन अमृतही आयाहै यहसुन और ब्राह्मण क्रोधसे नेत्र अरुणकिये बोला न यह चंद्र है न अमृतहै मैं कहताहूं सुनो, कि चन्द्रतो एकहीस्वरूपहै बिबिधथारनमें नानारूप कहां से आये ताते चंद्रमा नहीं ये श्वेतपुष्पहैं, यह सुन एक मुनि दोनों हाथों से शिरधुनि बोले तुम मूढ़हीहो, अरे यह विचक्षण युक्त पात्रोंमें घृत परोसागयाहै, यहिके सिवाय और नहीं है, यहिप्रकार सब मुनिजन बिस्मय युक्त तर्ककरतेहुये कंद मूलके अहारी वे अशन भोग क्याजानैं २४। ३४ तब एक मुनि बोले कि क्षत्री धन्यहैं जो ऐसे अशन अर्थात् भोजन सदैव करतेहैं, देखो ये प्रथम सुकृत के फलसे भोगकररहेहैं यह सुन कोई २ मुनि यह कहनेलगे कि दियेका यहीफल होताहै, जे जन जगमें आय रघुपतिके चरणोंका भजन नहीं करते उनको ये सुख स्वप्नमें भी दुर्लभहैं जिन धर्मात्माओंने पहिले गौ ब्राह्मण भोजन करायेहैं निदान वेई नर इससुखकेगामी होतेहैं ३५।३८ यहिप्रकार आनन्दयुक्त मुनि वृन्दोंने मधुर अन्नभोजन किया, अरुप्रसन्नहोकर मण्डपमें कोईतो वेदऋचा पढ़ने लगे, कोईहंसने नाचने गानेलगे, कोईमहोत्सवदेख थकितहोगये, कोई करतालबजाय वेद पढ़नेलगे, तबतकरामानुजशत्रुघ्नतहांआय मुनिसमाजदेख महाआनन्दहुये३९। ४०इहांरामचन्द्रजीने पुष्करादिबीरोंयुक्त शत्रुघ्नकोआते देख ऐसे आनन्दकेबशहुये कि उठितो न सकेनयनोंसे प्रेम

वारि बहने लगा, यहि दशासे जबतक करुणाकर उठें तबतक शत्रुघ्न चरणोंमें गिरपड़े, हे मुने सो भ्रातृ स्नेह मैं वर्णन नहीं करसक्ता महा बिनीत बिनययुक्त चरणों में देख रघुनाथजीने बरबश उठाय भुजागहि अंकमें लगाय परमस्नेहका जल अनुजके शीशपर बर्षाते भये, तदनन्तर बिह्बलदशामें भरतपुत्र पुष्कल रघुनाथजीके चरणोंमें गिरे उनकोभी रघुनाथजीने उठाय अंकमें लगाया, फिर अंजनीनन्दन परमभक्त हनुमान् सुग्रीव अंगद, नील, नल, लक्ष्मीनिधि सुमद, सुबाहु, सत्यवान्, सुरथ, बीरमणि आदि राजा हर्षितहो रघुनाथजीके चरणोंमें गिरे, प्रभु करुणाकर सादर सबसे मिले, देखो भक्तवत्सल सुमन्तको देख रघुनाथजी बरबश भुजा मिलायमिले उससमय प्रभुके सन्मुख सुमन्त निपट उदासीन ठाढ़ेभये, तब रघूत्तम प्रीतियुक्त बचन बोले ४१। ५० हे नीतिज्ञ मंत्रिबर मेरी सन्देह निवारणार्थ यह कहो कि ये जो बहुतराजा आयेहैं, तिनकेनाम ग्राम भिन्न वर्णनकरो औ यहभी कहो कि समागम कैसे कैसे हुआ, अरु मेरे यज्ञाश्वने कौन कौन देश भ्रमण किये, अरु केहि केहि राजाने घोड़ा पकड़ युद्ध किया तिसको हमारे अनुजने परास्त किया, ५१। ५२ हेमुने यह धर्म्मात्मा रामचन्द्रके बचनसुन सुमन्तबोले हे स्वामिन् तुम सर्बज्ञ सबके अंतर्यामी बिष्णु शिवादि के ईश चराचरके नायक मैं अल्पज्ञ मन्दजीव आपसे कथावर्णनकरूं, यद्यपि जो आप लोकरीत्यानुसार पूछते

हो तो अपराध क्षमाकरके सुनो, तुम्हारा कनकपत्र शोभित यज्ञाश्व स्वतंत्र सारे पृथ्वीतलमें भ्रमणाकिया, कोई बलवान् राजाने नहींधरा सबोंने आयआय अपने अपने राज्य कोष समर्पण किये व आपभी यज्ञाश्वकी रक्षार्थ साथ होते गये, तुम्हारी जो महाबली रावणके बध करनेकी कीर्त्ति तिसको सुनकर कोई राजा घोड़ा नहीं पकड़सके, बल्कि सब भेंट लायलाय साथहोतेगये हे स्वामिन् अब क्रमसों सब कथा आपसे वर्णन करता हूं ५३ । ५७ प्रथम अहिछत्रापुर सुमद राजाके यहां यज्ञाश्वगया तिस धर्म्मात्माने नगर निकट आपका घोड़ा सुन सदल आय भेंटलाय शत्रुघ्नसे मिले, इन्हीं ने कमदासे आपके मिलने अर्थ तप कियाथा सो सर्वज्ञ करुणाकर ये सुमदराज दंडवत् करतेहैं, तुम्हारेदर्शनों की बड़ी लालसाथी, तदनन्तर च्यवनमुनिके आश्रममें घोड़ागया तहां बिमलराजाने आय भेंटलाय राज्यकोष अर्पण किया, सो आपको दंडवत् करताहै अपना अनुगामी जान कृपा करो फिर पुरुषोत्तम क्षेत्र देखा जहां आप श्रीयुत बिहार करतेहो फिर सुबाहुके यहां घोड़ा गया तिसके पुत्र दमनने घोड़ाबांध बड़ाघोरयुद्ध किया तिसको भरतपुत्र पुष्कलने मूर्च्छित किया, तब राजा सुबाहु बड़ेबेगसे आय संगर करनेलगे तिनको आते देख हनुमानने जाय एकलातमारी, तबतो मुनिशापसे मुक्त होकर तुम्हारे चरणोंका स्मरणकर पुत्रको राज्यदेकर आपभी साथहुये सो सुभुजवीर तुम्हारी दंडवत् करते

हैं कृपादृष्टिसे देखो यह राजा मनबचसे तुम्हारा सेवक है ६३।६५ फिर घोड़ा तेजपुरकोगयो जहांके सत्यवान जिन्होंने धेनुप्रतापसे आपकी भक्तिपाईहै, फिर आगेचल पंथमें बड़ा तम प्रकटभयो अर्थात् बिद्युन्माली राक्षसने तमप्रकटाया, उसको तुम्हारे भ्राताने बधकिया, फिर आरण्यकमुनिके आश्रमसेंगया उन्होंने तुम्हारा स्मरण कर अवधका पयानकिया, फिर आगेचल घोड़ा रेवानदी में प्रवेशकरगया तिसके अन्तरगत तुम्हारेभाई जाय बिजयकर एक योगिन्यास्त्र लाये, अरु फिर घोड़ा देवपुर बीरमणिके नगरगया वहां बड़ाघोर संग्राम हुआ तहां आप गयेरहे। सर्बप्रसंग जानतेहीहो फिर आगेचल अकस्मात् थकित होगया वहांसे शौनक मुनिकी कृपासे मुक्तहुआ ६६।६९ फिर कुंडलपुरगया जहां दारुणयुद्ध हुआ सो चरित्र आपने जाय देखेहैं फिर सो यह सुरथबीर तुम्हारे चरणोंकी बन्दना करताहै कृपा करो, फिर कुंडलपुर छोड़ सर्बत्र भ्रमतारहा कोई आपके प्रभावसे नहीं पकड़सका ७०।७१ फिर घूमते हुये यज्ञाश्व मुनिनाथ बाल्मीकिजीके आश्रमगया तहां एक बालक आपहीके समान रूप शील तेजमें निपुण षोड़शबर्षकी अवस्थामें प्राप्त बनमें घूमताथा, उसने कनकपत्र बांच घोड़ाबांध शीघ्र कालजित सेनाध्यक्षको मारडाला औ शत्रुघ्नादि सब बीरोंको मूर्च्छित किया तब तुम्हारेभ्राता मूर्च्छात्याग बालकको मूर्च्छितकर रथमें धरिकै चलनेका बिचारकिया तबतक वैसेहीएक

और बालक धनुषबाणधारे आय सबसैन्यको परास्त करदिया अरु फिर दोनोंने सबके आभूषणादि लैकर व हनुमान् सुग्रीव युक्तघोड़ा लैकर अपने आश्रम चलेगये फिर दोनों बीरोंको छोड़ सैन्यजिआय घोड़ा देकर चले गये तब शत्रुघ्न यज्ञाश्वपाय आपके शरणमें आये मैं आपकी आज्ञापाय यथार्थ कथा कही ७२।७६ इतिश्री पद्मपुराणेपातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेध भाषायांसुमन्तवर्णनोनाम पंचषष्ठितमोऽध्यायः ६५ ॥

छांछठिवां अध्याय ॥

शेषजीबोले हेमुने सुमन्तसे लवकुशकी कथा सुन श्रीरामचन्द्रजीने अनुमानकिया, कि वे मेरेहीपुत्रहोंगे १ यह बिचार बाल्मीकिजीसे बोले हेमुनीन्द्र जो तुम्हारे आश्रममें धनुबिद्या निपुण महाबलवान् मेरे समान रूपवाले जिन्होंने मेरेभ्राता शत्रुघ्नको मूर्च्छितकर लीलामात्रसे कपीन्द्र हनुमान्को बांधलिया, हेत्रिकाल दर्शी यह कहो किवे तुम्हारे आश्रममें कौनहैं यह कथा वर्णनकर मेरा संशय दूरकरो २।४ राज राजेन्द्र रामचन्द्रजीके ये बचनसुन परमपुष्ट बचन मुनिबाल्मीकिजी कहनेलगे ५ हे अन्तर्यामी भगवान् क्या आप यहकथा नहींजानते तदपि तुम्हारे आदरहेतु कहतेहैं, जो बालक मेरे आश्रम में तुम्हारे रूपवाले रहतेहैं तिनकी कथा सुनो ६।७ दोषरहित जो गर्भिणी जनकात्मजाको आप ने त्याग कियाथा सो महादुर्गम बनमें अधीरह्वै रोदन

कररही थीं औ घोर बिपिन में महादुःख को प्राप्त बार बार बिलाप करतीथीं तबतक में शिष्यन सहित तहां आय तुम्हारी प्रियाजान अपने आश्रममें लैजाकर नव पल्लवकी कुटीबनाय वासदिया कुछकालमें द्वैपुत्र सीता जीके उत्पन्नहुये तिनके कुश लव नामधरे दोनोंपुत्र शुक्ल पक्षके चन्द्रमा समान बढ़नेलगे, अरु समयके कर्म्म कर बंशके उचित धर्म्म सब शीक्षगा किये ८। १५ सबशास्त्र सिखाय, गानकलामें निपुणकर बीणा मृदंगबंशीइन सबबाजाओंमेंभी बिशारदहैं तुम्हारेपुत्र अरु तुम्हारा मनोहरचरित्र बिपिन२ प्रति गान कियाकरतेहैं जिससेखगमृगइत्यादिकपक्षीमग्नहो थकित होजातेहैं, तिसमें चैतन्य मुनिजनों आदिकको क्यागिनतीहै अरु उनका गानसुनकर गंगाजल स्थिर होजाताहै सूर्य्यचन्द्रमा मोहितरहतेहैं बायु सुनकर मन्दपड़ जातीहै फिर बिचारे मनुष्योंकी क्यागतिहै ऐसा गान रूप शीलसे भूषित तुम्हारे पुत्र करतेहैं १६। १६ हेरघूत्तम एकसमय बरुणकीस्त्री वहगान सुनिकै महाबिह्वलहो अर्थात् मोहित होकर कुशलवके समीपआय तिनको अपनेभवन लैजाय कुटुम्ब समेत रामचरित्र सुनतीभई, मनोहर गानमें रामचरित्र सुनकर सबकुटुम्ब युक्त बरुणके तृप्तिनहींहोती वहां बिशदगान आनन्दमें मग्न ह्वै गये औ बरुणने नानाप्रकारके सुखदिये जिससे दोनोंपुत्र माताकी व मेरीसुधि भूलिगये महासुखमें प्राप्तहोकर, तबमैंबरुणलोक जायतिनकोदेखा, तबबरुणनेमुझकोदेख

आसनस्थकर पूजनकिया, अरुश्रमयुक्त तिन पुत्रों के जन्मकर्म पूंछतेभये,तब हमसे सीतापुत्र सुनिकै महामोदमें मोहितहवैकै नानाप्रकार के भूषण बस्त्र सन्मान करकेदिये,तब पुत्रोंने दैवीबस्तुजान मेरीगौरव आज्ञा मान ग्रहणकर द्वारपालोंको देदिये, तब मैं अपनेसाथ लिवालाया, गानबाद्यमें रूपशीलमें निपुणदेख बरुण अपनेको धन्य मानतेभये २०।२८ अरु पतिव्रता जानकी महाशुद्धसो क्या त्यागने योग्यथी देखो जिसकेपुत्र ऐसे बलवान् गुणवान् उत्पन्नहुये सीतात्यागमें तुम्हारीबड़ीहानिहै,हे सबसिद्धोंमें बिराजमान रामतुम्हारी अनपावनीशक्ति सीताहै तुमने उसको केहिकारण त्यागदियाहै हम इसकेसाक्षीहैं कि सीता सबकालमें पबित्रहै अरु कोईदुष्टात्मा पामरखल जो सियको दूषण दिया होतो तुम सर्वज्ञ समदर्शी तुमक्यों किसपातकसे त्याग किया, देखो जिसदेवीके स्मरणकरनेसे मनुष्य महासिद्धिको प्राप्तहोतेहैं, अरुउसी सीताके भृकुटि बिलाससे सब बिश्वभूषितहै उसीके कटाक्षसे जगत्में सब ऐश्वर्य्यादि प्राप्तहोतेहैं मृत्युबिनाशिनी आनन्द दायिनीअपने भक्तोंको सुखदानी उसी महाराणीकेप्रतापसे इन्द्रजल वर्षते,सूर्य्यचंद्र रात्रिदिनमेंतपिकै शोषतेहैं,सोकेवलसीताजीकेही आज्ञाकारीहैं यहि प्रकार वेद स्मृति कहतेहैं, अरु,स्वर्ग,मोक्ष,तप,संयम,दान,योग,यज्ञ, विद्या इनकी कारण वहीदेवीहै शिव बिरंचि आदिलोकपालसबउसके सेवक उसीकी आज्ञानुसार अपने २ कार्य्योंको बि-

स्तार पूर्वक करतेहैं, तुम अखिललोक के पिता व सीता सब चराचरोंकी माताहैं अरु सीताजीके कुदृष्टिसे संसारमें कोई चराचर क्षेमको नहीं प्राप्तहोता, तुम सर्वज्ञ स्वयं भगवान् निदान सीताको शुद्धजानो, हेताततुम्हारी प्राणप्रिया आज्ञाकारी क्योंत्यागी सबप्रकारसे वह जगत्माता शुद्धहै मैं क्या सबलोक जानताहै, अरु हृदय से मृषारोप त्याग उस देवीको बुलाओ, जोशुकशापका प्रमाण कियेहो सोभी गतहुआ, अरु हे सर्वज्ञ स्वतंत्र कौशलाध्यक्ष शापव्याधि तुमको स्वप्नमेंभी कुछनहींकर सक्ती अरुतुम्हारे मनोहरपुत्र गानकलामें गन्धर्वोंके लजानेवाले पुत्रोंकेऊपर त्रैलोक्य मोहितहै सब देवता इन्हींपर पूर्व प्रसंग कहतेहैं २६ । ४२ अरु लोकपालों युक्त सब देवता तुम्हारेपुत्रोंका अंगीकार करतेहैं, अरु पहले बिश्वमें एकराम जानतेथे अब तीनरूप रामके प्रकटहुये जानपड़तेहैं कोई मुनि यह कहतेहैं कि येमनोजकी दीप्ति हमने सुनीहै सोअब लवकुशयुक्त आप चार मनोजरूप होगये हेनाथ कुशलवयुक्त तुम्हारा सुयशसंसारमें पूरित होरहाहै, तुम सब प्रकार से ज्ञानवन्त हो सीताको बुलायलेउ अरु हे धर्मात्मा राम सीता त्याग सबसुयशमें अयशहुआ अरु हेधर्म्म धुरन्धर अब गृहस्थ धर्म्मानुसारपुत्रोंको अंगीकारकरो वेस्वप्नमेंभी त्यागयोग्य नहींहैं, अरु तुम्हारे रूपवान् गुणवान् बंशके बढ़ानेवाले वे माताके युक्त आवेंगे, औ जब कुश लव ने सब कटक संहारकिया तब जनकात्मजा सुनकर तहांआय

सूर्यआदि देवताओंको साक्षीकर अपने पतिव्रतधर्म्म से सब सैन्यकोजिआया ऐसी कीर्त्तिवाली जनकात्मजात्या गयोग्यनहीं अरु हम तुम सब देवता सीताको बनाय शुद्ध जानतेहैं, जोकोई सीताको नष्टमानै वह कुबुद्धीअपना नष्टहोजायगा ४६। ५१ हेमुने सर्बज्ञ सुजानसमदर्शी रामचन्द्र तिनको यहिप्रकार बाल्मीकिमुनि समझातेभये५२तब सुनकर रामचन्द्रजीने बन्दनाकरस्तुति कया,अरुसकुचहर्षसे लक्ष्मणप्रतिकहाहेतात शीघ्रसीता समीपजाय पुत्रनसमेत रथमेंबैठाय लैआओ,मुनीश के समझायेहुये बचनोंका मेरासन्देशभी कहियो, लक्ष्मण बोले हेकरुणाकर तुम्हारी आज्ञापाय अभी मैं जाताहूं जनकजा शीघ्र आवैंगी तो सब आशापूर्णहै यदि प्रथम त्यागका घोरबनमें उसका दुःख स्मरणकर न आवैं तो यह अपराध क्षमाहोना चाहिये, यहकह चरणों में शिरनाय उत्तमरथमें आरूढ़हो मुनिशिष्यन युक्त चलते भये, अरु मार्गविषे सकुच हर्षमें प्राप्त यह अनुमान करते जातेथे कि सतीशिरोमणि जगत्माता जो पूर्व दोष देखैं तबतो किसीप्रकार से उद्धार नहीं है अपरंच जो रामके आधीन बिचारेंगी तो मेरा दोष न देखैंगी ५३।५८ यहिप्रकार सकुच हर्षमें प्राप्त अनुमान हुये लक्ष्मणने श्रमनाशन आसन सीताजीको देखा ५६ तब रथछोड़ नयनोंमें जलबहते हुये थकित गात कंठ रुका अर्थात् गद्गद गिरामें धीर्य्यधर लक्ष्मण ने कुटीमें जगत्माता सीताजीको देख कहा अम्बा जगत्

पूज्य भगवती ये बचन सुनाय सर्वाङ्ग प्रबाह युक्त दण्ड वत् करतेभये, जानकीजीने देख आशिषदै उठाय प्रेममें मग्नदेख कहा हेतात केहिकारण मुनिजनों के प्रिय बिपिनमें आये, अरुहेसौमित्रे हमसेसब कुशलकहो६०। ६२ क्या अबभी हमपर क्रोध कियेहैं जिन्होंने हमको त्याग यशकीर्त्ति बढ़ायीहै, मेरे त्यागकी कीर्त्ति संसारमें प्रकटहुई या नहींहुई जिसप्रभुके कल्याणकेअर्थ कीर्त्तिही प्यारीहै, जिन्होंने सुयशके अर्थ तुम्हारेसाथ मुझको घोरबनमें त्यागकिया, तिनकी कीर्त्ति अब जगत्में चारों ओर प्रकटहुई औ मेरीकीर्त्तितो उन्हीं दीनोद्धारके साथहै में कुछ त्यागकी खोरि नहींजानतीहूं मेरामन सदैव प्रभु के चरणोंमें रहताहै इससे मैं सदा पासही रहतीहूं अरु यहभी प्रसिद्धहै कि निकटके रहनेसे अपचारके सिवाय कुछप्रीति नहीं बढ़ती, हेदेवर लक्ष्मण जो उन्होंने त्याग किया तो क्या मेरामनतो सदैव उनके निकट रहताहै, जो मेरे त्यागकिये उनकी कीर्त्ति प्रकाश हुई यहिसे अधिक और क्या पतिका यश बर्द्धन होनाचाहिये, अरु कौशल्याजीकी कुशल कहो वैसीही कृपाकरतीहैं, जिन का पुत्र त्रिभुवनका राजाहै उनके कुशल समाजहीघर मेंहै अरु भरत शत्रुघ्न सुमित्रा कैकेयी आदिकी कुशल कहो, जिनके मैं निदान प्राणप्रियथी, फिर रघूत्तम जिन- को कीर्त्तिही प्रियहै उनकी कुशल कहो, बहुतसे शील वान् राजा यह कहतेहैं देखो धनधाम परिवार राज्य अपनाप्राण जिनके प्रियनहीं उनको लघुनारि क्या है

हेतात सब नगरको कुशलकहो, यहि प्रकार सीताजी को पूंछतेहुये लक्ष्मण चरणोंमें शिरनाय बोले ६३।७० जो माता मेरी कुशल पूंछतीहोतो रघुराज समाज युक्त कुशलहैं व तुम्हारी कुशल बारम्बार पूंछीहै कौशल्या आदि माताओंने व सब राजपत्नियोंने आशिषयुक्त क्षेम कुशल पूंछीहै, अरु सब गुरु गुरुपत्नियोंने आशिष देकर कुशल पूंछीहै, भरत शत्रुघ्नने बन्दनाकर कुशल पूंछी है ७१।७३ व सब पुरजन परिजनोंने प्रीतियुक्त कुशल पूंछीहै अरु हे माता तुमको रामचन्द्रजीने बुलायाहै, केवल तनतो वहांहै प्राण उनके तुम्हारेही निकट हैं तुम्हारे सिवाय उनकाअनुराग कहीं नहीं होता नित्य-प्रति तुम्हारे स्थलमें चित्त रहताहै, तुम्हारेहीन मंदिर देख रुदनभी करतेहैं, तुम्हारे आश्रमका ध्यान अह-र्निशि करतेहैं, अरु सदा यहिप्रकार तुम्हारी कथा कहतेहैं ७४।७६ कि बाल्मीकि आश्रमविषे मेरा वचन मान जनकात्मजा कालक्षेप करतीहैं सो वही मेराअयन है अरु निशिदिन मैं वहीं बिहार करताहूं, अरु तुम्हारे अर्थ रघुनाथजीकी एकबात और कहताहूं अपराध क्षमा-करो कहताहूं जो प्रकटयोग्य गोपनीय सो सुनो यह कहलक्ष्मण हाथजोड़शिरनायबोले कि मुझको सबईश्वर ब्रह्माशिवादिकोंके ईश कहतेहैं सोसब सत्यहै मृषा कुछ नहीं यदि उसमें यह कारणहै कि तुम्हारेही पतिव्रत धर्म्मसे मैं त्रैलोक्य का पालन करताहूं, यद्यपि जो मैं स्वतंत्र होता तो हर्षशोक क्यों प्राप्तहोता, हमने जो

शंकर धनुष भंजनकर केकयिमति खण्डनकर बनहुआ जेहिसे पितामरण हुआ तहां सीताहरणमें भालु कपि युक्त समुद्र उतर रावणको सकुटुम्ब बधकिया, सो तुम्हारेही धर्म्मके सहायसेयहसब कार्य्य करनेकी शक्ति हुई फिर अवधमें आय त्रैलोक्यकी राज्यपायी सो सब तुम्हाराही प्रसादहै ७७। ८३ अरु बियोगका कारण बारणकर कृपाकरके अब नगरमें आय हे प्रिया प्रचण्ड दुःख दूरकरो, सत्यगिरासे यह बर्णन कियाहै किसीता शुद्धहैं लेकिन लोकापबादसे उसबाणी को बिस्मरण करनापड़ा, यद्यपि हमतुम गुणोंसे भिन्नहैं तथापिभक्तों के हितार्थ शरीर धारण कियाहै अब अनुज के साथ आओ यह संसारके उपदेशको नीति निर्म्माणकी है अर्थात् काननमें पठाईहै सोभी दिनव्यतीत होगये जो सुख दुःखकुछ दैवयोगसे आवै उसको महत्पुरुष बिचारके साथ अपने ऊपर भोग करतेहैं, हेप्रिये, अबतुमको यह उचितहै कि जेहिसे विशदप्रेम बढ़े वहकरो, जनत् के देखने मात्रको हमने तुमको त्याग किया, निदान हमारातुम्हारात्यागकभी नहींहोताजैसेदिनकरसेआतप अर्थात् घामका बियोग नहीं होता, यहि प्रकारकेबचन कहिकै प्रभुने तुमको बुलाया है चलने का बिचारकरौ ८४। ९० फिर यह कहाकि प्रीतिमें देखोकि कुछकाल के बियोगसे निर्म्मलप्रीति होजातीहै इसके सिवायअन्य उपायनहीं तुमतनमनसे शुद्धहौ हमनिश्चययह जानतेहैं हे प्रिये तुमको निर्मल प्रीतिके अर्थ बनमेंत्याग कियाहै,

दूसरा हेतु न जानो प्रिये तुम सर्वदा शुद्धहौ हेदुष्टनाशिनी सुख प्रकाशिनी अब शीघ्रआओ हमारा तुम्हारा निर्मल यश बिदित होरहाहै उज्वलबंशभी बिदितहै हमारा तुम्हारा निर्मल यश गायगाय सब प्राणी बिनुप्रयास भवसागर पारहोंगे, हे माता तुम्हारे गुण यहि प्रकार प्रभुने कहेहैं सुनि कै जानकी परमानन्दित हुईं फिर लक्ष्मणने कहा हेमाता ये बस्त्र आभूषण चन्दनादिक चमर छत्र तुम्हारेअर्थ पठयेहैं अरु गज तुरंग दोनोंपुत्रों के अर्थ मागध द्विजसूत गुणगानेकेलिये पठयेहैं वे तुम्हारी कीर्त्ति गानकरतेहैं अरु तुम्हारी सेवकाई हेतु नगरकी स्त्री पठाईहैं अरु तुम्हारी रक्षाको प्रबल शूर आयेहैं व देवतादिक पुष्पवृष्टिकरतेहैं द्विजनकोदानदेतेहुयेपुत्रोंको गजारूढ़ करके अपने नगरको आय मुझको प्राप्तहोओ यहांका सब उत्सव तुम्हारे बिना शोभित नहींहोता यहां सब मुनित्रियआदि यज्ञमें आईहैं, तिनको कौशल्यादिकों ने आदर सत्कारकर मंगलकियेहैं हे प्रिये यह उत्सव बिना तुम्हारे आगमन के शोभित नहीं होता हेप्रिये यह अनुमानकर अपनानगर सनाथकरो यह सन्देश रामजीने कहाहै सोई हम तुमसे बर्णनकिया ६१।१००
यहिप्रकार रामानुज लक्ष्मणकी प्रार्थनासुन सीताजीने कहा हेलक्ष्मण मैं रघुपतिकी कीर्त्तिमें अपने यशका बिस्तार नहीं चाहतीहूं व अर्थ, धर्म, सेभी रहितहूं, तुम जो कहतेहो कि श्रीरामचन्द्र बुलातेहैं जगत्में सब जन यशगातेहैं, अरु हेतात निरंकुश राजाओंका क्या बि-

श्वासहै अरु तुमभी परतंत्रहो मैं उनके समीप कैसेचलूं अरु स्त्रीको चाहिये कि पतिके गुण अवगुण हृदयमें गोप्यराखै, ताते मैं कुछ बर्णन नहीं करती, प्रभुको सदा मंगलरूपहै, अरु हे लक्ष्मण जो स्वरूप जनकपुरमें मैंने पाणिग्रहणमें देखाथा वही रूप मेरे हृदयमें अहर्निशि बास करताहै, निमिषमात्रभी भिन्न नहीं होता, अरु ये युगुलकुमार रघुपतिके अंशके उत्पन्न बंशके बढ़ानेवाले धनुबिद्यामें निपुण इनको प्रभुके समीप लैजाय लाड़ प्यारकरो, औ प्रतीतिसे जैसे मेरा संशय दूरहो वह तुमको करना चाहिये, मैं यहां प्रभुके चरण कमलोंका स्मरण भजन यहां करूंगी, दोनों पुत्रोंको लैजाकर चरणोंमें शिरनाय मेरीभी बन्दना करियो, अरु मेरी कुशल सबसे जैसे सबोंने बूझीहै १०।१।१०६ हेमुने यहिप्रकार कहिकै सीताने दोनों पुत्रोंको बुलाय आज्ञा दी व अपना मन गमनमें न किया, कि हेपुत्र तुमको बाल्मीकिजीने बुलायाहै यहसुन माताको बन्दनाकर दरशाभिलाषसे अत्यानन्दित हुये, तब लक्ष्मणने बंदना कर बिनय सुनाय दोनों पुत्रोंके समेत रथमें आरूढ़ होकर अयोध्याको बायुके लजानेवाले बाजी हांकतेभये, गंगाउतर शीघ्र सरयू निकट प्राप्तहोकर रथत्याग मख मंडपमें सबमुनियोंके चरणबन्दतेहुये बाल्मीकिकेनिकट जाय रामानुज बन्दना किया व कुश लवनेभी दंडवत् किया तेहिसमय बाल्मीकिने तीनोंजनोंको अंकमेंलगाय कुशलपूंछी अरु दोनों पुत्रोंको लिवाय पुत्रमिलाने महा

आनन्द बढ़ाने मुनिनाथचले, तब आगेसे लक्ष्मणजाय चरणोंमें शिरनाय हर्ष शोकसे भ्रमित सीताप्रसंग कहा, तब सीताकी कथासुन रघुराज मूर्च्छितह्वै धरतीपर गिरपड़े लक्ष्मण वस्त्रकी वायु करतेहुये रघुनाथ जी मूर्च्छा त्याग लक्ष्मणसे बोले१०७।११३ हेतात हृदय से यत्न बिचार सीता पहं शीघ्रजाय उनको लैआओ तब मंगल प्राप्तहो मेरा संदेश कहो कि बिपिनमें क्यों तप करतीहौ सो हमको त्याग कौनगतिहै स्त्रीको गति केवल पतिही है तुमने स्त्री धर्म्म बहुत सुना देखाहै तेहिसे केहिकारण नहीं आतीहौ, अरु हे प्रिया तुम अपनीही इच्छासे बिपिन बासको गईथी कुछमेरीइच्छा न थी, अब सब प्रकार वहां मुनिपत्नियोंकोपूजिमुनियोंके दर्शनकियो जेहिसे मेरे सब काम पूर्णहुये ११४।११६ अब न आनेका क्या कारण है अरुजो कुछस्त्री करतीहै सो पतिही के अर्थहै, चाहे पति निर्गुण, मलीन, कुशील क्रोधी, जड़, बधिर, आंधर, अधर्म्मी हो चाहेगुणवान्हो स्त्रीकीगति पतिहीहै सो यह धर्म्मवेदोक्त तुम सब जानतीहौ, जोस्त्री कुछ शुभकार्य्य करतीहै सो पतिही के संतोषकेलियेहै, सो तुम हमारे अर्थ बिपिनमें मुनिपत्नियोंकेसाथ तपकरतीहौ हम तुमसे ऐसेही प्रसन्नहैं यज्ञ योग, संयम, तीर्थ, मुनि प्रसंग येसब प्रसन्नता केअर्थ हैं सोमैं तुमसे प्रसन्नहूं केहि कारण बिपिन वास करतीहौ यह बिचार नगरको आगमनकरो हेमुने यहि प्रकार सीताप्रति लक्ष्मणसे रघुनाथजीने संदेश कहा, तब

लक्ष्मणाचरणोंमें शिरनायकहाहेनाथ जोआप सीताप्रति कह्यो सो अब जाय बिनय युक्त फिर कहताहूं यह कहबन्दनाकर शीघ्रगामी जड़ाऊरथमें सवारहो चले ११७। १२३ तब बाल्मीकिजीने दोनों पुत्रसभा में रघुनाथजीको दिखाय समीपबैठाय पुत्रनप्रतिकहाहेरा-जपुत्र प्रसन्नहोकर बीणाद्वारसे कलगान युक्त रामायण रामचरित्र गानकरो यह मुनिकी बाणीसुन दोनों हर्षित होकर मनोहर राम चरित्र गानेलगे तब वह बीणाकी तान गान प्रकाश समस्त मण्डलमें ब्याप्तहोगया, पद२ में बिचित्रगान मंजुबरमधुरस्वरोंसेउच्चरतेथे जो चरित्र में गानकियाहै सोभी मैं कहताहूं, धर्म्मबिधि, पतिव्रत बिधि, ब्याहबिधान, गुण, धर्म्मी, अधर्म्मीनरोंकदंड, आदि मध्यमें निर्गुणकी मायाअर्थात् कर्त्ता भगवान् येसबचरि-त्रबिशद कलगानमेंगाये, सोउत्तम स्वरजगत्में पूरितहो गया, अरु देवता ऋषि मुनि सबप्रेममें थकित ह्वैगये व किन्नरजन कलगान सुनिकै प्रेममें मूर्च्छित होगये औ सभाकीक्यादशाकहूं सबप्रेमसेचित्रवत् होगयेमृगीजैसे गानको चकोरचन्द्रको देखमोहितहो ऐसेहीरामचन्द्रजी मोहितहोकरनयनोंसेजलत्यागतेहुये अरुसभाकेसबमुनि समाज औ नरनारि जड़ जंगम सब मोहित होगये तब उन्होंने पंचमस्वरका अलाप किया तबसब समाजयुक्त रघुराज प्रसन्न होकर बाल्मीकिसे बोले हे मुनिनाथ इन्होंने बहुत कलगानकरके सभाको मोहित करदिया, इनकी विद्या उत्तमदेख हम इनको सुवर्ण अर्थात् कुछ

प्रतिग्रह देना चाहतेहैं १२४।१३२ रामचन्द्रकी बाणी सुन दोनोंभाई बोले प्रतिग्रह संसारमें ब्राह्मण लेते हैं अपर बर्णको प्रतिग्रह उचितनहीं, जो क्षत्री लोभबश दानले तो नरकमें पड़े यह वेदका वाक्यहै, अरु हे गुरु देखो यह राजा अनीति करताहै हम अबकैसे रामायण गानकरें यहतो सुवर्ण देनेको कहताहै, अरु हमींनेइनको यज्ञाश्व जीति राजा बनायाहै ते अबहमको दान देकर कल्याण चाहतेहैं जोकृपा हमनेकीहै उसकोतो भूलगये तब बाल्मीकिजी सुनिकै मनोहर बचन बोले हेपुत्र ये रघुकुल मणि तुम्हारे पिता हैं तुम अनुचित न कहो ये अनीति लायक नहींहैं १३३।१३७ यहसुन दोनों भाई सकुचिकै हर्ष समेत पिताके चरणोंमें गिर अपनी बिनय सुनाय कहाहम मातुभक्तिसे निर्मलहैं, तबरघुनाथ जी पुत्रोंको उठाय अंकमें लगावतेभये हेमुने वहउपमा मोसे बर्णन नहीं होसक्ती, तब पुत्रयुक्त रामचन्द्रको एकत्रदेख महाआनन्दित होतेभये, तबसब मुनिसमाज सूतजीसे व बात्स्यायन शेषजीसे रामचरित्र सुननेके अनुरागसे बोले हे शेषजी मेरा सन्देह दूरकरो धर्म्म धुरन्धर संयुत सुखद रामायण जो बाल्मीकि मुनिकही सो केहि समय केहि कारण कौन२चरित्र युक्त निर्माण किया १३८।१४२ शेषजी बोले हे द्विजेन्द्र तुम धन्य हो, एकबार बाल्मीकिमुनि महाबनको गये जहां दाड़िम अम्ब कदम्ब चम्पक सब प्रफुल्लित शोभायमान तथा केतकी कोबिदार जुही मालती देवदारुकी सुगन्ध

चारों ओरसे प्रकाशित और नाना प्रकारके वृक्ष कुसुमित होरहेथे, और सुखद सौरभ छाय रहाथा अरु मोर आदिपक्षी गानकरते नृत्य करतेथे, तहां परमरम्य बन में युगबत् क्रौंच कामबिवश विहरतेथे, तहां एकदयाहीन बधिक आय क्रौंची पतिको मांसाहारी बधिकने मारडाला, अपनेपतिको मृतकदेख क्रौंची महाव्याकुल हो रोदन करनेलगी तबदयालु बाल्मीकि मुनि क्रौंच मृतक व क्रौंचीको दुःखितदेख परम क्रोधकर गंगाजल आचमन करके उसका महापाप जान शापदिया कि (मानिषादप्रतिष्ठांत्व मागमःसाश्वतीसमाः। यत्क्रौंच मिथुनादेक मवधीःकाममोहितम् १) अर्थात् जो तूने इसपक्षीको निरपराध काममें मोहित एकको बधकिया इससे तू अयुतबर्ष कल्याणको प्राप्त न होगा शापदेते यह श्लोक चारु २ पद ललित बर्णयुक्त सुनिकै महिसुर देवतादिक महाप्रसन्न ह्वैकै साधु २ कहने लगे कि हे मुनिनाथ शापदेते हुये तुम्हारे मुखमें सरस्वती आई है इसमें संशयनहीं यह प्रबन्ध बड़ाउत्तम बनाहै, यह सुन बाल्मीकि परमानन्दितहुये, उसीसमय पुत्रनयुक्त ब्रह्माजी आय बाल्मीकिसे मुदितह्वै बोले हे मुनिनाथ धन्यहो तुम्हारे मुखमें सरस्वती आय यहश्लोक निर्माण कराय कृपाकिया, ताते हेमुनिश्रेष्ठ अब ललित पदयुक्त मधुर स्वरवाले अक्षरोंमें रामायण निर्माणकरो यहिसे तुम्हारी कीर्ति कल्पान्त पर्यन्त जगत् में प्रकाशितरहेगी १४३।१५६ जे रघुपतिके मनोहर गुणगान

करतेहैं उनकी बाणीको धन्यहै अरुजो कामकथा वर्णन करतेहैं उनसेअधम कोईनहीं औ उन्हीं विषयी मनुष्यों को सूतक दोषके समान पातक होताहै, याते हे मुनि-श्रेष्ठ सप्रीति रामचरित्र कथनकरो जो पद२मेंक्षण२विषे महा पातक नाशकरताहै १५७।१५८यह कहिकै ब्रह्मा जीदेवतोंसमेत अन्तर्द्धानहुये,तब बाल्मीकि मनमें शोच-नेलगे, कि जो ब्रह्माजीने कहा कि रामायण निर्म्माण करो, सो कैसेकहूं न कभीसुनी न देखी, यहकह मुनि-बर गंगाजीके निकट शुद्धासनमें बैठ ध्यानावस्थ होकर रामकाध्यान करनेलगे, तब मुनिवर के हृदयमें श्रीपुरु-षोत्तम नीलकमलके समान कोमलगात दृग बिशाल सुन्दर मुकुटदिये बनमाला पहिरे धनुषबाणलिये प्रकट हुये, उनके प्रभावसे मुनि भूत भविष्य बर्तमानके सब चरित्र देखतेभये, तव रामको करुणाकर जान अतीव आनन्द प्रकटहुआ तब रामका ध्यानकर ललित पदोंमें रामचरित्रबर्णन करनेलगे व पद २ विषे मोहित होने लगे १५६।१६२ तामें नाना प्रकारकी कथा संयुक्त निर्मल छः काण्ड बनायेहुये,अर्थात् प्रथम बालकांड,द्वि-तीय आरण्यकांड, तृतीय किष्किन्धाकांड, चतुर्थसुन्दर पंचमयुद्धकांड, षष्ठमउत्तर, तेहिमें हम बालकांडकीकथा क्रमसों कहतेहैं, पुत्रार्थ महाराज दशरथजीने शृङ्गी ऋषिको बुलाय यज्ञकराया जिससे स्वयंभगवान् राम-चन्द्र चारिअंशोंसे उत्पन्नहुये,कुछकालके अनन्तरसानु-ज रामचन्द्र बिश्वामित्रको यज्ञ रक्षणार्थ जाय मारीच

सुबाहुआदि यज्ञके भंगकरनेवाले राक्षसोंकोमार मुनि-पत्नी अहल्याको उद्धार, जनकपुरजाय, सबराजाओंका मान गवांय धनुषचढ़ाय सीताजी व्याहकर अयोध्याको आये,तब सबप्रकारसे रामको समस्तदेख दशरथ युव-राजपद देनेका बिचारकिया व सब समाज हर्षितहुआ, तब कैकयीके बचनमान सीतायुक्त राम लक्ष्मण, गंगा उतर चित्रकूटबनमें बासकिया,६३।६७ यहां भरतआय सानुजसीता रामको बनगवन सुन महाबिस्मित होकर लिवानेगये, तब रामचन्द्रजी ने भरतको समझाय बुझाय पादुका दै विदाकिया, भरतआय रघुनाथजी के बिरहसे नन्दिग्राममें रहतेहुये, हेमुने यहचरित्र बालका हुआ (अब आरण्यके चरित्र कहतेहैं) अत्रि आदि मुनि-वरोंके कुटी बासकरतेहुये, उसी प्रसंगमें सूर्पणखा की नासाखण्डन अरु जैसे खरदूषणका बधकिया वह सब चरित्र इसमें कहागयाहै, अरु फिर कपट मारीचलाय बधकराय रावणने सीताहरण किया, तब रघुनाथ जी ने मनुष्यकी नाईं प्रियाबियोग का बहुतसा दुःखकर-केकबन्धकोमार गृध्रउद्धारशबरीको सनाथकरपंपासर-देखा, आगेचले तब यह आरण्यकांडहुआ(अब किष्किन्धा कहतेहैं) ६८।७४ बिप्ररूपसे हनुमान् मिले उन महात्मनि सुग्रीवसे मित्रता कराई, तब रघुनाथ जी सुग्रीवके क्लेशसेसप्ततालु दलनकर बालिकोमार सुग्रीवके राज्यतिलक किया, तब बर्षा निकट पाय बिपिनमें पर्णकुटी बनाय सानुज बर्षाबिताय, सुग्रीवको भयदिखा

या, सुग्रीवने भयभीत होकर कपिसमूह लैकर रघुनाथ जी के निकट आये, भालु कपि सीताके अन्वेषणार्थ अर्थात् ढूंढ़नेको चारोंओर पठाते भये, तब भालु कपि जाय जलधितीर सम्पातिको देख भयभीत होकर जटायुका स्मरणकिया तब उसके मंत्रसे हनुमान् यह किष्किन्धाकांड हुआ,(अब सुन्दर कहतेहैं)समुद्र उल्लंघन कर घर २ लंकामझाय अशोक बनमें सीताको कृशित देख प्रभुको कथा सुनाय मुद्रिका देकर प्रबोध किया अरु फुलवाईको विध्वंसकर बन्धितहुये, तब बन्धन में पड़कर लंका जराय समुद्रके पार आय सब भालु कपिनको सचेतकिया, फिर सब आय रघुनाथजीको कथा सुनाई, तब ससैन्य समुद्रतटआये,तब वहां रावणानुज बिभीषण आये, तब समुद्र में सेतु बनाय सब समाज युक्त समुद्रपारहुये,तब शुकशारण दूतोंको सैन्यदिखाई यह सुन्दर कांड हुआ,(अब युद्धकांड कहतेहैं) युद्धकांड में दशदिन युद्धकर सैन्य समेत रावण को बधकिया, तब सीताजी प्रभुके समीपआईं सब परमानन्दितहुये, यह युद्धकांड हुआ (अब उत्तरकांड सुनो) उत्तर में प्रभु अयोध्या आय सब को सुखी किया ७५ । ७८ तब कुम्भजकी आयसुपाय यह अश्वमेध किया, हे वात्स्यायन हम तुमको बिधिपूर्वक जो बाल्मीकि जीने छः काण्ड चौबिस हजार संख्या निर्मितिकी सो तुमको सुनाई जिसके श्रवणसे सब त्रयताप नाश होताहै तब रघुनाथजी कुश लवको अपने पुत्र जान हृदयलगा-

य सीताको स्मरण करतेभये ७६। ८३ इतिश्री पद्म पुराणे पातालखंडे शेषवात्स्यायनसम्बादे रामाश्वमेध भाषायां रामचन्द्र सभान्तर्गत कुशलव रामायणगान वर्णनोनाम षट् षष्ठितमोऽध्यायः ६६॥

सरसठवां अध्याय॥

श्रीशेषजी बोले हे वात्स्यायन तब लक्ष्मण जानकी के आश्रमजाय चरणोंमें शिरनाय पुलकगात से रघुनाथजीका सन्देश सुनाया १ तब बिनययुक्त लक्ष्मण को सन्मुख देख संकोचत्याग बोलीं, हे तात तुमतो कहते होकि निज पुरको चलो, देखो घोर विपिनमें हठसे कौशलाध्यक्षने छोड़ दिया यासे कैसे चलूं इसी आश्रम में अहर्निशि रामभजन करूंगी २।३ यह सुन लक्ष्मण बिनीत बचन बोले हे माता पतिव्रतमें निपुण तुमको पतिनिर्देश शिरधार करना चाहिये, हेमाता यहबिचार रथारूढ़हो प्रभुके निकटचलो, बारम्बार प्रभुने यही कहाहै कि हे भाई साथही प्रियाको लै आओ, ऐसेही बहुतबातें प्रभुकी कहीहुई सीताजीको सुनाई,तब सीता जी ने पतिव्रत धर्म्म सम्हार सब रोष शोक त्यागदिया अरु मुनिपत्नियोंको मिलकर सब मुनियों को बिनय सुनाय श्रीराम का स्मरणकर लक्ष्मण के साथ रथमें आरूढ़हुईं तब लषणने रथ चलाय गंगाउतर निजपुर पहुंचगये, तब परमरम्य नानाप्रकार के रंग प्रकाशिततोरण कलश ध्वजा बन्दन वार भूषित सरयू तट

यज्ञकुंडनिकट श्रीरामचन्द्र विद्यमान तहां जनकात्मजा रामस्मरण करतीहुईं लक्ष्मणसमेत रथत्याग चरणोंमें गिरी तब रघुनाथजीने चरणोंमें जानकीको देख कहा हे प्रिया अब तुम्हारे संयुक्त यज्ञ पूर्णकरैंगे, ४।१० तब सीताजी ने सप्रेम बाल्मीकिजी को प्रणामकर सब मुनियोंको बन्दनाकर कौशल्या के निकट जाय दण्डवत् किया, तब वीर प्रसविनी कौशल्या ने हृदय लगाय आशिषदिया, फिर कैकेयीके चरणों की बन्दनाकिया पुत्रबधू देख हृदय लगाय आशिष दिया कि हे पतिव्रते पति समेत चिरंजीवि रहौ फिर सुमित्रा के चरण परिकै दण्डवत् किया सुमित्राने कहा हे सीते पुत्रवती होओ यहि प्रकार सीता सबसे यथा योग्य मिलिकै बियोग दुःख दूरकर परमानन्दितहुई, अरु मुनि मण्डलीमें सीताजी रघुनाथजी के बामभागमें बिद्यमानहुई देख अगस्त्य आदि मुनीश्वर हर्षितहुये तबकृत्रिम कंचनसीता उठाय अलगकर सीताको बिद्य मानकिया, तब यज्ञ मध्यमें सीता समेत रामचन्द्रन क्षत्र गणमें चन्द्रवत् प्रकाशित हुये ११।१७ तब श्री रामचन्द्रजी सीता प्राप्तकरके मुदितह्वैकै यज्ञकेकार्य्य करनेलगे, तब सीता रामको आसनस्थ देख लक्ष्मण आदि भाई व मुनि समाज सब क्षण २ में आनन्दित होतेथे तब बुद्धिमान् राज राजेन्द्र श्रीरामचन्द्रजी मधुर बाणीसे बोले हे स्वामिन् अब यहि अवसरमें हमको क्या कर्त्तव्य है यहसुन बशिष्ठजी बोले हे राम अब

सप्रीतिब्राह्मणोंका पूजनकर परितोषकरो, यज्ञान्तमें यही उचितहै १८।२१ प्रथम मरुत राजाने अश्वमेधयज्ञ करके अत्रिआदि मुनियोंको तोषित कियाथा, मैं कहां तककहूंउससमय उसराजाने अतुलदानदिया, जिसको भूसुर लैनसके तिसको लै हिम गिरिके निकट डालसब सुखी भये, हे राम अब हर्षित होकर ब्राह्मणोंको दान मानसे संतुष्टकरो, २२।२४ यह सुनकर रामचन्द्रजी ने प्रथम वशिष्ठयुक्त कुम्भज ऋषिका पूजनकर अगिणित रत्नभार सुवर्ण नाना प्रकारके वस्त्र बाहन ग्राम जिन में चारोंवर्ण बसतेहुये कृषीयुक्त दानकिया, तदनन्तर रघुनाथजीने सत्यवती सुत व्यासजीको याहीविधिसे पूजनकिया, फिर सपत्नीक च्यवनजीका पूजनकरफिर बहुत सन्मान करके ऋत्विज बाल्मीकिजीका पूजन किया, हे मुने दानकी गणना कौन करसके जो करैसो मूढ़है, इनके सिवाय और ब्राह्मण जो यज्ञमें आयेथे उनको सब प्रकारसे पूजनकर दानदिया, यज्ञ कुण्डके समीप मखमण्डप में महादानकरके रघुनाथ जी भी अति प्रसन्नहुये, और जे यज्ञ सुनिकै देश २ के भूसुर आयेथे उनका लक्ष २ मुद्रा अर्पणकिये अरुणाकी जैसी रुचिदेखी उसको वैसेही दानदिया २५।३० अरु अंध बधिर आदिको यथायोग्य दानदिया अनेक प्रकार से अशन स्वादयुक्त नाना प्रकार के चित्रित वस्त्र हाथी घोड़े जड़ाऊ रथ आदि पदार्थोंसे रघुनाथ जीने उस समय सबकी रुचिराखी, औ बहुत जन रघुनाथ के यज्ञमें

हृष्ट पुष्ट सपरिवार होगये, ३१।३३ तब अगस्त्य जी ने रामसे सबको तुष्टितदेख बोले हेराम तुम प्रियासमेत चौंसठ राजालेकर अश्वके मज्जनार्थ सरयूजल लेआओ यह सुनकर प्रथम रघुनाथ जी उठे तिनकेपीछे सब भूषण वस्त्रोंसे सूर्यवत् जगमगात सीता मनोहर सुवर्ण काकलश लिये चलतीभई तिनपीछे उर्मिलायुक्त लषण चले, ता पीछे मांडवी समेत भरत ता पीछे श्रुतिकीर्त्ति समेत शत्रुघ्न तापीछे पुष्कल तापीछे सत्यवान,सुबाहु सुमद, बीरमणि, लक्ष्मीनिधि, रिपुतापन, बिभीषण, प्रतापअग्र, नीलरत्न, सुग्रीव आदि राजा यहिप्रकार सपत्नीक सब सुवर्ण कलशलैकर सबके आगे बशिष्ठ सरयू में प्रवेशकर श्रुतिमंत्र जपमंत्र उच्चारणकर कहा हे माता सदैवके कृपाकरने वाली यह यज्ञाश्व शुद्ध कर रघुनाथजी के दोषगुण दूरकरो यह बशिष्ठ कहते हुये कहा नीर स्पर्श करो,३४।४४ यह सुन सब राजन युक्त पुरुषोत्तम सुन अपना कुम्भ भरते भये, हे मुने सीतारामकी शोभा उस समयकी शंकर शारदा गणेश येभी नहीं कहसक्ते, अरु जोड़ी सीतारामकी रतिमन्म-थकोभी लज्जित करती है, अरु सीतारामकी दीप्ति चपलाकोभी निन्दतीहै तब अगस्त्यजीने वेदमंत्रोच्चार-णकरके रामको निर्मलजल दिया कि वेदानुसार बाजि राजको स्नानकराओ, तब दोनोंहाथ जोड़ रघुनाथ जी यज्ञाश्व प्रतिबोले हेबाजिराज अबद्विज बधसे उद्धारक-रोफिर तुम्हारे आशिषसे देवतादिक तृप्तिपाय प्रसन्न

होयं सीतासमेत यहबचन उच्चारणकर हयके शीश में जलडाला, यहसुनसब मुनिसमाज बिस्मितहवै कहने लगे कियह प्रभुने कैसेकहा, देखोजाके नामस्मरण से महापातक नाशहोतेहैं, तेरघूत्तम यहकैसे कहतेहैं यहिप्रकार कहतेहुये सबआश्चर्यितहुये ४५। ४८ तब कुम्भोद्भव ने वेदमंत्र पढ़िकै खड्ग रघुनाथजीकोदी रघु नाथजी अश्वकी पीठिपर स्पर्श करतेही उसीक्षण सत्व बिहाय दिव्यतनहोगया, अर्थात् वैजयन्ती माला पहिरे पीताम्बर चारिबाहुसे चक्रादिधारे उत्तम स्वरूप को प्राप्तहुआ, तबआकाशसे एक जाज्वल्य बिमान आया तिसमें अप्सराओं के वृन्द में आरूढ़हुआ तब किंकर चमर व्यजन करनेलगे, जबयज्ञाश्व दिव्यरूप होगया तबसब समाज बिस्मित हुये, यद्यपि रामचन्द्र सबका रण जानतेथे, तद्यपि सबके जनानेके अर्थ बाजिराज से कहाहे धर्म्मात्मा देवअंश तुमने कौतुक से दिव्य रूप देवांगनाओंसे सेवित कैसेपाया यहकारण मुझसे सम झायकहो, ४६। ५४ रामचन्द्रकी यहबाणीसुनगम्भीर बाणी से कहा हेसमदर्शी राम तुम सर्व्वज्ञदेव रघुराज सबकारण जानतेहौ, सबकाल देशमें बाहर भीतर आप बसतेहौ यहवेदकी बाक्यहै, तद्यपि जो आप पूछते हो तो अपराध क्षमाकरकेसुनौ प्रथम मैंनेब्राह्मण तनपाय पूर्वजन्मके प्रभावसे श्रुतिधर्म्मा कुलरीतिसे बिरुद्धकिया उसके प्रभावसे यहअश्व योनिपाई सो कारणसुनोएक बार सरयतट जायस्नानकर यथोचित दानदै करिध्यान

किया अरुबड़ीपर्ब पायदेश २ केराजाआयेथे, तिनकेबंच-
नार्थ दम्भबढ़ाय यज्ञकीसब सौजमंगाय वस्त्रनके मंडप
बनाय तहां अनेकन अग्निहोत्र किये अरुबिधि पूर्बक
पुंड्र लगाय चित्रकार कीसी रचना की अरु बहुत
जड़ाऊ अंगूठी पहिरीं मैं क्या बर्णन करौं मानों दम्भ
स्वरूप साक्षात् देख पड़ताथा, दैवयोग से उससमय
दारुणक्रोधी दुर्बासा आयेमुझको दम्भयुक्त मौन धारे
देखाअरु मैंने अर्घ्यपाद्य देकर कुछस्वागत भीनकिया,
हेराममैं उस समय दम्भ में भुलाय मुनिका तपतेजन
अनुमानकिया तब दुर्बासाने मुझको दम्भ दशा में देख
५५। ६४ अत्यन्त क्रोधकिया, दम्भरूप जानशापदिया
रेपोच मतितापस मुझकोदेख दम्भमें प्राप्त होकर मौन
ब्रतलगायाहै तेहिसे पशुतन होहुगे अरुतूने श्रुतिपथको
भी प्रहारकिया यातेअवश्य पशुशरीर को प्राप्तहोओ, हे
नाथतब मैंनेयह दारुण शाप सुनके मौनब्रत छोड़ मुनि
के चरणोंमें गिरबिनय कियाहे मुनीन्द्र परम ब्यहाल
देखकृपा करो, तबकरुणाकर दुर्बासा क्रोधबिहाय
प्रबोधकिया, किराजराजेन्द्र रामचन्द्र त्रेतामेंअश्वमेधयज्ञ
करेंगे, तिनकेयज्ञाश्व होकरदेश २मझायपीछे रघुराजतु-
म्हारागातस्पर्श करेंगे, तबमुक्त होकरदिब्यतनु को प्रा-
प्तहोगे, अर्थात् जोरूप सिद्धादिकों को दुर्लभहै तिसको
तुमप्राप्तहोगे, यहमेरासत्यबचनहै, हेरामशापबशतुम्हारे
हयहुये व तुम्हारी कृपासे मुक्तहुये, अबआयसु देवतो
परमधामको जाऊं, जहांमोह, मद, पाप, जरा, मृत्युनहीं

ग्रसन करते, अरु उसमें पुण्यात्माही जातेहैं, सो मैं वहां तुम्हारी कृपासे जाऊंगा, यहकह देवरूप परिक्रमा युक्त बन्दनाकर चरणोंमें शिरनाय बिनय सुनायजड़ाऊ रथमें आरूढ़हो राम स्मरण करतेहुये स्वर्ग को प्राप्त हुआ, तेहिकेवचनसुन सबसमाज रामचन्द्र की बिस्मित हुई ६५। ७७ अरुसत्रोंने हयकीगतिदेख रघुनाथजीकी महिमा को गुनतेभये, हेराजन् देखो दम्भ युक्त भजन किये परमपदको प्राप्तहुआ, जोनरसप्रेम भजन करते हैं उनकीगति क्या वर्णनकरें। वे धन्यहैं, किसीप्रकारसे भजनकरै सोभी देव दुर्लभपदको पाताहै, यह चरित्र सुनिकै मुनिसमूह परस्पर कहनेलगे, हेभाइयो उन्हीं रामसुख धामको दृष्टिभरि देखलो जिनके स्पर्शसेदम्भी सुरयानमें चढ़कर मुक्तपदको प्राप्तहुआ, हमसबभीधन्य भये दर्शनकरके कृतार्थहुये ७८।८१ तदनन्तरधर्मात्मा रामचन्द्रनेगुरुवशिष्ठजीसेकहाहेस्वामिन् अबहमकोक्या कर्त्तब्यहै अश्वसदेहस्वर्ग चलागयाओसबदेवसमुदाय जेहिप्रकारमेरीयज्ञसेतृप्तहों सोउपायश्रुतिकेमतसेकहो, अरुयज्ञभीजिसमें पूर्णहो, यहसुन गुरुवशिष्ठ बोलेहेराम कर्पूर सुपात्रोंमें भरि २ देवअर्पणकरो उससे सब देवता हब्यपाय अघाय प्रसन्नहोंगे, तब रामचन्द्रजीने कर्पूर मंगायावशिष्ठजी अवगाहन करहर्षितहुये तेहिसमयसब देवता सकलत्रआय २ हब्यसाक्षात्लेनेलगे ८२।८७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेपातालखंडेशेषवात्स्यायनसम्बादेरामाश्वमेधभाषायांयज्ञप्रारंभोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठिवां अध्याय॥

हेमुने प्रथमनारायण मुनियुक्त तुष्टहुये तब प्रजापति ब्रह्माजी, शिव, बरुण, कुबेर, अत्रि आदि देवता सपत्नीक यज्ञभागको साक्षात् खड़ेथे १। २ अरु बशिष्ठजी अपने हाथसे सबको देतेजातेथे अपना हाथ मंत्रितकर महामिष्ठ कियाथा, प्रभुको यज्ञमेंदेख क्षुधितसे होकर सब देवता यज्ञभाग लेतेभये सब देवता तृप्तितोहोगये लेकिन दरशलालसा न गई तबरघुनाथजीने बिशदहव्य सब देवताओंकोदेकर सन्तुष्टकिया, अरु ब्राह्मणोंकोनाना प्रकार के दानदेकर तुष्टकिया, तब सब देवता अपना२ अंशपाय अपने २ धामगये, तब गुरुप्रेरित रघुनाथजी अपना राज्य होतादिकोंको बांटतेभये, तब सब मुनिप्रसन्नहोय जयजयशब्द उच्चरतेभये, तब बशिष्ठजीने अत्यानन्दित होकर पूर्णाहुतिदेकर ऋषियोंसेकहा अब यज्ञान्तमेंप्रसन्नह्वै उत्सवकरो ३। ७यहसुनि मुनिपत्नी मंगलाकार करनेलगीं, उससमयकी आनन्दकैसे वर्णनकरूं रघुनाथजी के अंगराग करके बशिष्ठबोले हे राम यज्ञ अन्तमें सपत्नीक स्नानकरो, ८यहसुनि सीतासमेत दशरथ नन्दन रामचंद्र स्नानार्थ सरयूतट चले उनके साथ हजारोंराजा जाय स्नान करनेगये हे मुने तेहिअवसर राजाओंकी मण्डलीमें सीताराम अतिशोभाकोप्राप्तहुये सो वह उपमाकोईनहीं मिलसक्ती, यद्यपि कविसकुचिकै शरदचन्द्र तारागणमें शोभित वैसेही पुरुषोत्तम प्रका-

शितहुये,सबराजसमाजसीतारामकीशोभादेखअचंचल होगये,अर्थात्दृगथकितहोगये,रघुनाथजीकेआगे गंधर्व गण गाते अप्सरादिनृत्यकरते कलगानगाते मनक्षोभितकरतीथीं,अरु हजारघटलैके प्रभुको सिंचनकर बिशद हर्दी केसरादिभरि २ सबस्त्रीजन रघुपतिपर लेपनकरती भईं अपने २ हाथसे प्रभुकोस्पर्शकर हर्षितहोतीथीं,प्रभुके मनोहरकानोंमें कुण्डल स्पर्शकरतेहुये दृगोंसे थकितहो गईं, यहिप्रकार तहां हजारों नरनारि जुरेथे सबजन प्रभुके ऊपरमांगल्यक बस्तुकीबर्षाकरतेथे,६। १८यहिप्रकार आनन्दमेंक्रीड़ते कौशलाध्यक्षसरयूतटपहुंचेजिन जगज्जननी केस्पर्श करतेही सब कलुष नाश होतेहैं, तब कुलगुरु बशिष्ठजी आगे जलमें प्रवेशकर वेद मंत्रोच्चारणकर सीताराम को प्रवेशकराया,तिनपीछे सब राजाभी प्रवेश करतेभये अरु अपने २ पात्रोंसे जल लैकर रामचन्द्रजीके ऊपरडालने लगे वहभी शोभानहीं कहीजाती निर्मल सरयू प्रवाहमें बहुतकाल तक क्रीड़ा करके सहित समाज मज्जनकर ठाढ़ेभये, अरु सीता समेत दिव्य दुकूल पहिरि शिरमें जड़ाऊ मुकुट जिसकी शोभा झलमलाती हुई कुंडल मुखशोभाको प्रकाशित किये कटिमें तूणीर हृदय में बनमालाधारे यहिप्रकार सबअंग शोभितकिये उससमयकी शोभा देख मन्मथ लज्जित होताथा,अरु सबराजा हाथजोरे स्तुति करतेथे, उससमयमानों त्रैलोक्यकी शोभा धारणकरली,श्रीबशिष्ठजीकी आज्ञासे सबराजाओंको जीति यज्ञथम्भ सरयू

निकट गाड़तेभये, हे मुने यहिप्रकार जानकीयुक्त रघुनाथजीने तीनयज्ञकर जगत्‌में सुयश बिस्तारकिया, फिर जानकीयुक्त भाइयोंको साथलिये भवनकोजाय राज्य सिंहासनपर बिद्यमानहुये, भरत लक्ष्मण, शत्रुघ्न, अंगद हनुमान्, चमर व्यजन चर्मशक्ति लिये चारोंओर सुशोभित हुये, राजनके समूह हाथजोरे छबिमें मग्न, बन्दीजन कीर्त्ति गान करते, हे मुने उससमयके चराचर सब अपने जन्मको धन्य मानतेभये, जोयही ध्यानकरताहै, उसके हृदयमें सीतारामकी दृढ़भक्ति रहतीहै, हेवात्स्यायन मैंनेतुमसे यह रामचरित्र बर्णनकिया, जे सुनेंगावेंगे ते अबिचल धामको प्राप्तहोते हैं अब श्रवण विधान कहताहूं, कार्त्तिकमास या चैत्रमासमें नवमीसे सप्रीति अश्वमेधकी कथाजोजन सुनतेहैं ते जन सब कलुषत्याग सिद्धिको प्राप्तहोते हैं, फिर अगस्त्य की आज्ञानुसार गोदावरी निकट अपनी मति अनुसार कथाकही जेहिके श्रवणसे भवपीर नहींब्यापती, अबहेवात्स्यायन कौनचरित्र पूछतेहौ जो इसको हर्षित ह्वै सुनतेहैं वे रघुपतिके सन्मुखह्वै ब्रह्महत्यादि पातक दूर होतेहैं २६ । २७ जे अपुत्र श्रद्धायुक्त श्रवणकरैं सो अवश्य पुत्रवान् होंगे निर्द्धनोंको धनप्राप्तहोगा रोगीजन रोगसेमुक्तहोंगे बन्धनवारे बन्धनमुक्त पावैंगे यहिप्रकार जो मनसासे रामकथाको स्मरण करतेहैं उनको मनवांछित फलमिलताहै जे सपत्नीक सुतकामनासे नवदिनमें यह कथा श्रवण करैंगे, ते जन रामप्रभावसे उत्तम पुत्रपावैंगे, अरुउनकी

कथासुन ...किताब
बैश्य बिश...
...( )
कहसका... ...ल
सवमने... (ज)
जीव... ...कार
स्व... ...करण
हगाद्वि...
ज्ञातक ...का
(त)
तुलसी ... म.यण
तग्ररीरूफउदूबना०
(द)
दुर्गा ...मूल व सटीक
दुर्गा ...कारड
देवीभा... ...भाषाबार-
होंस्कंध
...ना...रहमज़ा
...वावली
...वलावली
...ना...
नवीन...
नवरत...
निघंट...
नारीब...

नामकिताब

(प)

परमार्थसार
प्रेमसागर
पारसभाग
प्रेमरत्न
प्रेमामृतसार
पद्मावतभाषा
पत्रासंवत्१९५५
पटवारियोंकीपुस्तकके
तीनों भाग
प्रबोधचन्द्रोदयनाटक
पत्रहितैषिणीना०वकी०
प्रेमप्रकाश
पद्यसंग्रह

(ब)

बृहज्जातक
बृहत्संहिता
बिनयपत्रिका मूल व
टीका सहित
ब्रजबिलास
ब्रजबिलाससारावली
ब्रह्मोत्तरखरड
बिष्णुपुराणभाषा
बाराहपुराण
बीजककबीरदास
बीजगणितदोभाग

नामकिताब

बैतालपच्चीसी
बकावलीसुमन
बैद्यजीवन
बैद्यमनोत्सव
बैद्यप्रिया
बालशिक्षा दो भाग

(भ)

भक्तमाल
भविष्यपुराण
भोजप्रबन्धसार
भाषाव्याकरण
भाषातत्वदीपिकाव्या०
भूगोलतत्त्व
भाषाचन्द्रोदय
भूगोलवर्णन

(म)

मार्कण्डेयपुराणसटीक
माधवनिदान
मुहूर्त्तचक्रदीपिका
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक
मुहूर्त्तगणपति
मुहूर्त्तदीपक
महाभारतदर्पण
तथाअलगरउन्नीसोंपर्व
इत्यादि

